ISSN (P) : 0976-5255
(e) : 2454-339X
Impact Factor : 8.870 (SJIF)

शोध मंथन

(A Multi-disciplinary Peer Reviewed & Refereed International Journal)

वैश्विक परिपेक्ष्य मे अनुसंधान कौशल और उद्यमिता विकास गतिविधियाँ

Vol. - XIV
Special Issue
April 2023

मुख्य अतिथि संपादक
डॉ० संजय कुमार

सहायक अतिथि संपादक
प्रो० चतर सिंह नेगी
डॉ० राजपाल सिंह
डॉ० अमित अग्रवाल

शोध मंथन

हिन्दी जर्नल (पत्रिका)

वैश्विक परिपेक्ष्य में अनुसंधान कौशल और उद्यमिता विकास गतिविधियाँ

मुख्य अतिथि संपादक
डॉ० संजय सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नरेंद्र नगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

सहायक अतिथि संपादक

प्रो० चतर सिंह नेगी
वाणिज्य विभाग
पं० मोहन लाल शर्मा विश्वविद्यालय परिसर, ऋषिकेश

डॉ० राजपाल सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
राजकीय महाविद्यालय, नरेंद्र नगर टिहरी गढ़वाल

डॉ० अमित अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
राजकीय महाविद्यालय, रजा नगर, रामपुर

संपादक – मंडल

प्रो० राजेश कुमार उभान	–	डी०यू०जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
प्रो० संजय कौशिक	–	पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़
प्रो० एन०पी० माहेश्वरी	–	पूर्व. निदेशक, उच्च शिक्षा, उत्तराखण्ड
प्रो० जी०एस० रजवार	–	वैज्ञानिक, उच्च शिक्षा, उत्तराखण्ड
प्रो० जानकी पंवार	–	डॉ० पी०डी०बी०एच० राजकीय पी०जी० कॉलेज, कोटद्वार, उत्तराखण्ड
प्रो० जे०डी०एस० नेगी	–	एच०एन०बी० गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, बादशाहीथौल, टिहरी
प्रो० एम०एस० रावत	–	पं० एल०एम०एस० कैम्पस, ऋषिकेश
प्रो० आर०सी० डंगवाल	–	एच०एन०बी० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
प्रो० एस०के० जैन	–	जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर
प्रो० के०एल० तलवार	–	जी०डी०सी० चकराता, उत्तराखण्ड
प्रो० डी०एस० नेगी	–	जी०डी०सी० मंगलौर, उत्तराखण्ड
प्रो० सुरेश चंद्र	–	राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, उत्तरकाशी
डॉ० महबूबरीफ सदरसोपेवाले	–	जीएफजीसी, रामदुर्ग, बेलगावी, कर्नाटक
डॉ० चंदा टी० नौटियाल	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखंड
श्रीमती नताशा	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
प्रो० ए०के० मित्तल	–	जे०वी० जैन कॉलेज, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश
डॉ० प्रकृति भार्गव	–	हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
डॉ० विजय प्रकाश	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
डॉ० आरिफ मोहम्मद	–	जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
डॉ० शैलजा रावत	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
प्रो० एम०के० अग्रवाल	–	लखनऊ विश्वविद्यालय
डॉ० राजू गुप्ता	–	डीडीयू गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
प्रो० सुरेखा राणा	–	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
डॉ० ऋतु डंगवाल	–	डी०डब्ल्यू०टी० कॉलेज, देहरादून
डॉ० सीमा गुप्ता	–	देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ० अनिल कुमार डंगवाल	–	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
डॉ० चिन्मय रॉय	–	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
प्रो० देवेन्द्र दत्त पैन्युली	–	राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, उत्तरकाशी
प्रो० मधु थपलियाल	–	राजकीय स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, उत्तरकाशी
डॉ० ईरा सिंह	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
डॉ० हिमांशु जोशी	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड
डॉ० जितेंद्र नौटियाल	–	डी०यू० जी०डी०सी० नरेंद्र नगर, उत्तराखण्ड

Managing Editor : Vishal Mithal

- शोधमंथन त्रै–मासिक जर्नल है, यह विशेष अंक है।
- शोधमंथन में पूर्व प्रकाशित लेख व पत्र प्रकाशित नहीं किये जाते।
- शोधमंथन के प्रबन्ध सम्पादक पूर्व निर्धारित हैं। यथा समय अतिथि सम्पादक चयनित किये जाते हैं।
- प्रकाशित सामग्री का कॉपीराइट जर्नल अनु बुक्स, मेरठ का है।
- अपना शोध पत्र प्रकाशित करवाने के लिये ई–मेल के द्वारा अपने पूर्ण पते के साथ भेजें।
- सम्पादकीय समिति का निर्णय अन्तिम होगा।
- **Authors are responsible for the cases of plagiarism.**

Published by Mithal K., Journal Anu Books, Meerut
Printed by D.K. Fine Art Printers Pvt. Ltd., New Delhi

प्रधान सम्पादक/सम्पादकों का संदेश

अनुसंधान कौशल मनुष्य के जीवन को सहज, उपयोगी एवं उत्कृष्ट बनाता है और उद्यमिता का गुण व अनुसंधान की दृष्टि पाकर यह भविष्य की वैश्विक आवश्यकताओं की पूर्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। इसी विचार को ध्येय स्वरूप अपनाते हुए पीयर रिव्यूड अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका 'शोध मंथन' के विशेष अंक को 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान कौशल और उद्यमिता विकास गतिविधियों के संदर्भ में' विषय पर केंद्रित कर शोधकर्ताओं व सुधी पाठकों के हाथों में सौंपते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है।

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि इस विशेष अंक की सफलता के लिए प्रसिद्ध शोधकर्ताओं, विद्यानों, पेशेवरों एवं शिक्षाविदों ने अपने शोध–पत्र/आलेखों के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे ऐसा प्रतीत हुआ कि इच्छुक शिक्षाविदों और पेशेवरों एवं शोधकर्ताओं के माध्यम से अनुसंधान ने एक नई गति प्राप्त की है, जिससे ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए आयाम खोजे गये हैं। इसी के साथ शिक्षा के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण आयाम उभरा है। अंतर अनुशासनात्मक दृष्टि को अपनाते हुए विशेष क्षेत्र के लिए उत्कृष्टता के प्रयास सद्परिणाम लाते हैं।

प्रौद्योगिकीख् जलवायु परिवर्तन, जनसांख्यिकीय बदलाव, शरीकरण एवं मूल्य श्रृंखलाओं के वैश्वीकरण की बढ़ती भूमिका जैसे वैश्विक विषय कार्य और कौशल मांगों की प्रकृति को बदल रहे हैं। कौशल किसी भी कार्य क्षेत्र में दक्षता, निपुणता प्राप्त करता है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसे प्राप्त करके मनुष्य के भीतर आत्म–विश्वास एवं उद्यमशीलता का बीजारोपण होता है, जिससे बेरोजगारी दूर होती है और समाज में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पनपती है। कैरियर विकास में यह सहायक सिद्ध होता है और लक्ष्यों की प्राप्ति आसान बनाता है एवं इसे शिक्षा के माध्यम से सीख सकते हैं। आज के तीव्र गति से परिवर्तनशील समाज में कौशल विकसित करना महत्वपूर्ण है।

अनुसंधान कौशल विकास से शिक्षा का अभीष्ट प्रतिफल होता है। कामकाजी उम्र की जनसंख्या अधिक उत्पादक बनती है और आर्थिक विकास के नये आयाम स्थापित होते हैं। कई विकासशील देशों में यह पाया गया कि कुशल श्रमिकों की कमी भी उनके विकास में बहुत बड़ी बाधा है और इस बाधा को अनुसंधान कौशल से दूर किया जा सकता है। आज कौशल विकास के लिए वैश्विक स्तर पर शोध की आवश्यकता है ताकि सिद्धांत और व्यवहार के मध्य की गहराई को समझा जा सके।

अनुसंधान कौशल और उद्यमिता विकास को बीज मंत्र के रूपा में स्वीकार करने वाली यह शोध पत्रिका प्रकृति में बहु–अनुशासनात्मक है। इसने विभिन्न दृष्टिकोणों से विषय का अन्वेषण किया है। इसे बडी संख्या में शोध पत्र प्राप्त हुए हैं। पत्रों की स्क्रीनिंग के बाद, जर्नल में पर्याप्त संख्या में शोध पत्र प्रकाशित किए गए हैं। जर्नल में रिसर्च स्कॉलर्स के साथ शोध पत्र/आलेख को भी स्थान मिला है, जिससे भविष्य में उत्कृष्ट शोध हेतु प्रेरित किया जा सके।

वर्तमान पत्रिका 'शोध मंथन' के विशेष अंक को 'वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान कौशल और उद्यमिता विकास गतिविधियों के संदर्भ में' विषय पर शोध पत्रों का परिणाम है। यह विषय बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित करता है और उन्होंने इसे अपने मूल्यवान विचारों और विचारों को गम्भीरता से साझा करने के लिए प्रेरित किया है। हमारा यह प्रयास और निर्णय अंतर अनुशासनात्मक शोध दृष्टि को अंकुरित करने, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करने एवं सभी जिम्मेदार शोधार्थियों, विद्यानों और सुधी पाठकों के प्रति गहरे प्रेम और आदर से भरा हुआ है।

पत्रिका के प्रकाशन के दौरान विशेष सहयोग के लिए आदरणीय प्राचार्य प्रो राजेश कुमार उभान, धर्मानंद उनियाल, राजकीय महाविद्यालय, नरेंद्र नगर (टिहरी गढ़वाल) उत्तराखण्ड का हम ह्रदय से आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही उप–जिलाधिकारी नरेन्द्र नगर, (टिहरी गढ़वाल), श्री देवेंद्र सिंह नेगी का भी सह्रदय आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हम वास्तव में उन सभी सहयोगियों की सहराना करते हैं जिन्होंने अपना अमूल्य समय अनुसंधान कार्यो एवं इसके प्रकाशन हेतु दिया। हमें पूरा विश्वास है कि आप सभी भविष्य में भी अनुसंधान के प्रयासों में अपना अमूल्य योगदान देकर हमें कृतज्ञ करेगें।

प्रधान सम्पादक/सम्पादक
डॉ० संजय कुमार
प्रो० चतर सिंह नेगी
डॉ० अमित अग्रवाल
डॉ० राजपाल सिंह रावत

ISSN: (P) 0976-5255 (e): 2454-339X
Impact Factor: 8.870 (SJIF)

शोध मंथन

हिन्दी शोध पत्रिका

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL IN HINDI

Vol. XIV **Special Issue** **April 2023**

अनुक्रमणिका

1. पर्यटन उद्यमिता एवं क्षमता निर्माण (उत्तराखण्ड के सम्बन्ध में एक अध्ययन) 1
संगीता रावत
2. पर्यटन के विकास में गढ़वाल हिमालय (पश्चिमी उत्तराखण्ड) के बुग्यालों का भौगोलिक अध्ययन 4
डॉ० बचन लाल, डॉ० महेन्द्रपाल सिंह परमार, डॉ० ब्रीष कुमार
3. हिमालयी तथा उप हिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पलायन का प्रभाव 11
अरूण कुमार, राजेन्द्र सिंह
4. कोविड–19 का बदलती उपभोग प्रवृति पर प्रभाव – एक अवलोकन 16
विनीता भौर्याल, डॉ० अर्चना त्रिपाठी
5. मेवाड़ रियासत में पाश्चात्य शिक्षा का उद्भव और विकास – एक ऐतिहासिक अध्ययन 20
डॉ० विमल कुमार कोली
6. प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका 25
अंजना रावत
7. लॉकडाउन जलवायु परिवर्तन और प्रकृति के लिए बना वरदान 30
डॉ० अमित अग्रवाल
8. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन 36
राजेंद्र शर्मा, डॉ० अशोक कुमार सिडाना
9. वरिष्ठजन एवं आत्महत्याः कारण व निदान 40
डॉ० सुबोध कुमार एवं महेश शर्मा
10. वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन 43
सुभाष मीना, डॉ० अशोक कुमार सिडाना
11. मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य में निहित जीवन मूल्य एवं जीवन कौशल समसामयिक परिपेक्ष्य में 45
अंजली प्रजापति, डॉ० यशवंती गौड
12. श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय का स्वॉट विश्लेषण 48
डॉ० अमित अग्रवाल, डॉ० संजय कुमार
13. वैश्वीकरण : विविध आयाम 55
ऋतु सिंह
14. हिन्द महासागर में चिन का बढता प्रभाव और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा 60
डॉ० अतुल चंद, राहुल खत्री
15. पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रमाण विचार 66
डॉ० गीतू गुप्ता, डॉ० युद्धवीर सिंह

16. इतिहास लेखन में साहित्यिक स्त्रोतों का महत्व 71
डॉ० ईरा सिंह
17. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत आने वाली ऑनलाइन शिक्षा का महत्व 79
मोहम्मद हबीब खान
18. आजादी से अब तक के 75 वर्षो में लोक सभा में महिलाओं की स्थिति का आंकलन 83
डॉ० अंजू आर्य, विधि शर्मा
19. अद्वितीय हठयोगी गोरक्षनाथ 87
विभा राघव
20. आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श 92
प्रवेश कुमार त्रिपाठी
21. उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे वर्धा शहर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन 97
डॉ० नरेन्द्र कुमार पाल, प्रफुल गोपालराव गजभिये
22. गांधी दर्शन एवं समसामयिक विश्व में उसकी उपादेयता 101
डॉ० नूर हसन
23. प्राचीन शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा 106
प्रो० मुनीश कुमार शर्मा, डॉ० अमनदीप नहर
24. शिक्षा में संचार तकनीकी का अवदान 111
डॉ० आशुतोष विक्रम
25. पर्वतीय क्षेत्रों में कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगः सुअवसर एवं चुनौतियाँ 114
ऋतु सिंह
26. रूस–यूक्रेन युद्ध के वैश्विक प्रभाव 119
डॉ० सरिता तिवारी
27. बौद्ध धर्म में तारा देवी का ऐतिहासिक अध्ययनः सारनाथ के विशेष परिप्रेक्ष्य में 124
डॉ० अनिल कुमार
28. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना 129
डॉ० नीरज नौटियाल
29. उच्च शिक्षा संस्थानों में नवाचार और उद्यमिता – अवसर और चुनौतियाँ 134
डॉ० संजय कुमार, प्रो० चतर सिंह नेगी

1

पर्यटन उद्यमिता एवं क्षमता निर्माण (उत्तराखण्ड के सम्बन्ध में एक अध्ययन)

संगीता रावत
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, समाज शास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय बड़कोट (उत्तरकाशी)

सारांश

देवभूमि उत्तराखण्ड में लोगो का एक बड़ा समूह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से पर्यटन उद्योग से जुड़ा हुआ है। उत्तराखण्ड ने नई पर्यटन नीति लागू करने की दिशा मे पर्यटन के क्षेत्र में एक सराहनीय पहल की है। पर्यटन को उद्योग का दर्जा मिलने के बाद इस क्षेत्र के निवेशकों एवं परियोजना इकाईयों को वे सभी लाभ, प्रोत्साहन प्राप्त हो रहे हैं, जो राज्य में अन्य उद्योगों को प्राप्त हुए है। इस नीति के प्रभाव स्वरूप होटलों, रिजॉर्ट, पार्किंग स्थल, साहसिक गतिविधियों, हस्तशिल्प आदि पर्यटन गतिविधयों को प्रोत्साहन मिला है। साथ ही प्रदेश में शीतकालीन पर्यटन सम्बन्धी गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। इससे प्रदेश की जीडीपी में 15.45 प्रतिशत योगदान मिला है। एक अनुमान के अनुसार उत्तराखण्ड के अर्थव्यवस्था में राज्य के पर्यटन सेक्टर का 35 प्रतिशत योगदान है, जिसे 50 प्रतिशत तक होना चाहिए। 2013 की आपदा और 2020 के कोरोना महामारी के झटकों ने राज्य के पर्यटन कारोबार में गिरावट आई है एवं इससे जुड़े 2.5 से 3 लाख लोगों की आजीविका और 10 लाख से अधिक लोगों के परोक्ष रोजगार प्रभावित हुए हैं। इसके बावजूद वर्ष 2021–22 में चारधाम यात्रा पर करीब 44 लाख तीर्थयात्री उत्तराखण्ड आए जो एक रिकॉर्ड है। इससे अनुमान लागाया जा सकता है कि उत्तराखण्ड पर्यटन कारोबार फिर से गुलजार होने लगा है। यह शोधपत्र उत्तराखण्ड में पर्यटन के क्षेत्र में विगत एवं वर्तमान स्थिति की व्याख्या करता है।

मुख्य शब्द

उत्तराखण्ड, हस्तशिल्प, साहसिक गतिविधि, धार्मिक पर्यटन, तीर्थस्थल।

प्रस्तावना

> "तीर्थाटन साधन समुदाय, विद्या, विनय, विवेक, बढाई।
> जहँ लोग साधन वेद बखानी, सबकर पल हरि भगति भवानी"
>
> (तुलसीदास)

यात्रा :– यात्रा का जीवन से गहरा सम्बन्ध है मानव जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव सदा ही यात्रा करता आया है और भविष्य मे करता रहेगा। आदिकाल मं मानव जगल मे रहा उसने पशु की भाँति जीवन जिया भूख, योनसुख, सुरक्षा/बचाव के लिए उसने यात्रा की लेकिन धीरे–धीरे जैसे मानव मष्तिक विकास प्रक्रिया से गुजरा उसने मानव विकास की इस प्रक्रिया मे सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं वैज्ञानिक कारणों से यात्रा करने आरम्भ कर दी।

यात्रा की परिभाषा– यात्रा का अर्थ सामान्यतय एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की प्रक्रिया के रूप मे लिया जाता है। सामान्यतया कुछ परिभाषाऐं निम्न प्रकार से हैं।

हिन्दी व्याकरण के अनुसार यह एक स्त्रीलिंग शब्द है जिसकी व्यप्ति (या + ष्टन) से हुई है यात्रा का अर्थ है।

जितने की ईच्छा से राजाओं का जाना, दावा करना, देवता के उदेश्य से एक प्रकार का उत्सव है।

पण्डित गणेशदत्त शास्त्री

उर्दू में सफर शब्द को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है– सफर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की क्रिया यथा– यात्रा चैवहि लोकिकी हे।

दारिका प्रसाद शर्मा

तीर्थ शब्द का अर्थ है पवित्र करने वाला। सामान्यता उस नदी सरोवर, मन्दिर अथवा भूमि को भी तीर्थ कहा जाता है जहाँ ऐसी दिव्य शक्ति हो कि उसके सम्पर्क मे आने पर मनुष्य के पाप अज्ञात रूप से नष्ट हो जाती है।

"सत्यं तीर्थ, क्षमा तीर्थ, तीर्थ मिन्द्रियन्द्रिाहः,
सर्वभूत दवा तीर्थ, तीर्थ भार्गेव मेव च।
दानं तीर्थ, दभर्स्तीर्थ। सन्तोष तीर्थ मुच्यतें,
बह्मश्चर्य परम तीर्थ, तीर्थच प्रीयवादिता।।

स्कन्द पुराण काशीखण्ड अध्याय 6

पर्यटन – मानव ने विकास के साथ–साथ यात्रावृती में भी परिवर्तन हुआ, जहाँ आदिमानव भूख सुरक्षा के लिए यात्रा करता था वहीं आधुनिक युग तक पहुँचते–पहुँचते यात्रा के स्वरूप एवं उदेश्य हो गये। यात्राओं के इसी क्रम में यात्रा का एक नया रूप पर्यटन बनकर उभरा। 1292 में सर्वप्रथम 'टूअर' शब्द का प्रादभांव हुआ जो लेटिन शब्द 'टोरनस' से लिया गया है जिसका अर्थ प्रारम्भ मे वृत्तात्यन स्थिति से लगाया जाता था। इसी शब्द से धीरे–धीरे टूरिष्ट व टूरिज्म शब्दों की उत्पति हुई। यात्रा व पर्यटन परस्पर जुडे हैं या हम कह सकते हैं पर्यटन एक विस्तष्त शब्द है। इस प्रकार पर्यटन को निम्न शब्दों में परिभाषित कर सकते है– पर्यटन पर आधारित पर व्यवसाय जो कि पर्यटक का प्रबन्ध व निर्देशन करते हुऐ उसे उसकी इच्छित वस्तुऐं प्रदान करता है और पर्यटन से संस्कृति ज्ञान लेता है ।

उद्यमिता – नये संगठन आरम्भ करने की भावना को कहते हैं। किसी वर्तमान या भावी अवसर का पूर्व दर्शन करने में मुख्यतः कोई व्यवसायिक संगठन प्रारम्भ करना उद्यमिताका मुख्य पहलू है। उद्यमिता मे एक तरफ भरपूर लाभ कमाने की सम्भावना होती है तो दूसरी तरफ जोखिम अनिश्चितता और अन्य खतरे की भी प्रबल सम्भावना होती है।

(विकिपीडिया)

क्षमता निर्माण – क्षमता निर्माण निरन्तर चलने वाली वह प्रक्रिया है जो अधिकारियों/कर्मचारियों, हितधारकों तथा समुदाय को किसी संकट/आपदा के दौरान एक बेहतर तरीके से अपने कामों को अजाम देने के लिए सुसज्जित करती है।

(शब्दीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण भारत सरकार)

अध्ययन का उदेश्य

उत्तराखण्ड राज्य के पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर उनका विश्लेषण करना।

पर्यटन से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं का अध्ययन एवं सांख्यिकीय विश्लेषण।

पर्यटन आगमन का सांख्यिकीय विश्लेषण करना।

सारणी संख्या – 01 उत्तराखण्ड के विभिन्न पर्यटक स्थल

विषय/स्थल	प्रमुख स्थान
धार्मिक तीर्थ स्थल	यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ, पंचबद्री, पंचकेदार, ऋषिकेश, हरिद्वार, हेमकुण्ड साहेब, रूद्रप्रयाग, विष्णुप्रयाग, गुप्तकाशी, कालीमठ
ऐतिहासिक पर्यटक स्थल	पाताल भुवनेश्वर, रूपकुण्ड, लाखामण्डल, पाडुकेश्वर, उत्तरकाशी, नन्दादेवी, सुरकुण्डा देवी, कुंजापुरी, चन्द्रबदनी
पर्वतीय पर्यटक स्थल	मसूरी, नैनीताल, फूलों की घाटी, अल्मोड़ा , कौसानी, औली, धनोल्टी, हर्षिल, हर की दून, रानीखेत, भीमताल, खिर्सू,
राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव विहार	गोविन्द पशु विहार, जिम कॉर्बेट नेशनल पार्क, राजाजी नेशनल पार्क, नन्दा देवी नेशनल पार्क, केदारनाथ वन्य जीव विहार, विनसर वन्य जीव विहार
अन्य पर्यटक स्थल	चोपता, चकराता, ग्वालदम, लैंसडौन, सरूताल, भीमथाच बुग्याल,

कुछ ऐसे रमणीक, विशिष्ट–प्राकृतिक स्थल भी हैं जो कि पर्यटकों एवं तीर्थ यात्राओं को आकर्षित करते हैं।

सारणी संख्या – 02 उत्तराखण्ड में आने वाले पर्यटक की संख्या (पिछले कुछ वर्षों में)

वर्ष	स्वदेशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	कुल पर्यटक (मिलियन)
2010	30.97	0.136	31.106
2011	26.67	0.143	26.813
2012	28.29	0.125	28.415
2013	19.94	0.097	20.037

2014	21.99	0.102	22.092
2015	24.12	0.109	24.229
2019	34.00	1.56	35.56
2020–21	कोरोना महामारी के कारण देशी एवं विदेशी पर्यटक नहीं आ पाये।		
2022 अब तक	45.60	34 हजार	45.94

पर्यटन क्षेत्र से जुड़ी उत्तराखण्ड की प्रमुख योजनाऐं–

1. वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली पर्यटन रोजगार योजना का प्रारम्भ 1 जुन 2002 को किया गया। इसमें उत्तराखण्ड राज्य के निवासियों मुख्यरूप से युवावर्ग को पर्यटन क्षेत्र में आधिकाधिक स्वरोजगार उपलब्ध कराने के इस योजना का प्रारम्भ किया गया।
2. जनपद से 20 अप्रैल 2018 में की गई होम स्टे ऐसा आवासीय स्थान जो पूर्णतः आवासीय परिसर हो जिसमें भवन का मालिक अथवा भवन के पट्टे पर होने की दशा में पट्टेदार स्वयं परिवार सहित निवास करता हो, ऐसे भवन में यदि कोई पर्यटक आवास के लिए आता है तो अतिथियों के खानपान की व्यवस्था भवन के मालिक व परिवार के द्वारा किया जाता है। इस प्रक्रिया को होमस्टे योजना कहते है। सरकार इस तरह के गृह आवास स्थापित करने हेतु राजकीय अनुदान देती है।

सारणी संख्या – 03

क्रं० सं०	वर्ष	कुल पंजीकृत ईकाइयाँ	कुल संख्या
1	2018–19	965	पिछले चार सालों में प्रदेश में योजना के तहत 3964 होमस्टे का पंजीकरण किया गया ।
2	2019–20	1262	
3	2020–21	437	
4	2021–22	1300	

3. **चार धाम राजमार्ग विकास योजना** – इसका शुभारम्भ 27 दिसम्बर 2016 को किया गया। चार धाम परियोजना उत्तराखण्ड के प्रमुख चार तीर्थों यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ व बद्रीनाथ को सड़क मार्ग से जोड़ने वाली महत्त्वपूर्ण परियोजना हैं। पहले इस योजना का नाम ऑलवेदर रोड था जिसे बदलकर चार धाम परियोजना कर दिया गया। इस योजना के तहत 12 हजार करोड़ की राशि स्वीकृत की गई हैं। इस योजना की प्रमुख विशेषता उत्तराखण्ड के पहाड़ो पर 889 कि०मी० सड़को को 10मी० तक चौड़ा करना है। इससे उत्तराखण्ड पर्यटन क्षेत्र का आकार बढेगा और आय में इजाफा होगा।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड का पर्यटन उद्योग परिस्थितियों से तालमेल बैठाते, समय के साथ एक बेहतर स्थिति का अनुभव कर रहा है जो देशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या, विदेशी पर्यटकों द्वारा व्यय में वृद्धि और सरकार द्वारा पर्यटन को प्रोत्साहित करने हेतु प्रारम्भ किये गये विभिन्न प्रकार की योजनाओं के ताल–मेल से आगे बढ रहा है। वर्तमान समय में पर्यटन एक ऐसी व्यवस्था के रूप में उभरा है जो अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत में लिए हुए है साहासिक कार्य को प्रोत्साहित कर रहा हैं। समय के साथ–साथ पर्यटन के स्वरूप एवं उद्देश्य में बदलाव आया है। उत्तराखण्ड में पर्यटन की अपार संभावनाऐं है। अपने विशेष भोगोलिक परिवेश विशिष्ट संस्कृति एवं खानपान शैली के फलस्वरूप यह देशी एवं विदेशी पर्यटकों की पसन्द बना हुआ है। भारतीय पर्यटन को 2013 की आपदा एवं दो साल की कोविड महामारी का भी सामना करना पड़ा। प्रदेश सरकार की प्रभावशाली पर्यटन योजनाओं के फलस्वरूप स्वरोजगार को बढावा मिला जिससे बेरोजगारी एवं पलायन जैसे समस्याऐं कम हुई एवं पर्यटन उद्योगों को पुनः स्थापित करने का कारगर प्रयास हुआ।

संदर्भ सूची

1. काला, एस.पी. (1992). गढ़वाल हिमालय में तीर्थ यात्रा एवं नया पर्यटन. सरिता बुक हाउस. पृष्ठ 1–6.
2. खरे, ऋचा. (2014). उत्तराखण्ड में पर्यटक आगमन का का सांखिकीय विश्लेषण।
3. https://www.jagran.com
4. https://uttarkhandtourism.gov.in
5. https://www. amarujala.com

2

पर्यटन के विकास में गढ़वाल हिमालय (पश्चिमी उत्तराखण्ड़) के बुग्यालों का भौगोलिक अध्ययन

डॉ० बचन लाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड़
डॉ० ब्रीष कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय नैनबाग टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड़

डॉ० महेन्द्रपाल सिंह परमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उत्तरकाशी

सारांश

प्राकृतिक सुन्दर दृश्य ही वह संसाधन होता है जिस पर पर्यटन विकसित किया जाता है। हरिद्वार जनपद तथा देहरादून के दून घाटी क्षेत्र की पतली पर्वतीय श्रृंखला के अतिरिक्त पश्चिमी उत्तराखण्ड़ के पाँच जनपद प्रायः पर्वतीय है। ये विषम तथा उबड़–खाबड़ क्षेत्र प्रकृति की उत्तम कलाकारी से पूरी तरह नक्काषे हुए हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य यहाँ से गुजरने वाले पर्यटकों का मन मोह लेता है तथा उन्हें आनन्दित करता है। यहाँ का भू–दृश्य अत्यन्त मंत्र मुग्ध करने वाला है। गढ़वाल हिमालय के मनोहरी तथा आकर्षण भौतिक स्वरूप के समान स्थल पृथ्वी पर कम ही हैं। यहाँ ऊँची–ऊँची चोटियाँ तीव्र ढाल, कन्दराएँ, छोटे–छोटे झरने, गहरे गार्ज बनाती नदियाँ, पर्वतों पर फैली हिमानियाँ, ऊँचे पर्वत शिखरों पर उगने वाली विभिन्न प्रजातियों के पेड़–पौधे, जीव–जन्तु आदि ऐसी विशेषताएं है, जो गढ़वाल हिमालय को अत्यधिक खूबसूरती प्रदान करती हैं। पर्वतारोहियों का मानना है कि गढ़वाल हिमालय विश्व में सबसे सुन्दर पर्वत प्रदेशों में से है। गढ़वाल हिमालय के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापार और औद्योगीकरण से मुक्त ऐसे विस्तृत क्षेत्र हैं, जहाँ आज भी रेल, सड़क एवं विद्युत आपूर्ति तथा मानव अधिवासों का पूर्णतः अभाव है। यह क्षेत्र पर्यटकों को शान्ति तथा सुकून के क्षण प्रदान कर सकते है। इस क्षेत्र में आज भी ऐसी अनेक घाटियाँ हैं जहाँ अभी तक विदेशियों का पदार्पण नहीं हो सका है। तेजी से बदलते सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों तथा प्राकृतिक पर्यावरण पर लगातार बढ़ती जनसंख्या और भौतिकवादिता के दबाव के कारण प्राथमिक भू–दृश्यों तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों का महत्व आने वाले समय में बढ़ेगा तथा प्रकृति के ये अछूते तथा अव्यावसायिक अंचल, महानगरों के नगरीकृत तथा व्यवसायिक भागदौड़ से थके लोगों के लिए शन्ति एवं सुकून के स्रोत सिद्ध होगें।

मुख्य शब्द

पर्यटन के विकास में बुग्याल।

प्रस्तावना

किसी भी देश, प्रदेश या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था तथा विकास वहाँ पर उपलब्ध भिन्न–भिन्न प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा गुणवत्ता तथा उनके विवेकपूर्ण उपयोग पर निर्भर करती है। प्रकृति ने सभी स्थानों पर मानव के भरण–पोषण तथा स्वविकास के लिए कुछ न कुछ संसाधन अवश्य ही प्रदान किये है, परन्तु इन संसाधनों का उपयुक्त उपयोग करके अधिकतम जन कल्याण प्राप्त करना तथा इन संसाधनों के संरक्षण करने व प्रकृति दत्त इन अनूठी सम्पदाओं को भविष्य के लिए सजों कर रखने का दायित्व वहाँ रहने वाले मनुष्य का ही है। गढ़वाल हिमालय में उद्योगों का अभाव है जिस कारण रोजगार के अवसर कम हैं, साथ ही कृषि उत्पादन भी सीमित मात्रा में हैं। अतः पर्यटन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें यहां के निवासियों को मौसमी रोजगार उपलब्ध हो पाता है। पर्यटन संसाधनों की दृष्टि से यह क्षेत्र अनादि काल से तीर्थ यात्रियों एवं पर्यटकों का आर्कषण केन्द्र रहा है। यहाँ की परिर्वतनशील ऋतुएँ, जलवायु की विविधता, एवं एक ओर वर्ष भर बर्फ से ढकी रहने वाली पर्वत चोटियाँ तथा दूसरी ओर धूप से तपती पर्वत श्रृंखलाएँ

सदाबहार हरा–भरा प्राकृतिक वैभव, आदि के कारण यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से विश्वभर के पर्यटकों को प्राचीन काल से ही अपनी और आकर्षित करता रहा है।

नव सृजित उत्तराखण्ड़ राज्य में प्रकृति जहां एक और आर्थिक संसाधनों (कृषि भूमि, खनिज पदार्थ तथा शक्ति संसाधनों) का अभाव व निर्माण उद्योगों तथा व्यापार के लिये प्रतिकूल भौगोलिक दशाएँ उत्पन्न की है। वही दूसरी ओर प्राकृतिक सौन्दर्य विविध प्रकार के जीव–जन्तु वनस्पति प्रजातियाँ, स्वास्थ्यवर्धक जलवायु, एल्पाइन घास के मैदान, फूलों की घाटी, विशाल हिमानियां, झर–झर गिरते झरने, मानव के साहस एवं पराक्रम को चुनौती देती गंगनचुंबी पर्वत चोटियाँ, ऊफनती नदिया, समुद्र तल से हजारों मीटर ऊँची प्राकृतिक झील व ताल, विभिन्न धर्मो प्राकृतिक पर्यावरण आदि की अनमोल सम्पदा दिल खोलकर प्रदान की है। इस तथ्य की पुष्टि स्मिथ के इस कथन से भी होती है– In scenery and climate Garhwal is comperative to Switzerland and its best and no district in the Himalaya can show scenery combine such tender beauties and savage Grandeur".

यही नैसर्गिक सौन्दर्य तथा सामाजिक सांस्कृतिक विलक्षणता क्षेत्रीय पर्यटन उद्योग तथा सामाजिक आर्थिक विकास के प्रमुख आधार के रूप में प्रयोग किये जा रहे हैं, परन्तु वर्तमान में इनमें से कुछ संसाधनों का उपयोग ही किया जा रहा है। जिस कारण से वर्तमान पर्यटन उद्योग गढ़वाल हिमालय के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित होकर रह गया है।

अध्ययन क्षेत्र

पश्चमी उत्तराखण्ड़ भारत के 27 वें नवोदित राज्य उत्तराखण्ड़ की गढ़वाल कमिश्नरी के रूप में अवस्थित है। गढ़वाल हिमालय, केन्द्रीय हिमालय का पष्चिमी भाग है, जिसके कारण अध्ययन क्षेत्र को गढ़वाल हिमालय के नाम से सम्बोधित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में उत्तरकाशी,चमोली, रूद्रप्रयाग, टिहरी, पौड़ी, देहरादून व हरिद्वार कुल सात जनपद सम्मिलित हैं, जिन्हें अध्ययन के लिए चुना गया है। पश्चिमी उत्तराखण्ड़ का भैगोलिक विस्तार लगभग 29^0 31'9' से 31^0 26'5' उत्तरी अक्षांशो तथा 77^0 35'5' से 80^0 6' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित 32449 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल में फैला हुआ है जो लगभग सम्पूर्ण उत्तराखण्ड़ राज्य के क्षेत्रफल का आधे से अधिक है। अध्ययन क्षेत्र की पूर्वी सीमा पर कुमांऊ मण्डल के जनपद पिथौरागढ़, अल्मोड़ा और नैनीताल का विस्तार है तथा पश्चिम में इसकी सीमा हिमाचल प्रदेश से लगती है। इसके उत्तर में भारत–तिब्बत अन्तर्राष्टीय सीमा तथा दक्षिण में में उत्तर प्रदेश के जनपद बिजनौर, सहानपुर, मुरादाबाद, मेरठ आदि इसका सीमांकन करे हैं। प्रदेश का उत्तर दक्षिण अनुमानित विस्तार 168 किमी0 तथा पूर्व पश्चिम विस्तार 150 किमी0 के लगभग है। पश्चिम में टौंस व यमुना नदी तथा पूर्व में रामगंगा व पिण्डर नदी क्षेत्र की सीमा का निर्धारण करती है। जबकि उत्तर पूर्व तथा उत्तर पश्चिम में राजनैतिक सीमा रेखा ही प्रमुख विभाजन रेखा का कार्य करती है। जहाँ एक ओर दक्षिण क्षेत्र की समुद्र तल से ऊचाई मात्र 300 मीटर से भी कम है, वहीं इसके उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों की औसत ऊंचाई 6000 मीटर से भी अधिक है। भारत की प्रमुख नदियों– गंगा, यमुना तथा अलकनन्दा के उद्गम स्थल तथा राज्य की (अस्थाई) राजधानी देहरादून भी क्षेत्र में ही स्थित है। इसके अतिरिक्त राज्य के चारों हिन्दु तीर्थ स्थल– गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बदरीनाथ, पश्चिमी उत्तरखण्ड़ का हवाई अड्डा, पर्वतों की रानी (मसूरी), एशिया का विशालकाय टिहरी बांध एवं जल विद्युत परियोजना, फूलों की घाटी, विश्व प्रसिद्ध क्रिड़ा स्थल औली तथा कई अन्य विश्व प्रसिद्ध संस्थान भी इसी क्षेत्र स्थित हैं।

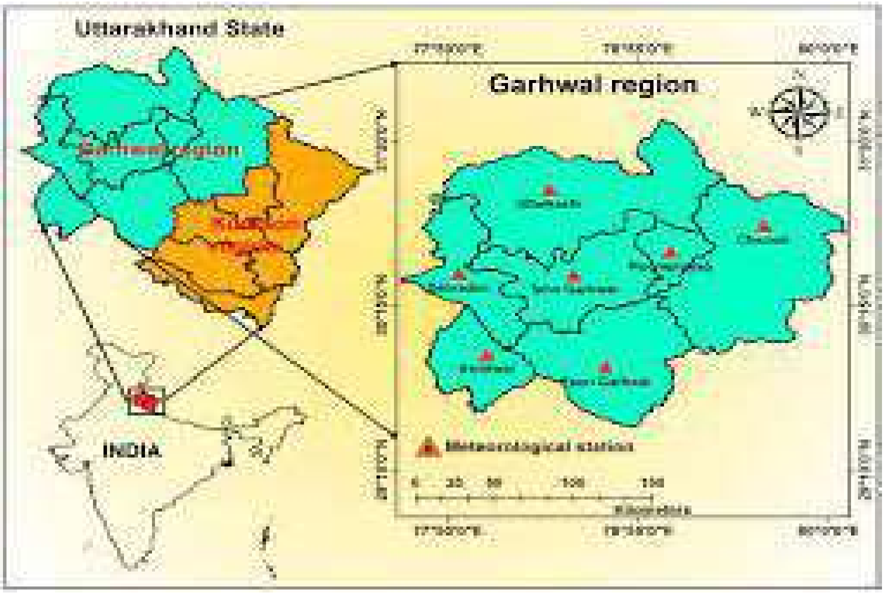

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन में जिन प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन किया गया है वे निम्नलिखित है–

पश्चिमी उत्तरखण्ड़ के प्रसिद्ध ज्ञात एवं अज्ञात एल्पाइन क्षेत्रों का विवरण प्रस्तुत करना।

बुग्याल क्षेत्र में पर्यटन विकास के वर्तमान स्वरूप को प्रदर्षित करना।

पर्यटन की क्रिया से एल्पाइन क्षेत्रों में उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं से अवगत कराना।

आधुनिक पर्यटन के साथ–साथ एल्पाइन क्षेंत्रों में पारिस्थितिक सन्तुलन को बनाये रखने के उपाय सुझाना।

प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं–

एल्पाइन क्षेत्रों का भू–आर्थिक दृष्टि से किया गया विश्लेषण क्षेत्रीय प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों के संरक्षण संवर्धन तथा पर्यटन उद्योग के स्थाई विकास में सहायक सिद्ध होगा।

क्षेत्र में विद्यमान एल्पाइन क्षेत्रों पर आधारित पर्यटन उद्योग का विकास क्षेत्रीय निवासियों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान का आधार बन सकता है जो क्षेत्रीय समन्वित विकास को गति प्रदान करेगा।

अध्ययन क्षेत्र में विद्यमान बुग्यालों के चिन्हिकरण तथा पर्यटन के दृष्टिकोण से उनके विकास के सही नियोजन द्वारा सदाबहार पर्यटन का विकास किया जा सकता है। जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में विद्यामान ऋतु निष्ठता की समस्या से मुक्ति मिल सकती है।

पश्चिमी उत्तराखण्ड़ की प्राकृतिक सम्पदा तथा सौन्दर्य को दृष्टिगत रखते हुए यहां अगर इन एल्पाइन क्षेत्रों का रख रखाव नियोजित ढ़ग से किया तो पर्यटन यहाँ के स्थानीय निवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक विकास के विकल्प के रूप में उभर सकता है।

विधि तत्रं

प्रस्तुत अनुसंधान की प्रकृति मूलतः वर्णनात्मक है। वेस्ट के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान क्या है? का विश्लेषण एवं संश्लेषण करता है। अध्ययन जो किया जा रहा है, विश्वास विचारधारा, अथवा अभिवृतियाँ जो प्राप्त हो रही है, प्रक्रियाएँ जो चल रही है अनुभव प्राप्त हो रहे हैं अथवा नई दिशाएँ जो विकसित हो रही हैं उसी से इसका संबंध है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत अनुसंधान एक अनुभवों की प्राप्ति होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध कार्य की रूपरेखा विभिन्न पुस्तकालयों, वाचनालओं एवं सूचना केन्द्रों में उपलब्ध विषय से सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से प्राप्त जानकारी के आधार पर तैयार की गई है। इस कार्य में विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं के अर्न्तविषय शोध ग्रन्थों से प्राप्त जानकारियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

मानचित्रों व रेखाचित्रों का प्रयोग

प्रस्तुत अध्ययन कार्य को सुस्पष्ट एवं रोचक बनाने के उद्‌देश्य से सांख्यिकी आंकडों के आधार पर बने मानचित्रों, का यथास्थान प्रयोग किया गया है। प्रशासनिक इकाइयों के अलावा राष्ट्रीय उद्यानों, वन्य जीव, पशु बिहारों, आदि के प्रयोग से अध्ययन को पर्यटका एवं जन साधारण के लिए उपयोगी बनाया गया है। इसके अतिरिक्त पर्यटक महत्व के स्थलों व प्राकृतिक सौन्दर्य व अद्वितीय विशिष्टता वाले स्थनों को रंगीन फोटोचित्र, फोटोग्राफ्स के द्वारा दर्शाकर अध्ययन को रोचक व क्षेत्रीय प्राकृतिक सौन्दर्य के आर्कषण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

दृश्य सौन्दर्य

गढ़वाल हिमालय का क्रमिक विकास उत्तरी मैदानों से प्रारम्भ होता है तथा लगभग 100 किमी0 की दूरी के बाद भव्य चोटियों के हिमाच्छादित क्षेत्रों में पहुंचा जा सकता है। गढ़वाल के उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व तक फैली पर्वत श्रृंखलाओं व मैदानों की ओर तीव्र ढाल है, जबकि तिब्बत की ओर उनका ढाल अपेक्षाकृत मन्द है। परिणामस्वरूप उत्तरी ढाल हिम रेखा तक सघन वनों से आच्छादित है जबकि दक्षिण ढाल बहुत तीव्र है जो वनस्पति एवं हिमावरण को बाधित करते हैं। (यह नियम घाटियों/बेसिनों पर लागू नहीं होता) इन विशेषताओं को उत्पन्न करने वाले कारको में भू–वैज्ञानिक स्वरूप, स्थल रूपों का आकार तथा धरातलीय विस्तार आदि मुख्य हैं जो क्षेत्र को सौन्दर्यता प्रदान करते है तथा मन वह छवि छोड़ते हैं जिनके कारण यह क्षेत्र मनोविनोद संसाधनों से परिपूर्ण होते हैं। अध्ययन क्षेत्र जो 32,449 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर फैला है के पर्वत तंत्र का विवरण प्राकृतिक दृश्य भूमि के सौन्दर्य के आधार पर निम्न प्रकार प्रस्तुत है–

एल्पाइन घास के मैदान (बुग्याल) तथा फूलों की घाटियाँ

उत्तरी गढ़वाल एवं गढ़वाल हिमालय में समुद्र तल से 3500–4900 मीटर की ऊँचाई के बीच एल्पाइन वनस्पति का विस्तार मिलता है। अन्तिम वृक्ष रेखा एवं स्थाई हिम रेखा के बीच का वह क्षेत्र जहाँ शीतकाल में प्रायः हिम का आवरण फैल जाता है तथा ग्रीष्म काल में बर्फ के पिघलने पर इस क्षेत्र में अनेक प्रकार की हिमालयी घासें, जड़ी–बूटियाँ तथा पुष्प वाले वृक्षों का विस्तार हो जाता है, को एल्पाइन (घास के मैदान) के नाम से जाना जाता हैं इस ऊँचाई पर पर्वतीय ढालों के उत्तर में उचित क्षेत्रीय फूलदार

झाड़ियों एवं खुशबूदार एरोमैटिक वनस्पति तथा दक्षिणी ढालों पर विस्तृत हरे–भरे घास के मैदान फैले होते हैं। घास के मैदानों पर बुग्गी नामक घास एवं पुश्प वाले छोटे कद एवं अल्प जीवन चक्र वाले पौधों की प्रधानता होती है। बुग्गी नामक (ट्रैकेडियन रायली) घास की प्रधानता के कारणइन क्षेत्रों को गढ़वाल में बुग्याल के नाम से जाना जाता है। स्थानीय भाषा में इसे मामला घास भी कहा जाता है। एल्पाइन क्षेत्रों का सीमांकन भौगोलिक एवं भौतिक विशेषताओं द्वारा किया जाता है जो 3500 मीटर से 3900 मीटर की ऊँचाई से शुरू होकर 4500से 4900 मीटर तक पाया जाता है। इन एल्पाइन चारागाहों में उगने वाली रंग–बिरंगी तथा मोहक खुशबूयुक्त फूलों वाली वनस्पतियाँ अत्यन्त मनमोहक तथा आर्कषक होती हैं। इनमें अनेक औषधीय गुणों वाली तथा दुर्लभ जड़ी–बूटियों वाले पौधे जैसे– अतीस, सालम मिश्री, जटमासी, डोलू, अरक, मिरग, महामदो, सालमपजा (शालम पंजा), पत्थर लौंग, वज्रदंती, वन तुलसी, सोमलता, हंसराज, रतनजोत, गिलोय, हत्थ जड़ी, डोला, मीटठा आदि उगते है। कलम, विषकण्डार, पद्म पुष्कर नीली पॉपी, रूद्रवती, शिवधतूरा, प्रिमुला, मीठा जहर (वत्सनाम या अकोंनिटम फैरोक्स) आदि मुख्य हैं।

टी0जी0 लांगस्टाफ ने नन्दा देवी का सफल आरोहण नामक पुस्तक में लिखा है कि हिम प्रदेशों की 6 (छः) यात्रायें करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि एशिया के समस्त पर्वतीय प्रदेशों में गढ़वाल सबसे सुन्दर है, न तो काराकोरम की बीहड़ प्राकृतिक छटा, न एवरेस्ट पर्वत की एकंकी विशालता, न हिन्दुकुश की नाजुक काकेशियन सुषमा और न हिमालय का काई दूसरा भू–भाग गड़वाल से समता कर सकता है।

गढ़वाल हिमालय की फूल घाटियों का विवरण इस प्रकार है–

तालिका – 1 पश्चिमी उत्तरखण्ड़ के बुग्याल एंव घाटियाँ

क्र० सं०	बुग्याल का नाम	स्थिति	क्षेत्रफल	समुद्रतल	फुल एवं जड़ी बूटियाँ
1	सुक्खी व धराली के बुग्याल	उत्तरकाशी	8 वर्ग मील	–	सूर्यकमल, विष कण्डार जंगली गुलाब
2	द्यारा बुग्याल	उत्तरकाशी	450 हे0	3307 मी0	पोटोंसिला (पोटेंशिला), प्रिमुला सेक्सी पेग, मार्स मेरी गोल्ड जिरेनियम, जेन्टियम, प्राइम रोज
3	बकरा टॉप	गवाणा (गणेशपुर)	200 हे0	3350 मी0	अनेक प्रकार के फूल व घास के मैदान
4	केदार गंगा	गंगोरी उत्तरकाशी	374हे0	3000 मी0	ब्रह्मकमल व अन्य वनस्पतियाँ
5	वेलख	मुखेम,उत्तरकशी	293 हे0	2500 मी0	घास के मैदान
6	मांझी वन	मांझीवन, उत्तरकाशी	3 वर्ग मील	4950 मी0	ब्रह्मकमल, लेशरज्यान, फेन कमल
7	हरकी दून	रवाई, उत्तरकाशी	8 वर्ग मील	3565 मी0	ब्रह्मकमल, बुरास व अन्य पुष्प
8	कुश कल्याण	जौराई, टिहरी	5 वर्ग मील	4571 मी0	ब्रह्मकमल
9	पंवाली कांठा	टिहरी	20 वर्ग मील	3291 मी0	अनेक फूल व औषधि वाले पौधे
10	जौराई	टिहरी	1 वर्ग मील	4266 मी0	
11	खतलिगं	टिहरी	4 वर्ग मील	4571 मी0	बुग्गी घास व फूल वाली वनस्पतीयों की प्रधानता
12	खेड़ाताल	भुक्खी, टकनौर	150 हे0	2500 मी0	घास के मैदान
13	सेम बुग्याल	मुखेम,उत्तरकाशी	200 हे0	2500 मी0	घास के मैदान
14	गिडियारा बुग्याल	गंगनानी,उत्तरकाशी	200 हे0	2500 मी0	घास के मैदान
15	रूद्र हिंवाल	रूद्रप्रयाग	20 मील	3000 मी0	बुग्गी घास व फूल वाली वनस्पतियों की प्रधानता
16	केदार कांठा बुग्याल	मोरी		3962 मी0	अनेक फूल व औषधी पौधे
17	क्वांरी (कुंआरी) बुग्याल	पुरोला	4 मील	4266 मी0	अनेक फूल व औषधी
18	ओली, गोरसों	जोशीमठ चमोली	–	3352 मी0	फूलों के मैदान एवं चारागाह
19	फूलों की घाटी	चमोली	16 वर्ग किमी0 (10मील)	3658 मी0	ब्रह्म कमल, फेनकम, कोपस तीली, जिरेनियम एवं औषधि गुणों वाले पुष्प
20	मद्महेश्वर	रूद्रप्रयाग, केदारनाथ	7 किमी0 लम्बी 3 किमी0 चौड़ी		बुग्गी घास व फूल वाली वनस्पतियों की प्रधानता
21	कल्पनाथ–घाटी	जोशीमठ, चमोली	4 किमी0	3000 मी0	मखमली घास का मैदान
22	वेदनी बुग्याल,	वान, चमोली	–	3354 मी0	औषधियुक्त पुष्प एवं विस्तृत घास के मैदान
23	रूपकुण्ड	चमोली	6 किमी0	4876 मी0	ब्रह्मकमल,फेन कमल व अन्य पुष्प

हर–की–दून (2415 मीटर) : यह एल्पाइन घास का मैदान जनपद उत्तरकाशी के रवांई परगने की पंचगाई पट्टी में फतेह पर्वत की गोद में स्थित एक मनोहारी तथा अनोखी फूल घाटी है। यह सौन्दर्यमय अद्भुत फूल घाटी समुद्र तल से 3565 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह घाटी 8 वर्ग मील के विस्तार में फैली हुई हैं। इस फूलघाटी का अधिकांश विस्तार बन्दरपूछ पर्वत की घाटी में है। इस घाटी के बीचोंबीच सूपिन नदी बहती है। जो बहुत सुन्दर दिखाई देती है। यहाँ उत्तरकाशी एवं देहरादून चकराता मार्गो से होकर पंहुचा जा सकता है। पश्चिमी उत्तराखण्ड का यह सुन्दरतम बुग्याल है।

मांझी वन फुल घाटी : यह फूल घाटी उत्तरकाशी के रवांई क्षेत्र में हिमांचल प्रदेश की सीमा पर समुद्र तल से लगभग 4916 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह फूल घाटी 3–4 मील क्षेत्र में फैली हुई है। अप्रैल के बाद बर्फ पिघलने पर यह घाटी विविध प्रकार की वनस्पतियों से भर जाती है तथा कुछ ही दिनो में बहुरंगी फूलों की चादर में लिपट जाती है। इस फूल घाटी का मार्ग चकराता तथा उत्तराखण्ड के भटवाड़ी नामक स्थान से जाता है।

द्यारा बुग्याल (3307) : मध्य हिमालय में प्रकृति की सूरम्य गोद में यह सून्दर बुग्याल उत्तरकाशी जनपद के भटवाड़ी क्षेत्र में स्थित है। इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 3000 मीटर तथा इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 410 हैक्टेयर है। यहां भटवाड़ी से 11 किमी0 पैदल चलकर रैथल गांव होकर पहुँचा जा सकता है। द्यारा पहुँचने के लिए एक मार्ग बार्सू गांव से भी है। यह बुग्याल ग्रीष्म काल में शोध कर्ताओं, पर्यटकों पर्यावणविदों तथा वनस्पति शास्त्रियों के आर्कषण का केन्द्र बना रहता है। शीत काल में यहा स्कीइंग का प्रशिक्षण दिया जाता है। यह उत्तरकाशी जनपद का सबसे बड़ा चारागाह तथा फूलों की घाटी है। प्रकृति के अद्भूत सौन्दर्य के साथ–साथ यहाँ ऐसी सुविस्तृत ढ़लानें मौजूद है, जो सहज की स्कीइंग खेल को आमंत्रण देती है। अतः द्यारा बुग्याल निकट भविष्य में निष्चित रूप से एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होगा। जो जनपद के लोगों की आर्थिक में सहभागिता प्रदान करेगा। द्यारा रैथल विकास समिति एवं अनघा माउटेंन ऐसोसिएशन के सहयोग से इस क्षेत्र में प्रति वर्ष माह अगस्त के द्वितीय सप्ताह में बटर फेस्टीवल का आयोजन किया जाता है। बटर फेस्टीबल अर्थात दूध, दही, मठ्ठा एवं मखन से खेली जानी वाली होली भारी रोमांच से भरी होती है इस पर्व को स्थानीय भाशा अड्यूणी कहतें है। बटर फेस्टीवल में इस क्षेत्र मे हजारो की संख्या में यहाँ पर्यटक पहुँचते है।

पंवाली काठां : यह टिहरी जनपद में से घुत्तु से पंवाली नामक स्थान पर है। यहाँ साथ–साथ दो बुग्याल मिलते है, जिन्हें पंवाली माट्या बुग्याल के नाम से जाना जाता है। यह समुद्र तल से 3300 मीटर की ऊँचाई पर स्थित मध्य हिमालय (पश्चिमी हिमालय) का सबसे बड़ा बुग्याल है, जो 15–20 मील के क्षेत्रफल में फैला हुआ हे। शीतकाल में यह सम्पूर्ण क्षेत्र हिम आवरण से ढ़क जाता है, इसलिए इसे स्कीइंग तथा अन्य साहसिक खेलों के लिए प्रमुख स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है तथा औली के समान विश्व पर्यटन मानचित्र पर लाया जासकता है। पंवाली से कुछ ही दूरी पर समुद्र से लगभग 3654 मीटर की ऊँचाई पर खूबसूरत ढलानों वाला माट्या बुग्याल है। इसे स्नो स्कीइंग खेल का आयोजन कर रही है। पंवाली के उत्तर दक्षिण में क्यारी बुग्याल पूर्व में ताली बुग्याल तथा उत्तर की तरफ बुग्याल दर्शनीय हैं। पंवाली के अति निकट मजेढ़ी रालखर्क बुग्याल दर्शनीय है।

वेदनी बुग्याल : वेदनी बुग्याल समुद्र तल से 3354 मीटर की ऊँचाई पर पश्चिमी उत्तराखण्ड़ के आर्कषण बुग्याल क्षेत्रों में से एक है। वेदनी बुग्याल पहुंचते ही वृक्षरेखा समाप्त हो जाती है और मखमली घास के विस्तृत मीलों फैले मैदान व ढालानें शुरू हो जाती हैं। यहाँ पर्यटक पहुँचते ही दूसरे सौन्दर्य लोक में पाँव रखता है। वेदनी में दो काटेज भी हैं जहाँ पर्यटक को रहने में कोई परेशानी नहीं होती है। रूपकुण्ड के लिए भी वेदनी बुग्याल से पहुंचा जा सकता है।

फूलों की घाटी या भ्यूंडार घाटी : हिमाच्छादित पर्वत शिखरों की गोद में बसी विश्व प्रसिद्ध फूलों की घाटी पष्चिमी उत्तराखण्ड़ के चमोली जनपद में 30^0 7 उत्तरी अक्षांश तथा 79^0 7 पूर्वी देशान्तर के मध्य समुद्र तल से लगभग 3658 मीटर से 3950 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। जोशीमठ से पूरब की तरफ चलने पर लगभग 18 किमी0 बाद एक विस्तष्त घाटी जिसे स्थानीय भ्यूडार गांव के नाम से जाना जाता है। गन्धमादन तथा नन्दा देवी की तलहटी पर स्थित यह रमणीय घाटी वास्तव में पृथ्वी का स्वर्ग है। यह घाटी 16 वर्ग किमी0 के क्षेत्रफल में फैली हुई पर्यटकों, सैलानियों आदि के लिए किसी जन्नत की तरह जादुई कशिश रखती है।

आधुनिक इतिहास में इस घाटी का वर्णन सर्वप्रथम सर एटकिंशन ने किया है उनके बाद एडिनवरा बोटनीकल गार्डन के वैज्ञानिक मि0 एफ0एस0 स्मिथ (पैक स्माइथ) द्वारा सन 1931 में कामेट पर्वत पर आरोहण के दौरान इस स्थान को देखा गया और सन 1937 में वह दुबारा इा घाटी में पहुंचे तथा साढ़े तीन माह तक यहाँ रहे, इस समय के दौरान उन्होने लगभग 300 किस्म की फूल प्रजातियों को ढूँढ़ निकाला, लौटकर उन्होने वेली ऑल फ्लावर नामक पुस्तक लिखी जिसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व को प्रकृति द्वारा बनायी गयी इस अद्भूत फूल घाटी का पता चला और द वैली ऑफ फ्लॉवर के छपते ही विश्व के वनस्पति शास्त्री, फूलों के रसिक, प्रकृति प्रेमी, एवं शोधार्थी पर्यटक इस घाटी की ओर दौड़ पड़े इसी दौरान इग्लैण्ड के क्यू बोटनीकल गार्डन की लेडी मैडम जान मारग्रेट लैंग फूलों का अध्ययन करने यहाँ पहुँची और यहीं इस घाटी में लम्बे समय तक शोध व अनुसंधान करती रही, लेकिन दुर्भाग्यवश 4 जुलाई 1939 के दिन वह चट्टान से फिलकर गिर गई और इसी घाटी में सदा के लिये सो गई। उनकी याद में आज भी घाटी के बीच में एक स्मारक बनाया गया है जिसके ऊपर उन्ही के शब्द लिखे गये हैं।

"I will lifi up mine eyes.
Unto the hills,
from whence cometh my help."

(यह शब्द मृत्यु से एक दिन पहले ही उन्होंने अपनी डायरी में लिखे थे।)

मेरी आशा भरी दृष्टि इन्ही पहाड़ियों की ओर हमेशा रहेगी जहाँ से मुझे अपार सहायता प्राप्त होती है। मारग्रेट लैंग की समाधि पर लिखे ये शब्द हर प्रकृति प्रेमी को आकर्षित करते हैं। आज भी जब कोई प्रकृति प्रेमी और फूलों का चहेता उस सथान पर पहुंचता है और यकायक जब उसकी नजर उस स्थल पर पड़ती है तो वह कुछ क्षण मारग्रेट लैंग के साथ उसकी समाधि स्थल पर बिताना अपना पावन कर्तव्य समझता है। विश्व पर्यटक कैप्टेन शिनर ने लिखा है कि यदि धरती में स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई सजीव आनन्द है तो वह फूलों की घाटी में ही मिलता है। फ्रैंक स्मिथ ने इस घाटी के सौन्दर्य की समानता आयरलैण्ड की प्राकृतिक सुषमा से करते हुए कहा था कि यह तो आयरलैण्ड की धरती से भी हजार गुना अधिक सौन्दर्यमय स्थल है। वास्तव में यहाँ पर पाये जाने वाले दुर्लभ वन्य जीव, रमणीय पुष्प एवं वृक्ष तथा सुगन्धित हवा एवं धवल हिम शिखर एक महान अविस्मरणीय छवि बनाते है। फूलों की घाटी के संरक्षण एवं जैव विविधता संवर्द्धन के लिए भारत सरकार द्वारा 6 नवम्बर 1982 में फूलों की घाटी को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था, तत्पश्चात भारत सरकार के 7 फरवरी 2001 के नोटिफिकेशन के द्वारा इस उद्यान को नन्दा देवी बायोस्फीयर रिजर्व में सम्मिलित किया गया है जिसका क्षेत्रफल 87.5 वर्ग किमी0 है।

निष्कर्ष

पर्यटक विकास के दुष्टिकोण से यह सभी बुग्याल क्षेत्र ग्रीष्मकालीन स्वास्थ्य केन्द्रों एवं बिहार स्थलों के रूप में विकसित किये जा सकते हैं इसके अलावा इन फूल घाटियों का विकास शिविर स्थलों के रूप में करके पर्वतारोहण तथा पदारोहण की क्रियाओं के विकास द्वारा पर्यटक प्रवाह में वृद्धि की जा सकती है। इन फूल घाटियों एवं इनके समीप वाले दर्शनीय स्थलों का सर्वेक्षण कर इन प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों को इस क्षेत्र का सबसे अधिक उपयोगी पर्यटन संसाधन बनाकर गढ़वाल हिमालय विश्व में सर्वोच्च पर्यटक आर्कषण का केन्द्र (क्षेत्र) बन सकता है। दुखः की बात है कि प्राकृतिक पर्यटन संसाधनों की इतनी अधिक सम्भावनाँए होने पर भी यह क्षेत्र अविकसित है। उत्तराखण्ड सरकार और वे विश्व के पर्यटकों के लिए इन स्थलों को प्रकाश में लाने का पूरा—पूरा प्रयास करें। साथ ही इन क्षेत्रों में पर्यटको की आवाजाही को नियन्त्रित किया जाए एवं पशु चुगान पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। इन एल्पाइन क्षेत्रों में वनस्पतियों की लगभग 4000 प्रजातियां मौजूद है, जो आर्थिक औषधीयक खुशबू तथा सौन्दर्य के दृष्टिकोण से बहुमूल्य मानी जाती है। यहाँ ऊँचाई के साथ बदलते तापक्रम तथा जलवायु में कई प्रकार के वनों का विस्तार है, जो आर्थिक एवं पारिस्थिकीय दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. कण्डारी, ओ.पी., गुसाई. (2001). गढ़वाल हिमालय. ट्रांस्मीडिया पब्लिकेशनः श्रीनगर गढ़वाल. पृष्ठ 220—232, 235, 237, 404.
2. बिष्ट, हर्षवन्ती. (1994). टूरिज्म इन गढ़वाल हिमालय. इण्डस पब्लिकेशन हाउसः दिल्ली. पृष्ठ. 39—38, 51—55, 57, 60, 72,—102.
3. लाल, बचन. (2007). पश्चिमी उत्तराखण्ड़ के क्षेत्रीय विकास के लिए पर्यटन संसाधनों का भौगोलिक विश्लेषण. अप्रकाशित शौध ग्रन्थ. पृष्ठ 1, 3, 14, 28, 30, 36, 48—53.
4. नित्यनंद., कुमार कमलेश. (1989). द होली हिमालय. दया पब्लिकेशन हाउसः दिल्ली. पृष्ठ 89, 142, 147, 373, 374, 383, 376, 377, 378.
5. नवानी, लाकेश (संपा). (2004). उत्तराखण्ड़ ईयर बुक विनसर पब्लिकेशन कम्पनीः देहरादून. पृष्ठ 170, 183, 219—221, 237, 238, 351, 258, 280.

6. पुरोहित, प्रकाश. (1999). जिन्दा यात्राएँ श्री नन्दा देवी महिला लोक विकास समितिः गोपेश्वर. पृष्ठ **24, 36, 39, 47, 58, 68–74, 104, 105.**
7. वहीं. (2001). उत्तराखण्ड़ स्वप्निल पर्वत प्रदेश श्री नन्दा देवी लोक विकास समितिः गोपेश्वर. पृष्ठ **11–18, 27, 102, 107, 114, 122, 168.**
8. पंवार, पी.एस. (2002–03). प्रभारी जिला सूचना अधिकारी (संपा). पत्रिका. प्रगति की ओर उत्तरकाशी. पृष्ठ **14, 18.**
9. (2002). उत्तराखण्ड़ ट्रेवल गाइड. उत्तराखण्ड़ टूरिज्म. पर्यटन कार्यालयः उत्तकाशी. पृष्ठ **145, 148, 167, 220, 221, 223, 225, 226, 228, 234.**
10. विष्ट, वीर सिंह. (2005). प्रभारी जिला सूचना अधिकारी. प्रगति पथ पर उत्तरकाशी (पत्रिका). जिला सूचना कार्यालय उत्तरकाशी. पृष्ठ **21.**
11. बिष्ट, डी.एस. गाइड टू गढ़वाल एण्ड कुमांऊ हिल्सः उत्तराखण्ड़ स्टेट आफ उत्तराखण्ड़, इण्डिया. पृष्ठ **53, 54, 73, 151, 159, 160, 171–180, 223–225.**
12. रोबिन्सन, एच. (1976). एवं ज्योग्राफी आफ टूरिज्म. मैकडोनाल्ड एण्ड सन्स लिमिटेडः लन्दन. पृष्ठ **97–98.**
13. सेमवाल, रेखा. (2005). गढ़वाल में चार धाम यात्रा का आर्थिक एवं पर्यावरणीय अध्ययन (जनपद उत्तरकाशी में स्थित गंगोत्री एवं यमुनोत्री के विशेष सन्दर्भ में). अप्रकाशित शोध ग्रन्थ. पृष्ठ **114–117, 126, 129.**

3

हिमालयी तथा उप हिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पलायन का प्रभाव

अरूण कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
रा० स्ना० महाविद्यालय जोशीमठ

राजेन्द्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
रा० स्ना० महाविद्यालय जोशीमठ

सारांश

भारत एक विविध सांस्कृतिक विरासत वाला राष्ट्र है जिसके उत्तर में पर्वतराज हिमालय विद्यमान है, भारत के उत्तर में जम्मू कश्मीर तथा लददाख केन्द्रशासित प्रदेश हिमालय प्रदेश उत्तराखण्ड सिक्किम तथा पूर्वोत्तर में अरूणाचंल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड आदि हिमालयी राज्य विद्यमान है। हिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था अन्य राज्यों से भिन्न होती है जिस पर पलायन का प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हिमालयी राज्यों में पर्यटन अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार होता है पलायन के मुख्य कारणों में रोजगार का अभाव, विकास कार्यो का अभाव, जंगली जानवरों का आतंक, भूस्खलन, प्राकृतिक आपदाए, भू–धसाव, खाधान फसलों का अभाव, पेयजल सुविधाओं का अभाव, स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन तथा दूरसंचार सेवाओं का अभाव शामिल है जिनके कारण हिमालयी तथा उप हिमालयी राज्यों में मतदान का निम्न प्रतिशत पाया जाना तथा जनता की राजनीतिक सहभागिता तथा जागरूकता में कमी पायी जाती है जिसका प्रभाव राजनीति अर्थव्यवस्था को प्रदूषित करता है पलायन को रोकने हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, दूरसंचार, रोजगार आदि सेवाओं का विकास किया जा सकता है।

मुख्य शब्द

पलायन के कारण, प्रभाव, पलायन रोकने के उपाय, हिमालयी राज्य।

पलायन का अर्थ

अपने मूल स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर रहना तथा वहां पर रहते हुए अपनी मूल भूत आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयास करना पलायन कहलाता है पलायन के प्रमुख कारणों में बेरोजगारी मूलभूत सुविधाओं का अभाव शिक्षा स्वास्थ्य मनोरंजन सुविधाओं का अभाव आपदाएं आदि को शामिल किया जाता है पलायन मुख्यतः गांव से गांव की और, गांव से शहर की और, कस्बे से शहर की ओर, नगर से महानगर की ओर, नगर से महानगर की ओर होता है अध्ययन की दृष्टि से पलायन को चार भागों में बाँटा जा सकता है

1. क्षेत्रीय पलायन
2. राज्य स्तरीय पलायन
3. राष्ट्रीय पलायन
4. अन्तर्राष्ट्रीय पलायन

पलायन की समस्या हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों के लिए एक बहुत गंभीर समस्या है जिसके कारण हिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर तो गम्भीर प्रभाव पडते ही है साथ ही साथ वैदेशिक सम्बधों को भी पलायन प्रभावित करता है भारतीय हिमालयी राज्यों के उत्तर में चीन अपनी विस्तार वादी नीति को निरन्तर अपनाता रहा है जिसके कारण हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों से पलायन होने से ना केवल राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव पडेगा अपितु पलायन से राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरा उत्पन्न हो जाएगा अतः निरन्तर बढते पलायन को रोकने का प्रयास करने से पूर्व हमें पलायन के कारणों की खोज करना अति आवश्यक हो जाता है। हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में पलायन के प्रमुख कारण निम्नलिखित है–

1. रोजगार का अभाव,

2. प्राकृतिक आपदाएं तथा संकट,
3. जंगली जानवरों का आतंक,
4. कम उपज तथा उत्पादन का निम्नस्तर,
5. विकास कार्यो का अभाव,
6. शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन सुविधाओं का अभाव,
7. संचार सुविधाओं का अभाव,
8. पेयजल का अभाव,
9. भू–स्खलन, भूकम्प, हिमस्खलन,
10. परिवहन सुविधओं का अभाव।

पलायन के कारण हिमालयी राज्यों के नागरिको को अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है जबकि– ''समाज को किसी भी व्यक्ति को भूखे नहीं मरने देना चाहिए''[1] अतः हिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था को बचाना अत्यन्त आवश्यक है।

हिमालयी राज्यों में पलायन के प्रमुख कारण

1. **रोजगार का अभाव** – हिमालयी राज्यों में रोजगार का प्रायः अभाव पाया जाता है जिसके कारण दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण स्वरोजगार को अपनाना नितान्त आवश्यक है। प्रायः हिमालयी राज्यों में कम उत्पादन मोटे अनाजों का उत्पादन रोजगार के अक्सर कमी मूलभूत सुविधाओं का अभाव आदि के कारण हिमालयी राज्यों से पलायन में निरन्तर वृद्वि हो रही है। सम्पर्क मार्गो की खराब स्थिति भी पलायन का एक प्रमुख कारण है।
2. **प्राकृतिक आपदाएं तथा संकट** – हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की एक प्रमुख समस्या आपदा तथा संकट की स्थिति है जिसके कारण प्रायः हिमालयी राज्यों के नागरिक या तो स्वयं पलायन करते है या शासन द्वारा उन्हें विस्थापित किया जाता है। इन प्राकृतिक आपदाओं में, भूकम्प हिमस्खलन, भूस्खलन, भू–धसाव बादल फटना, त्वरित बाद आदि प्रमुख है 2023 में जनवरी माह को जोशीमठ आपदा इसका ताजा उदाहरण है।[2]
3. **जंगली जानवरों का आतंक** – हिमालयी राज्यों में उच्च तथा मध्य हिमालयी क्षेत्रों में भालू, तेंदुआ, जंगली सूअर, भरल, जंगली याक, आइबैक्स कस्तूरी मष्ण हिम तेंदुआ, बिग कैट आदि जंगली जानवर पाये जाते है।[3] जो कृषि उपजों तथा मानव बस्तियों को समय–समय पर नुकसान पहुचाते है जिसके कारण मनुष्य पशु संघर्ष की स्थिति के कारण हिमालयी राज्यों से पलायन होता है।
4. **उत्पादन का निम्न स्तर** – हिमालयी तथा उच्च हिमालयी क्षेत्रों में मुख्यतः तीन प्रकार की मिटटी पायी जाती है जिसमें (1) इजरान (पथरीली भूमि) (2) तलाऊ (नदी घाटी में) (3) तलाऊ (असिंचित भूमि) शामिल है साथ ही सम्मोच्च खेती सीढीदार खेती, झूम कृषि एवं परम्परागत कृषि यन्त्रों एवं तकनीको का प्रयोग करने से उत्पादन में निरन्तर कमी आती है जिससे हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में पलायन होता है।
5. **विकास कार्यो का अभाव** – हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में अत्यधिक लागत तथा लाभ की अपेक्षा हानि की सम्भावना, आपदाएं, पर्यावरण प्रदूषण की सम्भावना परिस्थितिकी असंतुलन आदि के कारण प्रायः विकास कार्य सीमित मात्रा में तथा संविकास की स्थिति में किया जाता है जिससे पर्याप्त विकास ना होने के कारण पलायन होता है।
6. **शिक्षा स्वास्थ्य तथा मंनोरंजन सुविधाओं का अभाव** – हिमालयी तथा उपहिमालयी क्षेत्रों में प्रायः विरल जनसंख्या पायी जाती है तथा बस्तियों के प्रारूप गुच्छित अर्द्वगुच्छित विखण्डित रेखीय तारीय आरीय आदि पाये जाते है जिनमें शिक्षा स्वास्थ्य तथा अन्य मूलभूत सुविधाए उपलब्ध ना होने के कारण पलायन होता है स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में नागरिकों की इलाज के अभाव में मृत्यु होना भी पलायन का एक प्रमुख कारण है।
7. **संचार सुविधाओं का अभाव** – संचार सुविधाओं के अन्तर्गत, मोबाइल, दूरसंचार, टी0वी0 फेक्स, कांन्फ्रेन्सिंग सहित विभिन्न सूचनाओं के लिखित एवं मौखिक आदान–प्रदान सम्बन्धों साधनों को शामिल किया जाता है संसाधन कार्यो को शीघ्रता तथा सुगमता प्रदान करते है किन्तु संचार साधनों के अभाव में कार्य प्रभावित होते है जिससे व्यापार शिक्षा स्वास्थ्य तथा मानव जीवन को हानि पहुँचती है तथा व्यक्ति पलायन करने को मजबूर हो जाता है।
8. **पेयजल सुविधाओं का अभाव** – उच्च हिमालय, मध्य हिमालय, लघु हिमालय क्षेत्रों में पेयजल के मुख्य स्रोत–नदी, प्राकृतिक स्रोत झीले, झरने आदि है किन्तु प्रत्येक निवासी तक पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित हेतु पानी का अभाव आदि कारण पलायन का कारण बनते है क्योंकि जहां पानी/पेयजल उपलब्धता होता है वही जनसंख्या निवास करती है जैसे–मिस्र को नील नदी का वरदान कहा जाता है।[4]

9. **भू–स्खलन भू–धसाव, भूकम्प तथा हिमस्खलन** – हिमालयी क्षेत्रों में स्थित राज्यों में प्रायः भूस्खलन हिमस्खलन भूकम्प भूधसाव आदि की घटनाएं निरन्तर सुनाई देती है जनवरी 2023 से हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के जोशीमठ, कर्णप्रयाग, गोपेश्वर आदि क्षेत्रों में भू–धंसाव की खबरे आना 7 फरवरी 2021 को तपोवन में हिमस्खलन के कारण 200 लोगों की मृत्यु होना आदि घटनाएं पलायन को प्रेरित करती है। ''नदियों के उपरी जलग्रहण क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर वनों की कटाई वन विनाश नदियों की बाढ से मानव जाति कारकों में महत्वपूर्ण कारक है।[5]
10. **परिवहन सुविधाओं का अभाव** – परिवहन सुविधाओं के अभाव, कच्ची सडकें सम्पर्क मार्गो की दयनीय स्थिति, सीवर लाइन का अभाव, बस तथा अन्य परिवहन साधनों के अभाव के कारण हिमालयी राज्यों में जीवन अत्यधिक कठोर होता है जिसके कारण पुरानी पीढी प्रायः हिमालयी राज्यों में रहती है लेकिन नई पीढी हिमालयी राज्यों से पलायन करती है इससे जनसंख्या असंतुलन भी पैदा होता है।

हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में पलायन को रोकने में स्थानीय शासन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है इसके अभाव में पलायन को रोकना अत्यधिक कठिन कार्य है हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पलायन के कारण मतदान प्रतिशत में निरन्तर कमी आ रही है जिसके कारण जनता में राजनीतिक अरूचि, असहभागिता कर्तव्यबोध का अभाव तथा राजनीतिक उदासीनता एवं पिछडापन आदि समस्याओं के साथ–साथ अन्तराष्ट्रीय स्तर पर साम्राज्यवादी तकतों के प्रभाव बढने की सम्भावना को प्रोत्साहन मिलता है अतः पलायन के कारणों को खोजकर उनका निराकरण करना अति आवश्यक है। स्थानीय शासन, राजनीतिक शिक्षा का एक सुनिश्चित साधन है।[6]

हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पलायन का प्रभाव

भारत के हिमालयी राज्यों, हिमाचल प्रदेश उत्तराखण्ड, सिक्किम असम अरूणाचल प्रदेश नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय आदि में पलायन होने से पडोसी राष्ट्र निरन्तर विस्तारवादी/साम्रज्यवादी नीति को अपनाने का प्रयास करते है जो राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता के साथ–साथ हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीति अर्थव्यवस्था के लिए खतरा है। हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर पलायन का प्रभाव निम्नलिखित है :–

1. मतदान का निम्न प्रतिशत
2. राजनीतिक जागरूकता तथा सहभागिता का अभाव
3. अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन
4. संसाधनों का दुरूप्रयोग
5. राजनीतिक तथा आर्थिक पिछडापन
6. आत्मनिर्भरता का अभाव
7. राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा तथा राष्ट्रीय भावना का अभाव[7]
8. सामाजिक सांस्कृतिक अलगाववाद
9. क्षेत्रवाद की भावना का विकास
10. पृथक अस्तित्व की माँग तथा आन्दोलन का जन्म

1. **मतदान का निम्न प्रतिशत** – गाँवों से मजदूरी, शिक्षा, स्वास्थ्या के लिए जो लोग पलायन कर दूसरे शहरी क्षेत्रों को चले जाते है वे मतदान के समय अपने मत का प्रयोग बहुत कम या न के बराबर करते है क्योंकि मतदान का अवकाश केवल एक दिन का होता है तथा लोग अपने घरों से सेकडों किलोमीटर दूर होते है जिस कारण मतदान प्रक्रिया में माग लेने हेतु अपने मूल स्थान पर नहीं पहुंच पाते है तथा मतदान प्रतिशत निम्न रहता है।
2. **राजनीतिक जागरूकता तथा सहभागिता का अभाव** – पलायन के कारण राजनीतिक राजगरूकता तथा सहभागिता में कमी आयी है क्योंकि व्यक्ति जिस स्थान विशेष की राजनीति जागरूकता रखता है वहां वह अपनी सहभागिता नहीं कर पाता जबकि जहां वह सहभागी होता है उस स्थान की राजनीति जागरूकता के प्रति लगाव उसके भीतर होती है वास्तव में ''मतदान मनोवैज्ञानिक तत्वों से प्ररित एक गूढ राजनीतिक प्रक्रिया है''[8] जो अनेक आन्तरिक तथा बाहरी तत्वों से प्रभावित होती है।
3. **अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन** – भारत के समस्त हिमालयी व उपहिमालयी राज्यों की अवस्थिति चीन जैसे साम्राज्यवादी राष्ट्र की की सीमाओं से लगी है इस कारण इन राज्यों से होने वाला पलायन अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्य को भी प्रोत्साहन देता है जीन द्वारा चमोली के पार्वती कुण्ड, जम्मू कश्मीर के अक्साई चिन, का 20 मांग, गलवान घाटी तथा अरूणाचल प्रदेश के तवांग क्षेत्र डोकसाम नाथुला पर बार बार अतिक्रमण के प्रयास इसके स्पष्ट उदाहरण है।

4. **संसाधनों का दुरूप्रयोग** – संसाधन एक ऐसा स्रोत है जिसका उपयोग मनुष्य अपनी इच्छापूर्ति के लिए करता है किसी भी योजना की सार्थकता तब है जबकि उसका लाभ उस वर्ग तक पंहुचे जिसके लिए योजना का खाका खींचा गया है अगर लक्षित व्यक्ति लाभ से वंचित रहता है तो योजना न केवल बेमानी साबित हो जाती है बल्कि संसाधनों का भी दुरूप्रयोग होता है पलायन से न केवल शहरी प्रदेशों के संसाधनों पर अत्यधिक दबाव बढता है बल्कि उन प्रदेशों, जहां से पलायन हो रहा है वहां के संसाधनों का दोहन तेजी से होने के कारण संसाधनों का दुरूप्रयोग होता है।
5. **राजनीतिक – आर्थिक पिछ़ड़ापन** – हिमालयी तथा उपहिमालयी क्षेत्रों में पलायन के कारण राजनैतिक तथा आर्थिक पिछ़ड़ापन पाया जाता है। इन क्षेत्रों में अधिवास के प्रतिरूप आरीय, रेखीय, खण्डित या विदिभ अवस्थाओं में पाये जाने के कारण विभिन्न सरकारी योजनाएँ, परिवहन, स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार पहुँचाना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। जिसके कारण अधिक व्यय तथा कम आय की संभावना में ये क्षेत्र पिछ़ड़ेपन की अवस्था को प्राप्त करते हैं।
6. **आत्मनिर्भरता का अभाव** – हिमालयी क्षेत्रों से पलायन करने वाले प्रवासी दूसरे बड़े शहरों में छोटी–मोटी नौकरी कर अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति अवश्य करते हैं किन्तु ऐसे बहुत कम उदाहरण है कि लोग इसमें सफल होते हैं। ज्यादातर लोग पलायन तो अवश्य कर लेते हैं किन्तु जीवन भर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तक नहीं कर पाते। जिससे उनके भीतर आत्मनिर्भरता का अभाव बना रहता है।
7. **राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा** – हिमालयी राजयों से पलायन राष्ट्रीय सुरक्षा को भी खतरा उत्पन्न कर रहा है। उत्तराखण्ड पलायन आयोग की 2018 की रिपोर्ट बताती है कि 3946 गाँवों से 1,18,981 व्यक्ति स्थायी रूप से पलायन कर चुके हैं। जबकि 6338 गाँवों से 3,83,626 व्यक्तियों ने अस्थायी रूप में गांवों से पलायन किया है तथा 1702 गांव ऐसे भी है जो पूरी तरह जनविहिन हो गए हैं। इनमें से अधिकतर सीमावर्ती क्षेत्र चीन से लगे गांव हैं। उत्तर में हिमालयी क्षेत्र से पलायन होने के कारण आतंकवाद की घटनाओं में वृद्धि हुई है। अमेरिका के राष्ट्रपति रीगन का कथन है– आतंकवाद एक बर्बर कार्यावाही है, आतंकवाद का समर्थन करने वाले लोग बहशी लोग है।
8. **सामाजिक, सांस्कृतिक अलगाववाद** – हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर सामाजिक सांस्कृतिक पिछ़ड़ेपन तथा सांस्कृतिक भिन्नता के कारण अलगाववाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि का जन्म होता है जिसके प्रभाव से राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव देखने को मिलता है। साम्प्रदायिकता एक रोग है और वह भी संक्रामक – रामधारी सिंह दिनकर।
9. **क्षेत्रवाद की भावना का विकास** – क्षेत्रीयवाद से तात्पर्य एक देश में या देश के किसी भाग में उस छोटे से क्षेत्र से है जो आर्थिक, भौगोलिक, सामाजिक आदि कारणों से अपने पृथक अस्तित्व के लिए जागरूक है। हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों की राजनीति, मैदानी तथा दक्षिण भारतीय राज्यों की राजनीति से पृथक अस्तित्व रखती है। हिमालयी राज्यों में सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक घटनाएँ – रीतिरिवाज तथा परम्पराएँ, इन्हें पृथक् अस्तित्व की ओर प्रेरित करती है। जिससे क्षेत्रवाद की भावना का उदय होता है। इसके प्रमुख उदाहरणों में हिमालयी राज्य के रूप में उत्तराखण्ड का निर्माण होना तथा पूर्वात्तर में गोरखालैण्ड, बोडोलैण्ड जैसे नए राज्यों की माँग करना शामिल है।
10. **पृथक् अस्तित्व की माँग तथा आन्दोलनों का जन्म/उदय** – हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में राजनीतिक हितों की पूर्ति तथा सत्ता की प्राप्ति की इच्छा के कारण प्रायः पिछ़ड़ेपन, भाषावाद, क्षेत्रवाद, भौगोलिक स्थिति, अस्थाई विकास कार्य, आपदाएँ, पर्याप्त विकास का अभाव तथा अन्य कारण पृथक् अस्तित्व की मांग करते हैं। यह मांग जन आन्दोलन, धरना, प्रदर्शन, हड़ताल आदि को जन्म देती है। कभी–कभी तो भारत में राज्य सरकारें केन्द्रीय सरकार पर दबाव डालने के लिए इसका प्रयोग करती है।

निष्कर्ष

पलायन की समस्या पर्वतीय (उच्च हिमालयी तथा उपहिमालयी) राज्यों के लिए गंभीर समस्या है। जिसके कारण इन राज्यों में प्रायः आर्थिक पिछ़ड़ापन, जनसंख्या असन्तुलन, रोजगार का अभाव, उत्पादन का निम्न स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, संचार सुविधाओं का अभाव तथा अनेक संकट एवं आपदाएं पाई जाती है। जनसंख्या को हिमालयी राज्यों में बसाकर अप्रत्यक्ष सैनिक के रूप में राष्ट्र की एकता–अखण्डता तथा सम्प्रभुता की रक्षा की जा सकती है। जैसे – भारत–चीन सीमा पर बसा भारत का अंतिम गांव माणा। इन क्षेत्रों में पलायन से जुड़ी समस्याओं का समाधान करके शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, रोजगार, पर्यटन, स्वरोजगार आदि को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है। नवाचारी प्रयास तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर हिमालयी तथा उपहिमालयी राज्यों में पैदा होने वाली पलायन की समस्या का समाधान किया जा सकता है। पलायन का प्रभाव सार्थक तथा निरर्थक दोनों हो सकता है। जहां निरर्थक प्रभाव का दृष्टिकोण है। वहां – मतदान का निम्न प्रतिशत पिछ़ड़ापन, गरीबी, अशिक्षा, जागरूकता का अभाव, असहभागीता आत्मनिर्भरता का अभाव, क्षेत्रवाद तथा पृथक् अस्तित्व की मांग उठने लगती है। पलायन के सार्थक प्रभावों में – पारिस्थितिकीय सन्तुलन, जैव विकास आदि शामिल है।

सन्दर्भ सूची

1. आशीर्वादम, ए.डी., मिश्र, कृष्णकान्त. राजनीति विज्ञान. एस चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा0) लिमिटेड. पृष्ठ 229.
2. प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा निष्कर्ष।
3. सिंह, सविन्द्र. (2020). पर्यावरण भूगोल का स्वरूप. प्रवालिका पब्लिकेशनः इलाहाबाद. पृष्ठ 470.
4. www.m.wikipedia.org
5. सिंह, सविन्द्र, (2020). पर्यावरण भूगोल का स्वरूप. प्रवालिका पब्लिकेशन्सः इलाहाबाद. पृष्ठ 362.
6. माहेश्वरी, एस.आर. (2017). भारत में स्थानीय शासन. लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाश. पृष्ठ 07.
7. बसु, दुर्गादास. (1999). भारत का संविधान एक परिचय. प्रेंटिस हाल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0. पृष्ठ 414.
8. फडिया, प्रो.बी.एल. (2022). डा0 कुलदीप भारतीय शासन एवं राजनीति. साहित्य भवन पब्लिकेशन. पृष्ठ 644.
9. https:hi.m.wikipedia.org
10. सिंहल, डॉ. एस.सी. (2016). समकालीन राजनीतिक मुद्दे. लक्ष्मी नारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ 209.
11. जैन, डॉ. पुखराज. (19990). भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास. साहित्य भवनः पब्लिकेशन. पृष्ठ 265.
12. जैन, डॉ. पुखराज. (1999). भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन तथा संविधान. साहित्य भवन पब्लिकेशन. पृष्ठ 379.
13. सिंहल, डॉ. एस.सी. (2010). समकालीन राजनीतिक मुद्दे. लक्ष्मी नारायण अग्रवालः आगरा. पृष्ठ 242.

4

कोविड–19 का बदलती उपभोग प्रवृति पर प्रभाव–एक अवलोकन

विनीता भौर्याल
शोधार्थी
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लोहाघाट, चम्पावत

डॉ० अर्चना त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
लोहाघाट, चम्पावत

सारांश

वर्तमान अध्ययनों से पता चलता है कि कोविड–19 ने उपभोक्ता ने उपभोक्ता व्यवहार को बहुत अधिक प्रभावित किया है। कोविड–19 महामारी ने कई तरीको से हमारे जीवन में बदलाव किया है। कोविड–19 से हमारे काम करने, खाने–पीने, कारोबार करने तथा खरीददारी करने के तरीकों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए है। पुरानी रिसर्च से संकेत मिलता है कि संकट के समय उपभोक्ताओं के व्यवहार में परिवर्तन आते है। कोविड–19 के दौरान विश्व की अर्थव्यवस्था में पिछले दो साल काफी कठिन रहे है। इसने 6.5 मिलियन लोगों को संक्रमित किया है। तथा इससे लाखों लोग बेरोजगार भी हुए है। कोविड–19 के दौरान लगाए गए लॉकडाउन से लोगों में काफी अधिक मानसिक तनाव भी देखने को मिला है। इसके सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव के परिणामस्वरूप लोगों ने अपना पैसा कहाॅ खर्च करना है और कैसे खर्च करना है यह सब परिवर्तित कर दिया। किर्क तथा रिफकिन के अनुसार महामारी के दौरान उपभोक्ताओं ने कई प्रकार के असामान्य व्यवहार प्रदर्शित किए है। यह भी देखा गया है कि उपभोक्ताओं ने ब्रांडों एवं उत्पादों को बदल दिया है। वे स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति अधिक संवेदनशील हो गए है। वर्तमान में विभिन्न अध्ययनों में उपभोक्ता की जीवन–शैली में बदलाव एवं जागरूकता के स्तर में बदलाव के कारण उपभोक्ता के उपभोग व्यवहार में बदलावों का विश्लेषण किया गया है। यह शोध मुख्य रूप से कोविड–19 से उपभोक्ताओं के व्यवहार में परिवर्तनों के अध्ययन पर केन्द्रित है। तथा कोविड–19 के कारण उपभोक्ताओं के खरीद व्यवहार में क्या–क्या परिवर्तन हुए है इसका पता लगाना है। निष्कर्ष बताते है कि कोविड–19 ने लोगों को अलग तरीके से जीने के लिए मजबूर किया है। तथा महामारी के परिणामस्वरूप वे अलग तरीके से खरीददारी कर रहे है। घर के अन्दर रहने के कारण ऑनलाइन खरीददारी बढ गयी है। कोविड–19 से नौकरियों में अस्थिरता आयी है।

मुख्य शब्द

उपभोक्ताओं के उपभोग व्यवहार में परिवर्तन, कोविड–19 का प्रभाव, उपभोक्ता व्यवहार।

प्रस्तावना

देखा गया है कि कोविड–19 से उपभोक्ता व्यवहार में भारी परिवर्तन आया है। कोविड–19 एक वैश्विक महामारी है, जिसने पूरे विश्व को प्रभावित कर दिया। इसके कारण उपभोक्ता क्रय व्यवहार में काफी परिवर्तन देखने को मिला है क्योंकि बहुत से लोगों ने अपनी नौकरी खो दी। अनेक लोग बेरोजगार हो गए। साथ ही लॉकडाउन भी उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तनन का प्रमुख कारण है। इस बात का अंदाजा नही था कि यह महामारी इतनी गम्भीर भी हो सकती है और इतने लम्बे समय तक भी चलेगी। 2020 की शुरूआत निराशाजनक रूप से कोविड–19 के प्रकोप के साथ हुई थी, इसके बाद कोरोनावायरस संकट का प्रभाव अभूतपूर्व रहा है। अर्थव्यवस्था पर भी कोरोनावायरस का प्रभाव विनाशकारी रहा है। अर्थव्यवस्था को कोरोनावायास महामारी से बडे पैमाने पर नुकसान उठाना पडा है। इस महामारी ने कई लोगों की जीवनशैली को प्रभावित किया है। कोविड–19 महामारी से स्कूल बंद हो जाने से बच्चों की पढाई पर काफी अधिक प्रभाव पडा। क्योंकि महामारी के दौरान बच्चे सीखने के जरूरी साधनों से दूर हो गए। ह्यूमन राइट्स वॉच की सीनियर एजूकेशन रिसर्चर एलिन मार्टिनेज ने कहा कि महामारी के दौरान लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित हो गए। उन्होंने अप्रैल 2020 से अप्रैल 2021 के बीच 470 से अधिक छात्रों, अभिभावकों का साक्षात्कार किया। कोविड–19 की उत्पत्ति दिसम्बर 2019 में चीन के वुहान शहर में हुई थी। उसके पश्चात् यह महामारी बडी तेजी से पूरे विश्व में फैल गयी। कोविड–19 महामारी ने विश्व स्तर पर उपभोक्ताओं को डिजिटलीकरण के लिए प्रेरित किया है। और उनकी खरीदी व्यवहार को भी परिवर्तित किया है।

हाल ही की खोज से पता चलता है कि कोविड–19 एक खतरनाक बीमारी के रूप में सामने आयी है। कोरोना वायरस का संक्रमण व्यक्ति के खाँसने, छीकने व उसके मुँह से निकलने वाली लार की बूँदों से फैलता है। कुछ रोगियों में दन दर्द, गले में खराश तथा दस्त लगने जैसी आदि समस्याएँ उत्पन्न होती है। आमतौर पर ये लक्षण हल्के होते है। और लोग संक्रमण का शिकार हो जाते है। देखा गया है कि लगभग 80 प्रतिशत लोग बिना किसी उपचार के ठीक हो जाते है। माना गया है कि कोरोना वायरस से ग्रसित 6 व्यक्तियों में से लगभग एक व्यक्ति गम्भीर रूप से बीमार होता है। उसे साँस लेने में कठिनाई होती है। उच्च रक्तचाप वाले लागों, वृद्ध व्यक्तियों, बीमार व्यक्तियों व मधुमेह रोग से ग्रसित व्यक्तियों में यह बीमारी विकसित रहने की सम्भावना अधिक रहती है। भारत में यहाँ के लोगों के लिए 2021 तक यहाँ के लोगों के लिए कोरोना के बचाव के लिए तीन टीके उपलब्ध है। कोविशील्ड, कोवैक्सिन और स्पुतनिक। जिसका लाभ लगभग भारत के हर नागरिक को मिला। ये टीके कोविड–19 से सुरक्षा हेतु कारगर साबित हुए। लेकिन इनमें से कोई भी टीका व्यक्ति को पूरी तरह प्रतिरक्षित नही करता है। 11 मार्च 2020 को विश्व व्यापार संगठन ने इस बीमारी को विश्वव्यापी बीमारी घोषित कर दिया। उस समय यह महामारी प्रत्येक देश के लिए एक बडी चुनौती बन गया था। सरकार ने चिकित्सा व्यवस्था के विस्तार के साथ–साथ देश के नागरिकों के लिए नवाचार का मार्ग अपनाया ताकि इस समय लॉकडाउन तथा सोसल डिस्टेंसी के दौरान लोग समय तथा धन का उपयागे कैसे कर पाएँ। सरकार द्वारा ऐसे नियम बनाए गए जिनके अंतर्गत स्कूलों एवं कॉलेजों में बच्चों को डिजिटल तरीके से पढाया गया ताकि कोरोनाकाल में दोंनो सुरक्षित रहे। लोगों को सिखाया गया कि दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित किए बिना अपने सम्बन्धों का विकास कैसे किया जाए।

कोविड–19 का प्रसार जनवरी 2020 में प्रारम्भ हो गया था, जिसके पश्चात् भारत सरकार ने 24 मार्च को कोविड–19 के हो रहे प्रसार की श्रृंखला को रोकने के लिए 21 दिनों के लिए पूरे देश में तालाबंदी का आदेश दिया था। उस समय कोरोना वायरस के कम केश देखने को मिल रहे थे, उस समय लगभग 564 मामलों की पुष्टि पूरे देश में हुई थी। लेकिन उस समय परीक्षण भी काफी कम किए गए थे। जिसके कारण वास्तविक संक्रमत व्यक्तियों की संख्या का अनुमान लगाना अथवा जानना असम्भव था, लेकिन उसके पश्चात् कोविड–19 के मामले दिन –प्रतिदिन बढते ही जा रहे थ। कोरोना वायरस से भारत सबसे प्रभावित देशों में से एक है। इसका कारण सरकार द्वारा उठाए गए अनावश्यक कदम है। सरकार ने इसकी रोकथाम हेतु अनावश्यक कार्य रोक दिए थे और लोगों को अपने घरों में रहने के निर्देश दिए थे। इन्ही सब को देखते हुए भारत सरकार ने 17 मई तक पूरे देश में लॉकडाउन लगा दिया था, इसके पश्चात् भी 31 जुलाई तक लॉकडाउन बढ गया था लेकिन उसमें कुछ–कुछ छूट दी गई थी। दिसम्बर 2019 की शुरूआत में चीन के वुहान शहर में एक गम्भीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम के कारण कोरोना वायरस रोग की शुरूआत हुई। विश्व व्यापार संगठन ने 30 जनवरी 2020 को अंतराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया। 14 फरवरी 2020 तक वैश्विक स्तर पर 49,053 प्रयोगशालाओं की पुष्टि हुई तथा 1,381 मौतें हुई थी। कोविड–19 के दौरान लोग अपने अंदर रहने के लिए मजबूर कर दिया था। लॉकडाउन के कारण ऑनलाइन शॉपिंग करने के लिए प्रेरित हुए।

साहित्य की समीक्षा

दास देवद्युति, सरकार आशुतोष (फरवरी 2020) – के अनुसार कोविड–19 ने उपभोक्ताओं के बदलते जीवनशैली एवं उपभोक्ताओं के खरीद व्यवहार को काफी अधिक प्रभावित किया है। उनके अध्ययन से पता चलता है कि इस महामारी ने दूसरों की तुलना में असंगठित क्षेत्रों के उपभोक्ताओं को अधिक प्रभावित किया है। निष्कर्ष बताते है कि कोविड–19 ने लोगों के जीने के तरीकों को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है।

राजेश्वरी पी एवं विजय सी (दिसम्बर 2020) – के अनुसार कोविड–19 महामारी ने पूरे विश्व को मौलिक रूप से बदल दिया है। कोविड–19 के दौरान उपभोक्ता खरीद व्यवहार की पहचान करने का एक प्रयास है। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि कोविड–19 महामारी ने उपभोक्ता के खरीद व्यवहार में बुनियादी बदलाव किए है। इस दौरान उपभोक्ताओं द्वारा फलों, सब्जियों पर अधिक खर्च किया गया।

बिसारिया चारू (2021) – ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ठ किया कि इस जानलेवा वायरस ने पूरी मानव जाति को अपने घरों में कैद होने के लिए मजबूर कर दिया। तथा कई व्यवसाय स्थायी रूप से बंद हो गए। अनेक लोगों को बेरोजगारी का सामना करना पडा। उनके अनुसार कोविड–19 ने सूचना पौद्योगिकी, ई–कॉमर्स, डेयरी उत्पाद आदि पर आधारित उद्योग बहुत अच्छे से फले–फूले। यह देखा गया है कि लॉकडाउन ने नेट पैक तथा इंटरनेट की खपत बढी है क्योंकि लॉकडाउन के दौरान कई लोगों ने फोन से पढाई तथा वर्क फाम होम जॉब की थी। लॉकडाउन के कारण आवश्यक वस्तुएँ जैसे मसाले, फल, सब्जियॉ, तेल, नमक, नमकीन, बिस्कुट, चिप्स आदि में कोई खास बदलाव नही आए है। वहीं साथ ही इस दौरान सौंन्दर्य उत्पाद, फीर्नीचर, स्टेशनरी खेल के सामान आदि उत्पादों की खरीद में कमी आई है। साथ ही लॉकडाउन के दौरान मोबाइल फोनों की खरीद में काफी बढोतरी देखने को मिली है।

अहमद मसूद (जनवरी 2021) – के अनुसार कोविड–19 ने हमें वर्तमान की परस्थितियों को देखते हुए तथा भविष्य में इनके नतीजों को देखते हुए एक नई दुनियॉ को विकसित करने के लिए मजबूर किया है कि हम इस दुनिया से परे किसी अन्य दुनियाँ के बारे में सोचें। इस महामारी ने लोगों की पूरी तरह से जीवन परिवर्तित किया है।

देबनाथ सुचरिता (जून 2020) – ने अपने अध्ययन में कोलकाता शहर के विभिन्न क्षेत्र के 152 उत्तरदाताओं का अध्ययन किया। यह अध्ययन नमूना तकनीकि का प्रयोग करके ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। जिससे यह निष्कर्ष निकला कि कोरोना वायरस महामारी से लोगों का खरीद व्यवहार काफी अधिक प्रभावित हुआ है। उनके सर्वेक्षण के अनुसार उत्तरदाताओं की मासिक आय 0 से 30 हजार थी। तथा 25 से 3 आयु वर्ग के उपभोक्ता का खरीद व्यवहार सबसे अधिक प्रभावित हुआ है।

इउलियाना सैटिना, वाइरेनियन सिमोना, ओपरेना एलिन एवं रेडु लेस्कु वायलेट (मार्च 222) – के अध्ययन के अनुसार कोविड–19 ने लोगों की इंटरनेट सम्बन्धी आदतों को काफी अधिक प्रभावित किया है। इन्होंने अपने शोध में ऑनलाइन शॉपिंग का उपयोग जारी रखने के लिए उपभोक्ताओं के इरादों पर उनके प्रभाव की जॉच करता है। उनके अनुसार कोविड–19 महामारी के कारण पूरा विश्व प्रभावित हुआ है। उपभोक्ताओं की ऑनलाइन खरीददारी और ऑनलाइन भोजन की मॅग में वृद्धि की है। लॉकडाउन ने लोगों की आदतों को नाटकीय रूप से बदल दिया है।

जाज लेवेंटे, वैलिंट सिसाबा और हैरिस लॉयड सी – के अनुसार कोवड–19 महामारी ने ऑनलाइन विक्री के विकास में एक अप्रत्याशित अस्थिरता को प्रेरित किया है। जिससे खुदरा विक्रेताओं के लिए माँग में बार–बार होने वाली माँग का सामना करना काफी मुश्किल हो गया है।

तियान जिनफंग (मार्च 2022) – के अनुसार कोविड–19 से दुनिया भर के लोगों में व्यावहारिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाला है। इससे उपभोक्ता खरीद व्यवहार काफी अधिक प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के दौरान जनसंख्या की आवाजाही पर सरकार पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध के कारण लोगों की आजीविक काफी अधिक प्रभावित हुई है। इस दौरान लोग अकेलेपन से काफी अधिक प्रभावित हुए। कुछ लोगों ने तो इस अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए शराब, ड्रग्स आदि का सहारा लेना शुरू कर दिया।

अतः उनके अध्ययन से स्पष्ठ हुआ है कि कोविड–19 महामारी से लोगों के व्यवहारों एवं भावनाओं तथा व्यक्ति के उपभोग में काफी अधिक परिवर्तन परिलक्षित हुए। लोगों की ऑनलाइन खरीदी व्यवहार में काफी बढोतरी हुई है।

आपदा मनोविज्ञान के अनुसार विभिन्न अवधियों की आपात स्थितियों के कारण मनोवैज्ञानिक परिवर्तन क्रय व्यवहार की विशेषताओं को दिखाते है।

सूद सपना (जून 2020) – ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि कोविड–19 महामारी के कारण हुए लॉकडाउन ने विश्व की वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। तथा साथ ही उपभोक्ताओं की खरीददारी के व्यवहार तथा प्राथमिकताओं को पूरी तरह बदल दिया है। इसके पश्चात् कई उपभोक्ताओं ने डिजिटल तकनीकि को अपनाया जिससे उन्हें कई जाना न पडे। कोविड–19 की दूसरी लहर ने बाजार में अस्थिरता पैदा की है। उपभोक्ता के रवैये में बदलाव देखने को मिले है। जिससे व्यक्ति की आवश्यक जरूरतों जैसे भोजन, किराये आदि के लिए धन की बचत करना शुरू कर दिया है।

एगर लुडविक – ने अपने अध्ययन में सह स्पष्ठ किया कि कोविड–19 ने ऑनलाइन खरीददारी को प्रभावित किया है। इससे उपभोक्ता व्यवहार में असमानताऍ आयी है। महामारी के दौरान लगभग सभी उपभोक्ताओं ने अपने खरीद व्यवहार को बदल दिया।

अतः कोविड–19 महामारी ने पूरे विश्व के समाजों एवं अर्थव्यवस्था को गंभीर रू्प से प्रभावित किया है। तथा प्रत्येक समाज के विभिन्न क्षेत्रों को अलग–अलग तरीके से प्रभावित किया है। उनके शोध का प्रमुख उद्देश्य कोविड–19 महामारी के प्रभाव और आदतों की जॉच करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार है–

1. कोविड–19 महामारी का उपभोक्ताओं के उपभोग सम्बन्धी व्यवहार में पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
2. कोविड–19 महामारी के दौरान उपभोक्ता व्यवहार एवं उनके खरीद पैटर्न में बदलावों का अध्ययन करना।

अध्ययन की आवश्यकता – वर्तमान में कोविड–19 ने पिछले कुछ समय से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। यह हाल ही में खोजे गए कोरोना वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। यह बीमारी खासने वाले व्यक्ति से निकलने वाली श्वसन बूँदों के माध्यम से फैलती है। क्या कोविड–19 से लोगों के जीवन पर बदला आया? कोविड–19 से लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पडे या फिर नकारात्मक? इन्ही प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए यह शोध कार्य प्रारम्भ किया गया है।

शोध पद्यति – प्रस्तुत अध्यन में तथ्यों के संकलन हेतु द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रकाशित शोध पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, बेवसाइटों, समाचार पत्रों इंटरनेट तथा विषय से सम्बन्धित शोध पत्रों का प्रयोग करके ऑकडों का संकलन किया गया है।

कोविड–19 और बदलती उपभोग प्रवृति –एक विश्लेषण – कोविड–19 महामारी ने लोगों के आहार अर्थात् खाने के व्यवहार व तनाव नींद आदि में काफी अधिक परिवर्तन किए है। इस महामारी से बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। जैसे–जैसे कोरोनावायरस पूरी दुनिया में फैलता गया, वैसे–वैसे बच्चों का जीवन बदलता गया। बच्चों में सामाजिक सम्पर्क को बढाने के लिए डिजिटलीकरण को काफी अधिक बढावा मिला। हालाकि डिजिटल उपकरणों के अधिक उपयोग के नकारात्मक प्रभाव है। होम स्कूलिंग एवं सामाजिक संम्बन्धों की गुणवत्ता व्यक्तिगत सम्बन्धों से कम होती है।

कोविड–19 का प्रभाव लोगों की नौकरियों, गरीबी, के साथ–साथ अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्र पर पडा। उद्योग जगत के सभी क्षेत्र प्रभावित हुए। घरेलू हिंसा में वृद्धि, मानसिक बीमारी जैसे आदि सामाजिक प्रभाव भी देखने को मिले है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कोविड–19 महामारी काफी हद तक विघटनकारी रहा है। 24 मार्च को नरेन्द्र मोदी द्वारा 21 दिन के लिए देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा की गयी। कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन होने से उद्योग–धंधे व सरकारी व्यवसाय काफी अधिक प्रभावित हुए है। एक अनुमान के अनुसार लॉकडाउन के कारण लगभग 14 करोड लोगों ने अपना रोजगार खो दिया था। लॉकडाउन से सबसे ज्यादा प्रभाव औपचारिक क्षेत्र पर पडा है। कोविड–19 के कारण लोगों को घर में काम करने के लिए खुद को ढालना पडा है। कोरोना वायरस ने लोगों के शिक्षित होने के तरीके में परिवर्तन कर दिया। लॉकडाउन के कारण स्कूल बंद हो गए। जिससे एक अनूमान के मुताबिक लगभग 421 मिलियन बच्चे प्रभावित हुए। लोगों की दैनिक गतिविधियॉ प्रभावित हो गई। कोविड–19 महामारी कई तरीकों से हमारे जीवन में बदलाव लाई है। पुराने शोधों से पता चलता है कि महामारी से उपभोक्ताओं क व्यवहार में बदलाव आए है। लोगों के जीवन जीने के तरीकों में बदलाव आया है। लोगों ने बडी तेज रफ्तार से डिजिटल क्रांति को अपनाया है। ई–कॉमर्स के ज्यादा इस्तेमाल के साथ ही खरीददारी का डिजिटलाइजेशन भी हो गया है। वर्तमान में उपभोक्ता केवल अपनी बुनियादी जरूरतों पर ध्यान दे रहे है। कोरोना महामारी के कारण हमारे जीवन जीने के तरीकों में बदलाव आया है। कोरोना महामारी के दौरान लोगों को सामाजिक–आर्थिक समस्याओं के साथ–साथ मानसिक समस्याओं का भी सामना करना पडा था। लेकिन यह देखा गया है कि लोगों ने पर्यटन और यात्राओं को कोरोना महामारी से उत्पन्न नकारात्मक वातावरण को दूर करने के रूप में देखा है। इसीलिए आवश्यक है कि देश एवं राज्य स्तर पर पर्यटन अर्थव्यवस्था को सुधारा जाए।

सन्दर्भ सूची

1. दास, देवद्युति., सरकार, आशुतोष. Impact of covid-19 on changing consumer behaviour: lesion from an emerging economy. *International journal of consumer studies*. volume 46. Issue 3. Pg. **692-715.**
2. Rajeswari, P., Vijay, C.V. The impact of covid-19 on consumer behaviour in India.
3. Debnath, Sucharita. Impact of covid-19 on consumer purchase behaviour in retail sector-study based in Kolkata area-Indian Institute of Management Calcutta.
4. Iuliana, Cetina., Vinerean, Simona., Opreana, Alian., Radulescu, Violeta. (2022). The impact of covid-19 pandemic on consumer online shopping behaviour- An enprirical model. March. Economic Computation and economic cybernetics studies and research/ Academy of Economic Studies-56 (1/2022). Pg. **41-56.**
5. Tian, Jinfang. The impact of Consumer Purchase Behaviour Changes on the Business Model Design of Consumer Services Companies Course of covid-19.
6. Sapna Sood-Impact of Covid-19 on Consumer Behaviour in India. Conference: Sustainable Management Practices and Economic Slowdown in India: At Delhi India.
7. बिसारिया, चारू. उपभोक्ता व्यवहार पर कोविड–19 का प्रभाव. Issn-1774-631. खंड 33.

5

मेवाड़ रियासत में पाश्चात्य शिक्षा का उद्भव और विकास – एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० विमल कुमार कोली
व्याख्याता (इतिहास)
माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

सारांश

राजस्थान का गौरवशाली प्रदेश मेवाड़ त्याग तथा बलिदान के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहाँ की स्थापत्यकला, धार्मिक जीवन, संस्कृति एवं शिक्षा व्यवस्था आदि भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है। पौराणिक ग्रन्थ स्कन्दपुराण एवं बृहत्संहिता में मेवाड़ का वर्णन मिलता है। परम्परागत शास्त्रीय ज्ञानों में लिपि लेखन का ज्ञान प्रमुख था। प्रस्तर प्रशस्तियाँ तथा ब्राह्मण परिवारों संग्रहित धर्मग्रंथ इस पैतृक शिक्षा व्यवस्था के प्रमाण है। यहाँ शिक्षा के केन्द्र प्रायः धार्मिक–स्थल जैसे मठ, मन्दिर आदि में प्रारम्भिक गणित, भाषा ज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक शिक्षा व्यवस्था गुरूकुल प्रणाली पर आधारित थी लेकिन मराठा आक्रमणों से इस व्यवस्था में परिवर्तन आया। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत–ब्रिटिश सरकार के प्रयासों से अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली लागू हुई। पॉलिटिकल एजेंट कर्नल ईडन के काल में मेवाड़ में अंग्रेजी आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की शुरूआत हुई तथा शंभु–रत्न पाठशाला की नींव रखी गई। जिसमें गणित, हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत शिक्षा प्रदान की जाती थी। 1865 में यहां अंग्रेजी विषय का पठन–पाठन प्रारम्भ हुआ। यूनाइटेड प्रेसविटेरियन मिशन ने 1875 में उदयपुर नगर में एक मिशन स्कूल स्थापित किया गया। यहाँ केवल धर्म परिवर्तन करने वाले ईसाई विद्यार्थी पढ़ते थे। सन् 1900 ई. के अंत तक मिशन स्कूलों की संख्या 14 हो गई थी।

मुख्य शब्द

मिशनरी स्कूल, मेदपाट, नोबल्स स्कूल, अभिलेखागार, खगोल शास्त्र, सामन्ती शिक्षा, चोपाल, उपाश्रय, इम्पीरियल शुल्क।

प्रस्तावना

मेवाड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – संस्कृत शिलालेखों में मेवाड़ क्षेत्र के लिए 'मेदपाट' शब्द मिलता है। यह राजपूताने की महत्वपूर्ण रियासत थी। 9वीं–10वीं शताब्दी से प्राग्वट, मेदपाट और मेवाड़ नामक तीन संज्ञाओं का उल्लेख प्राप्त होता है।[1] वर्तमान समय में उदयपुर, चित्तौडगढ़, भीलवाड़ा जिलों के भू–भागों को मेवाड़ के रूप में पहचाना जाता है। राणा अमरसिंह के काल में मेवाड़ केवल चावण्ड की पहाड़ी तक सीमित रह गया लेकिन राणा सांगा द्वितीय तक मेवाड़ की सीमा पुनः बढ़ गई। मेवाड़ एक ऐसा क्षेत्र है जहॉ मनुष्य के जीवन के रक्षण, संवर्द्धन की समस्त सम्भावनाऍ हैं। मेवाड में संस्कृति के उदय से लेकर लोगों की रूचिकर शिल्प कला, धार्मिक मान्यताओं के प्रसार, शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षा में पाश्चात्य प्रभाव आदि शोध के प्रमुख विषय है। यहाँ गुहिल वंश की स्थापना से सिसोदिया तथा रावल राणा राजवंश के लगभग 70 से अधिक प्रतापी राजाओं ने शासन किया जिनके काल में ना केवल स्थापत्य कला बल्कि शिक्षा व्यवस्था का भी अभूतपूर्व विकास हुआ।

पूर्व काल में मेवाड़ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र बन गया। मेवाड़ में सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण कारण शिक्षा व्यवस्था एवं आधुनिक शिक्षा का प्रसार माना जाता है। अंग्रेजों के आने के पूर्व यहां पर शिक्षा पूर्णतया व्यक्तिगत स्तर पर आधारित थी। शिक्षा हिन्दु–पाठशालाओं और मुस्लिम मकतबों में दी जाती थी। जिनका नियंत्रण पूर्णतया यती, भट्टारको और मौलवियों के हाथों में था।[2] भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद शिक्षा की दिशा में अनेक उल्लेखनीय कार्य किये गये। 1835 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा अंग्रेजी शिक्षा का सूत्रपात करने से अंग्रेजी भाषा का महत्व बढ़ गया। मई 1862 ई. में मेवाड़ के तत्कालीन पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर ईटन

ने रीजेन्सी कौंसिल के प्रतिनिधि के रूप में भारत के गर्वनर जनरल के समक्ष मेवाड़ में स्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा। भारत सरकार ने स्कूल खोलने एवं इमारत बनाने के लिए 12,000 रूपये की स्वीकृति दे दी।[3]

जनवरी, 1863 ई. में महाराणा शंभूसिंह की अल्पवयस्कता में मेजर ईडन ने उदयपुर नगरी में प्रथम प्राथमिक राजकीय स्कूल खोला गया। इस स्कूल का नाम 'शंभूरत्न पाठशाला' रखा गया।[4] इस स्कूल में गणित, भूगोल, इतिहास, हिन्दी, उर्दू, फारसी और संस्कृत भी पढ़ाई जाती थी। 1865 ई. में इस स्कूल में अंग्रेजी का अध्यापन भी शुरू किया गया। 1873 ई. में यह स्कूल हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम दो भागों में विभाजित हो गया। 1884–85 में अंग्रेजी स्कूल को कक्षा 10वीं तक बढ़ा दिया गया। इसका नाम 'महाराणा हाई स्कूल; रखा गया।[5] 1922 ई. में महाराणा हाई स्कूल को इन्टर मीडियेट कॉलेज एवं 1945 में इसे पोस्ट डिग्री कॉलेज तक बढ़ाया गया और इसका नाम 'महाराणा भूपाल कॉलेज' रखा गया।[6] 1866 ई. में उदयपुर में एक कन्या पाठशाला खोली गई और 1870 में एक अंग्रेज को अंग्रेजी पढ़ाने हेतु 170 रूपये के मासिक वेतन हेतु रखा गया।[7] 1872 ई. में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ में भी दो प्राथमिक विद्यालय खोले गये। 1807 में इसको सैकण्ड्री विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत किया गया।[8]

इसाई मिशनरियों ने मेवाड़ के गाँवों में स्कूली शिक्षा प्रारम्भ की। द यूनाइटेड प्रेसबिटेरियन ने भूवाना, नाल, आहर, मावली आदि स्थानों पर देशीय स्कूल खोले। 1883 ई. में शेफर्ड ऑफ यूनाइटेड प्रेस बिटेरियन ने खैरवाड़ा में लड़कों तथा 1885 ई. में लड़कियों का स्कूल खोला। मिशनरीज ने मेवाड़ के पिछडे इलाकों में विद्यालय खोलने का कार्य किया एवं मेवाड़ सरकार को स्कूल खोलने के लिए प्रेरित किया। 1901 ई. में उदयपुर में बालिका विद्यालय सहित 5 स्कूल ओर मेवाड़ जिले में कुल 36 स्कूल थे। मेवाड़ में शिक्षित लोगों का प्रतिशत कुल आबादी का 4 प्रतिशत था।[9] 23 जनवरी, 1923 में मेवाड़ के जागीरदारों के बच्चों के लिए नोबल्स प्राईमरी स्कूल खोला गया। 1929 में उसे हाई स्कूल तक क्रमोन्नत किया गया।[10] 1929 में मेवाड़ राज्य द्वारा मेवाड़ से बाहर पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्तियाँ शुरू की गई। 1930 में प्राचीन भाषाओं की शिक्षा देने के लिए 'फतेह भूपाल विद्यालय' खोला गया। किसानों को खेती के नये तरीके सुझाने हेतु उदयपुर में 'लम्बरदार विद्यालय' भी खोले गये। 1946 में महाराणा भूपाल कॉलेज में एल.एल.बी. की पढ़ाई शुरू की गई।[11]

मेवाड़ के इन अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों को यहां के पाठ्यक्रम में अमेरिका, फ्रांस की क्रान्ति पढ़ाई जाने लगी जिससे यहां के विद्यार्थियों में क्रान्तिकारी विचारधारा का संचार हुआ एवं यूरोप की स्वतंत्रता, समानता एवं प्रजातन्त्र के राजनीतिक विचारों से परिचित हुए। मेवाड़ में सर्वप्रथम 1868 ई. में विद्यार्थियों को विधिवत परीक्षा के माध्यम से अगली कक्षा में क्रमोन्नत करने की प्रणाली प्रारम्भ की।[12] राजपूताना के ए.जी.पी. आर.एच. कीटिंग ने 1868 में सिरोही, जोधपुर, अलवर, जयपुर की यात्रा की तो यहां विद्यार्थियों में प्रचलित परीक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में आयोजित सम्मेलन की अध्यक्षता भी की थी। इस प्रकार मेवाड़ के विद्यार्थियों को अध्ययनरत कक्षा से उच्च कक्षा में क्रमोन्नत करने के लिए परीक्षा प्रणाली का निर्धारण किया जा चुका था।

शिक्षा के पाठ्यक्रम का निर्धारण

मेवाड़ में 19वीं सदी के प्रथम दशक में राज्य का प्रमुख उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को साक्षर बनाना था लेकिन अक्षर ज्ञान तक शिक्षा को सीमित रखना शिक्षा के मार्ग में एक बाधा के समान था। शिक्षा के मार्ग को विकसित करने के लिए शिक्षाविदों ने एक सुनियोजित पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जिसमें व्याकरण, संस्कृत, उर्दू, फारसी, गणित, आंग्ल भाषा, खगोल शास्त्र आदि विषयों को शामिल किया गया।[13] इन विषयों में मूल रूप से मनुस्मृति, भाषा, तीन–उपदेश, लीलावती की पोथी, रघुवंश आदि का अध्ययन कराया जाता था। उर्दू, फारसी के लेखन के लिए कायदा–ए–तालीम से सम्बन्धित पुस्तक, शम्भूरत्न, हकीकत आदि पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता था। उर्दू पढ़े छात्र फारसी भी पढ़ सकते थे। इन पुस्तकों में व्याकरण, प्रार्थना पत्र लेखन विधि, फलों एवं जानवरों के नामों का उल्लेख तीनों भाषाओं में होता था। 1865 ई. में मेवाड़ के कुछ प्राथमिक विद्यालयों में अंग्रेजी का अध्ययन अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। अंग्रेजी मिशनरी अध्यापक रॉबिन्सन ने 1867 में उदयपुर की यात्रा की और यहाँ विद्यालयों में पढ़ाये जा रहे अंग्रेजी पाठ्यक्रम की प्रशंसा की।

1868 ई. में यहाँ 583 विद्यार्थियों में से मात्र 30 विद्यार्थी ही अंग्रेजी भाषा को ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ते थे। शिक्षक विधि में प्राचीन परम्परागत रागात्मक पद्धति का अनुशरण किया जाता था, उस समय आधुनिक शिक्षा की चित्रात्मक पद्धति का प्रयोग नहीं होता था। केवल वर्णों को लय में याद कराया जाता था। शिक्षा पाठ्यक्रमों में 1930 ई. में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया जिसके अन्तर्गत कृषि विषयों को पढ़ाया जाने लगा जिससे आधुनिक कृषि का विकास हो सके इसलिए पाठ्यक्रम में कृषि विषयों को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया गया।[14]

पाठ्यक्रम में सामान्य ज्ञान, व्यवहारिक ज्ञान का बोध प्राथमिक कक्षाओं में कराया गया। साथ ही चिकित्सा, स्काउटिंग, सहकारी बैंक आदि का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाने लगा। 1939 में मेवाड़ में शिक्षा के पाठ्यक्रम में चित्रकला को शामिल किया गया तथा अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों को संगीत का भी प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया और धीरे–धीरे 1942 ई. तक पाठ्यक्रम के प्रमुख विषयों के इतिहास, गणित, विज्ञान, संगीत, भूगोल आदि का अध्यापन कार्य प्रारम्भ हो चुका था।[15]

1948 ई. तक प्राथमिक कक्षाओं में से अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया था हालांकि 1929 ई. के राजपूताना

अजमेर मेरवाड़ा सहित ग्वालियर एवं मध्य भारत के नये संयुक्त बोर्ड की स्थापना की गई जिसका मुख्यालय अजमेर रखा गया। अब नये विषयों का अध्ययन करने के लिए संयुक्त प्रान्त बोर्ड से अनुमति मान्यता लेनी पड़ती थी। पाठ्यक्रम के वैकल्पिक विषय में विद्यार्थियों को कोई दो विषय लेने पड़ते थे और लिखित परीक्षा का माध्यम हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू में से एक को चुनना पड़ता था। 1942 ई. में मेवाड़ में प्रमुख वैकल्पिक विषयों में प्राचीन एवं आधुनिक भारत का इतिहास, गणित, अर्थशास्त्र, भौतिकी, तर्कशास्त्र, रसायन, हिन्दी आदि थे।[16]

1936 में उदयपुर शहर के विद्यालयों में सिलाई, कढ़ाई, फोटोग्राफी टाईपिंग आदि की पढ़ाई प्रारम्भ हुई। कृषि की पढ़ाई सर्वप्रथम भीम एवं उदयपुर के प्रारम्भ हुई। 1941 ई. हाई स्कूल के ऐच्छिक विषयों में मनुष्य शरीर रचना, शरीर विज्ञान से सम्बन्धित विषयों को शामिल किया गया। 1939 तक मेवाड़ के गांव एवं जिलों में विज्ञान वर्ग की शिक्षा का अभाव था। विज्ञान की शिक्षा हेतु विद्यार्थियों को उदयपुर जाना पड़ता था लेकिन गरीब बच्चे नहीं जा पाते थे। परिणामस्वरूप विद्यार्थी की उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते थे। संगीत का अध्ययन भी मात्र शहर के अंग्रेजी विद्यालयों में ही कराया जाता था। कृषि विषयों का अध्ययन मात्र भूपाल नोबल्स कॉलेज में होता था। 1939 में डेयरी तथा कुकुट शाला की पढ़ाई की स्वीकृति भी बोर्ड से ले ली गई।[17] 1939 ई. में मेवाड़ सैन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड के सदस्यों ने इस सम्बन्ध में सरकार के समक्ष प्रस्ताव रखे। परिणामस्वरूप विज्ञान विषय की कक्षाऐं चालू कर दी गई। तकनीकी सेवाएं देने वाले व्यक्तियों को द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् स्टेट वर्कशॉप में नौकरी देने का आश्वासन ब्रिटिश सरकार ने दिया।

मेवाड़ में आधुनिक शिक्षा का सूत्रपात करने वाले प्रमुख व्यक्तियों में महाराणा शम्भूसिंह एवं पॉलिटिकल एजेन्ट कर्नल ईडन का नाम अग्रणी है। लेकिन आधुनिक शिक्षा के इस वट वृक्ष को पल्लवित करने वाले प्रमुख व्यक्ति शम्भू रत्न पाठशाला के प्रधानाध्यापक सिरोही निवासी रत्नेश्वर थे जो 1865 में प्रधानाध्यापक बने बाद में इस परम्परा को खेमराज बोल्या ने आगे बढ़ाया। रामधन, गणेश, सुखवाल, ऊंकारलाल आदि का नाम भी उल्लेखनीय है। इस प्रकार 1865 ई. में राजकीय पाठशाला के अध्यापकों की संख्या 10 हो गई और लगभग 450 विद्यार्थी हो गये।[18] कांशी के पण्डित विनायक शास्त्री को महाराणा ने उदयपुर बुलाकर हिन्दी एवं संस्कृत के अध्यापन हेतु विद्यालय में नियुक्त किया। 1873 ई. में अंगेजी के लिए अजमेर के प्राध्यापक बेयर्ड को नियुक्त किया। खेमराज के बाद बेयर्ड को विद्यालय का प्रधानाध्यापक नियुक्त किया।

मेवाड़ के निजी शिक्षण संस्थाएँ

मेवाड़ में राजकीय विद्यालयों के अतिरिक्त कुछ निजी देशी शिक्षण संस्थाऐं भी थी। जैसे– मठ, मदरसे, चौपाल, उपाश्रय आदि। 19वीं शताब्दी में 30 मठों में शिक्षण कार्य होता था। राज्य उनको अनुदान भी देता था। उदयपुर में प्रयागदास जी का मदरसा महत्वपूर्ण शिक्षण केन्द्र था। इन संस्थाओं में शुल्क के रूप में अन्न एवं मुद्रा वसूल किया जाता था। कमजोर विद्यार्थियों से कम फीस ली जाती थी। शिक्षण समाप्ति के बाद गुरू दक्षिणा का रिवाज था। उच्च वर्ग में विद्यार्थियों के घर पर अध्यापक नियुक्त किया जाता था। कृपा शंकर जी, हीरालाल जी (संस्कृत) एवं गंगाप्रसाद (फारसी), गौरीशंकर (उर्दू) खूबचन्द जी अंग्रेजी के प्राध्यापक थे।[19]

महाराणा सज्जन सिंह के काल में सन् 1883 में शम्भूरत्न पाठशाला को क्रमोन्नत कर हाई स्कूल कर दिया। विद्यार्थियों की बढ़ी संख्या के कारण उसे दो भागों में बांट दिया गया। एक शाखा ब्रह्मपोल एवं दूसरी शाखा कुशलपोल में चलती थी। इसके साथ–साथ एक पृथक संस्कृत विद्यालय भी प्रारम्भ किया गया। सन् 1875 में सज्जन सिंह ने जावर और केसरीयाजी में विद्यालय खोले। महाराणा ने 1877 में ईसाई मिशनरी संस्था 'प्रेस विटेरियन' को विद्यालय खोलने हेतु स्वरूप सागर के निकट भूमि दान दी। 1880 में चर्च मिशनरी सोसायटी ने मेवाड़ में खेरवाड़ा नामक स्थान पर एक विद्यालय स्थापित करवाया।

1886 ई. में स्काटिश प्रेस बिटेरियन मिशन ने एक भील होम स्कूल की स्थापना उदयपुर में की थी। 1877 ई. में राज्य में अकाल पड़ा जिससे शिक्षण कार्य बाधित हुआ। सज्जन सिंह के काल में 1879 में विगेट के नेतृत्व में बन्दोबस्त योजना प्रारम्भ की। जिसमें शिक्षा एवं चिकित्सा पर व्यय करना निश्चित किया गया।[20] 1905 में चित्तौड़ में एक मिडिल स्कूल, 1908 में छोटी सादड़ी कपासन में एक–एक मिडिल स्कूल स्थापित किया गया। सन् 1930 में महाराणा भूपाल सिंह ने राज्य के शिक्षा विभाग को पुनर्गठित किया। 1931 ई. में जागीर क्षेत्र के शिक्षा विकास हेतु एक शिक्षा समिति स्थापित की और सामन्तों की शिक्षा में सुधार हेतु निर्देश दिये। 1929 तक राज्य में मात्र 70 विद्यालय थे। 1930 में उदयपुर में फतह भूपाल ब्रह्म संस्कृत विद्यालय स्थापित किया गया। बनेड़ा के अमर सिंह ने उदयपुर में श्रद्धानन्द शिशु पाठशाला स्थापित करवाया। आगामी वर्षों में विद्या भवन मिडिल स्कूल, उदयपुर (1941), महिला मण्डल उदयपुर (1935) अहमदिया स्कूल उदयपुर, मोहम्मद साहब स्कूल, चित्तौड़गढ, विजय जैन पाठशाला कानोड़ा आदि स्थापित हुए।[21]

1937 के गैर सरकारी शिक्षण संस्था गुरू गोविन्द सिंह मिडिल स्कूल, उदयपुर में प्रारम्भ हुआ। मेवाड़ में सत्र 1938–39 तक 210 प्राथमिक एवं 12 माध्यमिक विद्यालय हो गये। महाराणा ने 1939 में एक सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड की स्थापना की जो समय–समय पर शिक्षा के क्षेत्र में सुझाव देता था। इसी के सुझावों पर सत्र 1939–40 में भीलवाड़ा मिडिल स्कूल को हाई स्कूल बना दिया। उदयपुर के धानमण्डी एवं हाथीपोल में एक–एक प्राथमिक विद्यालय स्थापित किये। 1940 ई. में आदर्श विद्या मंदिर

एवं 1942 ई. में श्री जैन शिक्षा संस्था, सहरीया कन्या विद्यालय स्थापित करवाये गये। 1942 की एक घोषणा के अनुसार जिन जागीरों की वार्षिक आय 5000 रूपये प्रतिवर्ष से अधिक हो और यह की जनसंख्या 1000 से अधिक हो उन क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालय स्थापित किया जाना तय हुआ। 1945 में भीलवाड़ा में ग्राम शिक्षा समिति एवं 1946 में महावीर जैन मिडिल स्कूल की स्थापना की गई। 1947 में नवभारत मिडिल स्कूल सार्वजनिक शिक्षण संस्था की स्थापना की गई एवं 1949 में जवाहर विद्यापीठ कानोड़ा मिड़िल स्कूल बना।[22]

शिक्षण संस्थाओं के विकास के साथ–साथ छात्रों की संख्या की बढ़ने लगी। 1935–36 में राज्य के विद्यार्थियों की कुल संख्या 10481 थी। 1936–37 में 10705 हो गई। एडवाइजरी बोर्ड की स्थापना के बाद 1939 में विद्यार्थियों की संख्या 18321 तक पहुंच गई। 1941–42 में विद्यार्थियों की संख्या 21386 हो गई।[23]

मेवाड़ में शिक्षक व्यवस्था

मेवाड़ में प्रारम्भ में अध्यापकों की नियुक्ति की योग्यता का कोई निश्चित मापदण्ड नहीं था। 1867 में ब्रिटिश सरकार ने राजपूताने के शासकों से शिक्षण प्रशिक्षण विद्यालय स्थापित करने का सुझाव दिया। 1883 ई. में लाला हजारीलाल को महाराणा हाई स्कूल का प्रधानाध्यापक नियुक्त किया। जिन्होंने 1888 ई. में ही अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु पृथक से कक्षाऐं आरम्भ करने की व्यवस्था की गई। लेकिन 1891 ई. में अधिक समस्या के कारण ये कक्षाएं बंद हो गई। 1905 ई. में अजमेर गवर्मेन्ट कॉलेज के प्रिंसिपल एफ. एम. रेड ने भी राजपूताना में शिक्षा से सम्बन्धित सुधार रिपोर्ट में मेवाड़ में प्रशिक्षित एवं योग्य अध्यापकों के अभाव को दूर करने का सुझाव दिया था लेकिन मेवाड़ सरकार ने ध्यान नहीं दिया और शिक्षा स्तर गिरता गया। धीरे–धीरे प्रशिक्षित अध्यापकों को व्याख्यान देने के लिए बुलाया जाने लगा। वर्ष में एक बार भूपाल नोबल्स स्कूल में शिक्षक सम्मेलन आयोजित किया जाने लगा।[24]

1906 ई. में एस.के. दत्ता को राजकीय स्कूल शम्भूरत्न पाठशाला उदयपुर का प्रधानाध्यापक नियुक्त किया। 1908 में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, छोटी सादड़ी में कला वर्ग के विषय पढ़ाये जाने लगे जिसमें हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गणित, भूगोल, इतिहास का अध्ययन कराया जाता था। चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा में अंग्रेजी मिड़िल स्कूल में अंग्रेजी अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती थी। 1927 में चित्तौड़ एवं भीलवाड़ा मिडिल स्कूल में 9–9 अध्यापक थे। भीलवाड़ा अंग्रेजी मिड़िल विद्यालय में भूगोल के अध्यापक रामचन्द्र तंवर और चित्तौड़गढ में बाबू गोविन्द सिंह प्रधानाध्यापक थे इनमें चित्रकला का भी अध्ययन होता था।[25] उदयपुर में 1922 में इन्टर कॉलेज की स्थापना के समय मिड़िल एवं हाई स्कूल संयुक्त रूप से शहर में जगदीश मन्दिर के पीछे स्थित भवन में चलता था।

सामन्तों की शिक्षा व्यवस्था

मेवाड़ में 1877 में उदयपुर स्थित पाठशाला में राजपूत जागीरदारों के पुत्रों के लिए पृथक कक्षाऐं प्रारम्भ हुई थी। इन्हें सरदारों की कक्षा कहा जाता था। पुस्तकीय ज्ञान के अलावा सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी। सैनिक शिक्षा देने वाले को रसालदार कहा जाता था। ब्रिटिश सरकार ने पूरे भारत में युवराजों के लिए चार विद्यालय स्थापित किये। 1872 में मेयो कॉलेज की नींव रखी। उसका प्रथम सत्र 1875–76 में हुआ। इस सत्र में 23 छात्र अध्ययनरत थे। प्रथम सत्र में मेवाड़ के 12 छात्र थे। बेरीसाल के कुंवर मेवाड़ के प्रथम व्यक्ति थे। जिन्होंने मेयो कॉलेज में प्रवेश लिया। 1879–80 में मात्र एक छात्र बेदलाराव ने मैयो कॉलेज में प्रवेश लिया।[26]

सन् 1875 से 1896 तक मेवाड़ के 25 छात्रों ने मेयो कॉलेज में अध्ययन किया। 4 छात्र शाहपुरा के थे। छपनिया अकाल (1899) में छात्रों की संख्या में पुनः कमी आई। 1877 में प्रत्येक छात्र से प्रतिवर्ष 30 रूपया वसूल किया जाता था। 1902 में यह शुल्क 50 रूपये हो गया। विद्यालय शुल्क के अलावा इम्पिरियल शुल्क भी देना पड़ता था। जो सामन्त के पुत्रों के लिए 245 रूपये था। लार्ड कर्जन ने इस खर्चीली शिक्षा व्यवस्था का विरोध किया। रूढ़िवादिता के चलते सामन्ती महिलाएं अपने पुत्रों को शिक्षा हेतु इतनी दूर नहीं भेजती थी, अवकाश के दौरान जब कुंवर घर आते थे तो उनका विवाह कर दिया जाता था और बीमारी का बहाना बनाकर पुनः विद्यालय जाने पर पाबन्दी लगा दी जाती थी।''[27]

निष्कर्ष

मेवाड़ की शिक्षण संस्थाऍ यहाँ के निवासियों के आदर्शों को दर्शाती है। यहाँ की शिक्षण व्यवस्था के प्रमाण राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर में संग्रहित विभिन्न बण्डलों में मिलता है। जहाँ क्रमबद्ध रूप से यह की प्रारम्भिक, हाई स्कूल एवं इन्टरमिटिएट कॉलेज शिक्षा के रिकॉर्ड संरक्षित है। यहाँ हिन्दी माध्यम स्कूल के साथ–साथ अंग्रेजी माध्यम के प्राथमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालयों का विकास हुआ। महाराणा शम्भूसिंह, सज्जनसिंह, फतेहसिंह, भूपालसिंह के कॉलेज शिक्षा के स्तर में अभूतपूर्व विकास हुआ। इसाई मिशनरियों ने भी अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार में कोई कसर नहीं छोड़ी। 19वीं शताब्दी की मेवाड़ की इस शिक्षा व्यवस्था में हिन्दी, व्याकरण, संस्कृत, भूगोल, आदि का अध्ययन करवाया जाता था। ब्रिटिश सरकार ने भी समय–समय पर शिक्षा में सुधार हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया। सामन्ती शिक्षा की बात करें तो मेवाड़ में राजकुमारों के लिए सैनिक प्रशिक्षण के साथ–साथ व्यवहारिक एवं कूटनीतिक किताबी ज्ञान दिया जाता था। निजी शिक्षण संस्थाओं ने भी मेवाड़ के शैक्षिक स्तर को सुधारा। निर्धारित मापदण्ड़ों को पूरा करते हुए शिक्षकों की योग्यता को देखकर नियुक्त प्रदान की जाती थी और सार्वजनिक संस्था के रूप में शिक्षक–प्रशिक्षण विद्यालय प्रारम्भ किये गये। समय–समय पर मेवाड़ को अनेक प्राकृतिक संकटों से भी गुजरना पड़ा और अनेक गतिरोध के बावजूद

मेवाड़ की विद्यालय शिक्षा विकास की ओर अग्रसर होते हुए राज्य में शिक्षा के अगले सोपान महाविद्यालय, शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया और कीर्तिमान स्थापित किया।

संदर्भ सूची

1. गहलोत, जगदीश सिंह. (1937). राजपूताने का इतिहास. भाग–1. हिन्दी साहित्य मन्दिरः जोधपुर. पृष्ठ 130.
2. शौरी, आर. (1909). मेडिको टोपोग्राफिकल अकाउन्ट ऑफ मेवाड़. पृष्ठ 21.
3. वर्मा, सी.जी. (1967). ग्रोथ एवं डवलपमेन्ट ऑफ मार्डन एज्यूकेशन इन राजस्थान (1819–1949). पृष्ठ 244.
4. दास, श्यामल., विनोद, वीर. (1986). मोतीलाल बनारसी दास. पृष्ठ 2068.
5. व्यास, गोपाल बल्लभ. (1989). मेवाड़ का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन. राजस्थान ग्रन्थागारः जोधपुर. पृष्ठ 253.
6. (1923–24). मेवाड़ प्रशासनिक रिपोर्ट. पृष्ठ 53.
7. अर्सकीन, के.डी. (1908). राजपूताना गजेटियर्स. भाग–2. मेवाड़ रजिडेन्सी. पृष्ठ 82.
8. शर्मा, डी.वी., चन्द्रावत. (1991). महाराणा भूपाल सिंह व मेवाड़. जोधपुर. पृष्ठ 118.
9. अग्रवाल, बी.डी. राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स. उदयपुर. पृष्ठ 452.
10. (1930–31). मेवाड़ प्रशासनिक रिपोर्ट. अध्याय–1. पृष्ठ 15.
11. (1946). सज्जन कीर्ति सुधारक. शोध पत्रिका. 27 मई. अंक–2. पृष्ठ 54–55.
12. (1868). फोरेन एण्ड पोलिटिकल. 'ए' नं. 23–24 अगस्त. रा.अ.: नई दिल्ली।
13. (1972–73). मेवाड़ रेजीडेन्सी रिपोर्ट. पृष्ठ 121.
14. (1930). द एन्यूअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट. रा.अ.: नई दिल्ली पृष्ठ 92.
15. (1939–42). एज्यूकेशन बण्डल नं. 16 का– 7/1. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 198.
16. (1928). फोरेन एण्ड पॉलिटिकल नं. 115 आर. पृष्ठ 136, 138.
17. (1943). मेवाड़ गजट. 19 अप्रेल. पृष्ठ 653.
18. (1965). एज्यूकेशन बण्डल नं. 16. फा–8/7. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 267.
19. चिताम्बरे, (1964). एन.एस. बनेड़ा राज्य का इतिहास. वैदिक यंत्रालयः अजमेर. पृष्ठ 176.
20. (1888). फर्स्ट एन्युअल रिपोर्ट ऑन डिस्ट्रीक्ट स्कूल इन मेवाड़. पृष्ठ 9.
21. (1922). उदयपुर एज्यूकेशन बण्डल नं. 3. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 8.
22. (1979). राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर. पृष्ठ 463.
23. (1939–40). एन्यूअल एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट ऑन एज्यूकेशन. रा.अ.: उदयपुर. पृष्ठ 44.
24. (1934). एज्यूकेशन बंडल नं. 5. फा–7. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 1.
25. (1936). एज्यूकेशन बण्डल नं. 11. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 1–24.
26. (1876). कमिश्नर ऑफिस अजमेर एज्यूकेशन रिपोट फा. 14. रा.अ.: दिल्ली. पृष्ठ 2.
27. (1930). एज्यूकेशन बण्डल नं. 3. फा–14. रा.रा.अ.: बीकानेर. पृष्ठ 8–30.

6

प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका

अंजना रावत
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
रा०च०उ०रा०स्ना० महाविद्यालय, उत्तरकाशी

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में शिक्षा समाज का एक अभिन्न अंग रही है। सोलह संस्कारों में शिक्षा को समर्पित संस्कारों से स्पष्ट होता है कि मानव जीवन की सम्पूर्णता के लिए शिक्षा आवश्यक हुआ करती थी। शिक्षा की प्राप्ति हेतु अनेक शिक्षण संस्थाएं एवं विश्वविद्यालय प्राचीन काल में ही भारत में स्थापित हो चुके थे जिनमें नालंदा विश्वविद्यालय प्रमुख था। प्रारंभ में यह ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन धर्म का एक प्रमुख धार्मिक केंद्र था जो बाद में एक विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ और धीरे–धीरे यह अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा का केंद्र बन गया।[1] नालंदा विश्वविद्यालय एक पूरे विश्व में एक ख्याति प्राप्त शिक्षा का केंद्र था, जहाँ देश विदेश से बहुत से विद्यार्थी एवं विद्वानजन विद्याध्ययन हेतु आया करते थे। यहाँ चीन, जावा सुमात्रा, कोरिया, इन्डोनेशिया, जापान, तिब्बत, श्रीलंका आदि देशों से छात्र पढ़ने आया करते थे।[2] यह विश्व का प्रथम आवासीय विश्वविद्यालय था, जो पांचवीं सदी में स्थापित किया हुआ और बाहरवीं सदी तक अपने ज्ञान के प्रकाश में भारत सहित सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करता रहा।

मुख्य शब्द

चैत्य, विहार, तिसिविरा, उपसम्पदा, उत्खनन।

प्रस्तावना

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष वर्तमान में पटना से 95 किलो मीटर दूर दक्षिण–पूर्व में बड़गाँव के समीप प्राप्त हुए हैं। 2016 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर की सूची में सम्मिलित किया है। इस विश्वविद्यालय को प्रकाष में लाने का श्रेय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक जनरल अलेक्जेन्डर कनिंघम को जाता है। उन्होंने चीनी तीर्थ यात्रियों के वर्णन के आधार पर यह प्रमाणित किया कि राजगीर से सात मील दूर बड़गाँव के पास स्थित विशाल खंडहर ही नालंदा विश्वविद्यालय है।[3] पुरातात्विक उत्खनन से अनेक मुहरें मिली हैं, जिनमें "श्री नालंदा महाविहारय आर्य भिक्षु संघस्य" लिखी मुहरें भी प्राप्त हुई हैं। इस स्थल से कुछ अन्य वस्तुएं एवं मूर्तियाँ भी मिली है जिनमें नालंदा उल्लेखित है। यहाँ से मिले उत्तरी काले पॉलिश मृद्भांड से स्पष्ट होता है कि नालंदा स्थल छठी शताब्दी ई० पू० में अतित्व में आ चुका था।

नालंदा का अर्थ

नालंदा के विषय में कहा जाता है कि "न अलं ददाति इति नालंदा" अर्थात जिस स्थान पर विद्या को कभी विश्राम नहीं मिलता, वही स्थान नालंदा है।[4] प्राचीन काल में यहाँ नाल या कमल के फूलों की अधिकता पाई जाती थी, संभवतः इस कारण इसका नाम नालंदा पड़ा। पाली साहित्य में इसे नालक, नालाक ग्राम, नालंदा इत्यादि नामों से संबोधित किया गया है। 'धर्मस्वामी' के अनुसार तिब्बती भाषा में नालंदा शब्द का अर्थ है मनुष्य का 'स्वामी'।[5] संभवतः यह नाम इस नगर को बसाने वाले के नाम पर ही पड़ा हो। साहित्यिक स्रोतः नालंदा का सबसे प्राचीन उल्लेख जैन और बौद्ध ग्रंथों में किया गया है। 'मज्झिम निकाय' में नालंदा को एक घनी आबादी एवं एक वैभवशाली नगर के रूप में दर्शाया गया है।[6] बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र का सम्बन्ध भी नालंदा से था। बौद्ध ग्रन्थ में इसे सारिपुत्र की जन्म स्थली के रूप में बताया गया है।[7] पावरिक आम्र वन वह नालंदा का स्थल था जहाँ महात्मा बुद्ध राजगीर यात्रा के समय यहाँ पड़ाव डालते थे। जैन साहित्य में नालंदा को राजगृह का उपनगर कहा गया है एवं इसके बारें में यह कहा गया है कि यहाँ जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी द्वारा काफी समय गुजारा गय।[8] आजीवक सम्प्रदाय के संस्थापक मख्खिलपुत्त गोसाल को महावीर स्वामी द्वारा यहीं शिक्षा दी गयी। ह्वेनसांग (630–645 ई०) और इत्सिंग (675–685 ई०) द्वारा यहाँ शिक्षा ग्रहण की गयी। अपने यात्रा वृत्तांत में उन्होंने इस विश्वविद्यालय का विस्तृत वर्णन किया है। ह्वेनसांग के अनुसार दूसरी शताब्दी में दार्शनिक नागार्जुन

ने नालंदा में ही बौद्ध अध्ययन किया था। लामा तारानाथ के अनुसार मौर्य सम्राट अशोक द्वारा यहाँ एक मंदिर का निर्माण करवाया गया था।[9]

पुरातात्विक स्रोत

नालंदा विश्वविद्यालय के भग्नावशेष को सर्वप्रथम हेमिल्टन द्वारा देखा गया। इस स्थल का अन्वेषण कीटो तथा बुकासन द्वारा किया गया। एलेक्जेन्डर कनिंघम 1861–62 में चीनी यात्रियों के वर्णन तथा नालंदा से प्राप्त लेखों के आधार इस विशाल खंडहर को नालंदा विश्वविद्यालय के रूप में प्रमाणित किया है।[10] भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा वर्ष 1915 से 1937 तथा 1974 से 1982 के दौरान इस स्थल का उत्खनन किया गया, जिसमें एक वर्ग किलोमीटर से भी अधिक बड़े क्षेत्र में पकी ईंटों की फर्श तथा अन्य संरचनाएं पायी गयीं। उत्खनन के फलस्वरूप छः चैत्य विहार मिलें हैं। जिसमें मंदिर संख्या (चैत्य) संख्या 3, 2, 12, 13 व 14 प्रमुख हैं। मंदिर 3 नालंदा का सबसे ऊंची संरचना है। इस मंदिर की शैली दक्षिण पूर्व एशिया के अंकोरवाट मंदिर के समान दिखाई देती है। ह्वेनसांग के अनुसार इसका निर्माण गुप्त वंश के शासक बालादित्य ने करवाया था। सर्वेक्षण से ज्ञात होता है कि इस मंदिर में एक मूल स्तूप था, कालांतर में अन्य संरचनाएं इससे जोड़ती हुई निर्मित की गयी। मंदिर संख्या 2 उत्तर पूर्व दिशा में है। इसकी विशेषता यह है कि इसका चबूतरा मूर्तियों से अलंकृत है, जो 7वीं शताब्दी की प्रतीत होती है। मंदिर संख्या 12 का निर्माण दो बार किया गया है। मंदिर 13 क्षति ग्रस्त अवस्था में है जो मंदिर संख्या 12 के ही सामान है। इस मंदिर की पूर्व दिशा में एक खुला क्षेत्र है, जिसमें कुछ मनौती स्तूप बनें हैं। मंदिर संख्या 14 जो 13 के उत्तर में है, के गर्भ गृह में भित्ति चित्रकला के अद्भुत नमूने मिले हैं।

नालंदा विश्वविद्यालय का इतिहास

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रेय गुप्त शासक कुमारगुप्त (शक्रादित्य) प्रथम (415–455 ई०) को जाता है।[11] कुमारगुप्त ने इस विश्वविद्यालय को राजकीय संरक्षण एवं पर्याप्त अनुदान प्रदान किया था। कुमारगुप्त के पश्चात अन्य गुप्त शासकों द्वारा भी इस विश्वविद्यालय को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया गया। ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वर्णन में बताया कि गुप्त शासकों ने यहाँ पांच विहारों (संघाराम) का निर्माण किया था। प्रथम संघाराम–कुमारगुप्त, द्वितीय संघाराम–बुधगुप्त, तृतीय संघाराम–तथागत गुप्त, चतुर्थ संघाराम–बालादित्य, पंचम संघाराम–वज्रादित्य।[12] ह्वेनसांग के अनुसार बालादित्य ने यहाँ एक 300 फुट ऊँचा मंदिर बनवाया था, जो बोधगया मंदिर के समान था। गुप्तकाल के बाद कन्नौज के शासक हर्षवर्धन (606–647 ई०) ने नालंदा विश्वविद्यालय को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। हर्षवर्धन द्वारा 100 गावों को नालंदा विश्वविद्यालय को अनुदान के रूप में भेंट किये गया। हर्षवर्धन नालंदा के भिक्षुओं का बड़ा ही सम्मान किया करता था और स्वयं को उन भिक्षुओं का सेवक ही मानता था। हर्षवर्धन के पश्चात पाल शासकों का 8वीं–12वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय को संरक्षण प्राप्त हुआ। पाल शासक गोपाल वर्मा ने नालंदा के समीप एक विहार का निर्माण करवाया था। वही नालंदा से प्राप्त धर्मपाल के एक अभिलिख से ज्ञात होता है कि महाविहार के प्रधान को एक ग्राम दान में दिया जाता था, जहाँ कोई राज्याधिकारी प्रवेश नहीं कर सकता था। इस वंश के शासक देवपाल (810–850ई०) ने इस विश्वविद्यालय को सर्वाधिक संरक्षण प्रदान किया।[13] विद्यार्थियों के भोजन, आवास, तथा औषधि के हेतु देवपाल ने विश्वविद्यालय को अनेकों गाँव प्रदान किये। उसके द्वारा महत्वपूर्ण ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार करने पर भी ध्यान दिया गया। इसके लिए उसने कुछ गाँव अलग से प्रदान किये। इसके समय ही सुमात्रा के राजा बालपुत्रदेव ने नालंदा में एक विहार उन विद्यार्थियों के लिए बनवाया जो जावा, सुमात्रा से यहाँ पढ़ने आते थे। देवपाल के पश्चात विग्रहपाल ने महाविहार में बुद्ध प्रतिमा स्थापित की तथा इसके संरक्षण हेतु दान भी दिया। पाल वंष के अन्य शासकों रामपाल, विग्रहपाल, अंतिम शासक गोविन्द पाल द्वितीय द्वारा विश्वविद्यालय को निरंतर अनुदान प्रदान किया गया।

भवन निर्माण योजना

नालंदा विश्वविद्यालय के भवन बेहद विशाल और भव्य थे, जिन्हें सुनियोजित योजना के तहत निर्मित किया गया था। पूरा भवन एक चाहरदीवारी के अन्दर था, जिसमें प्रवेश के लिए एक मुख्य द्वार था।[14] उ० से द० की ओर मठों (विहार) की एक कतारें थी और उनके सामने भव्य स्तूप और चैत्य (मंदिर) थे, चैत्यों में बुद्ध की मूर्तियाँ स्थापित थीं। विहार बहुमंजिला हुआ करते थे। प्रत्येक कक्ष में विश्राम के लिए पत्थर की चौकीनुमा संरचना होती थी। इसके अतिरिक्त दीपक पुस्तक आदि रखने के लिये दीवार पर आले बने होते थे। प्रत्येक विहार के आँगन में एक कुआँ होता था। इस क्षेत्र के उत्खनन से 11 विहार एवं 6 चैत्य मिले हैं, शेष विहार चैत्य नष्ट हो गएँ हैं। अध्यापकों के अलग कक्ष होते थे। विश्वविद्यालय के परिसर में सुन्दर बगीचे तथा झीलें भी होती थीं। ह्वेनसांग के अनुसार मौसम की जानकारी एवं ग्रहों नक्षत्रों के अध्ययन हेतु ऊँची वेधशालाएं बनायीं गयीं थीं जो यंत्रों से सुसज्जित थी।[15] अतः कहा जा सकता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापत्य योजना बेहद सुनियोजित एवं भव्य थी, जिसमें सभी तकनीकियों का पूरा ध्यान रखा गया था।

पुस्तकालय व्यवस्था

नालंदा विविश्वविद्यालय का पुस्तकालय अति विशाल था, जिसे 'धर्मगंज' कहा जाता था।[16] इसके तीन भाग थे 1–रत्नसागर 2–रत्नोदधि 3– रत्नरंजक।[17] यहाँ विभिन्न विषयों की असंख्य पुस्तकें रखी गयीं थी, जिनमें अधिकांश पुस्तकें हस्त लिखित थी। यहाँ

से अनेक पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ चीनी यात्रियों द्वारा अपने साथ ले जायी गयी। इत्सिंग ने इस पुस्तकालय से 400 संस्कृत पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की थी, जिनमें लगभग 5 लाख श्लोक थे।[18] रत्नोदधि पुस्तकालय का भवन नौ मंजिला भवन था। इसमें बौद्ध धर्म तथा अन्य धर्मों से असंख्य ग्रन्थ रखे गए थे। तत्कालीन समय में इतना विशाल पुस्तकालय कहीं अन्यत्र रहा होगा। रत्न रंजक पुस्तकालय में विभिन्न कलाओं से सम्बंधित पुस्तकें रखी जाती थीं। ह्वेनसांग के अनुसार नालंदा में धर्म एवं दर्शन से सम्बंधित ग्रंथों का विशाल संग्रह था, जिसे पत्थर के दरवाजों में रखा जाता था। पुस्तकों की कई प्रतिलिपियाँ बनाई जाती थी। नालंदा विश्वविद्यालय की कई पांडुलिपियाँ आज भी लन्दन तथा कैम्ब्रिद्ज विश्वविदयालय में सुरक्षित है।

प्रवेश प्रक्रिया

नालंदा विश्वविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्र को प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ती थी। यह परीक्षा मौखिक होती थी तथा जो व्यक्ति वेदों, वेदांगों, उपनिषदों, सांख्य, न्याय, हीनयान तथा महायान से सम्बंधित ज्ञान में पारंगत होता था, वही इस परीक्षा को उत्तीर्ण कर सकता था। यह परीक्षा विश्वविद्यालय के द्वारपालों द्वारा ली जाती थी। परीक्षा बेहद कठिन होती थी। प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु बीस वर्ष निश्चित थी। नालंदा विश्वविद्यालय मुख्य रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षा का केंद्र था, अतः जो छात्र आजीवन भिक्षु जीवन व्यतीत करना चाहते थे, उनका उपसंपदा संस्कार किया जाता था। इस संस्कार के से पहले विद्यार्थी को किसी बौद्ध मठ में बारह वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करना अनिवार्य होता था। इस संस्कार के पश्चात विद्यार्थी का अपने गृह परिवार से कोई सम्बन्ध शेष नहीं रह जाता था। वो पूरा जीवन बौद्ध भिक्षु बन कर व्यतीत करता था। दूसरे प्रकार के विद्यार्थी यहाँ केवल ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से यहाँ आते थे तथा अपना विद्यार्थी जीवन पूर्ण करके अपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग तथा इत्सिंग को भी प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी पड़ी थी तभी उनका प्रवेश इस विश्वविद्यालय में हो पाया था। नालंदा में पढ़ने वाले अभ्यर्थी को समाज में बहुत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। कई बार लोगों द्वारा झूठ भी बोला जाता था कि वे नालंदा के छात्र हैं।

नालंदा का शिक्षक जीवन

यहाँ के शिक्षक को आचार्य कहा जाता था जो निरंतर नवीन ज्ञान के सृजन एवं अन्वेषण में कार्यरत रहते थे। उनकी विद्वता का स्तर अत्यंत उच्च कोटि का होता था तथा उनकी ख्याति देश विदेश में फैली हुयी थी। उनकी ख्याति सुनकर ही दूर देश विदेश से छात्र यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते थे। आचार्य छात्रों की उन्नति हेतु संकल्पित रहते थे। वे सदैव अपने छात्रों को ज्ञान प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करते थे तथा उन्हें उच्च नैतिक मूल्यों को प्रदान कर उनके चारित्रिक उत्थान का कार्य करते थे। यहाँ के आचार्य समाज में अतिसम्मानित माने जाते थे। दिंगनाग, चन्द्रकीर्ति, नागार्जुन, आर्यदेव, राहुल शीलभद्र शांतिरक्षित आदि आचार्य का विश्वविद्यालय के विकास एवं समृधि में अनुपम योगदान रहा।[19] ह्वेनसांग के समय यहाँ के कुलपति शीलभद्र थे जिनके शिष्यत्व में रहकर ह्वेनसांग ने पांच साल तक विद्या ग्रहण की।

नालंदा का छात्र जीवन

यहाँ के विद्यार्थी बेहद विनम्र तथा अनुशासित होते थे। उनके अन्दर ज्ञान पिपासा इतनी प्रबल होती थी कि वे निर्मल मन से विश्वविद्यालय के नियमों का पूर्णतः पालन करके विद्या ग्रहण करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय में भारतवर्ष से ही नहीं अपितु तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, वर्मा, लंका आदि देशों के विद्यार्थी बड़ी संख्या में आते थे।[20] विदेशी छात्रों में ह्वेनसांग, इत्सिंग, हवाईनेह, आर्यवर्ग, फ़ो–ताऊ–ता–माऊ आदि प्रमुख हैं। ह्वेनसांग के अनुसार यहाँ दस हजार विद्यार्थी अध्ययन किया करते थे, जबकि इत्सिंग के अनुसार यहाँ तीन हजार से अधिक विद्यार्थी अध्ययनरत है जिन्हें शिक्षा, आवास, भोजन, वस्त्र, औषधि आदि निशुल्क दिए जाते थे। छात्र गुरुजनों के प्रति बेहद श्रृद्धा एवं सम्मान रखते थे और किसी प्रकार की अनुशासन हीनता नहीं करते थे। छात्र जीवन बेहद सादा एवं शालीन होता था। प्रत्येक विद्यार्थी को अपना सर मुंडाना अनिवार्य होता था। विद्यार्थी तीन वस्त्र धारण करते थे जिसे सम्मिलित रूप से तिसिविरा कहा जाता था। वस्त्र की एवं अपनी साफ़ सफाई का ध्यान छात्र को रखना होता था।

पाठ्यवस्तु एवं प्रबंधन

नालंदा विश्वविद्यालय मुख्यतः बौद्ध शिक्षा का केंद्र था जहां शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य निर्वाण प्राप्त करना था। पाठ्यक्रम में बौद्ध धर्म ग्रंथों का अध्ययन को प्रमुख रूप से रखा गया था। विशेषरूप से महायान शाखा से सम्बंधित बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन यहाँ किया जाता था। बौद्ध दर्शन के साथ–साथ वैदिक ग्रन्थ तथा जैन धर्म ग्रंथों का भी यहाँ पर अध्ययन किया जाता था ताकि इनके दशनों की तुलनात्मक व्याख्या की जा सके, उनमें अंतर तथा समानता को समझा जा सके। इसके अतिरिक्त व्यवहारिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता था। छात्र के लौकिक जीवन में सफलता हेतु व्यावसायिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता था। हस्तशिल्प, चित्रकला, मूर्तिकला, भवन निर्माण कला, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, इंद्रजाल, हरित ज्ञान भविष्य कथन, पशुओं की बोली समझने की शिक्षा यहाँ दी जाती थी।[21] शिक्षण का माध्यम संस्कृत के साथ–साथ लोक भाषाएँ जैसे पालि, प्राकृत आदि थीं। महाविद्यालय का प्रबंधन राज्य से मुक्त होता था। महाविद्यालय की गतिविधियों में राज्य किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करते थे। सभी विद्यार्थियों के लिए एक

सामान नियम होते थे। उनमें किसी भी प्रकार का विभेद नहीं किया जाता था। राजपरिवार के विद्यार्थियों को कोई विशेष सुविधाएँ नहीं प्रदान की जाती थीं। शिक्षक के रूप में भी किसी जाति विशेष का वर्चस्व नहीं था। ब्राह्मणों के साथ अन्य वर्ग के योग्य एवं विनयशील व्यक्ति शिक्षक नियुक्त किये जाते थे। छात्र शिक्षक सम्बन्ध पिता–पुत्र की ही भाँती होते थे। छात्र अपने शिक्षकों का आदर किया करते थे। शिक्षक की आज्ञा उनके लिए सर्वोपरि होती थी। शिक्षक भी छात्रों के प्रति समर्पित होते थे। उनके अध्यात्मिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास हेतु वे सभी संभावित उपागम प्रयुक्त करके उनके सर्वांगीण विकास का प्रयास करते थे। शारीरिक दंड वर्जित था। दंड उपवास, चेतावनी, निष्कासन आदि के रूप में दिया जाता था।

नालंदा विश्वविद्यालय का पतन

नालंदा विश्वविद्यालय का क्रमिक ह्रास होता चला गया। ह्वेनसांग के समय दस हजार अभ्यर्थी थे, जो इत्सिंग के समय तक मात्र तीन हजार रह गए। कालांतर में बौद्ध धर्म की अवनति के साथ नालन्दा का भी ह्रास होता चला गया। इसके पुस्तकालय को दो बार वाह्य लोगों द्वारा जलाया गया है। एक विवरण के अनुसार एक बौद्ध भिक्षु द्वारा ब्राह्मणों पर गन्दा जल फेंका गया, जिससे क्रोध में आकर ब्राह्मणों ने इस पुस्तकालय में आग लगा दी।[22] उत्तर भारत में हुए राजनीतिक परिवर्तनों ने भी इसके पतन में भूमिका निभाई। विश्वविद्यालय को राजकीय अनुदान मिलना धीरे–धीरे बंद हो गया। बौद्ध धर्म में तांत्रिक पद्धति, मद्य, मदिरा, मैथुन जैसी मान्यताओं के चलते बौद्ध धर्म के प्रति लोगों का आदर कम होने लगा। अतः नालंदा विश्वविद्यालय की लोकप्रियता में भी कमी आई। 1199 ईसवीं में तुर्क सरदार बख्तियार खिलजी द्वारा इसमें आग लगवा दी गयी, जिससे इसकी कई कताबें जलकर नष्ट हो गयीं।[23] यह आग इतनी भयानक थी कि इसमें कुछ धर्माचार्य तथा बौद्ध भिक्षु मारे गए। यह आग तीन माह तक जलती रही। इसमें लगभग तीन लाख किताबें जलकर नष्ट हो गयीं। आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट होने पर इसके पुनः उत्थान हेतु कोई विशेष प्रयास लोगों द्वारा नहीं किये गए। पाल वंश के समय अन्य समकालीन महाविद्यालयों की स्थापना ने भी इसके महत्व को कम कर दिया। विक्रमशिला महाविद्यालय कालांतर में अधिक विख्यात होने लगा।[24] विक्रमशिला की स्थापना के समय नालंदा अपनी अवनति की ओर उन्मुख हो चुका था। इसी कारण लोग विक्रमशिला एवं अन्य महाविद्यालयों की ओर आकृष्ट हुए। 13वीं शताब्दी के अंत तक यह विश्वविद्यालय अपना अस्तित्व खो चुका था।

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि नालंदा विश्वविद्यालय अपने काल का एक उत्कृष्ट महाविद्यालय रहा है, जिसकी प्रेरणा से कालांतर में अन्य विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। विक्रमशिला विश्वविद्यालय, जगाध्दल विश्वविद्यालय, शीलभद्र विहार, सोमपुर विहार, आदि विश्वविद्यालयों का उदय हुआ, जिन्हें राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ।[25] इस प्रकार नालंदा महाविद्यालय ने तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में अपनी अविस्मरणीय भूमिका निभाई तथा भारतीय शिक्षा प्रणाली को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई। साथ ही भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित करने में अपना योगदान दिया। वस्तुतः इसके ऐतिहासिक महत्व को समझते हुए वर्तमान में पुनः इसकी स्थापना की गयी है, जो इसके गौरव एवं ख्याति को लौटाने को प्रयासरत है।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, सर्जुन. (2020). इतिहास शोध पत्रिका. अंक–6. भाग–2. जुलाई–दिसंबर. पृष्ठ **29.**
2. लामा, तारानाथ. (1971). भारत में बौद्ध धर्म का विकास. अनु० लामा रिगजिन लुण्डपः पटना. पृष्ठ **39.**
3. कनिंघम, ए. (1862–65). फॉर रिपोट्र्स मेड इन ड्यूरिंगस दी इयर्स. खंड 1. पृष्ठ **280.**
4. प्रसाद, सर्जुन. पूर्वोक्त. पृष्ठ **30.**
5. तककुसु, जे.ए. (1816). रिकॉर्ड ऑफ़ बुध्दिस्ट रिलिजन. ऑक्सफ़ोर्ड. पृष्ठ **143.**
6. टरेनकर, आर. एंड वी. (1888–1896). मज्झिमनिकाय. सं०. खण्ड 3. पालि टेक्स्ट सोसायटीः लन्दन. पृष्ठ **377.**
7. ब्रोडले, ए.एम. (1979). दी बुद्धिस्ट रेमैंस ऑफ़ बिहार, भारती प्रकाशनः वाराणसी. पृष्ठ **42.**
8. जैन, सुत्राज. सेकरेड बुक ऑफ़ द ईस्ट. पृष्ठ **264.**
9. लामा, तारानाथ. (1971). पूर्वोक्त. पृष्ठ **39.**
10. कनिंघम, ए. पूर्वोक्त. पृष्ठ **28.**
11. संकलिया, एच.डी. (1974). दी नालंदा यूनिवर्सिटीः दिल्ली।
12. बील, एस. (1911). लाइफ ऑफ़ ह्वेनसांग. लन्दन. पृष्ठ **110–111.**
13. संकलिया, एच.डी. पूर्वोक्त. पृष्ठ **68.**
14. बील, एस. (1911). पूर्वोक्त. पृष्ठ **111.**
15. वर्मा, जगमोहन. (2007). सुयेनच्वांग की भारत यात्रा. वाराणसी. पृष्ठ **117–18.**
16. त्रिपाठी, हवलदार. बौद्ध धर्म और विहार. पृष्ठ **193.**

17. विद्याभूषण. हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लॉजिक. पृष्ठ **516.**
18. अल्तेकर, ए.एस. एजुकेसन इन एन्सिएन्ट इंडिया. पृष्ठ **121.**
19. तारनाथ, लामा. पूर्वोक्त. पृष्ठ **39.**
20. घोष, ए. (1965). अर्कियोलोगिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया. पृष्ठ **7.**
21. भट्ट, जनार्दन. बौद्ध कालीन भारत. पृष्ठ **376—77.**
22. तारानाथ, लामा. पूर्वोक्त. पृष्ठ **135.**
23. पूर्वोक्त।
24. संकलिया एच.डी. (1972). पूर्वोक्त. पृष्ठ **69.**
25. प्रसाद, सर्जुन. पूर्वोक्त. पृष्ठ **49.**

7

लॉकडाउन जलवायु परिवर्तन और प्रकृति के लिए बना वरदान

डॉ० अमित अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग
राजकीय महाविद्यालय, रजानगर, (रामपुर)

सारांश

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत शोध संस्थान और एन.जी.ओ. आदि के लिए कोरोना महामारी के दौरान, वैश्विक स्तर पर लगा लॉकडाउन, शोध के लिए अपार संभावनाएं लेकर आया है। वैश्विक स्तर पर देश प्रदूषण से जूझ रहे थे और अरबों डॉलर का बजट पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए वैश्विक स्तर पर व्यय किया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण आदि व्यापक सुधार दृष्टिगोचर हुए हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ओजोन छिद्र भरने की सूचना दी गई है। प्रकृति को मुस्कुरा रही है, प्रदूषण अपने न्यूनतम स्तर पर जा चुका है। नदियां कल बहने लगी हैं, पुष्प खेल रहे हैं जैसे मानो धरा पर स्वर्ग आ गया हो। आकाश का विस्तार हो चुका है, पर्वत चमक रहे है. हवा में प्राणवायु आ गई है। चिड़िया चहक रही है पेड़ों पर, सूरज की लालिमा छाई। देखो अपनी धरती मां सोलह श्रृंगार कर कराई। खुश हैं जीव–जंतु उन्हें अब शहरों से डर नहीं लगता, शहरों की सड़कें और गलियां उनका अब स्वागत कर रही हैं। ट्रेन, बस और ट्रक के शोर जो ने सोने नहीं देते थे, अबे खामोश है। वाह रे ! कोरोना तेरी डर से ही मानव खामोश है। इस संक्रमण से अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था में नकारात्मक प्रभाव के साथ–साथ कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़े हैं और आज धरा अपनी हरियाली को वापस पाकर खुश है। पिछले चार महीनों में हमारी दुनिया एकदम बदल गई है। हजारों लोगों की जान चली गई. लाखों लोग बीमार पड़े हुए हैं। इन सब पर कोविड–19 वायरस का पहाड़ टूट गया और जो नागरिक वायरस के प्रकोप से संक्रमित होने से रह गए उनका रहन सहन का ढंग बदल गया। चीन के वुहान शहर से उत्पन्न यह वायरस दिसंबर 2019 में दुनिया के सामने आया उसके पश्चात इसने दुनिया में हलचल मचा दी। विश्व में तालाबंदी की शुरुआत चीन के शहर वुहान से हुई। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात इटली में पहली बार इतनी सख्त तालाबंदी करनी पड़ी क्योंकि वहां बड़ी संख्या में इस वायरस ने लोगों को संक्रमित कर मौत की नींद सुला दिया। लोग अपने घरों में बंद हैं। दुनिया भर में उड़ानें रद्द कर दी गई हैं और बहुत से संबंध सोशल डिस्टेंसिंग के शिकार हो गए हैं। ये सारे कदम इसलिए उठाए गए हैं, ताकि नए कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोका जा सके और इससे लगातार बढ़ती जा रही मौतों के सिलसिले को थामा जा सके। भारत की राजधानी दिल्ली में पब, बार और थिएटर बंद हैं। षोध पत्र के माध्यम से लॉक डाउन के दौरान पर्यावरण के कुछ सकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

कोविड–19, जलवायु परिवर्तन, अर्थव्यवस्था, विकासशील देश, औद्योगिकीकरण, पेरिस संधि, कार्बन इमीशन, रियो सम्मेलन, कोरोना संकट दुनिया भर में कोरोना वायरस के व्यापक हमले और मानवता पर छाये अभूतपूर्व संकट को देखते हुये पहली नजर में जलवायु परिवर्तन या जलवायु नीति पर बात करना भी थोड़ा अजीब या असामान्य लग सकता है। जब हमारे सामने जीवन–मरण का सवाल मंडरा रहा हो और पूरी अर्थव्यवस्था के चौपट हो जाने का खतरा हो तो क्या हमें अभी क्लाइमेट पॉलिसी के बारे में सोचना भी चाहिये? जलवायु परिवर्तन के इस दौर में कोविड–19 नाम के वायरस ने विश्व में लाखों व्यक्तियों को अकाल मौत दे दी और करोड़ों व्यक्ति इस महामारी के संक्रमण से ग्रसित हो गए। जलवायु परिवर्तन के इस दौर में वायरस के नए–नए रूप सामने आ रहे हैं जिसके सामने मनुष्य बेबस नजर आ रहा है। कोविड–19 महाविस्फोट के 3 माह पश्चात भी संक्रमित व्यक्तियों की पहचान करना एक जटिल कार्य था इस समस्या से यूरोपीय संघ और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका आदि जैसे विकसित क्षेत्र भी जूझ रहे थे। चीन में तो सरकार ने कोरोना से मारे गये लोगों की जानकारी ही बाहर आने नहीं दी है। भारत में कोविड–19 संकुल व्यक्तियों की पहचान के

लिए मूलभूत स्वास्थ्य ढांचे और कार्मिकों की कमी थी। यहां भारत में चार लॉकडाउन (25 मार्च 2020–31 मई 2020), और दो अनलॉक अवधि (1 जून–31 जुलाई 2020) रहे हैं। विभिन्न लॉकडाउन चरणों के प्रत्यक्ष परिणाम यह थे कि कोविड–19 की मृत्यु दर और इसके मामलों को काफी हद तक नियंत्रित किया गया था। हालाँकि, इन चरणों के विभिन्न अप्रत्यक्ष प्रभाव हुए हैं क्योंकि इस तरह के बड़े स्तर पर लॉकडाउन लंबे समय से दुनिया में लागू नहीं किए गए हैं। लॉकडाउन, जिसे 68 दिनों तक बढ़ा दिया गया था, ने सभी वाणिज्यिक, औद्योगिक और परिवहन गतिविधियों को बंद कर दिया। तब से, विभिन्न राज्य सरकारों ने रिपोर्ट किए गए कोविड –19 मामलों की संख्या में स्पाइक का अनुभव करने वाले क्षेत्रों में कर्फ़्यू और तालाबंदी लागू कर दी है। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा विकसित स्ट्रेंजेंसी इंडेक्स के अनुसार, भारत का लॉकडाउन दुनिया भर में सबसे कठोर लॉकडाउन में से एक था।

अध्ययन का उद्देश्य

(क) कोविड–19 महामारी को समझना।

(ख) लॉकडाउन के बारे में समझना।

(ग) महामारी संक्रमण को रोकने के लिए किए गए लॉकडाउन से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव का विश्लेषण।

अनुसंधान क्रिया विधि

इस शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों का अध्ययन किया गया है। प्राथमिक डेटा उत्तरदाताओं से बात करके एकत्र किया जाता है, जबकि द्वितीयक डेटा ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रकाशित शोध पत्रों, पुस्तकों या पत्रिकाओं या सरकारी रिकॉर्ड से लिया जाता है।

प्रकृति के लिए वरदान

वैश्विक स्तर पर दुनिया के महानगरों और शहरों में कोरोना वायरस के कारण प्रतिदिन हजारों व्यक्ति अपनी जान से हाथ धो रहे थे किंतु ऐसी विशम परिस्थितियों में दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पर्यावरण के लिए अच्छी तस्वीर बन रही थी। अमरीका जैसी सुपरपावर की हालत खराब कर दी है. महामारी रोकने हेतु की गई तालाबंदी प्रकृति के श्रृंगार के लिए वरदान साबित हुई। वातावरण का आवरण प्रफुल्लित हो गया। वातावरण धुल कर साफ हो चुका है। हालांकि ये तमाम कवायद कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए हैं।

लॉकडाउन की वजह से तमाम फैक्ट्रियां बंद हैं। यातायात के तमाम साधन बंद हैं। वैश्विक स्तर पर सकल घरेलू उत्पाद रसातल में चला गया जिससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अर्थव्यवस्था मंदी की ओर जाने लगी जिसके कारण लाखों श्रमिक बेरोजगार हो गए। शेयर सूचकांक निचले स्तर पर पहुंच गया। तालाबंदी के कारण औद्योगिक उत्पादन वृद्धि हो गया जिससे कार्बन उत्सर्जन रुक गया। यातायात के साधन अर्थात सड़क परिवहन वायु परिवहन एवं जल परिवहन पर रोक लग गई जिसके कारण वायु प्रदूषण विगत विगत वर्षों की तुलना में 30 से 70 प्रतिशत तक कम हो गया।

प्रदूषण में भारी कमी

पर्यावरण पर तालाबंदी के सकारात्मक प्रभावों की इतनी अच्छी उम्मीद किसी को नहीं थी। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली क्षेत्र या देश के अन्य औद्योगिक क्षेत्रों में प्रकृति का नजारा पूरी तरीके से बदल गया था। अब मनुष्य घड़ी के अलार्म से नहीं अपितु परिंदों की आवाज से जागते थे जिन्हें वह जिंदगी की भाग दौड़ में भूल चुके थे।

स्वच्छ आसमान

सड़क परिवहन बंद होने के कारण सड़क के किनारे लगे हुए पेड़ पौधे एवं फूल गुलजार नजर आ रहे थे जो पहले धूल और वायु प्रदूषण के कारण पनप नहीं पा रहे थे। पृथ्वी के वायुमंडल के चारों ओर स्ट्रेटोस्फीयर की परत 10 से लेकर 50 किलोमीटर तक होती है। इसी के मध्य ओजोन परत होती है जो पृथ्वी को सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों से बचाती है। इसका क्षरण जादुई तरीके से इस दौरान रुक गया। आसमान स्वच्छ होने के कारण सभी तारे रात में आसानी से दिख रहे थे जो पहले नहीं दिखते थे। तालाबंदी के दौरान गंगा और यमुना नदी का जल इतना सच हो गया कि उसको कुछ स्थानों पर आसानी से पिया जाने लगा। आसमान स्वच्छ होने के कारण बादल कपास की रूई जैसे सफेद नजर आते है। 20 मई 2020 को वातावरण में धूल के कण कम होने से बादलों से रोशनी परावर्तित होकर शहरों में मनोहर नजारा पैदा कर रही थी। चाय का मग लेकर जरा देर के लिए बालकनी में जाएं, तो नजर ऐसे आसमान पर पड़ती है, जो अजनबी नजर आता है। इतना नीला आसमान, दिल्ली–एनसीआर में रहने वाले बहुत से लोगों ने जिंदगी में शायद पहली बार देखा हो।

क्लाइमेट और पर्यावरण की अनदेखी भविष्य में ऐसी और महामारियां ला सकती है। हमारी आबो–हवा और जैव विविधता जो कि जलवायु नीति का अहम हिस्सा है का संबंध इस संकट से है। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण की उपेक्षा से वैश्विक स्तर पर वायरस की नई नई प्रजातियां पैदा हो रही हैं और भविष्य में भी ऐसी महामारी या उत्पन्न हो सकती हैं। वायु प्रदूषण और जैव विविधता का जलवायु पर प्रभाव पड़ता है जिसके कारण यह घटक जलवायु नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। दुनिया के

तमाम विकसित एवं विकासशील देशों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है और कृषि उत्पादन में कमी के कारण सकल घरेलू उत्पाद में कमी आती है। वैश्विक स्तर पर देश राष्ट्रीय आय का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कोविड–19 महामारी को रोकने के लिए खर्च कर रहे हैं ताकि इसके संक्रमण पर रोक लगाई जा सके। जलवायु परिवर्तन से विश्व का कोई भी देश प्रभावित होने से नहीं बच सकता। तालाबंदी एक अल्पकालीन व्यवस्था थी जिसका मुख्य उद्देश्य महामारी के संक्रमण को रोकना था। तालाबंदी के दौरान यह आसानी से पता चल गया कि किन कारणों से पर्यावरण किस हद तक प्रभावित होता है। यदि पर्यावरण को सुरक्षित रखना है तब कौन से उपाय अधिक प्रभावषाली होंगे इसकी जानकारी इस लॉकडाउन के दौरान मिल गई। जलवायु परिवर्तन मानव के स्वास्थ्य एवं वातावरण को प्रभावित कर रहा है। इन सब जटिल मुद्दों पर इस षोध पत्र में चर्चा की गई है जो तालाबंदी के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाते हैं।

प्रकाश रासायनिक क्रिया जटिल है लेकिन समझी जा सकती है। कुंजी अवलोकन यह है कि सामान्यतया, समताप मंडल में अधिकांश क्लोरीन स्थायी भण्डार योगिकों में रहती है, प्राथमिक रूप से हाइड्रोजन क्लोराइड (HCl) और क्लोरीन नाइट्रेट। अंटार्कटिक सर्दियों और वसंत के दोरान ध्रुवीय समताप मंडलीय बादल के कणों की सतह पर अभिक्रिया इन भण्डार योगिकों को प्रतिक्रिया मुक्त मूलकों (Cl & ClO) में बदल देती है। बादल वायुमंडल में से NO. 2 को भी हटा देते हैं, वे इसे नाइट्रिक अम्ल में बदल देते हैं, यह नव निर्मित ClO को ClONO2 में परिवर्तित होने से रोकता है। ओजोन रिक्तिकरण में सूर्य के प्रकाश की भूमिका के कारण अंटार्कटिक ओजोन रिक्तीकरण वसंत ऋतु के दौरान सबसे अधिक होता है। सर्दियों के दौरान, हालांकि PSCs अपनी अधिकतम मात्रा में होते हैं, ध्रुव के ऊपर रासायनिक अभिक्रिया के लिए कोई प्रकाश नहीं होता है। बसंत के मौसम के दौरान, तथापि, सूरज उदय होकर प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाओं के लिए ऊर्जा प्रदान करता है और ध्रुवीय समताप मंडल के बादलों को पिघला देता है, जिससे उसमें जकडे हुए योगिक मुक्त हो जाते हैं। अधिकांश नष्ट हुई ओजोन नीचले समताप मंडल में होती है, इसके विपरीत सजातीय गैस चरण प्रतिक्रियाओं, के माध्यम से बहुत कम ओजोन रिक्तिकरण होता है, जो प्रारंभिक रूप से उपरी समताप मंडल में होता है। वसंत के अंत के पास गर्मी देने वाला तापमान मध्य दिसम्बर में भंवर को तोड़ देता है। गर्म होने पर ओजोन से युक्त हवा नीचले आक्षांशों से प्रवाहित होती है, PSCs नष्ट हो जाते हैं, ओजोन रिक्तीकरण प्रक्रिया बंद हो जाती है, ओजोन छेद भर जाता है। अंटार्कटिका पर ओजोन होल कुछ उदाहरणों में इतना बड़ा हो गया है कि ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड, के दक्षिणी भागों तक पहुँच गया है, पर्यावरणवादियों के अनुसार सतही यु वी में वृद्धि महत्वपूर्ण हो सकती है।

वायु गुणवत्ता सूचकांक पर प्रभाव

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 115 भारतीय शहरों का विश्लेषण किया। सीपीसीबी ने 16 मार्च से 15 अप्रैल, 2020 के बीच शहरों की निगरानी की। 78 फीसदी शहरों का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) लॉकडाउन के दौरान 'अच्छा' और 'संतोषजनक' था, जबकि लॉकडाउन से पहले के चरण में यह 44 फीसदी था। ''गिरावट को प्रतिबंधित वाहन आंदोलन, निर्माण गतिविधियों पर रोक, कम सड़क की धूल के पुनरुत्थान और औद्योगिक गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।''

ध्वनि प्रदूषण में अत्यधिक कमी

ध्वनि प्रदूषण तो इतना कम है की आपकी आवाज दूर तक सुनाई दे रही है। चिड़ियों का चहचहाना सुबह से ही शुरू हो जा रहा है। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कहा की रात दो बजे भी चिड़ियों की आवाज सुनाई दे रही है खासकर कोयल और बुलबुल की. कुछ ऐसी भी चिड़ियाँ नजर आ रही हैं जो पहले कम दिखती थीं।

मानव पर ओजोन परत रिक्तीकरण के प्रभाव

UVB (ओजोन के द्वारा अवशोषित उच्च ऊर्जा यूवी विकिरण) को त्वचा कैंसर के सहयोगी करक के रूप में सामान्यतया स्वीकार किया जाता है। इसके अलावा, सतही यु वी में वृद्धि, क्षोभ मंडल की ओजोन में वृद्धि करती है, जो मानव के स्वास्थ्य के लिए जोखिम है। सतही यू वी में वृद्धि, सूर्य के प्रकाश की विटामिन डी के संश्लेषण की क्षमता में वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है।

विटामिन डी के कैंसर निरोधक प्रभाव ओजोन रिक्तिकरण के एक संभावित लाभदायक प्रभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्वास्थ्य लागत के शब्दों में, बढे हुए यू वी विकिरण के संभावित लाभ बोझ को बढ़ा सकते हैं।

क्षोभ मंडल में ओजोन में हुई वृद्धि

सतही यू वी में वृद्धि क्षोभ मंडल में ओजोन की वृद्धि का कारण है। भू स्तर की ओजोन को सामान्यतया एक स्वास्थ्य जोखिम माना जाता है, क्योंकि अपने प्रबल ओक्सिकारी गुन के कारण ओजोन विषाक्त है। इस समय, भू स्तर की ओजोन मुख्य रूप से यू वी विकिरण के वाहनों से निकली गैसों के दहन पर क्रिया के कारण उत्पन्न हुई है। पर्यावरणविद् शम्स परवेज के मुताबिक, लॉकडाउन के दौरान ओजोन लेयर को नुकसान पहुंचाने वाले कार्बन और दूसरी गैसों का उत्सर्जन 50 फीसदी तक घटा, जिसका पॉजिटिव इफेक्ट आने वाले समय में दिख सकता है। इस दौरान एयर ट्रैफिक 80 तक कम हुआ है, जो फिलहाल अच्छे संकेत रहे हैं। एनसीबीआई जर्नल में प्रकाशित भारतीय वैज्ञानिकों की रिसर्च कहती है, दुनिया के कुछ देशों में 23 जनवरी से लॉकडाउन लगने के बाद प्रदूषण में 35 फीसदी की कमी और नाइट्रोजन ऑक्साइड में 60 फीसदी की गिरावट आई है। इसी दौरान ओजोन लेयर

को नुकसान पहुंचाने वाले कार्बन का उत्सर्जन भी 1.5 से 2 फीसदी तक घटा और कार्बन डाई ऑक्साइड का लेवल भी कम हुआ। ये सभी ऐसे फैक्टर हैं, जो ओजोन लेयर को नुकसान पहुंचाते हैं।

फसलों पर प्रभाव

यू वी विकिरण में वृद्धि फसलों को प्रभावित कर सकती है। पोधों की कई आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियाँ जैसे चावल नाइट्रोजन की प्राप्ति के लिए उनकी जडों में रहने वाले नील हरित जीवाणु पर निर्भर करती हैं। नील हरित जीवाणु परा बेंगनी प्रकाश के लिए संवेदी हैं और वे इसके बढ़ने से प्रभावित होंगे। लॉकडाउन के दौरान कृषि क्षेत्र ने सुचारू रूप से काम किया था। भारत सरकार ने कृषि संबंधी गतिविधियों के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए सभी आवश्यक उपाय किए हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने लॉकडाउन अवधि के दौरान पालन किए जाने वाले किसानों के लिए राज्यवार दिशा–निर्देश जारी किए हैं। खेती और इससे जुड़ी गतिविधियों को लॉकडाउन से छूट दी गई है. बीज, कीटनाशक, खाद आदि डीलरों/दुकानों तथा अन्य इनपुट संबंधी गतिविधियों को किसानों को इनपुट उपलब्ध कराने के लिए खोलने/मुफ्त करने की अनुमति दी गई। विशेष रूप से कंबाइन हार्वेस्टर की कृषि मशीनरी के अंतर और राज्य के भीतर आवाजाही की सुविधा प्रदान की गई। विभाग द्वारा उठाए गए विभिन्न कदमों के परिणामस्वरूप, रबी फसल की कटाई और ग्रीष्मकालीन फसल की बुवाई दोनों गतिविधियाँ व्यवस्थित तरीके से हुईं। भारतीय रिजर्व बैंक ने 300,000 रुपये तक के फसल ऋण की ब्याज दर पर 3 प्रतिशत रियायत के साथ बैंकिंग संस्थानों द्वारा कृषि सावधि और फसल ऋण को तीन महीने (31 मई तक) की मोहलत दी गई है।

पानी की गुणवत्ता में सुधार

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के डेटा से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश में अपने सबसे प्रदूषित हिस्से में गंगा का पानी अधिक घुलित ऑक्सीजन और कम नाइट्रेट ले जा रहा है। ये परिस्थितियाँ जलीय जीवन के अस्तित्व के लिए अनुकूल हैं। इसकी बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) कुल कॉलीफॉर्म की सांद्रता के साथ–साथ गिर गई है, जो पानी की गुणवत्ता में सुधार का एक वसीयतनामा है। यमुना के लिए भी इसी तरह के सकारात्मक विकास की सूचना मिली है।

प्लेंक्टन पर प्रभाव

अनुसंधान प्लेंक्टन का व्यापक रूप से विलुप्त होना दर्शाता है,[2] मिलियन वर्ष पहले संयोगवश पास के सुपर नोवा के साथ ऐसा हुआ। जब जरुरत से अधिक यू वी किरणें पृथ्वी को पहुँचती हैं तो प्लेंक्टन के अभिविन्यास और गतिशीलता में अन्तर आ जाता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि उस समय ओजोन परत में बहुत अधिक कमजोरी आ जाने के कारण यह विलोपन हुआ, जब सुपर नोवा से विकिरण ने नाइट्रोजन ऑक्साइड का उत्पादन किया जिसने ओजोन के विनाश को उत्प्रेरित किया (प्लेंक्टन विशेष रूप से यू वी प्रकाश के प्रभाव के लिए विशेष रूप से संवेदनशील हैं और समुद्री खाद्य जाल के लिए जैविक रूप से महत्वपूर्ण हैं।)।

नगरपालिका ठोस अपशिष्ट में कमी

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन ने नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (एमएसडब्ल्यू) उत्पादन को काफी कम कर दिया है। पुणे के एमएसडब्ल्यू के दैनिक टन में 29 प्रतिशत की गिरावट आई है, जबकि चेन्नई और नागपुर के क्रमशः 28 प्रतिशत और 25 प्रतिशत की गिरावट आई है। यहां तक कि दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में भी उपभोक्ता मांग में बदलाव और स्थायी खपत के प्रति व्यवहार में बदलाव के कारण इसी तरह की गिरावट की उम्मीद की जा सकती है।

सारणी संख्या – 1 पर्यावरण पर लॉकडाउन के कारण 10 प्रमुख सकारात्मक प्रभावों की सूची

(उत्तरदाताओं सहमति का प्रतिशत)

क्र० सं०	लाभ	प्रतिशत
1.	ओजोन परत में सुधार	97
2.	वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में सुधार	93
3.	साफ आसमान/प्रदूषण मुक्त ताजमहल/हिमालय श्रृंखला 30 साल बाद देखी गई	91
4.	स्वच्छ वातावरण से फसलों के प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में तेजी	89
5.	मेट्रो शहरों में कोई यातायात प्रदूषण नहीं।	83
6.	वायु प्रदूषण में कमी/ग्रीनहाउस गैसों की घटती मात्रा	97
7.	नदी के गंगा या यमुना में बेहतर जल/स्वच्छ जल।	73
8.	ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार	56
9.	जानवर सड़कों पर खुलेआम घूमते हैं/वन्यजीवों के लिए भोजन और आवास	49
10.	ध्वनि प्रदूषण में अत्यधिक कमी	98

स्त्रोत – स्वतः सर्वेक्षण

सारणी संख्या – 1 विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है की सर्वाधिक उत्तरदाता यह मानते हैं कि लॉकडाउन के दौरान ध्वनि प्रदूषण में अत्यधिक कमी आई है, इस कारक से उत्तरदाताओं का सहमति प्रतिशत 98 है। इसके पश्चात ओजोन परत में सुधार एवं वायु प्रदूषण में कमी के लिए 97 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत हैं। 93 प्रतिशत उत्तरदाता वायु गुणवत्ता सूचकांक में सुधार के लिए तालाबंदी को मुख्य कारक मानते हैं। स्वच्छ आसमान वाले कारक से 91 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत है।

निष्कर्ष

वैश्विक स्तर पर जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण आदि व्यापक सुधार दृष्टिगोचर हुए हैं। वैज्ञानिकों द्वारा ओजोन छिद्र भरने की सूचना दी गई है। वैश्विक ओजोन लेयर नीति पर अपना प्रभाव बनाना और देश के हितों की रक्षा करना ओजोन संकट के बाद सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिये। अप्रैल की शुरुआत में वैज्ञानिकों को उत्तरी ध्रुव यानी नॉर्थ पोल के ऊपर स्थित ओजोन लेयर में एक 10 लाख वर्ग किमी का छेद दिखा था। यह इतिहास का सबसे बड़ा छेद था। उत्तरी ध्रुव यानी नॉर्थ पोल यानी धरती का आर्कटिक वाला क्षेत्र. इस क्षेत्र के ऊपर एक ताकतवर पोलर वर्टेक्स बना हुआ था., जो अब खत्म हो गया है। लॉकडाउन की वजह से कम हुए प्रदूषण की वजह से ये छेद भर गया है। ये एक बड़ी खुशखबरी है। कोविड–19 और इससे जुड़े लॉकडाउन ने हमें पीछे हटने और पर्यावरण पर हमारे प्रभाव का आकलन करने का एक दुर्लभ अवसर दिया है। हम स्वच्छ हवा, पानी और रहने योग्य शहरों को देख रहे हैं जिसकी मांग हम इतने लंबे समय से कर रहे हैं क्योंकि हमें बंद कर दिया गया है। इस प्रकार, जीवन को सामान्य रूप से फिर से शुरू करने से पहले, हमें अपने पर्यावरण को स्वच्छ और टिकाऊ बनाने के लिए अपने सामाजिक व्यवहार, जीवन शैली और सार्वजनिक नीति निर्माण में सतत विकास के सिद्धांतों को स्थापित करने की प्रतिबद्धता बनानी चाहिए। भारत जैसे देशों की जीडीपी पर उसका नकारात्मक असर अब रिसर्च साबित कर रही हैं. भारत ही नहीं विश्व के तमाम गरीब और विकासशील देशों की ओजोन लेयर नीति इससे प्रभावित होगी।

संदर्भ सूची

1. Albritton, Daniel. (1998). "What Should Be Done in a Science Assessment In Protecting the Ozone Layer: Lessons, Models, and Prospects".
2. Allied Signal Corporation. (1989). "Remarks," International CFC and Halon Alternatives Conference. Washington, DC..
3. Anderson, James G. (2008). "The Measurement of Trace Reactive Species in the Stratosphere: An Overview". In Causes and Effects of Stratospheric Ozone Depletion: An Update. National Academy Press: Washington, DC.
4. Angell, J. K. (2007). "The Variations in Global Total Ozone and North Temperate Layer Mean Ozone". *Journal of Applied Meteorology*. vol. 27. no. 1. Pg. **91–97.**
5. Angell, J.K., Korshover, J. (2005). "Quasi-biennial and Long-term Fluctuations in Total Ozone". *Monthly Weather Review.* vol. 101. Pg. **426–43.**
6. Anjum, N.A. (2020). Good in the Worst: COVID-19 Restrictions and Ease in Global Air Pollution.
7. (1996). "Production, Sales, and Atmospheric Release of Fluorocarbons". *Alternative Fluorocarbons Environmental Acceptability Study (AFEAS).* Washington, DC.
8. Beig, G. (2020). Objective evaluation of stubble emission of North India and quantifying its impact on air quality of Delhi. *Sci. Total Environ*. 709:136126.
9. Bera, B. (2020). Environment, development and sustainability; 2020. Significant Impacts of COVID-19 Lockdown on Urban Air Pollution in Kolkata (India) and Amelioration of Environmental Health. Pg. **1–28.**
10. Huang, X. (2020). Enhanced secondary pollution offset reduction of primary emissions during COVID-19 lockdown in China. *National Science Review*.
11. Lau, H. (2020). The positive impact of lockdown in Wuhan on containing the COVID-19 outbreak in China. *J. Trav. Med*.
12. Mahato, S., Pal, S., Ghosh, K.G. (2020). Effect of lockdown amid COVID-19 pandemic on air quality of the megacity Delhi, India. *Sci. Total Environ*. 139086.
13. Margitan, J.J. (1991). "HO 2 in the Stratophere: 3 In-situ Observations". *Geophysical Research Letters.* vol. 8. no. 3.

14. Mitra, A. (2020). Impact of COVID-19 related shutdown on atmospheric carbon dioxide level in the city of Kolkata. *Parana Journal of Science and Education*. et al. 6(3). Pg. **84–92.**
15. Morrisette, Peter M. (1995). "The Evolution of Policy Responses to Stratospheric Ozone Depletion". *Natural Resources Journal*. vol. 29.
16. Muhammad, S., Long, X., Salman, M. (2020). COVID-19 pandemic and environmental pollution: a blessing in disguise? Sci. Total Environ. 138820. doi: 10.1016/j.scitotenv.2020.138820.
17. Rizwan, S., Nongkynrih, B., Gupta, S.K. (2013). Air pollution in Delhi: its magnitude and effects on health. *Indian Association of Preventive & Social Medicine*. 38(1) Pg. **4.**
18. Sahu, S.K., Kota, S.H. (2016). Significance of PM2. 5 air quality at the Indian capital. Aerosol and air quality research. 17(2). Pg. **588–597.**
19. Sharma, S. (2020). Effect of restricted emissions during COVID-19 on air quality in Indian Sci. *Total Environ*. et al. 728:138878.
20. Shrestha, A.M. (2020). Lockdown Caused by COVID-19 Pandemic Reduces Air Pollution in Cities Worldwide. et al.
21. Watts, J., Kommenda, N. (2020). The Guardian; vol. 23. (Coronavirus Pandemic Leading to Huge Drop in Air Pollution).
22. Zambrano-Monserrate, M.A., Ruano, M.A., Sanchez, Alcalde L. (2020). Indirect effects of COVID-19 on the environment. *Sci. Total Environ*. 138813.

8

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन

राजेंद्र शर्मा
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (राजस्थान)

डॉ० अशोक कुमार सिडाना
पूर्व आचार्य
श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय केशव विद्यापीठ
जामडोली जयपुर (राजस्थान)

सारांश

शोधार्थी ने राजस्थान के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति का अध्ययन किया। अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन हेतु यादृच्छिक पद्धति के आधार पर राजस्थान राज्य के जयपुर जिले विभिन्न शैक्षिक ब्लॉकों के 24 सरकारी उच्च माध्यमिक (भौगोलिक दृष्टि के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी) विद्यालयों को चुना। प्रस्तुत शोध में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तुस्थिति जानने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग करके तथ्य संकलित किये गये। प्रश्नावली से इस कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन किया गया। प्राप्त आंकड़ों का निष्कर्ष है कि इस कार्यक्रम की वास्तविक स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों के आधार पर यह कार्यक्रम उतरोत्तर प्रगति कर रहा है तथा देश में कुशल कारीगरों की पूर्ति करने में समर्थ है। यह पाठ्यक्रम स्वरोजगार दिलाने में की ओर बढ़ रहा है।

मुख्य शब्द

उच्च माध्यमिक विद्यालय, व्यावसायिक शिक्षा, वस्तुस्थिति।

प्रस्तावना

आत्मनिर्भरता का लक्ष्य विद्यार्थियों में कौशल बोध एवं क्षमता को विकसित करता है। व्यवसाय की शिक्षा का अभिप्राय किसी भी व्यवसाय का प्रशिक्षण देने तक सीमित ना होकर शिक्षा को व्यावसाय के प्रति झुकाव देने से है। इससे छात्र शैक्षिक विकास के साथ–साथ भविष्य के व्यवसाय की सफलता हेतु अभिरुचि का विकास करता है तथा अपनी रुचि के व्यवसाय से संबंधित विषय में प्रषिक्षण एवं तकनीकी कौशल भी प्राप्त करता है। इसमें व्यापार, प्रौद्योगिकी, खेती आदि से संबंधित विषय तथा कार्यक्रम सम्मिलित है। विद्यार्थियों में व्यावसायिक दक्षता विकसित करने में संस्थानों की विशेष भूमिका होती है। संस्थानों द्वारा इस शिक्षा से छात्रों में ज्ञान, कौशल एवं क्रियात्मक पक्षों को उभारा जाता है। आजीविका हेतु इस ज्ञान को सामान्य शिक्षा के साथ ही दिया जा रहा है इस ज्ञान व रोजगार के पाठ्यक्रम के उद्देश्य, विषयवस्तु, समयावधि एवं कार्य पद्धति अन्य अकेडमिक प्रोग्राम साथ पूर्ण होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में व्यावसायीकरण के महत्त्व को देखते हुए 4 सूत्री कार्यक्रम प्रस्तावित किया गया है–

1. प्रणाली का विकास
2. आजीविका प्रबंधन
3. विशेष वर्गो तथा स्कूलों के बाहर समुदाय के लिए
4. लक्ष्य तथा विकास के लिए तैयारी

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005 में विद्यार्थियों के लिए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर चर्चा की गई–

1. पढ़ाई को रटंत प्रणाली से मुक्त करना।
2. विद्यार्थियों का चहुँमुखी विकास पर बल।
3. ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।

4. विद्यार्थियों में प्रजातन्त्र, राष्ट्रप्रेम आदि का विकास करना।
5. परीक्षा प्रणाली को अधिक लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों को अधिक महत्त्व देना।

भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में 12वीं पंचवर्षीय योजना में कुशल मानव संसाधन उपलब्ध करवाने के लिए उपलब्ध कराने एवं 14 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों की ग्रहण की अधिकतम क्षमता देखते हुए सार्वजनिक और संशोधित व्यावसायिक शिक्षा योजना का ड्राफ्ट तैयार किया गया।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन का सारांश

1. व्यापार एवं इसकी शिक्षा से देश मजबूत होता है। व्यक्तियों की आजीविका से संबंध मजबूत बनाने के लिए भारत को दूर तक जाना है। इस कार्य में व्यवसाय की शिक्षा से काम और दैनिक जीवन के प्रति छात्रों में स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित होता है।
2. कौशल विकसित करने वाली संस्था में स्वीकृत पद के अनुसार शिक्षकों को पदस्थापित किया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने की तत्काल जरूरत है तथा इस क्षेत्र में बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध होना जरूरी है।
3. पेशेवर विवेक एवं प्रशिक्षण के सन्दर्भ में शिक्षार्थियों को कार्यस्थल पर अनुभवजन्य प्रशिक्षण व मार्गदर्शन सकारात्मक रूप से प्रभावित करते है।
4. छात्रों की विचार व कार्य की चिंता स्कूल के अन्दर व बाहर दोनों जगह मायने रखती है एवं छात्रों के जीवन में मामूली मामलों का प्रभाव उनके कार्यक्रम में रहने या छोड़ने पर दिखता है।
5. उच्च शैक्षणिक शिक्षा संस्थान में सलंग्न होने के विशिष्ट पैटर्न विकसित होता है। उच्च शिक्षा के मार्ग को आकार देने वाले समाजशास्त्रीय कारकों का प्रभाव पड़ता है तथा व्यक्तिगत मूल्य और कार्यस्थल कारक कार्य शिक्षा को समृद्ध बनाते हैं।
6. प्रभावी शिक्षण और सीखना तब होता है जब छात्र में सीखाये गए कार्य को अपने करियर में अभ्यास के साथ जोड़ सके। कार्य वृति के प्रति छात्रों में उत्सुकता रहती है तथा छात्र अपने सीखने के अनुभव को आकर्षक और प्रासंगिक मानते है।
7. विद्यार्थियों को रोजगार की सुविधा से लाभान्वित करने हेतु संस्थानों में व्यावहारिक शिक्षा के साथ अतिरिक्त पाठ्यक्रम गतिविधियों की भी आवश्यकता है।
8. रोजगार प्राप्ति एवं योग्य औद्यौगिक श्रमिक बनने के लिए छात्रों में उत्सुकता रहती है साथ ही छात्र वैकल्पिक करियर के साथ आगे बढ़ना पसन्द करते है।

समस्या का औचित्य

सन 2020 में घोषित नई शिक्षा नीति में भाग 2 के अध्याय 16 में पैरा संख्या 16–1 से 16–8 तक एवं भाग 3 के अध्याय 20में पैरा संख्या 20–1 से 20–6 तक व्यावसायिक शिक्षा का वर्णन किया गया है। उक्त नीति में इसकी विषयवस्तु, विकास एवं उद्देश्य के बारे में की चर्चा हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में व्यवसाय की शिक्षा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसको आगे बढ़ाने की विस्तारपूर्वक चर्चा एवं दिशा निर्देश दिए गए हैं। इस शिक्षा की उपयोगिता, युवाओं से सम्बन्धित समस्याओं के साथ पाठ्यक्रम की रोजपरकता, संभावनाओं एवं प्रभावशीलता पर ध्यान केंद्रित करते हुए उक्त शोध समस्या का चुनाव किया गया।

समस्या कथन

''राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन।''

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

राजकीय विद्यालय– राजकीय विद्यालय अधिनियम द्वारा निर्मित होकर सरकारी निकाय है। इसका संचालन शासन के नियमानुसार होता है इसके कर्मचारियों की नियुक्तियां का वेतन सरकार के नियमानुसार होता है और अन्य नियम भी सरकारी अधिनियमों से निश्चित होते है।

व्यावसायिक शिक्षा– किसी व्यवसाय हेतु दिया जाने वाला ज्ञान।

वस्तु स्थिति– वास्तविक स्थिति।

शोध के उद्देश्य

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की वस्तु स्थिति के प्रति प्रशिक्षकों के विचारों में कोई अंतर नहीं है।

शोध विधि

सर्वेक्षण विधि एवं अवलोकन विधि।

शोध के उपकरण

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन हेतु व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम वस्तु स्थिति प्रपत्र (स्व–निर्मित) प्रश्नावली उपयोग में ली गई।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जिला जयपुर (राजस्थान) में व्यावसायिक शिक्षा योजना संचालित करने वाले 24 सरकारी उच्च माध्यमिक (भौगोलिक दृष्टि के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी) स्कूल चयनित किए गए है। प्रत्येक स्कूल के प्रशिक्षकों (ट्रेनर) से प्रश्नावली भरवाकर तथ्य संकलन किया गया।

न्यादर्श

न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधि बनाने के लिए यादृच्छिक विधि से जयपुर जिले के 24 सरकारी उच्च माध्यमिक (भौगोलिक दृष्टि के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी) विद्यालयों को चुना गया।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त प्रदत्त की गणना प्रतिशत से करके निष्कर्षों का संपादन किया गया।

शोध का परिसीमन

शोध कार्य के लिए राजस्थान के केवल जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के 24 सरकारी (भौगोलिक दृष्टि के आधार पर ग्रामीण एवं शहरी) स्कूलों के व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रशिक्षकों (ट्रेनरों) तक सीमित किया गया।

प्रशासन

शोधार्थी ने राजस्थान के जयपुर जिले के शैक्षिक ब्लॉक में सर्वेक्षण का कार्य किया। शोधकर्ता ने सरकारी विद्यालयों में व्यवसायिक शिक्षा के प्रशिक्षकों से वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की। प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अवलोकन करने के बाद प्राप्त प्रदत्तों के सांख्यिकी गणना से प्राप्त निष्कर्ष को निम्न सारणी एवं ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया।

सारणी – 1

क्र० सं०	कथन विवरण	प्रतिशत
1	क्या आपके विद्यालय के विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा के प्रशिक्षण हेतु पूरा समय मिलता है?	100
2	क्या आपके विद्यालय में संचालित व्यावसायिक शिक्षा प्रयोगशाला में उपकरण छात्र अनुपात में उपलब्ध हैं?	97.91
3	क्या आपके विद्यालय में संचालित व्यावसायिक शिक्षा की प्रयोगशाला में सभी उपकरण कार्यशील हैं?	100
4	क्या आपके विद्यालय में प्रयोगशाला (व्या. शिक्षा) में इंटरनेटयुक्त कम्प्यूटर की उपलब्धता है?	37.50
5	क्या आपकी शाला में संचालित व्यावसायिक शिक्षा की प्रयोगशाला में उपलब्ध इंटरनेट एवं कम्प्यूटर का उपयोग विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है?	48
6	क्या आपके स्कूल में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की ट्रेनिंग के दौरान विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान दिया जाता है?	100
7	क्या आप मानते हैं कि विद्यार्थी इस प्रशिक्षण से आत्मनिर्भर बन सकता है?	94
8	क्या आप मानते हैं कि यह पाठ्यक्रम रूचिपूर्ण एवं उपयोगी है?	96

आरेख संख्या – 1

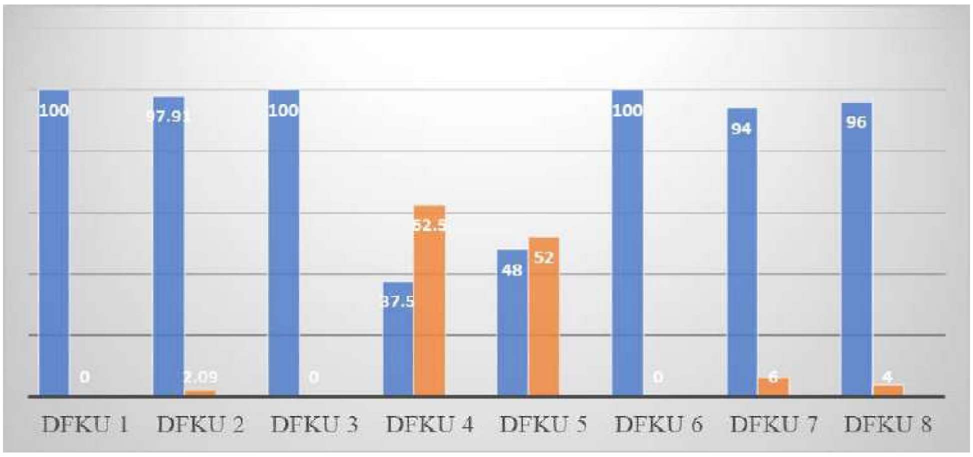

निष्कर्ष

सारणी एवं आरेख संख्या–1: प्रशिक्षकों (ट्रेनरों) से पूछे गये प्रश्न "क्या आपके विद्यालय के विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षण हेतु पूरा समय मिलता है?" के सम्बन्ध में शत–प्रतिशत प्रशिक्षक सहमत पाये गये।

सारणी एवं आरेख संख्या–2: का अवलोकन करने पर पता चलता है तथा लगभग सभी प्रशिक्षक (ट्रेनर) मानते है कि विद्यालय में संचालित विभिन्न ट्रेड की प्रयोगशाला में उपकरण छात्र अनुपात में उपलब्ध हैं।

सारणी एवं आरेख संख्या–3: से ज्ञात होता है कि विद्यालय में संचालित प्रयोगशाला (व्या. शिक्षा) में सभी उपकरण कार्यशील हैं।

सारणी एवं आरेख क्रमांक–4: इस कार्यक्रम के अधिकतर प्रशिक्षक यह स्वीकार करते हैं कि विद्यालयों की प्रयोगशाला में इंटरनेटयुक्त कम्प्यूटर की उपलब्धता नहीं है।

सारणी एवं आरेख संख्या–5: से ज्ञात होता है कि 52 प्रतिशत प्रशिक्षक यह स्वीकार करते हैं कि विद्यालयों की प्रयोगशाला (व्या. शिक्षा) में उपलब्ध इंटरनेट एवं कम्प्यूटर का उपयोग विद्यार्थियों द्वारा नहीं किया जाता है।

सारणी एवं आरेख क्रमांक–6: इस प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक ज्ञान दिया जाता है एवं सैद्धांतिक पाठ्यक्रम पूर्ण होता है।

सारणी एवं आरेख क्रम–7: इस कार्यक्रम के प्रशिक्षक यह स्वीकार करते है कि विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम से आत्मनिर्भर बन सकता है।

सारणी एवं आरेख संख्या–8: से ज्ञात होता है कि यह पाठ्यक्रम रूचिपूर्ण एवं उपयोगी है।

उपसंहार एवं शैक्षिक निहितार्थ

निष्कर्षतः व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रशिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थी काल में दी जाने वाली यह कार्य शिक्षा रूचिपूर्ण, उपयोगी एवं रोजगार प्राप्ति में सहायक होगी। व्यवसायिक शिक्षा योजना छात्रों को आत्मनिर्भर और रोजगार मुखी बनाएगी तथा छात्रों में कार्य कौषल की क्षमता विकसित होगी। इस कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को व्यावहारिक बनाकर आधुनिक ज्ञान प्रणाली से जोड़ना है। व्यावसायिक शिक्षा योजना ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में विद्यार्थियों विशेषकर बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने की ओर अग्रसर है। रोजगार हेतु दिया जाने वाला यह ज्ञान कार्यक्रम सफलता की ओर उन्मुख है। यह कार्यक्रम नव प्रयोगों के साथ सफलता की सीढ़ी चढ़ रहा है।

संदर्भ सूची

1. पांडे, राम शकल. (2001). ''शिक्षा मनोविज्ञान''. आर लाल बुक डिपो, सूर्या पब्लिकेशनः मेरठ (उ.प्र.)।
2. बेस्ट, जान डब्लू. (1983). 'रिसर्च इन एजुकेशन'. प्रिंटिंस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेडः नई दिल्ली।
3. आहूजा, राम. (2005). "सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान". रावत पब्लिकेशनः जयपुर।
4. त्रिपाठी, रघुवंश. (1988). "प्राथमिक सांख्यिकी". हरप्रसाद भार्गव व प्रकाशकः आगरा (उ.प्र.)।
5. (2020). राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क. भारत सरकारः नई दिल्ली।
6. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति. भारत सरकारः नई दिल्ली।
7. (2019–20). व्यावसायिक शिक्षा योजना दिशा निर्देश. राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषदः जयपुर।
8. शर्मा, आर.ए. (2004). "मापन मूल्यांकन और सांख्यिकी". लायल बुक डिपोः मेरठ (उ.प्र.)।
9. https:@@www-ripublication-com
10. https:@@www-researchgate-net@publication@282423923
11. https:@@www-iiste-org
12. https:@@ervet&journal-springeropen-com@articles@10-@s40461&017&0053&4
13. https:@@journals-sub-uni&hamburg-de@hup2@ijrvet@
14. https:@@www-education-govin@sites@upload&files@mhrd@files@NEP&final& HINDI&0-pdf
15. http:@@www-psscive-ac-in@
16. https:@@www-aicte&india-org@education@vocational&education

9

वरिष्ठजन एवं आत्महत्या : कारण व निदान

डा० सुबोध कुमार
शोध पर्यवेक्षक
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा
कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज0)

महेश शर्मा
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा
कोटा विश्वविद्यालय कोटा (राज0)

सारांश

वर्तमान मे हर पाँच मेसे एक आत्महत्या किसी वृद्धजन की होती है. यह घटाना क्रम चिंता का विषय है। इन घटनाओ के प्रति समाज, समुदाय में जागरूकता व ध्यान आकर्षण अति आवश्यक है। इस अवधारणा की स्पष्टता और इस से जुड़े कलंक दूर करने के प्रयास मे 10 सितम्बर को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस के रूप मे मनाया जाता है। इस आयोजन को करने का आधार इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ सुसाइड प्रिवेशन (आई ए एस पी) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की अवधारणा है। इस अवधारणा का मूल आत्महत्या को लेकर है, जिसे बहुत से व्यक्ति नही जानते है।

मुख्य शब्द

आत्महत्या, वृद्धजन, वरिष्ठजन।

प्रस्तावना

मीडिया, रिपोर्टस अखबारो का मुख्य ध्यान किशोर/वयस्क आत्महत्याओं पर केन्द्रित रहता है। अधिकांश लोगो का यह मत है कि आत्महत्या की समस्या केवल 18–50 आयु वर्ग के लोगो के समूह के साथ जुड़ी हुई है। इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री की प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार भारत मे आत्महत्या से मरने वाले 5 मे से 1 व्यक्ति की उम्र 65 वर्ष या अधिक है। देश मे वृद्धजनो की आत्महत्या की दर इतनी अधिक होने के बाद भी इन घटनाओ की तरफ हमारा ध्यान नही जाता है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण व अनहोनी घटनाए है। अधिकांश घटनाओ की रिपोर्ट दर्ज नही हो पाने के कारण वे छिपी रह जाती है।

इन घटनाओ के विरोध मे आवाज उठाने की आवश्यकता है। इसके लिए हमे यह जानना होगा कि वृद्धजनो मे आत्महत्या की प्रवृत्ति क्यों बढ़ रही है। वृद्धजनों के मनोवैज्ञानिक, स्वास्थ्य को पहचानना व जानना अत्यंत आवश्यक है। इन सबसे जरूरी यह है कि आत्महत्या की बढ़ती प्रवृतियो पर रोक कैसे लगाई जाये?

वृद्धावस्था मे आत्महत्या की घटनाओ पर ध्यान क्यों दिया जाना चाहिए?

संयुक्त राष्ट्र ने भारत को 'वृद्ध हो रहा' देश कहा है, जहाँ वृद्धो का जनसंख्या मे अनुपात बढ़ रहा है। 2011 मे भारत की कुल जनसंख्या मे से 8.6 प्रतिशत लोग 60 वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे और अनुमान है कि 2050 तक यह तिगुना हो जाएगा और वृद्ध लोग जनसंख्या का 20 प्रतिशत हिस्सा होंगे।

वरिष्ठजनो की आबादी मे वृद्धि को देखते हुए, आत्महत्या की घटनाओ के रोकथाम के लिए जरूरी है कि अति संवेदनशील उच्च जोखिम वाले वृद्धजनो की पहचान जल्दी की जाए। उन वरिष्ठजनो की पहचान कर उनके प्रति सहानुभूति बढ़ाई जाये ताकि हम वृद्धावस्था मे होने वाली आत्महत्याओ को रोकने मे मदद कर सके।

आत्महत्या सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र मे एक प्रमुख चिंता का विषय है जिससे समाज के सभी वर्ग प्रभावित होते हैं। इसलिए, वृद्धजनो की आत्महत्या एक गंभीर चिंतन का विषय है। इस चिंता को दूर करने के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओ, नीति निर्माताओ, समुदायो और पूरे समाज के हिस्से के रूप सब का ध्यान आकर्षित करना जरूरी है।

वरिष्ठजनो को वृद्धावस्था मे आत्महत्या का जोखिम अधिक क्यों है?

वृद्धावस्था मे वृद्धजनो को अनेक समस्याओ का सामना करना पड़ता है जैसे शारीरिक स्वास्थ्य में गिरावट, शरीर मे होने परिवर्तनों को स्वीकार करना, शारीरिक शक्ति और लचक मे कमी, दृष्टि और सुनने की समस्याएँ, तंत्रिका संबंधी और जीवन–शैली से संबंधित बीमारियों, जीवनसाथी मित्रो, सहकर्मियों आदि के मृत्यु का शोक। यदि इन्हें उचित सामाजिक और भावनात्मक सहयोग व समर्थन न मिले तो इन समस्याओं का सामना करना कठिन होता है। यदि समय पर इन समस्याओं का निराकरण नही किया जाए तो वृद्धजन खुद को असहाय व अकेला महसूस करते है। असहाय व अकेला होने पर वृद्धो मे तनावजनित बीमारियाँ उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

वरिष्ठजनों मे ही मानसिक स्वास्थ्य समस्याओ की संभावना अधिक क्यों रहती है?

सामाजिक निवृत्तिकरण, बहिष्कार या उपेक्षा :–

यह सबसे आम व प्रमुख समस्याओ मेसे एक है। ऐसे कई कारण गिनाए जा सकते हैं जिन की वजह से वृद्धजनो को सामाजिक कार्यक्रमों के लिए आमंत्रित नही किया जाता है जैसे ठीक से सुनाई न देना, शारीरिक अशक्तता, एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा में कठिनाई का या परिवार से सहयोग व समर्थन की कमी।

एकाकीपन :–

सामाजिक निवृत्तीकरण या बहिष्कार यदि हो जाये तो एकाकीपन स्वाभाविक परिणाम है। वृद्धावस्था व्यक्ति के जीवन का अंतिम चरण है इसमे उन्हें परिवार और मित्रो से सामाजिक और भावनात्मक सहयोग की अपेक्षा रहती है। ऐसा भी हो सकता है कि वृद्धजनो के कई मित्र अपनी स्वयं की स्वास्थ्य समस्याओं के कारण अब उनके साथ समय नही व्यतीत कर पाये।

खुद को दूसरो पर बोझ समझना :–

वृद्धजनो मे इस आयु मे ये हीन– भावना उत्पन्न हो जाती है कि वे दूसरो पर बोझ है। और वे इस तकलीफ से कई मानसिक व शारीरिक समस्याओ से ग्रसित हो जाते है। और वे यह पीड़ा शब्दो मे व्यक्त नहीं कर पाते है।

शोक या दुःख :–

वृद्धजनो को इस आयु मे अपने प्रियजनो को खोने का डर सताता है। और यदि वे अपने परिजनो मित्रो सहकर्मी आदि को खो देते है तो वे अपार दुःख मे डूब जाते है और उनमें जीवन जीने की इच्छा मे उत्तरोत्तर कमी होती जाती है।

तनाव (अवसाद) :–

यह वरिष्ठजनो की एक प्रमुख समस्या है। भारत देश के अध्ययन मे पाया गया कि लगभग 34.4 प्रतिशत बुजुर्ग आबादी (जिसमे अधिकांश महिलाएं है) को तनाव है। तनाव की स्थिति को अधिक गंभीर करने मे, दुर्व्यवहार, शोषण और उपेक्षा का योगदान होता है।

शोषण और उपेक्षा :–

समाज और समुदाय मे हम जितना सोचते है उससे अधिक वृद्धजनो के साथ दुर्व्यवहार होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 6 मे से 1 वृद्ध व्यक्ति को अपने समुदाय मे उपेक्षा या दर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इनमें शारीरिक मानसिक यौन, मनोवैज्ञानिक भावनात्मक शोषण, वित्तीय/भौतिक शोषण, परित्याग और उपेक्षा शामिल है।

कोविड–19 महामारी :–

वर्तमान मे पूरा विश्व एक अप्रत्याशित महामारी 'कोविड–19' से जूझ रहा है। स्वाभाविक रूप से इस संक्रामक महामारी ने वरिष्ठजनो को अधिक नुकसान पहुंचाया है, और अभी भी चिंता का विषय बना हुआ है। महामारी ने वृद्धजनो मे अकेलापन तनाव, अज्ञात बीमारी का भय आदि मे योगदान दिया है।

आत्महत्या के शुरुआती लक्षणो को खोजने का महत्व :–

आत्महत्या के शुरुआती लक्षणो की पहचान महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि दुर्घटना से सावधानी भली। इसलिए जितना जल्दी हो सके इसे शुरुआती दौर मे ही पहचान लेना महत्वपूर्ण है ताकि नुकसान कम से कम हो तथा निदान शीघ्रता से किया जा सके। निम्नलिखित लक्षण शुरुआती दौर मे ही उत्पन्न हो जाते उनको पहचान कर डॉक्टर को सूचित करने और मदद लेना सही रहता है।

1) वरिष्ठजनो मे नकारात्मक भावनाएँ अधिक देर तक रहने लगती है तथा वे गंभीर प्रतीत होते है।
2) वृद्धजनो के मनोभाव ठीक नहीं रहते है, उनकी रुचि, कार्यो मे घटने लगती है।
3) उनकी दैनिक दिनचर्या मे बदलाव महसुस होता है जैसे पहले के मुकाबले कम/ज्यादा खाना या सोना आदि।
4) वृद्धजनों का परिवार/दोस्तो स्वंय से अलगाव या पृथकता।

5) बार बार ये वाक्य दोहराना कि जिस से लगे कि वे दूसरो पर बोझ है। वे अपने आप को असहनीय या दीन–हीन, असहाय महसूस करते है।

6) वे निराशा, लाचारी, असमान्य व्यवहार प्रकट करते है।

जल्दी से जल्दी लक्षणों को पहचान कर निदान करने का महत्व :–

जितना जल्दी हम लक्षणो की पहचान करेंगे, उतना ही जल्द आत्महत्याओ को रोकने में सफलता मिलेगी। यदि वरिष्ठजनो मे ये लक्षण प्रतीत हो तो उनके मानसिक स्वास्थ्य देखभाल की तरफ हमें अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

जब हम अपने वरिष्ठजनो को धैर्य व शांति से सुनेंगे तो वे अपनी स्वेच्छा से खुलकर अपनी चिताओ के बारे मे बता पाएंगे। जब वरिष्ठजनो को हमारी जरूरत हो तो हम उनके साथ रहें यह बताने के लिए की हम उनकी परवाह करते है। ये सभी छोटी छोटी चीजे करने से उनमे विश्वास उत्पन्न होगा और वे किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम होंगे।

संदर्भ सूची

1. https:// www. aamft.org/AAMFT/consumer_updates/suicide. अमेरिकन एशोशियन ऑफ मैरिज एंड फैमिली थेरिपी।
2. https:// www.psychologytoday.com/us/blog/ understanding gricf/202001/why… आर्टिकल इन साइकोलॉजी टुडे।
3. https:// www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles / pmc 31075734. एनसीबीआई स्टडी ऑन गेरेट्रिक सुसाइड।
4. https://www.todaysgeriatricmedicine.com/news/exclusive. आर्टिकल इन टूडेस गेरेट्रिक मेडिसिन।
5. https:// www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles / pmc 5916258. करंट पर्सपेक्टिव ऑन एल्डर सुसाइडस स्टडी।
6. https://pubmed.ncbi.hlm.nih.gov/1935195/&hbsp-study. डन ऑन एल्डर्लि सुसाइडस इन इंडिया।
7. https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/ww0 11-2017.003. रिसेट स्टडी ऑन एल्डर सुसाइड इन इंडिया।
8. https:// www.jgmh.org/article.asp?issh = 2348 9995: year 2019: वाल्यूम = 6:issu. स्टडी फ्रॉम जर्नल ऑफ गेरेट्रिक मेंटल हेल्थ।

10

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुभाष मीना
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. अशोक कुमार सिडाना
पूर्व आचार्य
श्री अग्रसेन पी.जी. महा. सी.टी.ई. केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

सारांश

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का पता लगाने हेतु प्रस्तुत शोध में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन की अवधारणा, अर्थ एवं स्वरूप व वेदान्त शैक्षिक स्वरूप का पता लगाने के लिए किया गया है। वेदान्त दर्शन में शिक्षा की संकल्पना, वेदान्त अनुसार शैक्षिक लक्ष्य एवं उद्देश्य, वेदान्त आदर्श तथा व्यावहारिक जीवन, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, ज्ञान प्राप्ति के अंग, ज्ञान प्राप्ति के स्त्रोत, ज्ञान प्राप्ति के साधन, ज्ञान प्राप्ति के प्रकार, वेदान्त और अनुशासन, बालक का सामाजिक विकास, वेदान्त दर्शन के अनुसार विद्यालय की अवधारणा, वेदान्त दर्न में शिक्षक की संकल्पना, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध, वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वर्तमान वैश्विक शिक्षण की विशेषताएं तथा वर्तमान वैश्विक शिक्षण में वेदान्त दर्शन के शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श की प्रासंगिकता ज्ञात की गई तथा वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का परिशीलन किया गया।

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। प्राचीन भारत में ज्ञान के स्वरूप का वर्णन हमें वेदों से मिल जाता है। वेदों में ऋग्वेद आदिवेद माना जाता है। इसी वेद में तत्कालीन शिक्षा के स्वरूप का दर्शन मिलता है। वेदों के अनुसार शिक्षा के द्वारा ही मोक्ष प्राप्ति की जा सकती है। ऐसा विश्वास किया जाता था कि शिक्षा ही ज्ञान खोलती है। वैश्विक युग और महाभारत काल में वेद, पुराण, दर्शन, ज्योतिष, व्याकरण तथा कला आदि का परिशीलन किया जाता था। वर्तमान में वैश्विक युग ने अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ा है। उन्नत सूचना और तकनीकी का उपयोग करते हुए ज्ञान, शिक्षा और सीखने की एक नई प्रणाली में समकालीन और अतुल्यकालीन विधियों की एक विस्तृत श्रृंखला लागू हुई है जो शिक्षक और छात्र को अंतरिक्ष और समय की सीमाओं को तोड़ने में सहायता करती है।

अतः वर्तमान बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता की समीक्षा करना आवश्यक हो गया है। क्योंकि आत्मा को ब्रह्म के समान सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ तथा सर्वदर्शी माने बिना लोकतंत्र का मौलिक अधिकार की गरिमा कोई मायने नहीं रखता है। अध्यापक के लिए बालक के व्यक्तित्व का समादर कर पाने की बात वेदान्त के अलावा कौनसा अन्य दर्शन है जो इतनी दृढ़ता के साथ कह सकता है। यदि वैश्विक शिक्षा में लोकतंत्र की भावना, समानता, स्वतंत्रता, वसुधैव कुटुंबकम् को चरितार्थ करना है तो वेदान्त का सहारा लेना ही पड़ेगा। शिक्षा के समानता के आदर्श को स्वीकार करना ही पड़ेगा। इसी कारण वर्तमान वैश्विक शिक्षा में वेदान्त दर्शन के शैक्षिक विचारों का विवेचन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

समस्या कथन

''वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

समस्या का औचित्य व प्रासंगिकता

आज वैश्वीकरण ने पूरे विश्व को मौलिक रूप से बदल दिया है, जिसके फलस्वरूप भारत में भी आर्थिक, सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। हमारी प्राचीन शिक्षा भारतीय दर्शन एवं संस्कृति पर आधारित रही है जो उच्च शिक्षा आदर्शों पर आधारित रही है। परन्तु वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हम भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के आदर्श भूलते जा रहे हैं, अतः आवश्यकता है कि हम अतीत में झांके तथा वेदान्त शिक्षा दर्शन के उपयोगी तत्वों व विशिष्ट गुणों को जानकर उनका वर्तमान वैश्विक

परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का पता लगाकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली का वास्तविक अर्थ में सुधार कर सकें। यही प्रस्तावित शोध का औचित्य एवं महत्व है।

पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या

वैश्विक : विश्व सम्बन्धी या विश्वव्यापी।

परिप्रेक्ष्य : दृष्टि और दृश्य बोध के संदर्भ में वह तरीका है, जिसमें वस्तु से उनके आयामों या विशेषताओं और वस्तुओं के सापेक्ष आंख की स्थिति के कारण आंखों को दिखाई देते हैं।

प्रासंगिकता : का अर्थ यह है कि कोई सूचना, क्रिया या वस्तु किसी मामले में मुद्दे से कितना सम्बद्ध है।

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन

प्रस्तुत शोध में अध्ययन को वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन तक सीमित किया गया है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में वेदान्त दर्शन की शिक्षा प्रक्रिया, शिक्षा व्यवसाय, ज्ञान के लक्ष्य एवं उद्देश्य, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, छात्र अनुशासन, विद्यालय की अवधारणा तथा वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का पता लगाना व वेदान्त दर्शन में शिक्षा के मूल्य एवं आदर्श का अध्ययन करना रहा है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में दार्शनिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्त संकलन एवं व्याख्या

अध्ययन क्षेत्र का परिसीमन होने के बाद वेदान्त शिक्षा दर्शन का अध्ययन करने हेतु विभिन्न पुस्तकालयों में जाकर विस्तृत अध्ययन किया। सम्बन्धित साहित्य तथा वेदान्त दर्शन की शिक्षा प्रक्रिया, गुरु–शिष्य सम्बन्ध, वेदान्त शिक्षा दर्शन में पाठ्यक्रम, वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता, वेदान्त दर्शन में शिक्षा के मूल्य एवं आदर्श का विस्तृत अध्ययन कर तथ्यों का संकलन तथा उनका विवेचन किया है।

शोध निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का परीक्षण करने से इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि वेदान्त दर्शन में शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता आज भी वैश्विक परिप्रेक्ष्य में चरितार्थ होती है। क्योंकि आत्मा को ब्रह्म के समान सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ एवं सर्वदर्शी माने बिना लोकतंत्र का मौलिक अधिकार व्यक्ति की गरिमा कोई मायने नहीं रखता है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी शिक्षा को मार्गदर्शित करने के लिए स्वतंत्रता तथा संयम के बीच समन्वय स्थापित करना आवश्यक है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त वर्तमान अध्ययन तथा वेदान्त शिक्षा दर्शन के संदर्भ विवेकानंद के शैक्षिक विचारों, वेदान्त साहित्य में निहित नैतिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तथा राष्ट्र निर्माण में वेदान्त दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का योगदान आदि विषयों पर शोध कार्य किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. भाटिया, बी.डी. फिलोसोफी ऑफ एजुकेशन।
2. चौबे, एस.पी. एजुकेशनल फिलोसोफीज इन इण्डिया।
3. राधाकृष्णन, एस. शिक्षा के दार्शनिक आधार।
4. चौहान, आर.एस. शिक्षा के दार्शनिक आधार।
5. जौहरी, बी.पी. भारतीय शिक्षा का इतिहास।
6. मुखर्जी, राधा कुमुद. प्राचीन भारत।
7. पाण्डेय, राजेन्द्र. भारत का सांस्कृतिक इतिहास।
8. द्विवेदी, चन्द्र दत्त. प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा का इतिहास।
9. ओड, एल.के. शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि।

11

मुंशी प्रेमचन्द के साहित्य में निहित जीवन मूल्य एवं जीवन कौशल समसामयिक परिपेक्ष्य में

अंजली प्रजापति
शोधार्थी
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ० यशवंती गौड
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग,
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

साहित्य जीवन के सत्य को उद्घाटित करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है। जिसमें साहित्यकार समाज में व्याप्त रीतियों, प्रथाओं, आदर्शों, मूल्यों और आदि सभी को स्थान प्रदान करता है। साहित्यकार कहानी एवं उपन्यासों के माध्यम से लोगो को जोड़ने का प्रयास करता है। ऐसे ही साहित्यकारों में मुंशी प्रेमचंद का नाम शोभनीय है। जिन्होंने अपने लेखों, उपन्यासों तथा कहानी संग्रह के माध्यम से अपने लेखों उपन्यासों तथा कहानी संग्रह के माध्यम से आम जन का जागरूक करने का प्रयास किया। इनका साहित्य सामान्यजन का साहित्य है जो कि वर्तमान स्थिति को भी चरित्रार्थ करता है। उनके साहित्यों में सत्य, अहिंसा सदाचार, जीवन मूल्यों को सहजता से देखा जा सकता है। प्रेमचंदजी के साहित्य में सामाजिक सहयोग प्रेम, शांति के साथ साथ जीवन कौशल भी मुख्यतः देखने को मिलता है। जो व्यक्ति में आत्मविश्वास जाग्रत कर जीवन की समस्याओं का सामना करना सीखाता है।

वर्तमान समय में हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। ऐसी स्थिति में प्रेमचंद की कहानियां हमें जीवन में सहयोग, सदभाव, आत्मोंधोग, स्वावलम्बन जैसे जीवन मूल्यों और कौशलों को अपनाना सिखाती है। इनकी कहानी हर आयु वर्ग के व्यक्ति को आर्कर्षित करती है। मनोरंजन के साथ जीवन को आदर्श रूप में प्रस्तुत करती है। इनकी कहानियों को स्कूल कॉलेज की पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाया जा रहा है। नाटक के रूप में मंचन किया जा रहा है। साथ ही सोषल मीडिया पर भी दिखाया जा रहा है। जिससे कि व्यक्ति में नैतिक गुणों एवं कौषलों को विकसित किया जा सके।

प्रस्तावना

शिक्षा विकास का वह क्रम है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वंय को विभिन्न रूपों में आवश्यकतानुसार एवं वातावरणानुकूल बना लेता है। इससे व्यक्ति को जीवन में कभी असफल ना होने वाली समझ आती है। जो उसे मोक्ष के मार्ग की ओर उन्मुख करती है। इसके साथ ही सांसारिक जीवन में प्रगति एवं सम्पन्नता प्रदान करने में सहायता करती है। तथा शिक्षा ही भ्रम का निवारण करती है। नीतिशास्त्र में कहा भी गया है।

''ज्ञानेन हीनाः पशुभिः समानाः''

अर्थात किसी भी सभ्य एवं सुसंस्कारित समाज में शिक्षा प्राण के समान है और साहित्य शिक्षा का दर्पण है, जिसमें साहित्यकार समाज में व्याप्त रीतियों, प्रथाओं, आदर्शों, मूल्यों, आडम्बरों, अंध–विश्वासों आदि सभी को स्थान प्रदान करता है। इसके साथ ही साहित्य जीवन के सत्य को उद्घाटित करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है।

विभिन्न साहित्यकारों ने अपना कहानी और उपन्यासों के माध्यम से लोगों को जोड़ने को प्रयास किया तथा उनके उपन्यास और कहानियॉ वर्तमानप में भी प्रासांगिक है। साहित्य के क्षेत्र में एक ऐसा ही अतुलनीय नाम है, मुंशी प्रेमचन्द।

इन्होंने अपने साहित्यिक रचनाओं में समय को ही चित्रित नही किया बल्कि भारत के चिंतन आदर्शों एवं मूल्यों को भी वर्णित किया। इनकी रचनाएँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियाँ है।

मुंशी प्रेमचन्दजी ने अपनी कहानी और उपन्यास द्वारा एक ऐसी परम्परा का आरम्भ किया, जिसने पूरी शती के साहित्य का मार्गदर्शन किया। उनका लेखन साहित्य की एक विरासत है। प्रेमचन्दजी एक संवेदनशील लेखक, कुशल वक्ता एवं सम्पादक थे।

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, ऐसी स्थिति में उनका योगदान अतुलनी है। सहजता तथा साधरणत्व प्रेमचन्दजी के व्यक्तित्व की विशेषता थी। इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को लमही गांव वाराणसी (उ.प्र.) में हुआ था। प्रेमचन्दजी उनका साहित्यिक नाम था तथा वास्तविक नाम धनपतराय था। प्रेमचन्द्र ने सरकारी सेवा के दौरान ही नवाबराय के नाम से कहानी लिखना आरम्भ किया। उन्हों कुल 15 उपन्यास, 300 से अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल पुस्तकें सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र–पत्रिकाओं की रचना की।

प्रेमचन्दजी का साहित्य तीस वर्षो का सामाजिक सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। इसमें सामाजिक समस्याओं जैसे– अंधविश्वास, जातिप्रथा, विधवा विवाह, स्त्री पुरूष असमानता तथा उस समय की सभी प्रमूख कुप्रथाओं का जीवन मूल्यों एवं जीवन कौशलों का चित्रण मिलता हैं। आदर्शोन्मुख अर्थाथवाद उनके साहित्यकी प्रमुख विशेषता रही है। सन् 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को प्रेमचंद के युग के नाम से जाना जाता है।

प्रेमचंदजी के साहित्यों में जीवन मूल्य

मुंशी प्रेमचंदजी का साहित्य सामान्य आदमी का साहित्य है। उनके साहित्यो में सामान्य व्यक्ति की यर्थाथ स्थिति का चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने समाज में नारी की स्थिति और अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता, रूढियों, अंध विश्वासों पर प्रहार तथा सामाजिक ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। उनके साहित्यों में सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, सामाजिकता, नैतिकता, प्रेम, सहयोग मनोवैज्ञानिक शांति आदि जीवन मूल्यों की व्यापकता सहर्ष देखी जा सकती हैं उनके साहित्यों में सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, सामाजिकता, नैतिकता, प्रेम, सहयोग मनोवैज्ञानिक शांति आदि जीवन मूल्यों की व्यापकता सहर्ष देखी जा सकती है। क्योकि हमारे जीवन मूल्यों के द्वारा ना केवल व्यक्ति का विकास होता है। अपितु समाज का भी उचित विकास होता है। ये व्यक्ति को ही नहीं समाज और राष्ट्र को भी पतन से बचाते है। और मानव के सुखद भविष्य कों सुनिश्चित करने का कार्य करते है। एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज का निर्माण करने हेतु मानव के लिये जीवन मूल्यों की अनिवार्यता है तथा इस सभी का वर्णन मुंशी प्रेमचंदजी ने अपने कहानी संग्रह मानसरोवर में किया है। मानसरोवर कहानी संग्रह आठ खण्डों में प्रकाशित है। जिसमें कहानी बडे घर की बेटी द्वारा स्पष्ट किया है कि किसी भी घर में पारीवारिक शंति, सौहार्द्व एवं सांमजस्य बनाए रखने में स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वे अपनी समझदारी से टूटते और विखरते घर को टूटने से बचा सकती हैं। और कहानी की मुख्य पात्र आनन्दी द्वारा अपने देवर को क्षमा कर शांति एवं प्रेम सम्बन्धी जीवन मूल्य को इंगित किया है। कहानी पंचपरमेश्वर में न्यायधीश के पद पर आसीन होते ही जुम्मनशेख और अलगू चौधरी ने निष्पक्ष न्याय को सुनाया एवं अपने पद की गरिमा को बनाये रखा जो कि आत्मविवेचन सामूहिक कार्य की भावना, दया, साहित्य जैसे जीवन मूल्यों को दर्शाते हैं।

दो बैलो की कथा में दो बैंलो के माध्यम से स्वतंत्रता एवं स्त्री सम्मान, सहयोग, प्रेम जैसे जीवन मूल्यों को अद्‌भुत रूप से प्रदर्शित किया गया। बूढ़ी काकी कहानी में जब काकी को समय पर खाना नही मिलता और वो झूठन में से खाना खाती है तक ये दृश्य देखकर रूपा को अपने किये पर पश्चात होता है जो कि हमें वृद्धों का सम्मान करना, अपनी गलती को स्वीकारना, विश्वास और संयम आदि जीवन मूल्यों को बतलाता हैं। कहानी ईदगाह में हामिद अपने दोस्तों के साथ मेंले में जाता है। वहां वो तरह तरह के खिलौने और मिठाईयों को देखकर ललचाता है। परंतु खुद पर आत्मसंयम कर अपनी दादी अमीने के लिये चिमटा ही खरीदता हैं। यहां प्रेमचंद हामिद के द्वारा बालमनोविज्ञान और संवेदनशीलता को सार्थक रूप से प्रस्तुत करते है।

प्रेमचंदजी ने अपनी कहानी नमक का दारोगा में बताया कि असत्य, अन्याय, भ्रष्टाचार आदि कैसा ही अंधेरा क्यों सा आच्छादित हो परन्तु सत्य में वह शक्ति होती है जो दुराचरणों को भेद सकें। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंदजी ने लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था जाग्रत करने का प्रयास किया है।

नमक का दारोगा कहानी में सत्यनिष्ठा और ईमानदारी जैसे मूल्यों को बताया है जो वर्तमान समय मे भी नैतिक गुणों के विकास के लिए आवश्यक हैं परन्तु वर्तमान के साथ–साथ नैतिकता का धीरे–धीरे ह्रास होता जा रहा है। सामाजिक संस्कारों, मानवीय मूल्यों, दया, परोपकार, सहयोग, आत्मत्याग, सहिष्णुता, विश्वास, संयुक्त परिवार आदि का व्यक्ति के जीवन में लोप सा हो गया है। सामाजिक आर्थिक राजनैतिक वजह से व्यक्ति अनैतिक मार्ग अपनाता है। आज भ्रष्टाचार लोगों की मनोवृत्ति बन चुकी है। प्रत्येक व्यक्ति निज स्वार्थ और निज कार्य हेतु आत्मोधागे में संलग्न है। प्रेमचंदजी की उपरोक्त कहानियां हमें जीवन में सहयोग, सदभाव, आत्मोधोग, स्वावलम्बन जैसे मूल्यों को ग्रहण करना सिखाती है।

मुंशी प्रेमचदंजी की कहानियों में जीवन कौशल

मुंशी प्रेमचंदजी की कहानियों में सामाजिक सहयोग, सदभाव, प्रेम, शांति, सामाजिकता के साथ साथ जीवन कौशल भी मुख्यतः देखने को मिलता है। जीवन कौशल वे क्षमताएं होती है। जो व्यक्ति का आत्मविश्वास जाग्रत कर आसानी से जीवन की समस्याओं का सामना करने में सहायता पहुंचाती है। ये आत्मसम्मान, स्वजागरूकता, निश्चिंतता, तनाव का सामना, भावनाओं से मुकाबला आदि से व्यक्ति को समर्थ तथा चरित्र और व्यक्तित्व को मूल्यों और सिद्धांत के साथ स्वय को समझने के योग्य बनाती

है। अर्थात हम कह सकते है। कि जीवन कौशल व्यक्ति को प्रतिदिन जीवन की चुनौतियों और मांगो का अभावशाली दंग से सामना करने में सक्षम बनाती है।

प्रेमचंदजी की कहानियां व्यक्ति को जीवन के संघर्षो को समझने और उनका सामना करने की क्षमता प्रदान करती है। विपरीत परीस्थितियों में भी सकारात्मकता, स्वजागरूकता द्वारा निर्णय लेना तथा समस्याओं का समाधान हम जीवन कौशल को अपनाकर सरलता से कर सकते है। जब बडे घर की बेटी कहानी में आनंदी द्वारा विपरीत परिस्थितियों में स्वजागरूकता तथा सकारात्मक सांच द्वारा परिवार को विघटन से बचाना, ईदगाह कहानी में हामिद के साथी मित्रों द्वारा खिलौने खरीदने एवं मिठाईयों खाने पर स्वनियंत्रण करना तथा दादी अमीना के लिये चिमटा लेने पर डांटने पर अंतरव्यैक्तिक संचार कौशल द्वारा अपने तथ्यों एवं विचारों को समझाना आदि बूढी काकी दो बैलो की कथा पंच परमेश्वर नमक का दारोगा आदि कहानियों में भी प्रेमचंदजी विश्लेषणात्म सोच द्वारा जीवन में आने वाली समस्याओं को सोचना, विचारना धैर्यधारण करना, निष्पक्ष एवं भेदभाव रहित निर्णय लेना आदि है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब व्यक्ति छोटी–छोटी समस्याओं और चुनौतियों से मुकाबला करने के बजाए अपना धैर्य खो देता है। जो क्रोध विघटन पतन सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा पतन का कारण बनते है। ऐसी स्थिति में प्रेमचंदजी की कहानियों में निहित ये कौशल हमें स्वस्थ विकल्प बनाने, स्वंय को समझने बालकों में जिम्मेदारी, बौद्धिक क्षमता, नेतृत्व संचार कर बालक का चहुंमुखी विकास करती है। इसके साथ प्रेमचंदजी की कहानियां घर, परिवार, समाज, राष्ट्र में बालक को अनुकूलन तथा परिस्थितियों में सांमजस्य स्थापित कर उनका सामना करने का कौशल प्रदान करती है।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंदजी ने अपने जीवन में अनेक रचनाएं लिखी। अपनी रचनाओं में इन्होंने मुख्यतः मानव जीवन के लिये आदर्श प्रस्तुत किया। जो कि समाज के हर वर्ग को प्रेरित करने वाली है। प्रेमचंदजी का साहित्य समसामयिक परिदृश्य में भी प्रासगिक एवं उपयोगी है। उन्होंने एक मूक पशु से लेकर मानव मन को कहानियां का पात्र बनाया है। वर्तमान समय में प्रेमचंद की कहानियों को स्कूल कॉलेज की पाठ्यपुस्तकों मं पढ़ाया जा रहा है। एवं सोशल मीडिया पर दिखाया जा रहा है। इसके साथ ही नाटक के रूप में मंचन किया जा रहा है। वर्तमान में संवेदनशील हो रहे समाज एवं युवाओं को उनका साहित्य धैर्य, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा आदि मूल्यों से रहना सीखाता है। वर्तमान परिदृश्य में आ रही दैनिक चुनौतियों का सामना साहस धैर्य तथा कुशलता से करना सिखाता है। उनका लेखन वर्तमान परिस्थितियों से सांमजस्य करना सिखाता है।

संदर्भ सूची

1. (2006). आरोह. भाग–1. कक्षा 11 हिन्दी (आधार) पाठ्यपुस्तक एन.सी.आर.टी. प्रथम संस्करण. जनवरी. माघ 1927.
2. प्रेमचद का साहित्यिक जीवन–भारतकोष. ज्ञान का हिन्दी महासागर।
3. https://m-bharatdiscovery.org>india.
4. https://www.dristiias.com>mains.
5. https://markmybook.com>book.
6. राठौर, डॉ. प्रीति. (2012). आधुनिक परिपेक्ष्य में बैदिक मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता ''शोध संचयन''. टवस. 3. अंक–1. 51 अनमोल कहानियां–प्रेमचंद साक्षी प्रकाशन. जनवरी।

12

श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय का स्वॉट विश्लेषण

डॉ० अमित अग्रवाल
सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय
राजकीय महाविद्यालय, रजा नगर

डॉ० संजय कुमार
सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय
राजकीय महाविद्यालय, नरेंद्र नगर (टिहरी गढ़वाल)

सारांश

वैश्विक स्तर पर सूचना और प्रौद्योगिकी में लगातार परिवर्तन हो रहे हैं, जिसका असर शिक्षा क्षेत्र पर भी पड़ रहा है। भारत में राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय अगस्त 2023 से काम करना शुरू कर देगा। कोरोना–19 के बाद शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। डिजिटल क्रांति के साथ–साथ कौशल विकास के नए क्षेत्र सामने आए हैं। पारंपरिक पाठ्यक्रमों के साथ–साथ रोजगारपरक नवीन पाठ्यक्रमों की आवश्यकता महसूस की जा रही है। भारत में साल 2020 में देश में नई शिक्षा नीति लागू हुई। उत्तराखंड में उच्च शिक्षा विभाग ने सत्र 2022–23 से स्नातक स्तर पर सेमेस्टर सिस्टम अपनाते हुए नया पाठ्यक्रम लागू किया है। सत्र 2023–24 से स्नातकोत्तर स्तर पर भी सेमेस्टर प्रणाली अपनाते हुए नया पाठ्यक्रम लागू किया गया है। श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय (एसडीएसयूयू), बादशाही थौल (टिहरी गढ़वाल) द्वारा उच्च शिक्षा के माहौल में बदलाव की रणनीतियों का शोध पत्र के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। विभिन्न अकादमिक डेटाबेस से निकाले गए स्रोतों का उपयोग करके पूर्व साहित्य की गहन जांच की गई। इसका उद्देश्य एसडीएसयूयू, बादशाही थौल के संदर्भ में इन उपकरणों की ताकत, कमजोरियों, अवसरों और खतरों को उजागर करना है। एसडीएसयूयू, बादशाही थौल (टिहरी गढ़वाल) से संबंधित विभिन्न शोध योगदानों को संश्लेषित करने और प्रासंगिक जानकारी का विश्लेषण करने के लिए एक एकीकृत साहित्य समीक्षा पद्धति पर आधारित एक स्वॉट विश्लेषण किया गया था। निष्कर्ष बताते हैं कि उच्च शिक्षा के एसडीएसयूयू में स्वॉट विश्लेषण अभी भी महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन छात्रों को अधिक मूल्य प्रदान करने में एसडीएसयूयू के महत्व के बारे में उच्च शिक्षा में हितधारकों की समझ बढ़ाने में मदद करता है।

मुख्य शब्द

एनईपी और स्वॉट को अपनाना।

परिचय

हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय (गढ़वाल विश्वविद्यालय) श्रीनगर (उत्तराखंड) को 15 जनवरी 2009 को संसद के एक अधिनियम अर्थात केंद्रीय विश्वविद्यालयों अधिनियम 2009 द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालय में परिवर्तित कर दिया गया था। इसके पश्चात राज्य सरकार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार के अधीन विश्वविद्यालय की आवश्यकता महसूस होने लगी। श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय की स्थापना राज्य सरकार की अधिसूचना दिनांक 19 अक्टूबर, 2012 के तहत उत्तराखंड राज्य विश्वविद्यालय के रूप में की गई है। श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय बादशाही थौल चंबा से 03 किमी की दूरी पर चंबा और नई टिहरी के बीच रास्ते में स्थित है। विश्वविद्यालय का परिसर 1750 मीटर की ऊँचाई पर पूर्व की ओर एक रिज पर स्थित है, जो घने ओक और देवदार के पेड़ों के जंगल से घिरा हुआ है। विश्वविद्यालय की स्थापना लोकप्रिय और शक्तिशाली मांग का एक दुर्लभ गौरव है और उच्च शिक्षा के माध्यम से विकास के लिए गढ़वाल के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक है। यह स्थानिक आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन, भौगोलिक और पर्यावरणीय बाधाओं पर काबू पाने, विकास के लिए स्थानीय प्राकृतिक और मानव संसाधनों की सांस्कृतिक पहचान का पुनः दावा करने के लिए उनकी भावी पीढ़ी को सशक्त बनाने की खोज की अभिव्यक्ति थी। इस विश्वविद्यालय का एक कैंपस ऋषिकेश में पंडित ललित मोहन शर्मा के नाम से स्थापित किया गया है। स्नातक स्तर पर पारंपरिक और व्यावसायिक रूप में पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। ये संघटक महाविद्यालय दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित हैं। उनका मुख्य उद्देश्य दूरस्थ स्थानों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है जहाँ अभी तक उच्च शिक्षा के सरकारी संस्थान नहीं हैं।

श्री देव सुमन का जन्म 25 मई 1916 को जौल गांव, टिहरी में हरिराम समाज सेवी के घर में हुआ। 1930 में गांधी जी के नमक सत्याग्रह में कूद पड़े। सुमन सौरव' एक राष्ट्रीय कविता संग्रह प्रकाशित किया। साप्ताहिक 'हिन्दू' समाचार पत्र का संपादन शुरू किया। 1937 में शिमला हिंदी साहित्य सम्मेलन के कार्यकारी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1938 में जवाहर लाल नेहरू पौड़ी आए। उनकी सभा में सुमन जी ने दोनों टिहरी गढ़वाल और पौड़ी गढ़वाल की अखण्डता पर जोर दिया। 1939 में टिहरी रियासत में प्रजामंडल (रियासतों में कांग्रेस, प्रजा मंडल के नाम से सक्रिय थी) की स्थापना के बाद सक्रिय सदस्य बने। 1938 में लैंसडौन से साप्ताहिक 'कर्मभूमि' का प्रकाशन शुरू हुआ। वे संपादक मंडल में थे। 1939 में हिमालय क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं का प्रांतीय सम्मेलन हुआ। जन समस्याओं पर प्रकाश डाला। 'गढ़ सेवा संघ' का नाम हिमालय सेवा संघ रखा। 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो नारा बुलन्द करते हुए टिहरी को कूच किया। देव प्रयाग में गिरफ्तार कर देहरादून जेल में ठूंस दिया। सुमन जी पूरी तरह गांधीवादी थे। उन्हें टिहरी राजा की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। मजबूर होकर 3 मई 1945 से ऐतिहासिक आमरण अनशन शुरू किया। 25 जुलाई 1944 को 84 दिन की लम्बी भूख हड़ताल के बाद सुमन जी की इह लीला समाप्त हो गई। सुमन जी जैस साहसी सत्याग्रहियों के बलिदानों से देश स्वतंत्र हुआ। ऐसे गढ़वाल के नायक और कर्म योगी को सम्मान देने के लिए इनके नाम पर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

स्वॉट (Strengths, Weaknesses, Opportunities, and Threats - SWOT) विश्लेषण 1960 के दशक में अल्बर्ट हम्फ्री द्वारा गढ़ा गया एक शब्द है। स्वॉट लक्ष्य की ओर ध्यान केंद्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी संगठन के समुचित विकास के लिए सतत मूल्यांकन आवश्यक है। वास्तव में, मूल्यांकन समग्र प्रबंधन या प्रशासन प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। उचित, वैध और विश्वसनीय मूल्यांकन किसी भी संगठन का मजबूत आधार होता है, जिस पर किसी भी संगठन का भावी विकास निर्भर करता है। इसके आधार पर प्रशासक आसानी से अंदाजा लगा सकते हैं कि सिस्टम के सब सिस्टम में कहां कमी है और उसे कैसे दूर किया जा सकता है। ये चार एसडब्ल्यूओटी श्रेणियां बताती हैं कि क्या निर्णय का एक पहलू नकारात्मक या सकारात्मक है, और क्या यह संगठन के लिए बाहरी या आंतरिक है। स्वॉट विश्लेषण एक ऐसी रणनीति है जिसका उपयोग किसी परियोजना या व्यवसाय या शैक्षिक उद्यम/संस्था में शामिल शक्तियों, कमजोरियों, अवसरों और खतरों का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। स्वॉट में एक उद्यम/संस्था या परियोजना के लक्ष्य और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक आंतरिक और बाहरी कारकों को निर्दिष्ट करना शामिल है। इसमें उन लोगों की पहचान करना शामिल है जो व्यक्ति के लिए अनुकूल और प्रतिकूल हैं। मुख्य रूप से स्वॉट विश्लेषण किसी संगठन या समूह को प्रभावी बनाने में मदद करता है। इस बदलते दौर में बने रहने के लिए हमें हर 6–12 महीने में स्वॉट एनालिसिस करते रहना चाहिए। ताकि हमारा बिजनेस और स्टार्टअप आगे बढ़ता रहे। एक संपूर्ण स्वॉट विश्लेषण एक ठोस रणनीतिक योजना की रीढ़ हो सकता है। एसडीएसयूयू पर लगाए गए संस्थागत, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण करता है। इसके आधार पर समस्याओं की पहचान की जा सकती है और उनका समाधान खोजा जा सकता है, चाहे ये समस्याएं गिरती हुई मांग स्तर, तकनीकी या किसी अन्य प्रकार की हों। एक विभाग या प्रशासन या प्रबंधक जो सिस्टम के नजरिए से संगठन में समस्याओं को देखता है, आसानी से समस्या–समाधान विकल्पों का पता लगा सकता है। यह जटिल या विस्तृत संगठनों या विभागों के लिए एक ऐसा रणनीतिक ढांचा है जिसके आधार पर डिजिटल पाठ्यक्रम, ऑनलाइन प्रवेश और परीक्षा, छात्र सहायता प्रणाली, व्यावसायिक पाठ्यक्रम आदि की समस्याओं को नियंत्रित किया जा सकता है और भविष्य में निर्णय लिया जा सकता है। एक छात्र के रूप में सफल होने के लिए, आपको एक विशिष्ट रणनीति की आवश्यकता होती है। रणनीतिक निर्णय लेते समय, विचार करने के लिए कई कारक होते हैं।

तालिका संख्या – 01 एसडीएसयूयू के कार्य क्षेत्र में जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विश्लेषण

जिला	जनसंख्या	बढ़ोतरी अनुपात	लिंग	साक्षरता अनुमानित	घनत्व	2023 की जनसंख्या
हरिद्वार	1890422	30.63 प्रतिशत	880	73.43 प्रतिशत	801	2192890
छेहरादून	1696694	32.33 प्रतिशत	902	84.25 प्रतिशत	549	1968165
पौड़ी गढ़वाल	687271	1.41 प्रतिशत	1103	82.02 प्रतिशत	129	797234
टिहरी गढ़वाल	618931	2.35 प्रतिशत	1077	76.36 प्रतिशत	170	717960
चमोली	391605	5.74 प्रतिशत	1019	82.65 प्रतिशत	49	454262
उत्तरकाशी	330086	11.89 प्रतिशत	958	75.81 प्रतिशत	41	382900
रुद्रप्रयाग	242285	6.53 प्रतिशत	1114	81.30 प्रतिशत	122	281051

स्त्रोतः https://censusindia.gov.in और अन्य

अनुसंधान उद्देश्य

संगठन अपनी रणनीतियों के सफल कार्यान्वयन के लिए रणनीतिक विश्लेषण की विभिन्न तकनीकों का उपयोग करता है, जिसमें से स्वॉट विश्लेषण भी विश्लेषण की एक महत्वपूर्ण तकनीक है। इस शोध पत्र का उद्देश्य विकासशील देश भारत के विशेष संदर्भ में एसडीएसयूयू बादशाही थौल (टिहरी गढ़वाल) (टेबल–05) का स्वॉट विश्लेषण करना है। इस शोध पत्र में एसडीएसयूयू का स्वॉट विश्लेषण के माध्यम से विश्लेषण किया गया है। स्वॉट विश्लेषण का उद्देश्य एसडीएसयूयू में एनईपी–2020 का सफल कार्यान्वयन है। 'एनईपी–2020' की अवधारणा को सही मायने में लागू किया जा रहा है और छात्र उच्च शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं। इसमें उन शक्तियों को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है, जिनका वर्तमान में एसडीएसयूयू में एनईपी–2020 के कार्यान्वयन के संबंध में उपयोग किया जा रहा है। इस उद्देश्य के भीतर कुछ शोध प्रश्न दिमाग में आए जैसे एनईपी–2020 का कार्यान्वयन और एसडीएसयूयू के लिए नीति और अन्य अवसरय एसडीएसयूयू में एनईपी–2020 और अन्य के कार्यान्वयन के दौरान कमजोरियों और खतरों की पहचान करने के लिए विभिन्न कारकों का विश्लेषण किया जाना है। तालिका 1 से 04 तक विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र के वातावरण या पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया गया है। इस विशेषण की सहायता से यह आसानी से पता चल जाएगा कि किस पृष्ठभूमि के छात्र विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं और उनमें कौन से पाठ्यक्रम लोकप्रिय हैं।

अनुसंधान के लिए अनुसंधान पद्धति

खोजपूर्ण शोध मूल्यवान अंतर्दृष्टि देता है, विचारों और मूल्यवान पहलुओं को अधिक खोजपूर्ण तरीके से उत्पन्न करता है। प्राथमिक डेटा हाथ में विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रथम–हाथ की जानकारी देता है, जबकि द्वितीयक डेटा में अनुसंधान में मूल्यवान अंतर्दृष्टि का वर्णन करने और उजागर करने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी होती है। द्वितीयक आंकड़े प्रकाशित रिपोर्टों, इंटरनेट, पुस्तकालयों, पत्रिकाओं/पत्रिकाओं और कुछ सरकारी एजेंसियों की रिपोर्टों से प्राप्त किए गए हैं। अनुसूचियां तथा प्रश्नावलियां तैयार कर आंकड़े एकत्र किए गए। 200 उत्तरदाताओं को यादृच्छिक रूप से चुना जाता है और साक्षात्कार के लिए अनुरोध किया जाता है। इसके बाद पूर्व निर्धारित क्रम में प्रश्न पूछे जाते हैं। इन आंकड़ों का कंप्यूटर की सहायता से विश्लेषण /क्रमबद्ध किया जाता है।

तालिका संख्या – 02 श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के कार्यक्षेत्र मे कार्यरत अन्य प्रतिद्वंद्वी विश्वविद्यालयों की सूची

क्र० सं०	विश्वविद्यालय का नाम
01.	हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय (गढ़वाल विश्वविद्यालय) श्रीनगर (उत्तराखंड) श्रीनगर – 246174 जिला गढ़वाल (उत्तराखंड)
02.	उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार छभ्—58, बीएचईएल मोर, बहादराबाद, हरिद्वार – 249402,
03.	दून यूनिवर्सिटी देहरादून दून यूनिवर्सिटी कैंपस, मोथ्रोवाला, देहरादून–248001, उत्तराखंड
04.	उत्तराखंड ओपन यूनिवर्सिटी हल्द्वानी ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे, तीनपानी बाईपास रोड, हल्द्वानी– 263169 (नैनीताल)
05.	उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय देहरादून गवर्नमेंट गर्ल्स पॉलिटेक्निक, पोस्ट ऑफिस, चंदनवाड़ी, प्रेम नगर, सुधोवाला– 248007, देहरादून (उत्तराखंड)
06.	उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय देहरादून स्टेशन रोड, हर्रावाला–248001, देहरादून
07	उत्तराखंड बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय भरसार भरसर–246 123, जिला–पौड़ी गढ़वाल
08.	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार डाकघर गुरुकुल कांगड़ी–249404, हरिद्वार
09.	ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी देहरादून 566ध्6, बेल रोड, क्लेमेंट टाउन, देहरादून, उत्तराखंड –248002
10.	आईसीएफएआई विश्वविद्यालय, देहरादून देहरादून राजावाला रोड, देहरादून – 248197
11.	देव सांकृत विश्वविद्यालय हरिद्वार गायत्रीकुंज–शांतिकुंज, हरिद्वार–249411।
12.	पेट्रोलियम और ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय देहरादून पी.ओ. बिधोली वाया–प्रेम नगर देहरादून–248007
13.	हिमगिरी जी यूनिवर्सिटी देहरादून पी.ओ.– शेरपुर, चकराता रोड, देहरादून – 248197 (उत्तराखंड)
14.	पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार पतंजलि योग पीठ, रुड़की–हरिद्वार रोड, हरिद्वार–249405
15.	ग्राफिक एरा हिल यूनिवर्सिटी (3 कैंपस) भीमतालध्बेलखेतध्देहरादून सोसाइटी एरिया, क्लेमेंट टाउन–248002, देहरादून
16.	हिमालयन यूनिवर्सिटी जॉलीग्रांट, देहरादून स्वामी राम हिमालयन यूनिवर्सिटी, स्वामी राम नगर जॉली ग्रांट, डोईवाला–248140, देहरादून,
17.	आईएमएस यूनिसन यूनिवर्सिटी देहरादून मक्कावाला ग्रीन्स, मसूरी डायवर्सन रोड, देहरादून।
18.	डीआईटी यूनिवर्सिटी देहरादून मसूरी–डायवर्जन रोड, देहरादून–248009, उत्तराखंड
19.	उत्तरांचल विश्वविद्यालय देहरादून अर्काडिया ग्रांट, पी.ओ. चंदनवारी, प्रेमनगर, देहरादून–248007, उत्तराखंड

स्त्रोतः https://uk.gov.in

तालिका संख्या – 03 श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय में एनईपी के अंतर्गत संचालित पारंपरिक और पेशेवर पाठ्यक्रम

पारंपरिक पाठ्यक्रम	पेशेवर पाठ्यक्रम	पेशेवर पाठ्यक्रम
कला संकाय (यू.जी. / पी.जी.) एंथ्रोपोलॉजी चित्रकारी अर्थशास्त्र शिक्षा अंग्रेजी भूगोल हिंदी इतिहास गृह विज्ञान संगीत राजनीति विज्ञान व्यायाम शिक्षा मनोविज्ञान दर्शन संस्कृत समाज शास्त्र योग वाणिज्य संकायः बी.कॉम एम.कॉम विज्ञान संकाय (यूजी / पी.जी.): वनस्पति विज्ञान रसायन विज्ञान भूगर्भ शास्त्र अंक शास्त्र भौतिक विज्ञान जीव विज्ञानं कंप्यूटर विज्ञान पर्यावरण विज्ञान सूचान प्रौद्योगिकी सांख्यिकी रक्षा और रणनीतिक अध्ययन	कला संकायः शारीरिक शिक्षा और खेल विज्ञान स्नातक (BPES) फैशन डिजाइनिंग होटल (सराय) प्रबंधन पत्रकारिता और जनसंचार एमएफए एमएसडब्ल्यू बी.एड. एकीकृत कार्यक्रम बी.एड. (विशेष) भौगोलिक सूचना प्रणाली में डिप्लोमा आपदा प्रबंधन में सर्टिफिकेट कोर्स बी.लिब एम.लिब वाणिज्य संकायः बी.कॉम. वित्तीय लेखांकन बी.कॉम. बैंकिंग व वित्त बी.कॉम. अंतरराष्ट्रीय व्यापार बी.कॉम. कर लगाना बीबीए एमबीए कार्यकारी एमबीए पर्यटन ग्रामीण प्रबंधन में एमबीए रसद और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में एमबीए	विज्ञान संकायः स्वास्थ्य और स्वच्छता में डिप्लोमा एनीमेशन और डिजाइन में डिप्लोमा बीएफए बीसीए जैव चिकित्सा विज्ञान बीएससी जैव प्रौद्योगिकी बीएससी एक दिन और हमेशा के लिए बीएससी फोरेंसिक विज्ञान बीएससी कंप्यूटर विज्ञान चिकित्सा जैव प्रौद्योगिकी एमएससी जैव प्रौद्योगिकी एमएससी माइक्रोबायोलॉजी एमएससी खाद्य और पोषण एमएससी एक दिन और हमेशा के लिए एमएससी कपड़ा और परिधान डिजाइनिंग कृषि में डिप्लोमा क्लिनिकल बायोलॉजी में सर्टिफिकेट कोर्स कॉस्मेटिक्स एंड परफ्यूम केमिस्ट्री में डिप्लोमा

स्त्रोतः https://www.sdsuv.ac.in/Nep_Syllabus.aspx

तालिका संख्या – 04 श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय में एनईपी के अंतर्गत संचालित कुछ व्यावसायिक पाठ्यक्रम

कला संकायः **अंग्रेजीः** संचार कौशल और व्यक्तित्व विकास, डिजिटल मानविकी, पर्यावरण साहित्य, वैश्विक साहित्य, विज्ञान कथा और काल्पनिक साहित्य, जेंडर एंड सेक्स **हिंदीः** गढ़वाली, कुमाउनी और जौनसारी भाषा केंद्र **संस्कृतः** भारतीय ज्योतिष विज्ञान नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान पत्र एवं विस्तार **नृविज्ञानः** चिकित्सा नृविज्ञान दृश्य नृविज्ञान, पर्यावरण नृविज्ञान	समाजशास्त्र महिला अधिकारिता अपराध सामाजिक नीति शहरी समाजशास्त्र लैंगिक अध्ययन एमएसडब्ल्यू सामुदायिक विकास और सामाजिक उद्यमिता मानसिक स्वास्थ्य और मनो–सामाजिक सहायता लैंगिक अध्ययन और महिला अधिकारिता बाल अधिकार और संरक्षण आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता एजिंग एंड जेनिएट्रिक केयर शिक्षा और आजीविका	भूविज्ञानः पर्यावरण भूविज्ञान भूविज्ञान भूभौतिकी भूविज्ञान भू–रसायन भूविज्ञान पेट्रोलियम भूविज्ञान भूविज्ञान ग्रहों का भूविज्ञान गणितः मात्रात्मक योग्यता और तार्किक तर्क गणित कम्प्यूटेशनल गणित गणित वैदिक गणित गणित सिमुलेशन तकनीक गणित मैटलैब गणित जैव गणित गणित गणित कौशल संवर्धन

डिजिटल नृविज्ञान, शहरी नृविज्ञान **अर्थशास्त्रः** अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र विकास अर्थशास्त्र. सार्वजनिक अर्थशास्त्र वित्तीय अर्थशास्त्र, अर्थमिति **शिक्षाः** बचपन की देखभाल और शिक्षा अनुसंधान के तरीके और शिक्षा में सांख्यिकी शिक्षा प्रौद्योगिकी. मार्गदर्शन और परामर्श शिक्षा प्रबंधन और प्रशासन **ललित कलाः** डिजिटल कला **भूगोलः** आपदा प्रबंधन, मानचित्र पढ़ने की तकनीक, जीआईएस, भू–सूचना विज्ञान, फोटोग्रामेट्री और रिमोट सेंसिंग, आपदा प्रबंधन और मानवीय सहायता **होटल प्रबंधनः** रेस्तरां और काउंटर सेवा होटल रिसेप्शन और बुक कीपिंग **गृह विज्ञान** फैशन प्रौद्योगिकी, आंतरिक डिजाइन, सामग्री प्रबंधन, इवेंट मैनेजमेंट सार्वजनिक स्वास्थ्य और पोषण, बेकरी एंड कन्फेक्शनरी सर्विसेज **इतिहास** भारत में पुरातत्व **संगीत** हिंदुस्तानी संगीत वोकल, सितार/तबला **राजनीति विज्ञान** लोक प्रशासन के तत्व अंतर्राष्ट्रीय संबंध तुलनात्मक राजनीति जनता, नीति और प्रशासन राजनीतिक संचार लिंग और राजनीति मानव अधिकार एक सफल राजनेता कैसे बने मनोविज्ञान नैदानिक मनोविज्ञान परामर्श मनोविज्ञान शैक्षिक मनोविज्ञान औद्योगिक/संगठन मनोविज्ञान	नीति विश्लेषण और विकास रूरल डेवलपमेंट एंड एडवोकेसी योग योग और प्राकृतिक चिकित्सा व्यवहारिक मनोवैज्ञानिक एवं योग मानव जीव विज्ञान एवं योग योग एवं स्वास्थ्य प्राकृतिक चिकित्सा पूरक चिकित्सा वाणिज्य संकायः ई–ऑफिस प्रबंधन, डिजिटल विपणन और प्रबंधन सूचना का अधिकार, लेखा और वित्त, विपणन मानव संसाधन प्रबंधन, जीएसटी, ई–कॉमर्स, कार्यालय प्रबंधन और सचिवीय अभ्यास, वित्तीय योजना, विदेश व्यापार और व्यवहार, कर अभ्यास और प्रक्रिया, ई–कॉमर्स और डिजिटल साक्ष्य विज्ञान संकाय वनस्पतिः मशरूम की खेती, वनस्पति विज्ञान कृषि जैविक खाद उत्पादन, वनस्पति मधुमक्खी पालन, वनस्पति जैविक प्राकृतिक खेती, वनस्पति विज्ञान कृषि–व्यवसाय प्रबंधन और डिजिटल मार्केटिंग, कृषि में वनस्पति विज्ञान डिप्लोमा (डी। एग्री।), वनस्पति चिकित्सा प्रयोगशाला प्रौद्योगिकी वनस्पति जैव उर्वरक रसायन विज्ञानः कॉस्मेटिक और इत्र रसायन विज्ञान एआई रसायन विज्ञान डिजिटल अधिकारिता वेब डिजाइनिंग का केमिस्ट्री फंडामेंटल रसायन विज्ञान साइबर स्पेस और डेटा संरक्षण रसायन विज्ञान तकनीकी संचार कौशल रसायन विज्ञान कंप्यूटर बुनियादी बातों सी का उपयोग करके कंप्यूटर प्रोग्रामिंग का रसायन विज्ञान परिचय, रसायन विज्ञान जावा प्रोगोग्राममिन साइबर सुरक्षा के लिए रसायन विज्ञान का परिचय	गणित वैज्ञानिक लेखन और कम्प्यूटिंग भौतिकीः उपकरण भौतिकी कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भौतिकी खगोल भौतिकी भौतिकी नैनोटेक्नोलॉजी भौतिकी कम्प्यूटेशनल भौतिकी भौतिकी चिकित्सा भौतिकी भौतिकी जैवभौतिकी भौतिकी अक्षय ऊर्जा भौतिकी रोबोटिक्स भौतिकी द्रोण भौतिकी ऊर्जा दक्षता और ई–अपशिष्ट प्रबंधन जूलॉजीः मानव स्वास्थ्य और सामान्य स्वच्छता जूलॉजी क्लिनिकल बायोलॉजी जूलॉजी जैविक तकनीक जूलॉजी वर्मीकल्चर जूलॉजी एक्वाप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट एंड मैनेजमेंट प्रोग्राम पर्यावरण अध्ययन पर्यावरण प्रबंधन पर्यावरण अध्ययन पर्यावरण विज्ञान पर्यावरण अध्ययन जलवायु परिवर्तन पर्यावरण अध्ययन सतत विकास

स्त्रोतः https://www.sdsuv.ac.in/Nep_Syllabus.aspx

तालिका संख्या – 05 श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय बादशाही थौल (टिहरी गढ़वाल) का स्वॉट विश्लेषण

मजबूती	अवसर
• नई शिक्षा नीति (एनईपी) – 2020 का कार्यान्वयन। • प्रभावी नेतृत्व और कार्यान्वयन प्रणाली • विभिन्न संकाय, व्यापक और विविध पाठ्यक्रम। • उत्तराखंड सरकार द्वारा स्थापित और बजट। • व्यापक संगठनधविभागीय संरचना। • वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन प्रवेश, परीक्षा आदि।	• केंद्र और राज्य सरकार द्वारा छात्रों को छात्रवृत्ति और अन्य प्रोत्साहन प्रदान करना। • उच्च आर्थिक विकास दर। • यूजीसी और अन्य संस्थानों से अनुदान। • कार्यस्थल में बढ़ती जनसंख्या / छात्र नामांकन दर में वृद्धि। • डिजिटल इंडिया का विकास।

• नियंत्रण के लिए अकादमिक कैलेंडर। • अनुसंधान निदेशालय द्वारा अनुसंधान और संवर्धन। • अंतरराष्ट्रीय संबंधों और अन्य को बढ़ावा देना। • विभिन्न प्रकार की कोशिकाओं और केंद्रों का कार्य करना। हितधारकों को विभिन्न सुविधाएं। • बाहरी पार्टियों के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू)। • विभिन्न प्रकार की शैक्षिक और प्रशासनिक परिषदों और समितियों का गठन। • कॉलेज प्रबंधन प्रणाली (सीएमएस), • विभिन्न प्रकाशक प्रकाशन और अन्य गतिविधियां शुरू होती हैं। • आईएसओ–9001ः2005। • नैक से मान्यता प्राप्त प्रक्रिया के तहत	• इंटरनेट सुविधाओं का आधुनिकीकरण। • नियमित डिग्री धारकों को नियोक्ता द्वारा वरीयता। • अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) के लिए नए क्षेत्रों का विकास। • उच्च शिक्षा को बढ़ावा देना। • नई शिक्षा नीति (एनईपी) – 2020 में सकल नामांकन दर को 2030 तक बढ़ाकर 50ः करने का लक्ष्य। • कम आय वाले छात्रों द्वारा पारंपरिक पाठ्यक्रम को वरीयता। • एनईपी में नए व्यावसायिक पाठ्यक्रम, एबीसी क्रेडिट प्रणाली का कार्यान्वयन और अन्य सुधार। • नैक मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव। • एनसीसी / एनएसएस रोवर्स–रेंजर्सध्स्पोर्ट्स आदि को रोजगार में वरीयता। • रूसा (राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान) आदि योजना के माध्यम से उच्च शिक्षा क्षेत्र का विकास।
कमजोरी	**खतरे**
• विश्वविद्यालय प्रशासन और संबद्ध महाविद्यालयों के प्रशासन में आधुनिक समन्वय प्रणाली का अभाव। • लंबा परीक्षा कार्यक्रम। • अति–आधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे का अभाव। • डिजिटल विशेषज्ञों की कमी। • सभी विषयों के संकाय या विभाग परिसर में नहीं होंगे। • बढ़ते नामांकन प्रतिकूल शिक्षक छात्र अनुपात के अनुसार विश्वविद्यालय में पदों का सृजन न होना। • विश्वविद्यालय परीक्षा परिणाम घोषित करने में लगने वाला समय। • लगातार / नियमित ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन नहीं किया जा रहा है। • छात्रों के लिए मॉडल प्रश्न पत्र की कमी। • ऑनलाइन छात्र शिकायत निवारण प्रणाली की कमजोरी। • विश्वविद्यालय का पोर्टल और कॉलेज का पोर्टल आपस में जुड़ा नहीं है। • परीक्षा सामग्री के वितरण की पारंपरिक प्रणाली। • वस्तुनिष्ठ प्रश्न पत्र के लिए भी ऑनलाइन परीक्षा प्रणाली का अभाव। • इसमें घटक महाविद्यालयों की नई संरचना और स्व–वित्तपोषित पाठ्यक्रम शुरू किए गए। • डिजिटल अध्ययन सामग्रीध्छात्र शिक्षण सामग्री की कमी।	• विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र में उच्च प्रौद्योगिकी सेवा इकाइयोंध्औद्योगिक इकाइयों का अभाव। • संबद्ध कॉलेजों में कमजोर बुनियादी ढांचा। • अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए योग्य शिक्षकों और छात्रों की कमी। • छात्रों में बाधा और अपव्यय की समस्या। • डेटा हैकिंग और परीक्षण सामग्री की गोपनीयता बनाए रखने की समस्या। • समय पर डाटा प्रोसेसिंग और भर्ती प्रक्रिया का अभाव। • क्षेत्र में निजी विश्वविद्यालय का बढ़ता आकार / निजीकरण। • कोरोना महामारी के दौर में प्रवेश, अध्ययन, परीक्षा / पदोन्नति एवं अन्य। • एनईपी के पाठ्यक्रम के अनुसार पदों का सृजन नहीं किया गया है। • ऑनलाइन / डिजिटल पाठ्यक्रमों की बढ़ती उपलब्धता। राष्ट्रीय डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना। • दूरस्थ और मुक्त विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों की उपलब्धता। • पाठ्यक्रम के विकल्प छात्रों के लिए उपलब्ध हैं। • समावेशी पहुंच का अभाव। • रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों में बदलाव। • अनुसंधान बुनियादी ढांचा और सॉफ्टवेयर आदि।

स्रोतः स्व सर्वेक्षण और https://sdsuv.ac.in (उत्तरदाताओं से ताकत, कमजोरी, अवसर और खतरे के बारे में कारक पूछे गए थे और शीर्ष 15 प्रमुख कारणों को सूचीबद्ध किया गया।

स्वॉट के कारकों का विश्लेषण तालिका–05 में किया गया है। सूचीबद्ध 15 कारक केवल सांकेतिक हैं और विश्लेषण को एक दिशा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कारक भी हो सकते हैं, जिन्हें शोध की सीमाओं के कारण शोध में शामिल नहीं किया गया है। विश्वविद्यालय अभी से ग्रेड इंडेक्स पर काम कर नैक में अच्छा ग्रेड प्राप्त करने के साथ–साथ कमजोरियों को दूर कर वातावरण में अवसरों का लाभ उठाकर आगे बढ़ सकता है।

निष्कर्ष

श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय को स्थापित हुए 11 वर्ष हो चुके हैं, इसकी स्थापना के बाद इन 7 जिलों में उच्च शिक्षा को समावेशी बनाने के लिए अथक प्रयास किए गए हैं। विश्वविद्यालय की कमजोरियों और खतरों में विवादास्पद कारकों को शामिल नहीं किया जाता है ताकि कोई विवाद उत्पन्न न हो। स्वॉट विश्लेषण एक दिशा प्रदान करता है कि कैसे एसडीएसयूयू को निचले स्तर के छात्रों तक ले जाया जा सकता है। यह एक साधन है लेकिन अंत नहीं है। एसडीएसयूयू एनईपी–2020 की प्रवृत्ति को आगे बढ़ा सकता है यदि वह अपनी कमजोरियों को दूर कर सके और इस संदर्भ में खतरों की पहचान कर सके और उन खतरों का सामना करने के लिए एनईपी–2020 तैयार कर सके। एसडीएसयूयू की ताकत और अवसरों का उचित उपयोग पूरे कार्य क्षेत्र में तीव्र गति से इसके उपयोग को प्रोत्साहित कर सकता है। प्रशासन और प्रबंधन इस एनईपी–2020 और यूनिवर्सिटी विजन को ध्यान में रखते हुए प्रभावी रणनीति बनाकर इसे सफलतापूर्वक लागू कर सकते हैं। एनईपी–2020 के विभिन्न घटकों का व्यापक रूप से वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के संबंध में अध्ययन किया जाना चाहिए ताकि संकेतकों की एक सूची तैयार की जा सके जो वर्तमान समय में सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत और प्रासंगिक हैं। एक अच्छा स्वॉट विश्लेषण आपको अपने शिक्षा लक्ष्यों तक पहुँचने में मदद कर सकता है या अपने शोध स्टार्ट–अप को उच्च गियर में ला सकता है। इसकी ताकत और अवसरों के साथ, बेहतरी की बहुत अधिक गुंजाइश है, कमजोरियों को मजबूत किया जा सकता है, और खतरों को कम किया जा सकता है। एक बहुत ही उच्च प्रतिस्पर्धा है जहां उच्च शिक्षा न केवल इस शिक्षा और अनुसंधान क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि प्रत्येक विश्वविद्यालय एक दूसरे विश्वविद्यालय से आगे निकलने के लिए दृष्टि/लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। स्वॉट विश्लेषण के आधार पर, मार्गदर्शन के लिए अन्य कारकों की एक सूची तैयार की जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. https://www.aicte-india.org
2. https://csirhrdg.res.in
3. https://csustan.edu/sites/default/files/StrategicPlanning/documents/SWOT-Analysis.pdf
4. https://education.gov.in
5. https://icssr.org
6. https://sdsuv-ac-in
7. https://sdsuvexam.org
8. https://sdsuvbed-in
9. https://morton.edu/wp-content/uploads/2019/04/MC_SWOT_analysis_s.pdf
10. http://naac.gov.in
11. https:// nvaccess.org
12. https://oakland.edu/Assets/upload/docs/CETL/TeachingTips/CETLTeachingTipSWOT.pdf
13. https://pestleanalysis.com/swot-analysis-of-college-university
14. https://stcloudstate.edu/strategicplan/analysis.aspx

13

वैश्वीकरण : विविध आयाम

ऋतु सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, नन्दासैण (चमोली) उत्तराखण्ड

सारांश

वैश्वीकरण शब्द का अर्थ सम्पूर्ण वैश्विक भूखण्ड से लिया जाता है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की बाजार शक्तियां स्वतन्त्र रूप से कार्यरत हो कर आपस में व्यापार कर रहे हैं तथा तकनीकी को साझा कर रहे हैं। भारत उन देशों में से एक है जो वैश्वीकरण की शुरूआत और कार्यान्वयन के बाद महत्वपूर्ण रूप से सफल हुआ है। कॉर्पोरेट, डिजिटल और व्यावसायिक क्षेत्रों में विदेशी निवेश का विकास देश में बहुत अधिक है। रोजगार के क्षेत्र में विशेष आर्थिक क्षेत्र के अवसरों के साथ नई नौकरियों की संख्या में वृद्धि हुई है। भारत में एक्सपोर्ट संम्भावित जोन केन्द्र में शामिल होना हजारों लोगों को रोजगार देने में बहुत उपयोगी है। भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण ने भी भारतीय उपभोक्ताओं को अनेक विकल्प प्रदान किये। प्रतिस्पर्धा में इस वृद्धि ने निर्माताओं को बहुत कम कीमत पर बेहतर उत्पाद बनाने के लिये प्रेरित किया। इस प्रकार वैश्वीकरण वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का आर्थिक, सामाजिक एवं संस्कृति का एकीकरण है जिसे विश्वव्यापी पारस्पारिक जुड़ाव के रूप में भी समझा जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में सम्पूर्ण वैश्विक पटल के विभिन्न क्षेत्रों जैसे रोजगार, शिक्षा, तकनीकी ज्ञान स्वास्थ्य सुविधायें में वैश्वीकरण की प्रक्रिया के बाद भारत में उसके प्रभावों का अध्ययन है।

मुख्य शब्द

वैश्वीकरण, रोजगार, निर्यात, विदेशी निवेश।

वर्तमान समय में भूमण्डलीकरण शब्द मानव जीवन के दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सम्बन्ध में किसी न किसी रूप में, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन को एक सकारात्मक संदर्भ में स्पर्श करता ही रहता है। आज प्रत्येक क्षेत्र में भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण, जगतीकरण व ग्लोबल विलेज शब्द की गूंज है। यह सारे शब्द एक दूसरे के पर्यायवाची है। भारतवर्ष की एक प्रमुख विशेषता ''वसुधैव कुटुम्बकम'' ग्लोबलाइजेशन का पर्याय ही जान पड़ता है। जिसमें समस्त विश्व की कल्पना एक परिवार के रूप में की गई है। अतः ग्लोबलाइजेशन वह प्रक्रिया है जिसमें समस्त विश्व आज एक गॉव के रूप में प्रतीत होता है। इस वैश्विक ग्राम की अवधारणा में विश्व के लगभग 200 देश तथा 7 अरब जनसंख्या प्रभावित होती है। जिसमें लगभग 12 प्रतिशत अफ्रीकी व 60 प्रतिशत एशियाई है। पारिभाषिक रूप में वैश्वीकरण का अर्थ है स्थानीय वस्तुओं घटनाओं का रूपान्तरण अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर करना जिसमें किसी भी प्रक्रिया में सभी लोग मिल जुल कर कार्य करते हैं फिर वह सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक था किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित क्रियाकलाप हो। विशेषतः आर्थिक क्षेत्र में। भारत के सन्दर्भ में ''विदेशी कम्पनियों को भारत की गतिविधियों में निवेश करने की अनुमति देना व हमारी अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोल देना''। प्रभास जोशी जो कि ग्लोबलाइजेशन को केवल उदारीकरण व निजीकरण को बढ़ाने वाली प्रक्रिया मानते हैं। उनके अनुसार ''यह प्रक्रिया प्राथमिक रूप से आर्थिक क्रिया है अतः इसका पहला कार्य आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित है चूंकि हमारे द्वारा इस प्रक्रिया में हमारी पुरानी मान्यतायें व अपने व्यवहार को छोड़ा गया तो यह उदारीकरण कहलाया व उनकी सम्पत्ति व साधन उद्योगपतियों को दिये गये तो वह निजीकरण कहलाया। वैश्वीकरण द्वारा चूंकि मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया गया अतः लोकतन्त्र भी इससे अछूता न रहा व किसी भी देश की सरकार वहाँ कैसा विकास करना चाहती है।

यह भी कुछ हद तक वैश्वीकरण तय करता है। वैश्वीकरण के कारण सरकारों को जो काम करना है उस ताकत में कमी आती है। अतः संविधान में दिये गये लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा अब पुरानी हो गयी है व इसकी जगह न्यूनतम हस्तक्षेप कार्य राज्य ने ले ली। राज्य के पास अब कुछ ही सीमित कार्य है। जैसे नागरिकों की सुरक्षा व कानून व व्यवस्था बनाना।

वैश्वीकरण से हमेशा राज्य की ताकत में कमी आती है ऐसा नहीं है। राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य की प्रधानता को कोई चुनौती नहीं मिली है और राज्य आज भी प्रमुख है, जबकि विभिन्न देशों की राजनीति में आज भी अन्य देशों के प्रति पुरानी ईर्ष्या और प्रतिद्वंदिता का दखल है। आज भी राज्य राष्ट्रीय सुरक्षा व कानून व्यवस्था का निर्वाह कर रहा है।

ग्लोबलाइजेशन का एक महत्वपूर्ण प्रभाव भारत की उच्च शिक्षा पर पड़ा है। वैश्वीकरण ने शिक्षा को असाधारण व्यावसायिक अवसर बना दिया है। कई देश हमारे विश्वविद्यालयों के साथ हाथ मिलाकर हमारी अति आर्कषित ताकत का हिस्सा बनना चाहते हैं। ग्लोबलाइजेशन के प्रत्यक्ष प्रभाव के दष्ष्टिगत देश को विदेशी छात्रों की पढ़ाई का केन्द्र बनाने की कवायद तेज हो गयी। यू0जी0सी0 द्वारा संस्थानों में विदेशी छात्रों की संख्या को बढ़ाने हेतु कई रियायतें दी जा रही हैं।

विदेश मंत्रालय द्वारा फरवरी में राज्य सभा में बताया गया कि भारतीय संस्थानों में विदेशी छात्रों की संख्या दिन–ब–दिन बढती जा रही है। 2019–20 में 49348 विदेशी छात्र देश के संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, यू.जी.सी. के वर्तमान चेयरमैन श्री मामिडाला जगदीश कुमार द्वारा बताया गया कि यू. जी. व पी. जी. कार्यक्रमों में विदेशी छात्रों के लिए अतिरिक्त 25 प्रतिशत सीटें बढ़ायी जा सकती है तथा ये छात्र प्रवेश परीक्षा के लिए भी बाध्य नहीं हैं।

केन्द्र सरकार ने देश में पढ़ाई के लिए विदेशी छात्रों का रूझान बढ़ाने के लिए 2018 में ''स्टडी इन इंडिया'' प्रोग्राम की शुरूआत की। इस हेतु सरकार ने 150 करोड़ रूपये का बजट भी स्वीकृत किया है। इन सब प्रयासों का परिणाम निश्चित रूप से अभी नहीं परन्तु आने वाले समय में स्वयं ही सकारात्मक रूप से परिलक्षित होगा। और हमारे देश की युवा पीढ़ी को भी अन्य देशों की शिक्षण संस्थाओं में इसी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाएगी। यह स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही रहा है। पश्चिमी सभ्यता को अपनाने की वजह से भारतीय संस्कृति अपनी पहचान और पकड़ युवाओं पर से खोने लगी है। मार्क्सवादी और राष्ट्रवादी दोनों ही तरफ के लोग वैश्वीकरण के विरोधी रहे हैं।

वामपंथियों के अनुसार इससे गरीबी, बेरोजगारी व आर्थिक विषमताओं में वष्द्धि हुई जबकि राष्ट्रवादी कहते हैं कि वैश्वीकरण द्वारा, राजनीति अर्थव्यवस्था व समाज व्यवस्था पर साम्राज्यवादी हमले तेज होते जा रहे हैं। परन्तु यह भी सच है कि उदारीकरण के बिना प्रगति भी सम्भव नहीं है। अतः वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक पक्षों के दलीलों को जान लेना भी आवश्यक है।

वैश्वीकरण के फायदे

विदेशी निवेश में वष्द्धि – इससे भारत में विदेशी निवेश की वष्द्धि में तेजी आयी है। 1991 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश जो भारत के जी.डी.पी. का 0.1 प्रतिशत था। जो वर्तमान में भारत की जी0डी0पी0 का 2 प्रतिशत पहुँच चुका है और भारत जी0डी0पी0 के सन्दर्भ में विश्व की नवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है।

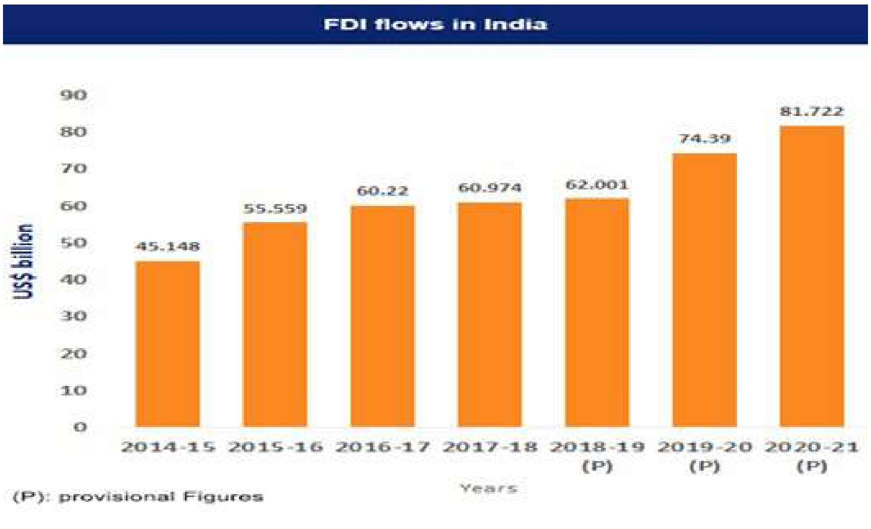

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का प्रवाह 2014–2015 में जो कि 45.148 बिलियन डॉलर का वह 2016–17 में पढ़कर 60.22 हो गया तथा 2020–21 में 81.722 तक पहुँच गया।

रोजगार– भारत में रोजगार के अवसरों में आश्चर्यजनक वष्द्धि हुई। आउटसोर्सिंग वैश्वीकरण प्रक्रिया के महत्व का प्रत्यक्ष उदाहरण है। प्रतिस्पर्द्धा की होड में भारतीय कम्पनियों में सीधे निवेश, शेयर बाजार में निवेश व विदेशों द्वारा ऋण लेकर विदेशी निवेश बढ़ता है। इस हेतु मुख्यतः विकासशील देशों द्वारा कई उदार नीतियां बनायी गयी हैं।

कई उद्योगों हेतु लाइसेन्स की अनिवार्यता आवश्यक नहीं है भारत के सन्दर्भ में तो बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को खुदरा व्यापार में भी प्रवेश की अनुमति दे दी गयी है। अतः कम व सस्ता श्रम लागत ने पश्चिम की बड़ी कम्पनियों को अन्य क्षेत्रों के कर्मचारियों को आउटसोर्स करने व ज्यादा रोजगार पैदा करने के लिए प्रेरित किया है।

एक नागरिक समाज का उदय– इसके अन्तर्गत सभी गैर सरकारी संगठन व दबाव समूह के साथ इनका विकास भी तेजी से हुआ है। इनके द्वारा किये गये जनआन्दोलनों से हमें पता चल गया कि नागरिकों में राज्य के प्रति कितना असन्तोष है। संचार के साधनों व प्रौद्योगिकी के विकास के अन्तराष्ट्रीय स्तर पर बहुत सी स्वैच्छिक संस्थाएं काम करती है और पर्यावरण जैविक विविधता की रक्षा के लिए विश्वव्यापी आन्दोलन चलाते हैं।

ज्ञान का सर्वव्यापीकरण– ग्लोबलाइजेशन का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष ज्ञान का सर्वव्यापीकरण भी है जिस कारण एक देश में होने नवाचार चाहे वह आर्थिक, प्रौद्योगिकी या अन्य क्षेत्रों से हो वही तक सीमित नहीं रहते बल्कि सम्पूर्ण विश्व की धरोहर बन जाते हैं। अतः इससे एक देश का दूसरे देश से अन्तर समाप्त होता है व विश्व बन्धुत्व की भावना बलवती होती है।

विश्वस्तरीय समस्याओं का समाधान– सम्पूर्ण विश्व में कुछेक समस्याएं सर्वव्यापी है। अर्थात सभी जगह बहुतायत पायी जाती है जैसे–बेरोजगारी, शिक्षा, शान्ति व सुरक्षा आदि। इस प्रक्रिया के कारण सभी देश आपस में सहयोग कर पारस्परिक सहमति से इनके लिए नीतीयॉ बनाते है व मिलजुल कर इनको दूर करने के लिए प्रयास करते है।

शिक्षा की सर्व उपलब्धता– शिक्षा की सर्व उपलब्धता एक महत्वपूर्ण परिणाम है ग्लोबलाइजेशन प्रक्रिया का और शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाने हेतु वैश्वीकरण अति आवश्यक है। ऑनलाइन क्लासेज, शिक्षा का डिजिटलीकरण, ई0 लाइब्रेरी इसका एक ज्वलंत उदाहरण है।

परन्तु यह भी सत्य है कि कोई भी नवाचार अगर सही मात्रा में प्रयोग में लाया जाता है तो सम्पूर्ण मानव जाति उससे अपार लाभ प्राप्त करती है, परन्तु जब यही नवाचार बिना किसी तैयारी व गलत रूप से प्रयोग किया जाए तो इसके द्वारा निर्मित परिदष्य इतना खूबसूरत नहीं रह जाता जितना कि प्रस्तुत किया जाता है।

आज भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था का ''ब्राइट स्पॉट'' कहा जा रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत फिलहाल एक आकर्षक स्थल है और अगले साल 6.7 फीसद आर्थिक वर्षद्धि की दर हासिल करने की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। धीरे–धीरे सम्पूर्ण विश्व के मंच पर भारत को किस रूप में प्रतिस्पर्धा करनी है इस बारे में भी भारत की समझ बदली है। अन्तमुर्खी और संरक्षणवादी नीतियां जोर पकड़ रही हैं। विश्व बैंक ने छमाही प्रमुख प्रकाशन भारत विकास अपडेट के नवीनतम अंक में कहा है कि विकास में नरमी के कुछ संकेतों के बावजूद भारत की विकास दर लचीली बनी हुई है। वित्तीय वर्ष 2022–23 की पहली तीन तिमाहियों के दौरान वास्तविक जी0डी0पी0 में वर्ष–दर–वर्ष 7.7 प्रतिशत की वषद्धि के साथ पूरे वर्ष विकास दर 6.9 प्रतिशत तक रहने का अनुमान है व 2022–23 की दूसरी छमाही में नरमी के कुछ संकेत हैं। अतः विश्व बैंक ने 6.6 प्रतिशत (दिसम्बर, 2022) से संशोधित कर 6.3 प्रतिशत कर दिया। भारत में विश्व बैंक के कन्ट्री डायरेक्टर ऑगुस्ट तानो कुआमें ने कहा है ''भारतीय अर्थव्यवस्था बाहरी झटकों के प्रति मजबूत लचीलापन दिखा रही है और बाहरी दबावों के बावजूद भारत के सेवा निर्यात में वषद्धि जारी है और चालू खाते का घाटा कम हो रहा है।

ग्लोबलाइजेशन के नकारात्मक प्रभाव

राष्ट्रीय प्रभुसत्ता में ह्यस– चूंकि विकासशील देश अपनी आवश्यकताओं हेतु प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विकसित देशों व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे विश्व बैंक, मल्टीनेशनल कम्पनियां व विश्व व्यापार संगठन पर आश्रित है तो स्वतः ही उन्हें अपने नीतीयों व उनके निर्देशों के अनुसार बनानी पड़ती है। ये संस्थाएं मजबूर करती है कि वे अपने औद्योगिक कानूनों में बदलाव मजदूर हित में करे विश्व बैंक ऋण देने से पहले उस देश को अपनी मुद्रा ऋण मूल्यन के लिए मजबूर कर देता है।

भारत के लिए खुले व्यापार की खबरे– इस प्रतिस्पर्द्धा के दौर में बाजार में उन्हीं राष्ट्रों को एकाधिकार है जो कच्चे माल के पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर है। जिनके श्रमिक कार्यकुशल होने के साथ–साथ अनुशासित है। जिन देशों की तकनीक अति आधुनिक व अति विकसित हो क्योंकि वही राष्ट्र माल को सस्ता व अच्छा बना पाएगा जैसे चीन, जापान, अमरीका। अतः समस्त उत्पादन कुछ निश्चित देशों में केन्द्रित होने लगा जिससे अन्य विकासशील देशों को बहुत नुकसान होता है।

सामाजिक व आर्थिक कल्याण को नुकसान– वैश्वीकरण से रोजगारों में कमी और आय में असमानता पैदा हुई। कई विकासशील देशों की लिए यह प्रश्न हो गया है कि ''व्यापार के उदारीकरण से आखिर किसका लाभी हो रहा है। आम लोगों को विशेषकर बी.पी.एल. को सामाजिक सुरक्षा कवच की आवश्यकता है और विशेषकर भारत में राज्य का प्रमुख कार्य ही सामाजिक सुरक्षा व सार्वजनिक कल्याण है। दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं पर प्रत्येक गरीब आदमी की पहुंच निश्चित है। परन्तु वैश्वीकरण की प्रक्रिया द्वारा सरकार इन एब कार्यो से पीछे हटती जा रही है व मूलभूत आवश्यकताओं भी प्रत्येक नागरिक को उपलब्ध नहीं हो पा रही फलस्वरूप अमीर दिन–ब–दिन अमीर व गरीब दिन–ब–दिन गरीब होता जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय अपराध एवं आतंकवाद

समस्त विश्व जब आपस में एक देश की तरह बन्ध गया है तब एक देश में घटित होने वाली आतंकवादी गतिविधियां अवश्य ही अन्य देशों को प्रभावित करेगी। संचार और तकनीकी के साधन इतने उन्नत और विकसित हो गये है कि एक अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठन किसी भी देश के अन्दर छुपकर समस्त विश्व में अपनी गतिविधियों को अंजाम दे रहा है। यातायात व परिवहन

के साधन विकसित हो जाने के कारण किसी वारदात को अंजाम देने के बाद आतंकवादी एक जगह से दूसरी जगह सरलता से पहुँच जाता है व उसकी पहुँच सम्पूर्ण विश्व में बन जाती है।

पर्यावरणीय पहलू की अनदेखी

समस्त विश्व में इस प्रक्रिया में आर्थिक पहलू की और ही सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया व आर्थिकी बढ़ाने हेतु पर्यावरणीय पहलू को पूरी तरह नकार दिया गया। इस अनदेखी का परिणाम यह है कि आज सम्पूर्ण विश्व में खतरे के मुहाने में खड़ा है। वैश्वीकरण का विरोध एक ज्वलन्त और बहस योग्य मुद्दा है। पूरी दुनियाँ में इसकी आलोचना होना लाजिमी है चूँकि सम्पूर्ण विश्व सम्पन्न और विपन्न राष्ट्रों के बीच में बँट गया है परिणाम स्वरूप विकासशील देशों में कई संगठन व लोग इसके विरोध में आन्दोलन कर रहे हैं।

सिएटल बैठक

वर्ष 1999 में सिएटल में विश्व व्यापार संगठन की मंत्री स्तरीय बैठक हुई। यह बैठक विरोध और प्रदर्शन के कारण बिना किसी लाभ के ही समाप्त हो गयी। अधिकतर जनमानस जो वैश्वीकरण के कारण आयी बेरोजगारी से त्रसित थे। वह केवल अपनी सुरक्षा चाहते थे सन् 2001 में कतर की राजधानी दोहा में विश्व व्यापार संगठन की फिर मंत्री स्तरीय बैठक हुई जिस में पश्चिम के विकसित व्यापार के साथ पर्यावरण का मुद्दा जुड़ने लगा और विकासशील देशों को विश्व व्यापार से अलग रखने के लिए विकसित देशों द्वारा पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले देशों से सामान आयात करना बन्द कर दिया जिससे विश्व व्यापार में विकसित देशों का आधिपत्य हो गया।

कानूकन वार्ता

दोहा बैठक की समीक्षा सितम्बर, 2003 में कानूकन में होनी वाली मंत्री स्तरीय बैठक में हुई। परन्तु यह विवादों में ही उलझकर रह गयी। मुख्य मांग यह थी कि विकसित देश अपने किसानों को भारी मात्रा में दी जाने वाली सहयोग को बन्द करे क्योंकि इस सहायता के कारण किसान अपना सामान वैश्विक बाजार में कम दाम पर बेच रहा था परन्तु गरीब देश के किसान अपने उत्पादित सामान को उतने कम मूल्य पर नहीं बेच सकते थे। कषषि उत्पादों की कीमतें गिरने के कारण गरीब देश का किसान बुरी तरह हानि का भागी बना। विकसित देश चाहते थे कि पूँजी का स्वतन्त्र विचरण हो। जहाँ ज्यादा लाभ हो वहाँ पूँजी लगायी जा सके पर गरीब देशों ने इस तर्क को सिरे से नकार दिया।

जेनेवा वार्ता

जुलाई, 2006 में 60 देशो के वित्तमंत्रियों की बैठक हुई परन्तु तीन दिन चलने वाली बैठक विकसित और विकासशील देशों के बीच उभरे मतभेद के कारण दूसरे दिन ही समाप्त हो गयी। कोई भी देश अपने किसानों को दी जाने वाली सरकारी सहायता अर्थात् सब्सिडी में कटौती के लिए तैयार नहीं था। अतः विकासशील देशों को इसका बहिष्कार करना पड़ा।

भारत और वैश्वीकरण का प्रतिरोध

भारत में वैश्वीकरण का विरोध कई हल्को से हो रहा है। आर्थिक वैश्वीकरण के खिलाफ वामपंथी तेवर की आवाजें राजनीतिक दलों के साथ–साथ इण्डियन सोशल फोरम जैसे मंचों से उठने लगी है। स्थानीय औद्योगिक श्रमिकों एवं अनेक किसान संगठन ने बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश का विरोध किया है। इसका विरोध दक्षिण पंथी खेमों से भी हुआ है। यह खेमा विभिन्न सांस्कषतिक प्रभावों का विरोध कर रहा है। जिसमें केबल नेटवर्क के जरिये उपलब्ध कराये जा रहे विदेशी चैनलों से लेकर वेलेन्टाइन डे मनाने तथा स्कूल, कॉलेज की छात्र–छात्राओं की पश्चिमी पोशाकों को पहनने की चाह तक का विरोध शामिल है।

निश्कर्ष

अन्ततः निष्कर्ष यह प्राप्त होता है कि वैश्वीकरण द्वारा विभिन्न देश सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कषतिक, सामरिक आदि क्षेत्रों में एक दूसरे के अतिसमीप आ गये हैं। लोगों के जीवन स्तर में वषद्धि हुई है। प्रति व्यक्ति आय वैश्विक स्तर पर बढ़ी है। विशिष्ट सेवाओं व विलासितापूर्ण वस्तुओं तक व्यक्ति की पहुँच आसान हुई है, परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि कुछ गिने चुने विकसित देशों को हो रहा है। विकासशील देश अपनी गरीबी, अशिक्षा, तकनीकी पिछड़ेपन के कारण अनेक समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, अपराधिक कारण, आर्थिक व मानिसक शोषण का सामना कर रहे हैं। अतः इस प्रक्रिया के लिए आज नहीं तो कल हमें तैयार होना ही पड़ेगा। इस सन्दर्भ में फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमेनुएल मैको का कहना था कि ''दुनिया के लिए अपने दरवाजे बन्द कर लेने से हम दुनिया को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकते हैं। यह हमारे नागरिकों के भय को कम नहीं करेगा अपितु उसे और बढाऐगा। हम अतिवादी राष्ट्रवाद के उन्माद से दुनिया की उम्मीद को नुकसान पहुँचने नहीं दे सकते हैं''।

यह एक अच्छी प्रक्रिया है, परन्तु विकसित राष्ट्रों आर्थिक संस्थाओं के नियन्त्रण और अपनी मनचाही नीतियों से इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। ''परिवर्तन तो शाश्वत है'' परन्तु जब यही परिवर्तन स्थानीय संस्कृति ह्रास व उन्मूलन पर उतर आये जिसमें उस समाज की विशिष्ट संस्कृति, उत्कृष्ट मान्यतायें व सर्वकल्याण की भावना छुपी हो तो यह अवश्य ही एक विचारणीय प्रश्न है।

सन्दर्भ सूची

1. रजनी इन्टरनेशनल जनरल ऑफ रिसर्च इन हिन्दी खण्ड 03. पृष्ठ 62.
2. घुलिया, सुभाष. (2001). ''सूचना की क्रांन्ति की राजनीति व विचारधारा''. शिल्पी प्रकाशन. पृष्ठ 30.
3. (2022). अमर उजाला. 23 अगस्त।
3. स्वतन्त्र भारत में राजनीति. कक्षा 12. भाग 2.
4. विकासशील देशों में वैश्वीकरण का प्रभाव. Lion, Ajdre discuss and realize of liberal democracy Tehran. Pg. **175-190.**
5. AISHE- 2 Report – 2015 to 2019.
6. www.alleducationjournal.com. vol. 6. Pg. **37-40.**
7. ibef.org.

14

हिन्द महासागर में चीन का बढता प्रभाव और भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा

डॉ० अतुल चंद
प्रभारी प्राचार्य, विभागाध्यक्ष
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
राजकीय महाविधालय, बलुवाकोट पिथौरागढ़, उत्तराखंड

राहुल खत्री
शोधार्थी, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग
राजकीय महाविधालय, बलुवाकोट पिथौरागढ़, उत्तराखंड

सारांश

भू राजनैतिक वातावरण में बदलते आर्थिक हितों व वैश्विक व्यापार में प्रतिस्पर्धा व संकट ने हिन्द महासागर में चीन की व्यापक महत्वाकांक्षी हितों के प्रसार को ओर अधिक बढ़ाया है। हिन्द महासागरीय देशों में चीन की नौसेना की उपस्थिति, नौ सेनिक अडडे व क्षेत्रों पर आधिपत्य भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को चुनौती पेश कर रहा है। भारत भी कूटनीतिक व रणनीतिक साधनों से इस क्षेत्र में अनुकुल स्थिति के लिए प्रयासरत है। भारत हिन्द महासागरीय क्षेत्र का सबसे बड़ा और प्रगतिशील देश है, इसलिए उसका दायित्व बनता है कि वह राष्ट्रीय हितो की सुरक्षा के साथ–साथ इस क्षेत्र के अन्य देशों की शांति, सुरक्षा व स्थिरता बनाने की सहयोगात्मक भावना में अधिक मजबूती से तत्परता दिखाएं।

मुख्य शब्द

हिन्द महासागर, नौसेना अभ्यास, क्वाड सीपीईसी, चाबाहार पोर्ट, एक्ट ईस्ट पालिसी।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही हिन्द महासागर का समृद्धशाली व्यापारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक इतिहास रहा है। भारत के भविष्य निर्धारण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है और वर्तमान में भी हिन्दमहासागर इस भूमिका का भली भॉति निर्वहन कर रहा है। हिन्दमहासागर का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 7,25,20,000 वर्ग किमी है। अंटलांटिक व प्रशांत महासगर की अपेक्षा अधिक विकसित व आधुनिक न होने के बावजूद भी हिन्द महासागर विश्व में सबसे व्यस्तम मार्गो में से एक है। यह विश्व के लगभग 20.3 प्रतिशत जलीय भाग को घेरता है तथा यह 9600 किमी० चौड़ा तथा 10400 किमी० लंबा है। वैश्विक व्यापार में प्रतिस्पर्धा तथा आर्थिक प्रसार के रणनीतिक माहौल में आये परिवर्तनों ने हिन्दमहासागर मे प्रतिस्पर्धा के क्षेत्र को ओर अधिक जटिल कर दिया है। हिन्दमहासागर में स्थित अफ्रीका महाद्वीप, मध्य पूर्व एशिया दक्षिण व दक्षिण पूर्व एशिया व आस्ट्रेलिया महाद्वीप के लगभग 48 देशों की तटीय सीमाओं को छूती है हिन्दमहासागर मुख्यतः पूर्व से गश्ती को जोडने वाला महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग प्रदान करता है, तथा इन देशों के सुरक्षा व्यापारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक हित इस महासागर से जुडे हुए हैं। हिन्द महासागर में प्रतिस्पर्धा मूलतः चीन के बढते नियंत्रण के कारण है। चीन वैश्विक शक्ति बनने व एशिया पर प्रभुत्व के लिए बेल्ट रोड इनशिएटिव व मोतियों की माला की कूटनीतिक चाल चल रहा है। चीन हिन्दमहासागर के तटीय देशों में निवेश व प्रभाव व नियंत्रण की नीति से हिन्द महासागर में सैन्य उपस्थिति बढ़ा रहा है। जो कभी भी सैन्य संघर्ष की स्थिति में भारत सहित सम्पूर्ण हिन्द महासागर की सुरक्षा का लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और हिन्द महासागर

वर्तमान भू राजनैतिक परिदृश्य में राष्ट्रीय सुरक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक हो चुका है जिसके अन्तर्गत रक्षा, राष्ट्रीय हित व राष्ट्रीय शक्ति राष्ट्र की एकता, अखडण्ता और स्वतंत्रता, समृद्धि को अक्षुण्य बनाये रखने वाले तत्व निहित है। भारत एक ओर से स्थलीय सीमा से तो दूसरी ओर से विशाल हिन्द महासागर की समुद्री सीमाओं से घिरा हुआ है जहॉ दोनों ओर से विस्तारवादी चीन भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा में चुनौती बना हुआ है। भारत तीनों ओर से हिन्द महासागर से घिरा हुआ है। इसकी 7,516 6 किमी० लम्बी समुद्री सीमा का निर्धारण हिन्द महासागर से ही होता है। यह भारत के 09 तटीय राज्यों की सीमाओं को स्पर्श करता हैं। हिन्दमहासागर में स्त्रातेजिक दृष्टि से अवस्थिति बंगाल की खाडी व अरब सागर में अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह व लक्ष्यद्वीव द्वीप समूह में भारत के कई द्वीप है।

आधुनिक बदलते भू राजनैतिक परिवेश बढ़ती स्थिरता चीन अमेरिका आर्थिक युद्ध, वैश्विक व्यापार व महामारी, रूस–यूक्रेन युद्ध, जलवायु परिवर्तन आदि ने हिन्द महसागर की सामरिक स्थिति को गति देने का काम किया है। इस महासागर में बढ रही प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न खतरों का प्रभाव भारत व इसके तटीय देशों की सुरक्षा, शांति व स्थिरता पर पडा है। भारत का 90 प्रतिशत व्यापार हिन्द महासागर के व्यापारिक मार्गो से होता है जिसमें ऊर्जा व ईधन व्यापार प्रमुख हैं। सीमाओं की सुरक्षा के दृष्टिकोण से समुद्री सीमाओं की सुरक्षा चुनौतिपूर्ण है, क्योंकि समुद्र खुले क्षेत्र हैं। हिन्दमहासागर वैश्विक समुद्री व्यापार का महत्वपूर्ण मार्ग होने से यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री लेनों का जाल बिछा हुआ है। इस क्षेत्र में शक्तिशाली राष्ट्रों के बीच प्रतिस्पर्धा में सामरिक तौर पर महत्वपूर्ण हिन्दमहासागर के तटीय व द्वीपीय देशों में विरोधी व शत्रु राष्ट्रों की सैन्य उपस्थिति हमारी सुरक्षा साझेदारी तैयारी, रणनीतियों को कमजोर करती है। इतिहास गवाह है कि प्राचीन समय में किस प्रकार हिन्द महासागर के माध्यम से बाहरी शक्तियों ने भारत की व्यापारिक महत्ता से प्रभावित होकर भारत की एकता, अखण्डता के साथ उसकी स्वतंत्रता को भी प्रभावित किया था। दूसरा हमें ध्यान रखना चाहिए की किस प्रकार हिन्दहासागर की धाराओं को पार करते हुए वर्ष 2008 में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद ने भारत की बाहय व आन्तरिक सुरक्षा को हानि पहुचाई, जो हमारी सूचना, निगरानी व समुद्री सुरक्षा की कमजोर कडी का परिणाम था। इन्ही घटनाक्रमों ने ही हमें अपनी समुदी सुरक्षा के माध्यम से अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को सदृढ़ करने के लिए जागृत किया। तत्पश्चात इस प्रकार के हमलों से सुरक्षा के लिए भारतीय नौ सेना ने 2019 में गुरूग्राम में इनफॉरमेशन फ्यूशन सेंटर (IFC-IOR) की स्थापना की। जो कि हिन्दमहासागर में सुरक्षा प्रदाता के रूप में भारत की स्थिति को प्रकट करता है। जो इस क्षेत्र में नेवीगेशन, समुद्री डकैती, आतंकवाद,आपदा जैसी चुनौती से सुरक्षा प्रदान करता है।

हिन्दमहसागर में भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा मुख्यत समुद्री सुरक्षा व तटीय सुरक्षा के अर्न्तगत आती है। हिन्दमहासागर में राष्ट्रीय सुरक्षा में समुद्री सुरक्षा की चुनौती समुदी आतंकवाद, समुद्री लुटेरे, अवैध तस्करी, समुदी दुर्घटना प्राकृतिक संसाधन आदि है। भारत हिन्दमहासागर में अपनी सुरक्षा चिन्ताओं के तहत अपनी नौसेना का आधुनिकिकरण, उन्नत किस्म के हथियारों से लैस, विमान वाहक जलपोतों, पनडुब्बियों की संख्या में बढ़ोतरी कर रहा है। समुद्री सुरक्षा नीति के अर्न्तगत भारत का लक्ष्य है कि उसके पास आगामी वर्षो में 200 जहाज, 500 विमान और 25 हमलावार पनडुब्बियों का होना जरूरी है। भारतीय नौ सेना दुनिया में 7वीं सबसे शक्तिशाली नौसेना है। वर्तमान में भारतीय नौ सेना की तीन कमानें हैं जिसमें पूर्वी व पश्चिमी ऑपरेशनल कमानें है, जो अरब सागर व बंगाल की खाड़ी में होने वाली तमाम गतिविधियों पर नजर रखती है। इस क्षेत्र में भारत के कई नवल बेस है जिनमें कोलकत्ता, विशाखापटनम, चेन्नई, कारवार, मुम्बई मुख्य है, जिसमें से भारत कारवार बेस में एशिया के सबसे बडे नेवल बेस का निर्माण भी कर रहा है। भारतीय नौ सेना तथा तटरक्षक बल समुद्री गश्ती विमानों, सेटैलाइट संकेतो व उन्नत तकनीकी के माध्यम से तटीय व समुद्री सुरक्षा का कार्य करती है। 2.02 मिलियन वर्ग किमी के विशेष आर्थिक क्षेत्र के अन्दर हमारी परिसंपतिया, खनिज, समुद्री संसाधन, बन्दरगाह एवं तटीय रेखा व द्वीपीय सुरक्षा के लिये नौ सेना व तटीय सुरखा बल उत्तरदायी है। इसमें से भारतीय नौ सेना अन्तर्राश्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा तथा तटरक्षक बल 200 नोटिकल मील तक गश्त करती है। दूसरी ओर भारत अपने समुद्री परिवहन के ढाँचागत विकास, तटों की सुरक्षा के लिए बन्दरगाहों के आधुनीकीकरण, निर्माण व आन्तरिक जलमार्गो तक सम्पर्क साधने के लिये वर्ष 2017 से क्रियान्वित सागरमाला परियोजना पर कार्य कर रहा है। वर्तमान में भारतीय क्षेत्रों में 12 बड़े व 200 गैर प्रमुख बन्दरगाह है, तथा इन्ही के माध्यम से देश का 90 प्रतिशत समुद्री व्यापार होता है। जिसके माध्यम से भारत को वैश्विक व्यापार में सुगमता तथा सामरिक दृष्टि से भारत के पश्चिमी व पूर्वी तटों सहित चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स से हिन्दमहासागर में सुरक्षा की भूमिका निभाते हैं। भारत ने वर्ष 2015 में अपने मिशन सागर पहल के तहत हिन्दमहासागरीय क्षेत्र में समुद्री सहयोग व सुरक्षा, समुद्री आपदा, बाढ राहत कार्यो व संघर्ष व किसी विकट समस्या में सहयोग कर मिसाल पेश कर समुद्री सुरक्षा के लिए एक सहयोगात्मक पहल को बढ़ावा दे रहा है।

भारत हिन्दमहासागर में अपने सुरक्षात्मक ढ़ाँचे में समन्वय, सहभागिता व सेनाओं के बीच बेहतर तालमेल बनाने के लिये भारतीय नौसेना तटरक्षक बल, समुद्री पुलिस व वायुसेना के मध्य संयुक्त सैन्याभ्यास का आयोजन करती रहती है, जिससे वे किसी विकट परिस्थिति का बेहतर तालमेल के साथ मुकाबला कर सके। जैसे एम्पैक्स, डीएएनएक्स, टोपैक्स, सागर कवच आदि। भारत हिन्दमहासारीय देशों के साथ क्षेत्रीय सहयोग के माध्यम से संगठनात्मक ढाँचे का निर्माण कर रहा है। भारत इन देशो के साथ मिलकर द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय सहयोग के अर्न्तगत नौ सेना युद्धाभ्यास, समुद्री सुरक्षा चिन्ताएं, क्षेत्रीय मंच व तकनीकी साझा कर इस क्षेत्र में सशक्त समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा दे रहा है।

हिन्द महासागर में भारत की स्त्रातेजिक स्थिति

भारत हिन्दमहासागर की केन्द्रीय स्थिति में है, जो उसकी राष्ट्रीय हितों व राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान में हिन्दमहासागर में मुख्यत चीन भारत को उच्च स्तर पर चुनौती पेश कर रहा है। हिन्दमहासागर में अपनी सुरक्षा, एकता अखण्डता व्यापारिक व राजनैतिक हितों में संतुलन व प्रभावी बनाये रखने के लिये भारतीय प्रयास उल्लेखनीय है। भारत का वैश्विक मंचों, वैश्विक मुददों में भागीदारी, प्रभुत्व बढता जा रहा है। भारत का सहभागी विकास तथा वसुधैव कुटुम्बकम का दृष्टिकोण उसे सॉफ्ट पावर का रूप देती है। इसी परिपेक्ष्य में हिन्द महासागरीय देश भारत को एक सुरक्षा प्रदाता देश के रूप

में देखते है। भारत भी इस महासागर के तटीय व द्वीपीय देशों के साथ मिलकर सम्पूर्ण हिन्दमहासागर में प्रवेश करने वाली बाहरी शक्तियों से मिलने वाली चुनौतियों के समक्ष क्षेत्रीय सहयोग की भावना पेश कर रहा है।

भारत हिन्दमहासागर में निकटतम समुद्री पड़ोसी व बाहरी शक्तियों का भारत में प्रवेश द्वार श्रीलंका के साथ अपने सम्बन्धों फिर से पटरी पर लाने का काम कर रहा है, भारत ने हर प्रकार की परिस्थितियों में श्रीलंका के साथ पड़ोसी पहले की नीति का निर्वहन करता आया है। हाल ही में भारत द्वारा श्रीलंका में आये आर्थिक संकट में श्रीलका को 37.6 करोड डालर की सबसे अधिक वित्तीय मदद दी। साथ ही भोजन, ईधन, खाद, दवाई आदि सामग्री भी पहुचाई गयी। श्रीलंका हिन्दमहासागर में अहम चेक प्वाइट पर स्थित है यहा से हिन्दमहासागर में होने वाली किसी भी प्रकार की गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। भारत से श्रीलंका की दूरी महज 290 किमी है। यह वैश्विक समुद्र और हवाई मार्गो के केन्द्र बिन्दुओं पर स्थित है। भारत श्रीलंका के साथ समुद्री सुरक्षा, सहयोग, नौ सेना सहयोग के लिए 2011 से कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन करता आया है, जिसमें हॉल ही में मॉरीशस भी शामिल हुआ है इसके अन्तर्गत भारत–श्रीलंका–मालद्वीव हिन्द महासागर में दोस्ती नामक नौसेना अभ्यास करती है। हिन्दमहासागर में मालद्वीव यूरोप से पूर्वी एशिया तक होने वाले व्यापार के समुद्री लाइन आफ कम्युनिकेशन के बीच स्थित है यहा सैन्य नियंत्रण से सम्पूर्ण हिन्द महासागर में नजर रखी जा सकती है। भारत के दक्षिण गश्ती में स्थित लक्ष्यद्वीव द्वीपसमूह से मालद्वीव से दूरी मात्र 1200किमी है। पूर्व में भारत विरोधी सरकार के चलते यहा चीनी नियंत्रण अधिक रहा परन्तु मालद्वीव पर भारी चीनी कर्ज के चलते अभी भी चीन का प्रभाव बना रहेगा। राष्ट्रपति सोलिम ने विरोधी गुटों द्वारा इंडिया गो के प्रत्युत्त्र इंडिया फर्स्ट के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई गई। भारत की वित्तीय सहायता से मालद्वीव में शिक्षा, विकास, स्वास्थ्य, पर्यटन व सस्क्रति आदि क्षेत्रों मे भारत 20 उच्च प्रभाव वाली सामुदायिक विकास परियोनाएं चल रही है, जिसमें सबसे बडी परियोजना ग्रेटर माले कनेक्टविटी प्रोजेक्ट भी प्रगति पर है। भारत मालद्वीव की नौ सेना सम्बन्धी विकास कार्यो में सहायता, रखरखाव में सहयोग के साथ ही भारतीय नौसेना गश्ती विमान मालद्वीव के विशेश आर्थिक क्षेत्र तक जाकर निगरानी व सुरक्षा मुहैया कराती है। भारत द्वारा मालद्वीव में गुलिहफाहु व विलिंगली में वित्तीय सहायता से बन्दरगाह का निर्माण कर रहा है।

मध्य–पूर्व के देशों से भारत मुख्यत अपने ऊर्जा सुरक्षा एवं तेल व्यापार व प्राकतिक गैस, खाद्य एवं प्रवासियों सुरक्षा सम्बन्धी हितों से जुडा है। जो गश्ती हिन्दमहासागर से सम्बन्धित है, इस क्षेत्र की राजनैतिक अस्थिरता के बीच भारत अपनी रणनीतिक बढत बनाये रखना चाहेगा। भारत को तेल आपूर्ति करने के मामले में इराक अरसे से सउदी अरब से पहले स्थान पर रहा है, भारत की घरेलू स्थिरता में ऊर्जा सुरक्षा प्रमुख कारक है। सऊदी अरब इजरायल ईराक ईरान आदि देशों के साथ भारत के व्यापारिक, राजनैतिक, सैन्य सहयोग समुद्री सुरक्षा आदि क्षेत्रों में प्रगाढता देखी जा सकती हैं इस क्षेत्र में सामरिक रणनीतिक महत्व के व्यस्तम समुद्री मार्ग हार्मुज जलडमरूमध्य, बाव अल मंदेव, लाल सागर, स्वेज नहर है जो भारत को भूमध्यसागर, यूरोप, पश्चिमी राष्ट्रो तक पहुचाती है। इसलिए मिस्त्र के रणनीतिक महत्व को समझते हुए भारत द्वारा 74वें गणतंत्र दिवस पर पहली बार मिस्र के राष्ट्रपति को आमंत्रित किया गया। जो दोनो के बीच रणनीतिक साझेदारी को बढायेगा। भारत–पाक के बिगडतें सम्बन्ध व सीमओं पार कनेक्टविटी में बाधा के चलते ईरान भारत के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद भी भारत ने सम्पर्क बनाये रखा, ईरान में भारत का व्यापक निवेश व वित्तीय सहायता से बना चाबाहार पोर्ट जो अफगानिस्तान में भारतीय सुरक्षा, सहायता, इन्फ्रास्ट्रकचर निर्माण कार्यो व उसके निवेश को सुरक्षित व सरल बनाता है तथा मध्य एशियाई देशों में प्रवेश के साथ नॅार्थ साउथ ट्रांसपोर्ट कोरिडोर को दिशा देता है। इस क्षेत्र में चीन की सीपीईसी परियोजना के अर्न्तगत बन रहे ग्वादर पोर्ट में चीनी व पाक की नौसैनिक गतिविधियों पर नजर रखने में सामरिक भूमिका निभाएगा। ओमान जो अरब सागर के गश्ती में तथा जिबूती से कुछ ही दूरी पर स्थित है जहा बाव अलमंदेव जैसा सामरिक मार्ग है। भारत ने 2018 में हुए समझौते के तहत ओमान के दक्षिणी तट पर डुक्म बन्दरगाह तक पहुच हासिल कर ली है जो अदन की खाड़ी के माध्यम से लाल सागर की ओर आसान पहुंच प्रदान करता है भारतीय नौ सेना इस बन्दरगाह का उपयोग सैन्य कार्यवाही, सैन्य सहायता, रसद सामग्री और लाजिस्टिक समर्थन के लिए करने में सक्षम होगी।

अफ्रीकी महाद्वीप के पूर्वी भाग के निकट द्वीपों व द्वीपीय राष्ट्रों मे स्थित सेशेल्स मॉरीशस, मेडागास्कर, दिएगोगार्सिया आदि हिन्दमहासागर में चली आ रही प्रतिस्पर्धा में सामरिक भूमिका निभा रहे है। अफ्रीकी देशों व इन द्वीपों में बढ रही चीन की दिलचस्पी व बीआरआई के माध्यम से भारी निवेश इन क्षेत्रो में भारत के व्यापारिक, राजनैतिक, आर्थिक हितो व हिन्द महासागर में उसकी सहभागिता रणनीतियों को प्रभावित करता है। भारत ने सेशेल्स द्वीप समूह के अज्मशसन आईलैंड पर स्त्रातेजिक स्थिति हासिल कर ली है, जहा भारत वितीय सहायता से सैन्य अवसंरचना, सुरक्षा ढ़ाचा विकास निर्माण कार्य कर रहा है, तथा हिन्दमहासागर में समुद्री सुरक्षा व सहयोग के लिए भारत ने सेशेल्स व मेडागास्कर में उच्च सूचना निगरानी नियत्रण केंद्र स्थापित किया है इन देशों के साथ भी नौ सेना सहयोग, प्रशिक्षण, बुनियादी विकास तथा युद्धाभ्यास करता है। यहॉ स्थित मारीशस के साथ 2015 में हुए एक समझौते के तहत अगालेगा द्वीप पर भारत ने सैन्य सहायता, सैन्य रसद, व गश्ती विमानों के रखरखाव की व्यवस्था हासिल की है। इन द्वीपीय देशों पर भारतीय उपस्थिति का सामरिक लाभ मिलेगा जहाँ से हिन्दमहासागर में यूरोप, पश्चिमी राष्ट्रों व दक्षिण पूर्वी एशिया व पूर्वी के मध्य होने वाले व्यापार व सैन्य व असैन्य गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है।

स्त्रातेजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भारत के अडंमान व निकोबार द्वीप समूह से वैश्विक व्यापार के अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री लेनों से गुजरता है। यह दुनिया का सबसे व्यस्तम समुद्री व्यापारिक मार्ग मल्लका जलडमरूमध्य से 90 मील की दूरी पर स्थित है। भारत की मुख्य भूमि से दूरी 750 मील की दूरी पर है इस क्षेत्र में भारतीय आपत्ति के बावजूद भी कई बार चीन के निगरानी विमान, घातक पनडुब्बी व भारी मात्रा में चीनी नौ सेना की गतिविधियॉ दर्ज की गई हैं। भारत द्वारा भी बंगाल की खाडी में स्थित अंडमान व निकोबार के पोर्ट ब्लेयर में अपनी सुरक्षा के मददेनजर उन्नत व आधुनिक माडल पर आघारित एकीकृत सैन्य कमांड के निर्माण का कार्य किया जा रहा है। यह एकीकत सैन्य कमान मल्लका जलडमरूमध्य से कुछ ही दूरी पर स्थित है जो चीन का हिन्दमहासागर में प्रवेश का एकमात्र समुद्री मार्ग है।

गैर हिन्दमहासागरीय देश इस महासागर में भारत के प्रति एक श्रेष्ठ, प्रभावशाली, नेतृत्व की क्षमता, शक्तिशाली देश का नजरिया रखते है। फ्रांस, अमेरिका व जापान व ऑस्ट्रेलया सयुक्त हिन्द प्रशांत क्षेत्र से जुड़े अपने प्रभुत्व, सुरक्षा, रणनीतिक हितों व व्यापारिक हितों को साधने के लिये हिन्दमहासागर के भरोसेमन्द प्रमुख खिलाडी भारत के साथ व्यापक दीर्घकालिक सहयोग योजनाए बना रहें हैं। इसके तहत वर्ष 2018 में फ्रांस ने अपनी हिन्द प्रशांत समुद्री सहयोग की कार्य नीति प्रस्तुत की जिसमें इस क्षेत्र मे सुरक्षा शांति व स्थिरता व खुले व स्वतंत्र हिन्द प्रशांत की कल्पना की गई, जिसमें भारत एक प्रमुख सहयोगी है। 2021 में पहली बार फ्रांस का नौ सैनिक अभ्यास ला पैरोस बंगाल की खाडी में हुआ, जिसमें क्वाड सहित भारत ने भी लिया। हिन्द महासागर जैसे समुद्र पारिय क्षेत्र में फ्रांस की मैयट व लॉ रियूनियन द्वीपों पर उसका अधिकार उसकी चिन्ताओं व भारत के साथ शांति व स्थिरता में सहयोग को दर्शाती है। दूसरी ओर भारत क्वाड जैसे बहुपक्षीय संगठन में आस्ट्रेलिया, जापान व अमेरिका के साथ शामिल होकर व्यापक महत्वकांक्षी हितों को साधने का कार्य कर रहा है।

हिन्द महासागर में चीन का बढता प्रभाव भारत को चुनौती

चीन का बढ़ता आर्थिक प्रसार, विस्तारवादी नीति तथा बदलते राष्ट्रीय हित महाशक्ति व प्रभावशाली राष्ट्रों के सामने प्रमुख चुनैती पेश कर रहा है। चीन व्यापारिक दृष्टि से समुद्री मार्गो पर अधिक निर्भर रहा है हिन्द महासागर में मुख्यत उसके हित बढ़ते ऊर्जा व तेल व्यापार पर निर्भर है। वैश्विक महाशक्ति बनने के लिये हिन्द महासागर के समुद्री लेनों व अपने आर्थिक प्रसार को सदूरवर्ती देशों में फैलाने तथा वैश्विक व्यापार पर नियंत्रण हेतु अपनी योजनाओं से सम्पूर्ण हिन्द महासागर क्षेत्र पर नियंत्रण करना चाहता है।

चीन की प्राचीन समुद्री रेशम मार्ग पर आधारित बेल्ट रोड इनिशिएटीव आर्थिक परियोजना के जरिये पूर्वी एशिया से दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण व गश्ती एशिया, अफ्रीका के समुदी मार्गो से यूरोप व पश्चिमी राष्ट्रों तक सामरिक आर्थिक, व्यापारिक, रणनीतिक प्रसार से अपने व्यापक सामुद्रिक हितों व नीतियों को सुरक्षित कर रहा है, लगभग 150 से अधिक देश चीन की बीआरआई नीति के समर्थन की सूची में आते है। इस विकास व निवेश योजना से चीन राष्ट्रों में भारी निवेश कर उन्हे कर्ज के जाल में फसा रहा है। हिन्द महासागर में चीन की सामरिक बढ़त भारतीय स्थिति को कमजोर कर रही है। हिन्दमहासागर में चीन की नौ सैनिक उपस्थिति 2008 में अरब सागर में समुद्री डकैती रोकथाम के सयुक्त अभियानों में शामिल होने के समय से देखी जा सकती है, आज जिनकी संख्या में व्यापक बढोतरी देखी जा रही है। चीन ने हिन्दमहासागर में भारत के बढते प्रभाव को कम करने के लिए उसे घरने की सुनियोजित बीआरआई व मोतियों की माला नीति का प्रयोग किया है। चीन इस नीति के तहत भारत के निकटवर्ती तटीय व द्वीपीय देशों में श्रीलंका, मालद्वीव, म्यांमार, बांग्लादेश पाकिस्तााान सेशेल्स, मारीशस में व्यापक रूप में निवेश, वितीय मदद व ढांचागत सुविधा के नाम रणनीति बढ़त बनाकर सैन्य उपस्थिति बढ़ा रहा है, क्योकि ये द्वीपीय देश अर्न्तरराष्ट्रीय समुद्री लेनों के क्षेत्र में आते है तथा इन देशों में चीन का सबसे अधिक निवेश हैं। श्रीलंका को व्यापक वित्तीय सहायता के नाम पर कर्ज के जाल में फंसाकर हंबनटोटा बन्दरगाह पर चीन का स्वामित्व है इस क्षेत्र में आज भी व्यापक मात्रा में चीनी नौ सेना की उपस्थिति तथा चीन नौसेना के विमान वाहक पोत, घातक पनडुब्बी तथा गश्ती बोट विचरण करती रहती है। श्रीलंका में चीन की उपस्थिति व नियंत्रण इतना सशक्त है कि हाल ही में दिसम्बर 2022 में चीनी जासूसी गश्ती विमान युआन वांग–5 हबंनटोटा बन्दरगाह में पहुंचा। जिसका मुख्य लक्ष्य चीन सुंडा और लोम्बोक जलडमरूमध्य (इंडोनिशिया) में मैंपिग कर भविष्य में घातक पनडुब्बियों व नौ सेना साधनों को आसानी सें उतार सके। भारत को आशका है इसका उपयोग वह उसके समुद्री सुरक्षा, रणनीतिक तैयारियों व सैनिक प्रतिष्ठानों की जासूसी में कर सकता है। इस घटनाक्रम के बाद श्रीलकाई राष्ट्रपति विक्रमसिधें ने कहा कि हिन्दमहासागर की भू राजनीति ने दुर्भाग्य से श्रीलंका को हंबनटोटा के लिये पंचिग बैग बना दिया है हम नही चाहते की यह युद्ध व संघर्ष का क्षेत्र बने। बंगाल की खाडी में स्थित बाग्लादेश के चटगांव बन्दरगाह में अवसंरचना निर्माण व नौ सैना सुविधा की उपस्थिति। म्यांमार के भूभाग से हिन्दमहासागर में प्रवेश की कार्य योजना तथा कोको द्वीप पर चीन का सूचना निगरानी रडार प्रणाली यंत्र व हवाई पटटी तथा क्याकफयू बन्दरगाह में चीन का निवेश, आधुनिक ढाचा निर्माण उसके सम्पूर्ण हिन्दमहासागर व मलक्का जलडमरूमध्य जैसे संकरे मार्ग से होने वाले सैनिक व असैनिक गतिविधियों को सुरक्षा प्रदान करती है। भारत के इतने नजदीक चीन की उपस्थिति किसी भी संकट में भारत के एक्ट ईस्ट पालिसी, समुद्री सुरक्षा, नीतियों को प्रभावित करती है।

हिन्द महासागर के मध्य में स्थित स्त्रातेजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चेकप्वाइट मालदीव में अभी भी चीन की उपस्थिति बनी हुई है, यह भारत, श्रीलंका मलक्का स्ट्रेट व फारस की खाडी के काफी नजदीक है। मालदीव चीन के बीआरआई और मोतियों की माला रणनीति का मुख्य रणनीतिक खिलाड़ी है। चीनी नीति समर्थक पूर्व राष्टपति यामीन मालद्वीव में भारत विरोधी इंडिया गो कैम्पेन

का माहौल बना रहे है। वर्तमान सरकार द्वारा पूर्व में यामीन सरकार द्वारा पारित सभी कानूनों को निरस्त कर दिया है जो चीन सरकार वहा निर्णय लेने की शक्ति देते थे, परन्तु अब भी यहा चीन का प्रभाव बना रहेगा क्योंकि चीन का यहाँ भारी ऋण है। मालदीव सरकार के अनुसार यहा चीन का 3.1 अरब डॉलर का कर्ज है जबकि मालदीव की पूरी अर्थव्यवस्था 5 अरब डालर की हैं। यहाँ पर उपस्थिति से यूरोप से लेकर पूर्वी एशिया के बीच होने वाले व्यापारिक व सैन्य गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। मालद्वीव लक्ष्यदीव द्वीपसमूह बेहद नजदीक है, जहाँ काफी निर्जन द्वीप है भारत यहाँ समुचित विकास की बडी परियोजना पर काम कर रहा है। सेशेल्स, मारीशस में भी चीन का बीआरआई के माध्यम से भारी कर्ज व व्यापक निवेश किया है इसके अर्न्तगत वह इस क्षेत्रें में बुनियादी निर्माण, बन्दरगाहों, शिपिग लेनो में सुधार कर रहा है। चीन इन द्वीपों के माध्यम से अफ्रीका महाद्वीप, गश्ती एशिया से यूरोप तक अपने प्रसार को निर्बाध चला सकेगा।

चीन अफ्रीका महाद्वीप में अपना पहला नौ सेना अडडा जिबूती का संचालन प्राप्त कर लिया है। जो पायरेसी अभियानों में उसकी भागीदारी तथा लाल सागर व स्वेज नहर जैसे स्त्रोतेजिक महत्व के मार्गो से भूमध्य सागर से यूरोप में प्रवेश करायेगा। जिबूती में अमेरिका, रूस, बिटेन का नौ सेनिक अडडा पहले से ही मौजूद हैं। अफ्रीका महाद्वीप के कई देश भी चीन के बीआरआई प्रोजेक्ट का हिस्सा है। चीन ने पश्चिमी अफ्रीका के सेनेगल में भी इस देश की नौ सेना के लिए उन्नत बन्दरगाह विकसित किया है जो अपनी सीमा से दूर नौ सैनिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की चीन की विस्तारवादी नीति को दर्शाता है। अफ्रीका महाद्वीप में चीन का भारी निवेश उसकी पूर्व की मंशा को स्पष्ट करता है जो भारी कर्ज देकर डेफ्थ ट्रेक में फंसाकर उस क्षेत्र का स्वामित्व अपने हाथों में लेकर अपनी सैन्य उपस्थिति दर्ज कराना रहा है। अफ्रीका के अधिकतर देश अल्पविकसित, गरीबी, भुखमरी तथा गृहयुद्ध जैसी समस्याओं से गुजर रहे है। इस स्थिति में यहा चीन का भारी निवेश करना चिन्तनीय है। चीन द्वारा अफ्रीका महाद्वीप में बीआरआई के तहत 46 ऐसे बन्दरगाहो को चिन्हित किया है जहा वह निर्माण व निवेश करना चाहता है इनमें को 27 को वितपोषित व 11 बन्दरगाहों का वह संचालन भी कर रहा है।

चीन दूसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था तथा सबसे बडा तेल निर्यातक देश है इसी लिहाज से चीन विगत कुछ वर्षो से मध्य पूर्व एशियाई देशों के साथ सहयोग साझेदारी को बढ़ा रहा है। जो उसकी विवादित शिनजियांग मामले में सुरक्षा रणनीति भी है। खाड़ी सहयोग परिषद देशों से चीन 40 प्रतिशत तेल आयात करता है जिसमें से सउदी अरब का 17 प्रतिशत हिस्सा है। चीन यहाँ सुरक्षा व सैन्य सहयोग समझौतों के तहत बढी मात्रा में हथियारों की सप्लाई कर रहा है। सयुक्त राज्य अमेरिका की इस क्षेत्र में घटती निर्भरता तथा हॉल में ही सउदी अरब व ईरान के विवादस्पद सम्बन्धेंा को बेहतर करने में चीन की तत्तपरता में इस क्षेत्रों से जुडे उसके हितो को मजूबत किया है। जिसका लाभ चीन ने ईरान के साथ 25 साल के लिये 100 अरब डॉलर की व्यापक आर्थिक योजना को मूर्त रूप देकर उठाया, जिसके अर्न्तगत दोनों देश सैन्य मामलो मे सुरक्षा, निमार्ण कार्य, सयुक्त सैन्य अभियानो में सहयोग करने का लक्ष्य रखा है। पाकिस्तान भी चीन के कर्ज जाल में फंसा हुआ है वह भारत पाक के सम्बन्धों का पूरा लाभ ले रहा है पाक में चीन का भारी निवेश चीनी नौसेना की उपस्थिति व हथियार व्यापार भारत के लिये बेहद चुनौती पेश कर रहा है। चीन पाक के ग्वादर पोर्ट से ईरान के चाबाहर पोर्ट तक ढ़ाचागत निर्माण कर सीपीईसी के तहत तेहरान को शिनिजियांग से जोडने की रणनीति बना रहा है। चीन इन क्षेत्रो मे पायरेसी अभियानो तथा व्यापक स्तर पर द्विपक्षीय समुदी अभियान व अभ्यासों की आड़ में अपनी नौ सैना शक्ति का प्रसार और क्षेत्र के अनूकुल परीक्षण दे रहा है।

निष्कर्ष

चीन की वैश्विक शक्ति बनने की रणनीतिक चाह में भारत का एशिया व वैश्विक मंचों पर प्रमुख राष्ट्र के रूप में उभरना चीन के अड़गें आ रहा है। चीन की हिन्द महासागर में ट्रेप की नीति से सभी देश वाफिक है, परन्तु चीन भारी कर्ज के तले इन क्षेत्रों में चीनी नियंत्रण बना रहेगा। भारत को चाहिए की इन देशों के बीच एक भरोसेमंद और विश्वसनीय पड़ोसी के रूप मे अधिक से अधिक आर्थिक, व्यापारिक व सुरक्षा में पारस्परिक सहयोग बनायें। भारत को क्वाड से परे हिन्द महासागर में एक प्रमुख शक्ति व सुरक्षा प्रदाता कि भूमिका निभानी चाहिये। क्वाड मूलत इस क्षेत्र में अनेक महाशक्ति राष्ट्रों के प्रभाव को जन्म देता है जिसका लक्ष्य चीनी नियंत्रण को कम करना है। भारत को हिन्दमहासागर में अपनी सुरक्षा बनायें रखने के लिये नौसेना व तटरक्षक बलों में बढोतरी, उन्नत हथियार, दूरस्थ गश्ती पोत, पनडुब्बियॉ व विमानवाहक पोतें की उन्नत तकनीकी के विकास पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही हिन्द महासागरीय क्षेत्रीय शक्तियो के साथ मिलकर एक मजबूत हिन्द महासागरीय सुरक्षा तंत्र का निर्माण करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. फड़िया, डॉ. बी.एल., फॅडिया, डॉ. कुलदीप. (2018). अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध. साहित्य भवन पब्लिकेशनः आगरा. पृष्ठ **513.**
2. https://www.orfonline.org/hindi/research/awreness-of-marine-area-through-information-fuse-centre-in-india-ocean-region-61528 fgUnegklkxj esa bUQkWesZlu¶;wtu lasVj ds tfj;s leqnzh {ks= ds izfr tkx:drk] 18 feb. 2022.
3. https://www.indiandefencereview.com/spotlights/indian-navy-the-guardians-of-the-indian-ocean/ Hkkjrh; ukSlsuk fgUnegklkxj ds laj{kd tuŒ 06] 2022.

4. https://navbharattimes.indiatimes.com/world/asian-countries/india-karwar-to-be-asian-biggest-naval-base-for-indian-navy-amid-china-pakistan-navy-threat-in-indian-ocean/amp-article.show/91831255.cms. 27 May. 2022.
5. https://mod.gov.in/dod/hi/navy defence ministry of india.
6. https://sagarmala.gov.in/project/port-modernization-new-port-development sagarmala port-led prosperity.
7. https://wwwjagran.com/amp/s/lite/world/then-india-emerged-as-the-biggest-helper-of-srilanka-clamed-in-a-report-23072464.html. श्रीलंका के सबसे बडे मददगार के रूप में सामने आया भारत. 16 Sep. 2022.
8. https://www.cppr.in/policy-briefs/india-and-srilanka-changing-dynamics-in-the-indian-ocean-region-2. 19 Oct. 2022.
9. https://www.orfonline.org/hindi/research/maldives-solih-india-china/. मालद्वीव से भारत कितना दूर, चीन कितने पास क्या सोलीह बनेगा भारत की उम्मीद 28 Sep. 2018.
10. https://newsonair.com/hindi/2023/01/18/forgein-minister-s-jaishanker-on-his-three-days-visit-to-maldives-and-srilanka-from-today-bypbns. 18 Jan. 2023.
11. https://theprint.in/diplomacy/forigen-secu-sringla-lauds-maldives-indiafirst-policy-assures-covid-recovery-support/540699/. 9 Nov. 2020.
12. https://www.google.com/amp/s/www.orfline.org/hindi/research/why-iraq-needs-more-attention-in-indias-west-asia-policy-calculas/. भारत की पश्चिम एशिया नीति में इराक पर और तवज्जो जरूरी. 15 दिस. 2022.
13. https://thediplomat.com/298102/india-gain-acess-to-oman-dqum-port-putting-the-indian-ocean-geopolitical-contest-in-the-spotlight/. भारत ने ओमान के दुक्म बन्दरगाह तक पहुच हासिल की हिन्दमहासागर भूरानीतिक प्रतियोगिता सुर्खियों में।
14. https://wwwindiandefencereview.com/news/andman-and-nicobar-islands. अडंमान और निकोबार द्वीप समूहः भारत के लिए एक सुरक्षा चुनौती।
15. https://www.google.com/amp/s/www.orfonline.org/hindi/research/india-and-france-in-the-indian-ocean-new-strategic-partnership/. हिन्दमहासागर में भारत और फ्रासः एक नई सामरिक साझेदारी का निर्माण 30 May. 2022.
16. https://www.orfonline.org/hindi/research/china-in-the-indian-ocean-its-meaning-india-national-security/. हिन्दमहासागर में चीन भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए इसके मायने 22 Feb. 2022.
17. https://www.hindustantimes.com/world-news/pla-spy-ship-yuan-wang-5-mapping-indian-ocean-for-chines-submarine-operations-101671003213852.html. 14 Oct. 2022.
18. https://www.business-standard.com/article/international/srilanka-will-not-be-part-of-any-indian-ocean-turf-war-says-president-122091500654-1.html. 15 Sep. 2022.
19. https://theprint.in/diplomacy/india-remain-first-wont-allow-china-to-grab-land-says-ex-maldives-president-mohamed-nasheed/932735/. मालद्वीप के पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद ने कहा भारत पहले चीन को जमीन हडपने नही देगें. 27 अप्रैल. 2022.
20. https://www.jagarn.com/lite/world/other-the-report-revealed-that-china-was-involed-in-maldives-india-out-campaian-22536112. 11 Mar. 2022.
21. https://www.bhaskar.com/amp/international/news/china-becomes-stronger-in-the-indian-ocean-indian-neighboring-countries-are-also-under-its-country-now-thinking-of-making-of-port-in-west-africa-128428889-html.
22. https://www,csis.org/analysis/assessing-risks-chines-invesment-sub-sharan-africa-ports. उप सहारा अफ्रीका बन्दरगाहों में चीन निवेश के जोखिम का आकलन 4 जून. 2019.
23. https://chankyaforum.com/growing-influence-of-china-in-west-asia/. पश्चिम एशिया में चीन का बढता प्रभाव 13 मार्च. 2023.
24. https://www.jagran.com/lite/editorial/apnibaat-china-increasing-in terference-in-westasia-can-create-promblem-for-india-invesment-and-security23372814.html.1. 31 Mar. 2023.

15

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रमाण विचार

डॉ० गीतू गुप्ता
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थान सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय
पटोटिया, नैनीडांडा (पौड़ी गढ़वाल)

डॉ० युद्धवीर सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
कुकरेजा इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन, देहरादून

सारांश

किसी समाज की शिक्षा मुख्य रूप से उस समाज के स्वरूप, उसके दार्शनिक चिन्तन, शासनतन्त्र, आर्थिक व्यवस्था और मनोवैज्ञानिक तथ्यों वैज्ञानिक प्रगति पर आधारित होती है। इसमें दर्शन का प्रभाव बड़ा स्थायी होता है। दर्शन की तत्वमीमांसा से शिक्षा के उद्‌देश्य, ज्ञानमीमांसा से पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियाँ और आचार या मूल्य मीमांसा से शिक्षक तथा शिक्षार्थी के कर्तव्य और अनुशासन का स्वरूप निश्चित होता है। दर्शन और शिक्षा में अटूट सम्बन्ध है, ये एक दूसरे पर आश्रित हैं। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी अपनी शैक्षिक व दार्शनिक विचारधारा द्वारा प्रयोजनवादी दृष्टिकोण में परिमार्जन कर प्रतिष्ठित करने में समर्थ होते दिखाई पड़ते हैं। आधुनिक काल के दार्शनिकों में एकात्म मानवतावादी दार्शनिक यथा–पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी प्रमुख स्थान रखते हैं। पण्डित जी ने राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में इतनी ख्याति प्राप्त की थी कि इन दोनों ही क्षेत्रों में इनका योगदान अविस्मणीय है। पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म अपने नाना पं0 चुन्नीलाल जी के घर धनकिया (राजस्थान) में अश्विन कृष्ण त्रयोदशी चन्द्रवार सम्वत् 1973 तदनुसार 25 सितम्बर, 1916 को हुआ। पं0 दीनदयाल जी एकात्ममानवतावादी थे। उनके विचारों में सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के भाव परिलक्षित होते हैं। उनका मानना था कि सभी में एकात्म तत्व के दर्शन करते हुये सम्पूर्ण मानव जाति का विकास किया जाना चाहिये। उनके विचारों में आदर्शवादी, प्रयोजनवादी तथा मानवतावादी विचारकों का प्रभाव था। पं0 दीनदयाल जी ने व्यक्तिगत अनुभूति द्वारा प्राप्तज्ञान को तर्क द्वारा प्रस्तुत ज्ञान से श्रेष्ठ बताया है। उपाध्याय जी का विश्वास है कि ज्ञान मनुष्य के भीतर होता है, यह बाह्य वातावरण की उपज नहीं। सच्चा ज्ञान मनुष्य को बाह्य वातावरण से प्राप्त नहीं होता। इसकी मनुष्य के भीतर से ही खोज होती है, क्योंकि मनुष्य की आत्मा ही समस्त सच्चे ज्ञान का स्रोत है। सभी आठों प्रमाणों अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द प्रमाण, सम्भव, ऐतिहासिक, अर्थापत्ति और अभाव में से पण्डित दीनदयाल जी ने तीन प्रमाणों को मुख्य रूप से स्वीकार किया है जिनमें प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द आते हैं।

मुख्य शब्द

दर्शन, प्रमाण विचार, आत्मप्रज्ञा, प्रमा, प्रत्यक्ष प्रमाण, शब्द प्रमाण, अनुमान प्रमाण, त्रिविध प्रमाण।

जीवन वृत, जन्म व पारिवारिक स्थिति एवं शिक्षा

सर्वांग–परिपूर्ण कार्य करने वाले जनसंघ के अध्यक्ष पं0 दीनदयाल उपाध्याय, जिनके पीछे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शक्ति स्वयं के रूप में मूर्तिमान खड़ी थी, महर्षि श्रद्धानन्द और महात्मा गांधी की हौतात्म्यमालिका में गुँथे जाने वाले रत्न थे। प्रखर बुद्धिमता, असामान्य कृतित्व शक्ति, प्रबल विचार और चिन्तन की गम्भीरता, उच्च कोटि का लेखन एवं वकतृत्व शक्ति के साथ–साथ सादा सरल जीवन, निरहंकार, नम्रता एंव लोकेषणा की अनिच्छा का स्वर्णिम संगम उनके जीवन में था। श्री दीनदयाल जी मूल विचारक थे। युवावस्था में ही उनकी प्रगल्भ बुद्धि व्यक्ति और समाज, स्वदेश और स्वधर्म परम्परा तथा संस्कृति जैसे गूढ विषयों की ओर आकृष्ट हो चुकी थी। ग्रामीणों जैसे सादा परिधान वाले, सौम्य मुखाकृति वाले एंव व्यवहार में सरलता के धनी पण्डित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म अपने नाना पं0 चुन्नीलाल जी के घर धनकिया (राजस्थान) में आश्विन कृष्ण त्रयोदशी चन्द्रवार सम्वत् 1973 तदानुसार 25 सितम्बर, 1916 को हुआ। नाना धनकिया के स्टेशन मास्टर थे। इनके पिता का नाम पं0 भगवती प्रसाद उपाध्याय और माता का नाम श्रीमती रामप्यारी था। पं0 भगवती प्रसाद जी "जलेसर रोड" स्टेशन के स्टेशन मास्टर थे। वैसे, मूलतः वे भगवान कृष्ण की पावन जन्म भूमि मथुरा जिले के फरह नामक गाँव के रहने वाले थे।

सन् 1937 की इण्टर परीक्षा में ये बोर्ड में सर्वप्रथम आए। पढ़ाई में श्रेष्ठतम् स्थान प्राप्त करने के कारण ये आगे अध्ययन करते रहे। बी0ए0 करने के लिये ये सन् 1937 में कानपुर आ गए। यहाँ श्री सनातन धर्मकॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया। पढ़ने में इनकी अत्यधिक रूचि थी। बी0ए0 की कक्षा भी इन्होने सर्वप्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1939 में एम0ए0 करने के लिये दीनदयाल जी आगरा आ गए। यहाँ सेंट जॉन्स कॉलेज, आगरा में अंग्रेजी विषय में एम0ए0 प्रथम वर्ष किया और उसमें भी सर्वप्रथम रहे। फिर मामा जी की आज्ञा से एल0टी0 करने चले गए, वहाँ गवर्नमेंट कॉलिज में प्रवेश लिया तथा एल0 टी0 परीक्षा उत्तीर्ण की।

देहावसान – 11 फरवरी, 1968; रविवार को सभी भारतवासियों ने यह दुःखद समाचार सुना कि पंडित दीनदयाल जी का शव मुगलसराय स्टेशन के समीप पड़ा पाया गया। भारत का जनमानस हिल गया, भारत का कण–कण अवाक् रह गया। भारत शोक सागर में डूब गया।

दीनदयाल उपाध्याय जी की दार्शनिक पृष्टभूमि

दर्शन का अर्थ –

दर्शन का शाब्दिक अर्थ है देखना। इस शब्द का निर्माण (देखना) धातु कारण अर्थ में ल्यूट् प्रत्यय लगाकर हुआ है जिसका अर्थ स्वरूप की खोज में साक्षात् दर्शन पर जोर देना है। इस आधार पर स्पष्ट है कि अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाए। प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ0 राधाकृष्णन के मतानुसार "दर्शन, सत्यता के स्वरूप को जानने हेतु की गई तार्किक खोज है।"[1] विश्व तथा जीवन के संबंध में ऐसे ही व्यापक ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा से मनुष्य दार्शनिक चिन्तन प्रारम्भ करता है। दर्शनशास्त्र के उदय के मूल में मानव ह्रदय में जीवन एवं विभिन्न विषयों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होना है। वस्तुतः मानव जीवन की समस्त जिज्ञासाओं का एकमात्र समाधान दर्शन में ही उपलब्ध है।

दीनदयाल जी का दर्शन –

राष्ट्र जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एकता का निर्माण करके तथा उस एकता के संस्कारों को जीवन में उतारने की परम्परा को पुष्ट करना ही उनका ध्येय रहा। वे एक विद्वान, साहित्यकार, राजनीतिज्ञ होने के साथ ही साथ दार्शनिक भी थे। महान दार्शनिक एवं वेदान्त वेत्ता श्री आदि शंकराचार्य उनकी प्रेरणा के मूल स्त्रोत रहे। पं0 दीनदयाल जी एकात्म मानवतावादी थे। उनके विचारों में सम्पूर्ण मानव जाति के विकास के भाव परिलक्षित होते हैं। उनका मानना था कि सभी में एकात्म तत्व के दर्शन करते हुये सम्पूर्ण मानव जाति का विकास किया जाना चाहिये, उनके विचारों में आदर्शवादी, प्रयोजनवादी तथा मानवतावादी विचारकों का प्रभाव था। पं0 दीनदयाल जी का मत था कि जिस प्रकार जीवन के मूल्यों व आवश्यकताओं में परिवर्तन होता है, उसी प्रकार किसी देश समाज व व्यक्ति की परिस्थितियों व आवश्यकताओं में परिवर्तन होता हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति को महत्व देते हुये उन्होनें एकात्म तत्व की अवधारणा को बल दिया। भारतीय संस्कषति की यह पहली विशेषता है कि वह सम्पूर्ण जीवन का, सृष्टि का, संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी अर्थात INTEGRATED है। 'एकात्म मानववाद' की पृष्ठभूमि के दो आयाम है : प्रथम, पाश्चात्य जीवन दर्शन तथा द्वितीय भारतीय संस्कृति। 'मानववाद' मुख्यतः पाश्चात्य अवधारणा है तथा एकात्मता' भारतीय। पाश्चात्य प्रयोगों में लौकिक जीवन का वैशिष्ट्य है। अतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य 'मानववाद' के भारतीयकरण की प्रक्रिया की फलश्रुति है–'एकात्म मानववाद'।

एकात्म मानव दर्शन एक ऐसा जीवन–दर्शन है जो मनुष्य का विचार केवल एकांगी दृष्टिकोण से नहीं करता अपितु जीवन के समग्र पहलुओं का तथा ऐसे मानवके अन्य मानवों एवं मानवेतर सृष्टि के साथ परस्पर पूरक एकात्म संबंधों को भी ध्यानमें लेकर समृद्ध, सुखी एवं कृतार्थ जीवन की दिशा दर्शाता है। एकात्म मानव दर्शन भारतीय संस्कृति का जीवन–दर्शन है।

प्रमाण विचार –

प्रमाण विज्ञान, भारतीय दर्शन का महत्वपूर्ण अंग है। इस में विभिन्न प्रमाणों का उल्लेख मिलता है। सही ज्ञान 'प्रमा' कहलाता है तथा जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको 'प्रमाण' कहते हैं। प्रत्येक दर्शन में प्रमाण की संख्या एवं उसके स्वरूप पर विचार किया गया है। इन प्रमाणों का भारतीय दर्शन में बहुत महत्व है क्योंकि प्रत्येक दर्शन का तत्व–विज्ञान उस के प्रमाण विज्ञान पर अवलम्बित है। प्रमाण–मीमांसा या ज्ञानशास्त्र या ज्ञानमीमांसा का विषय ज्ञान है। ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रमाणिकता, सत्यासत्य का निर्णय आदि विषयों की समीक्षा इसके अंतर्गत की जाती है।

ज्ञान के स्त्रोत – सामान्यतः ज्ञान के चार प्रमुख स्रोत माने जाते हैं– अनुभवजन्य (इन्द्रियों से प्रत्यक्षीकरण), तार्किक चिन्तन, निर्णयों एवं स्वामित्व से, अन्तर्दृष्टि अथवा अन्तःप्रज्ञा

पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रमाण विचार –

पं0 दीनदयाल ने व्यक्तिगत अनुभूति द्वारा प्राप्त ज्ञान को तर्क द्वारा प्रस्तुत ज्ञानसे श्रेष्ठ बताया हैं। तर्कशक्ति का विकास धीरे–धीरे होता है, परन्तु कभी–कभी हमें ज्ञान आकस्मिक अन्तर्दृष्टि से भी प्राप्त हो जाता है। उनके अनुसार ज्ञान का स्रोत हमारे अन्दर ही विद्यमान हैं, ज्ञान कोई वस्तु नही है जो दी या ली जा सके; ज्ञान किया व अनुभव के साथ–साथ बढ़ता है। प्रत्येक मनुष्य

के अन्दर आत्मा की असीम शक्ति है, भले ही वह उसको न जानता हो। अधिकतर लोग अपनी आत्मा को नही पहचानते और ज्ञान की तलाश में बाहर घूमते फिरते हैं। इस अंतर्रात्मा को जान लेने के पश्चात् बाहर से कुछ जानने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अन्ततः प्रज्ञा द्वारा अपने ब्रह्म होने की अनुभूति प्राप्त होने पर यथार्थ ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

अधिकांश पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रियों व दर्शनशास्त्रियों का विश्वास है कि व्यक्ति और वातावरण की अन्तर्क्रिया से ज्ञान की उत्पत्ति होती है, परन्तु उपाध्याय जी का विश्वास है कि ज्ञान मनुष्य के भीतर होता है। यह बाह्य वातावरण की उपज नहीं। सच्चा ज्ञान मनुष्य को बाह्य वातावरण से प्राप्त नही होता। इसकी मनुष्य के भीतर से ही खोज होती है, क्योंकि मनुष्य की आत्मा ही समस्त सच्चे ज्ञान का स्रोत है।

उपाध्याय जी के अनुसार शिक्षा मन में छिपे हुये ज्ञान को खोजने की क्रिया है। किसी भी व्यक्ति की शिक्षा का अनुमान उसके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों की संख्या से नहीं लगाया जा सकता बल्कि इस बात से लगाया जाता है कि उसके मन पर अज्ञानता की तह कितनी मोटी रह गई है। जैसे–जैसे ज्ञान का प्रकाश बढ़ता है, वैसे–वैसे अज्ञानता का पर्दा दूर हटता जाता है। इसलिए दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम के अंधानुकरण के विरोधी थे, लेकिन वे सभी मानवीय प्रयत्नों को आदर देना चाहते थे, नवीन प्रयोगों में उनका उपयोग भी करना चाहते थे। अतः सभी संशोधित अच्छी बातों को वे पाश्चात्य अवधारणा के आधार पर नही, मानवीय प्रयोगों की संकल्पना के आधार पर स्वीकार करना उचित समझते थे। विश्व का ज्ञान थाती है, मानव जाति का अनुभव हमारी सम्पत्ति है। विज्ञान किसी देश या विश्व दिशा की बपौती नही। वह हमारे भी अभ्युदय का साधन बनेगा ये उनके विचार थे।

वे पश्चिम के प्रगतिभूत परिणामों की नकल नही करना चाहते थे। उनके अनुसार पश्चिम का विचार केवल ज्ञानेन्द्रियों पर ही निर्भर है। केवल ज्ञानेन्द्रियों से पूर्ण ज्ञान प्राप्त नही होता, उनके अनुसार पूर्ण ज्ञान प्रज्ञा से प्राप्त होता है। हमारे ऋषि–मुनियों ने अन्दर से देखकर 'समग्रता का दर्शन' किया। दीनदयाल उपाध्याय पश्चिम की विकृति के प्रति सावधान थे, भारतीय संस्कृति के उपासक थे। उनकी भारतीय प्रकृति, समन्वय दृष्टि वाली थी, अतः न वे किसी विदेशी विचार को एक दम हेय मानते थे और न ही हर स्वदेशी विचार को वरेण्य। उनका सूत्र था कि हम मानव के ज्ञान और उपलब्धियों का संकलित विचार करें। इन तत्वों में जो हमारा है उसे युगानुकूल और जो बाहर का है उसे देशानुकूल ढालकर हम आगे चलें अर्थात् ज्ञान प्राप्त करें।

उपाध्याय जी ने ज्ञान के दो प्रकारों के विषय में कहा कि ज्ञान मुख्यतः दो तरह का होता है–

भौतिक या प्रत्यक्ष

आत्मप्रज्ञा –

प्रथम भौतिक या प्रत्यक्ष ज्ञान, जड़ एवं जगत पदार्थों की स्थिति एवं दिशा से है जो मनुष्य के चारों ओर है। द्वितीय ज्ञान आत्मप्रज्ञा है, इस ज्ञान का सम्बन्ध अध्यात्म से है इसे दार्शनिक भाषा में आध्यात्मिक सत्य कहते हैं। पंडित जी का विचार था कि जीवन में हमें दोंनो प्रकार के ज्ञानों की व सत्य की आवश्यकता है। आधुनिक दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रथम के बिना दूसरा संभव नही है। पंडित जी ने ज्ञानमीमांसा अवधारणा के अन्तर्गत निर्णयात्मक और आध्यात्मिक दृष्टि को अपनाते हुये उसे पूर्ण व्यावहारिक रूप प्रदान किया है। उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को तार्किक बौद्धिक दृष्टिकोण के साथ अन्तः अनुभव पर आधारित करना है। इस प्रकार पंडितजी ने अविद्या (अज्ञान) से मुक्ति को ही वास्तविक ज्ञान की संज्ञा दी है, वे सत्य और असत्य के सम्बन्ध में कहते हैं कि आत्मा में सत्य और असत्य के विवेक की शक्ति है किन्तु अविद्या के कारण वह सत्य को छोड कर असत्य की ओर झुक जाता है।

प्रमा –

प्रमा का अर्थ है 'किसी विषय का निश्चित ज्ञान'। आत्मा का बिम्ब बुद्धि पर प्रतिबिम्बित होने पर ज्ञान का उदय होता है। बुद्धि जड़ है और आत्मा का धर्म चैतन्य है परन्तु आत्मा को विषयों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धि, मन और इन्द्रियों का सहारा लेना पड़ता है। इसी कारण आत्मा के सर्वव्यापी हाने पर भी हमें सर्वदा समस्त विषयों का ज्ञान नहीं रहता। इन्द्रियों और मन की क्रियाओं से विषयों का आकार बुद्धि पर अंकित हो जाता है।

त्रिविध प्रमाण –

सभी आठों प्रमाणों अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, सम्भव, ऐतिहासिक, अर्थापत्ति और अभाव में से पण्डित दीनदयाल जी ने तीन प्रमाणों को मुख्य रूप से स्वीकार किया है जिनमें प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द आते हैं तथा उपमान, अर्थापत्ति, और अनुपलब्धि या अभाव को इन्हीं में सम्मिलित किया है।

1. प्रत्यक्ष प्रमाण

प्रत्यक्ष, इन्द्रिय और विषय के संयोग से होने वाला साक्षात् ज्ञान है। जब कोई विषय हमारी इन्द्रियों के संयोग में आता है तब उसका विशेष प्रभाव हमारी इन्द्रियों पर पड़ता है जिसका मन द्वारा विश्लेषण और संश्लेषण होता है। इन्द्रियों और मन की क्रिया से बुद्धि पर प्रभाव पड़ता है और वह विषय का आकार ग्रहण कर लेती है परन्तु जड़ होने के कारण बुद्धि को उस विषय का ज्ञान नहीं होता। वस्तुओं के साक्षात् या आरोप ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं। इसकी उत्पत्ति वस्तु तथा ज्ञानेन्द्रियों के संयोग से होती है। यह

मुख्यतः दो प्रकार से होता है; प्रथम इन्द्रियों के साथ विषय का संयोग होने में जो विषय का आलोचन होता है, उसे निर्विकल्प प्रत्यक्ष कहते हैं। यह मानसिक विश्लेषण–संश्लेषण से पूर्व की अवस्था है इसमें विषय की प्रकारता का ज्ञान नहीं होता उसकी प्रतीति मात्र होती है। यह अनुभव अनिर्वचनीय है शिशु अथवा मूक व्यक्ति के समान निर्विकल्प प्रत्यक्षा करने वाला भी उसे अपने शब्दों द्वारा नहीं समझा सकता। दूसरा, जिसमें विषय का मन के द्वारा विश्लेषण, संश्लेषण और रूप निर्धारण होता है। इसमें इस प्रकार की विवेचना होती है कि यह विषय इस प्रकार है इसमें आमुख गुण है, इसका अमुक विषय से यह सम्बन्ध है इत्यादि। सविकल्प प्रत्यक्ष उद्देश्य विधेय युक्त वाक्य द्वारा प्रकट किया जाता है जैसे लाल फूल है इत्यादि प्रत्यक्ष प्रमाण को समझाते हुये पंडित जी कहते हैं कि हमारे विचार में सदैव समग्रता रही है। इस बात को स्पष्ट करने के लिये एक ही उदाहरण पर्याप्त है। 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसास है।' अर्थात् तत्व जितना गहन उतना ही सूक्ष्म होगा। गहन तत्व की सूक्ष्मता की कोई सीमा नहीं है।

क्लिष्टता तो प्रकटीकरण में है, दर्शन की अनुभूति या साक्षात्कार में नहीं। उदाहरण के लिए– जिसने गुड़ कभी खाया न हो, उसे शब्दों के माध्यम से गुड़ का स्वाद समझाना बड़ा कठिन है और उसे समझाने और सुनने वाले, दोनों के लिए उकता देने वाला हो सकता है। किंतु प्रत्यक्ष में गुड़ का स्वाद लेना कष्टदायक तो है ही नहीं, उलटे एक आनंददायक अनुभव है। एकात्म मानव दर्शन की बात भी ऐसी है। मानव चेतना के उत्तम विकास या स्वाभाविक अनुभूति का ही नाम है–एकात्म मानव दर्शन।

2. अनुमान प्रमाण

अनुमान का अर्थ है किसी पूर्व ज्ञान के पश्चात् आने वाला ज्ञान। दूसरे शब्दों में अनुभव से साध्य का अनुभव होना अनुमान होता है। अनुमान में पूर्व ज्ञान के आधार पर नये ज्ञान का विकास होता है।

उन के अनुसार अनुमान के तीन भेद हैं।

पूर्ववत्– यह, वीत अनुमान का एक प्रकार है जो सर्ववयापक आस्तिवाचक तर्कवाक्य पर अवलम्बित है जिसके मुख्यतः दो भेद हैं– पूर्ववत और सामान्यतोदृष्ट पूर्ववत, वस्तुओं के बीच दिखाई पड़ने वाले व्याप्ति सम्बन्ध पर आधारित है उदाहरण के लिये बादल देखकर वर्षा होने का अनुमान होना क्योंकि बादल और वर्षा में नित्य साहचर्य का सम्बन्ध है।

सामान्यतोंदृष्ट– जहां लिंग और साध्य के साथ व्याप्ति सम्बन्ध न होकर लिंग का सादृश्य उन वस्तुओ से हो जिनका साध्य के साथ नियत सम्बन्ध है वहां सामान्यतोदृष्ट अनुमान होता है। उदाहरण के लिये इन्द्रिय के ज्ञान में हमें उसे प्रत्यक्ष द्वारा नहीं जानते क्योंकि वह अगोचर है। इन्द्रिय का ज्ञान हमें इस प्रकार के अनुमान के द्वारा होता है। सभी कार्य किसी न किसी साधन से सम्पादित होते हैं जैसे– आकाश में चन्द्रमा की बदलती हुई स्थिति देखकर उसके गतिशील होने का अनुमान करना।

शेषवत् या परिशेष– यह, अवीत अनुमान के अन्तर्गत आता है जो कि सर्वव्यापक निषेधात्मक तर्क वाक्य पर अवलम्बित रहता है। इस अनुमान में जब समस्त विकल्पों को छांटते–छांटते अन्त में एक ही शेष रह जाता है तब वही सत्य प्रमाणित होता है। उदाहरण के लिये सड़क व मैदानों में पानी भरा देखकर वर्षा का अनुमान करना। अनुमान सदा कार्य कारण या कारण कार्य आदि सम्बन्धों पर निर्भर करता है।

पंडित दीनदयाल जी के अनुसार जहाँ प्रत्यक्ष द्वारा सीखना सम्भव न हो अथवा प्रत्यक्ष द्वारा सीखने में समय व शक्ति का दुरूपयोग होता हो अथवा प्रत्यक्ष द्वारा सीखने में अन्यथा कुछ हानि होती हो, वहां अनुमान द्वारा सीखना ठीक होता है।

प्राचीन भारतीय न्याय दर्शन की भांति उपाध्याय जी मानते है सीखने की सभी विधियों में किसी न किसी रूप में अनुमान विधि का प्रयोग अवश्य होता है। उनके अनुसार वर्तमान की समस्या विधि, प्रयोग विधि और ह्यूरिस्टिक विधियों में जो उपकल्पनायें की जाती है वे पूर्व ज्ञान के आधार पर किये गये अनुमान ही तो होते हैं। हां, यह बात अवश्य है कि यह अनुमान तर्क आधारित होने चाहिये, बिना तर्क के अनुमान विधि का कोई अर्थ नहीं है।

3. शब्द प्रमाण

विश्वस्त वाक्य अथवा आप्तवचन, शब्द प्रमाण है। जो बात प्रत्यक्ष अथवा अनुमान से सिद्ध नहीं होती वह शब्द से सिद्ध हो जाती है। वाक्य का अर्थ शब्दों का एक विशेष क्रम से विन्यास है अतः वाक्य का बोध होने के लिये शब्द का बोध भी आवश्यक है। शब्द किसी वस्तु का वाचक होता है अतः वाच्य विषय ही शब्द का अर्थ है। शब्द वह संकेत है जो किसी वस्तु के लिए प्रयुक्त होता है। शब्द प्रमाण में आप्त पुरूषों के मुख से सुनकर या उनके द्वारा लिखित ग्रंथो का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त किया जाता है। दीनदयाल जी ने इसका महत्व बताते हुये कहा है– भारतीय संस्कृति 'पर–मत–सत्कारवादी' है दूसरे के मत के प्रति असहिष्णुता अभारतीयता है। भारत का विचार है, एकं सद् विप्राः बहुधा वदंति (एक ही सत्य को विद्वान लोग बहुत प्रकार से बखानते हैं), इसलिये भारत में संसार के सर्वाधिक संप्रदाय विद्यमान है। न्याय ने शब्द प्रमाण के दो भेद किये है– दृष्टार्थ और अदृष्टार्थ। दृष्टार्थ शब्द वे मौखिक या लिखित शब्द है जिनसे ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण किया जा सके; जैसे –पानी (द्रव्य) उबालने पर भाप (गैस) बन जाता है। अदृष्टार्थ वे मौखिक या लिखित शब्द है जिनसे प्राप्त ज्ञान का प्रत्यक्षीकरण नहीं किया जा सकता; जैसे –ईश्वर कर्मफल दाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय दर्शन में शब्द के दो अन्य भेदों का उल्लेख है जो इसप्रकार है– लौकिक और वैदिक शब्द साधारण विश्वास

पात्र लोगों के आप्तवचन को कहते हैं। पंडित जी के अनुसार यह स्वतन्त्र प्रमाण नहीं है क्योंकि यह प्रत्यक्ष और अनुमान पर आधारित है। ये ही वास्तविक शब्द प्रमाण हैं। इससे हमें उन अगोचर विषयों का ज्ञान होता है जो प्रत्यक्ष अथवा ज्ञान से जाने जा सकते। वेद अपौरूषय हैं अतः उन में लौकिक वाक्यों के दोष और त्रुटियां भी नहीं हैं। वैदिक वाक्य अभ्रान्त और दृष्टा ऋषियों की साक्षात् अनुभूतियाँ हैं। यह अनुभव व्यक्तिगत न होने के कारण सार्वदेशीय और सार्वकालिक सत्य है। इस प्रकार वेद अपौरूषेय हैं। पंडित जी वेदों को आधुनिक शिक्षा में गृहीत करने की वकालत करते हैं। उपाध्याय जी ने प्रमाण विज्ञान की प्रधान समस्यायें बताई हैं जैसे–हमारे ज्ञान प्राप्ति के प्रमाण कौन से हैं ?

हमारे तात्विक ज्ञान की प्राप्ति की सीमा कहां तक है? तत्व ज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास कैसे होता है ? विभिन्न प्रमाणों का विचार भारतीय प्रमाण विज्ञान का एक प्रधान अंग है तब ज्ञान या यथार्थ ज्ञान को प्रज्ञा कहते है और प्रज्ञा के कारण को प्रमाण। कितने प्रकार के प्रमाण हैं इस विषय पर भारतीय दार्शनिकों में मतभेद है। उपाध्याय जी के अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द तीनों के द्वारा विश्वसनीय ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. भिशीकर, चन्द्रशेखर परमानन्द. (1991). "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन". खण्ड–5. द्वितीय संस्करण. राष्ट्र की अवधारणा. सुरुचि प्रकाशनः झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055.
2. देवधर, विश्वनाथ नारायण. (1987). "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन". खण्ड–7. प्रथम संस्करण. व्यक्ति दर्शन. सुरुचि प्रकाशनः झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055.
3. गुप्त, तनसुखराम. (2005). "पं0 दीनदयाल उपाध्याय महाप्रस्थान". प्रथम संस्करण. सूर्य भारती प्रकाशनः नई दिल्ली–110006.
4. गर्ग, पंकज कुमार. (2003). "दयाल पत्रिका". सित.–अक्टू. अंक–55. पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0): मेरठ–250001.
5. गर्ग, पंकज कुमार. (2005). "दयाल पत्रिका". सित.–अक्टू. अंक–66. पं0 दीनदयाल उपाध्याय संस्थान (रजि0): मेरठ–250001.
6. गर्ग, पंकज कुमार. (2005). उपाध्याय, दीनदयाल. (2007). "राष्ट्र जीवन की दिशा". दशम् संस्करण. नव.–दिस. लोकहित प्रकाशनः संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर, लखनऊ–226004.
7. उपाध्याय, दीनदयाल. (2007). "राष्ट्र चिन्तन". अष्टम् संस्करण. लोकहित प्रकाशनः संस्कृति भवन राजेन्द्र नगर, लखनऊ–226004.
8. उपाध्याय, दीनदयाल. (2004). "एकात्म मानववाद". नवम् संस्करण. जागृति प्रकाशनः नोएडा–201301.
9. उपाध्याय, दीनदयाल. (1991). "पोलिटिकल डायरी". द्वितीय संस्करण. सुरुचि प्रकाशनः झण्डेवालान, नई दिल्ली–110055.
10. उपाध्याय, दीनदयाल. (2006). "भारतीय अर्थ–नीति, विकास की एक दिशा". चतुर्थ संस्करण. लोकहित प्रकाशनः संस्कृति भवन राजेन्द्रनगर, लखनऊ–226004.
11. वर्मा, जी.एस. (2008). "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक". इन्टरनैशनल पब्लिशिंगः मेरठ।

16

इतिहास लेखन में साहित्यिक स्त्रोतों का महत्व

डॉ० ईरा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
धर्मानन्द उनियाल राजकीय महाविद्यालय
नरेन्द्रनगर, टिहरी गढवाल, उत्तराखण्ड

सारांश

भारत का प्राचीनतम इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है, परन्तु दुर्भाग्य से हमें अपने प्राचीनतम इतिहास के पुर्नरचना के लिए पूर्णतः विशुद्ध इतिहास की सामग्री यूनानी व रोमन इतिहास लेखन से कम है। जिस प्रकार इतिहास लेखन की परम्परा को रोमन व अन्य यूरोपीय देशों में दिखाई पड़ती है। वैसी श्रृंखला भारतवर्ष में कहीं नहीं पाई जाती है। फिर भी प्राचीन भारतीय इतिहासकार लेखकों ने इस दिशा में निरन्तर प्रयास जारी रखे। इतिहास लेखन के प्रति भारतीयों की अरूचि के बाद भी यहां पर लेखन हेतु विशाल ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध की जिसका विद्वानों ने समय समय पर उपयोग किया। हालांकि प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन में कई कठिनाइयों सामने आई जैसे लिपि के ज्ञान की समस्या, ऐसी ऐतिहासिक सामग्री, ऐसी भाषा जिसका अभी तक पढ़ा नही जा सका है तो ऐसी उपलब्ध सामग्री का उपयोग ऐतिहासिक साहित्य के लिए नहीं किया जा सका है। प्राचीन भारतीय इतिहासकारों ने ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन अपने ग्रन्थों में किया है। साथ ही दरबारी लेखकों ने भी इस दिशा में महत्पूर्ण लेखन कार्य किया है। परन्तु इनमें से अधिकांश साहित्य सामग्री नष्ट हो चुकी है। कुछ आक्रान्ताओं ने भारत में प्रवेश कर उन महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों को नष्ट कर दिया, कुछ पाण्डुलिपियों को कीड़े लग गये और व्यर्थ और निरर्थक समझकर फंेक दिया गया क्योंकि वह उस साहित्य सामग्री के महत्व से अवगत नहीं थे। अतः प्राचीन भारतीय इतिहास ने ऐसे ऐतिहासिक ग्रन्थों का प्रायः अभाव सा रहा है जिन्हें आधुनिक भाषा में इतिहास की संज्ञा दी जा सके। यद्यपि भारत में हेरोटोडस, थ्यूसीडाईडस जैसे इतिहासकार नहीं हुए। अतः विद्वानों में यह धारणा बन गई कि प्राचीन भारतीयों में इहिास लेखन की बुद्धि का अभाव था।

मेगस्थनीज अनुसार ''भारतीयों में इतिहास लेखन बुद्धि का अभाव था।''

मैकडोनाल्ड ने भी इतिहास को भारतीय साहित्य को दुर्बल पक्ष बताया है।

लोएस डिकिन्सन के अनुसार ''भारतीय हिन्दु इतिहासकार नहीं थे।''

किन्तु भारतीयों पर इतिहास विषय को ले कर लगाये गये सारे आरोप सत्य से परे हैं। ऐसा इसलिए हुआ कि भारतीयों का दृष्टिकोण आध्यात्मिक प्रदान था। वह राजनीतिक तथ्यों के समान आम जनमानस को भी उतना ही महत्व देते थे। जिस कारण उन्होंने ऐसे विशुद्ध ग्रन्थों की रचना नहीं की जिसे आधुनिक तौर पर इतिहास की संज्ञा दी जा सके बल्कि भारतीयों ने ऐसे ग्रन्थों की रचना की जिसकी विषयवस्तु मुख्य रूप धर्म, समाज, अर्थ, राजनीति, प्रशासन, नीतिशास्त्र से सम्बन्धित थी।

प्रस्तावना

इतिहास के पुर्ननिर्माण के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास की विश्वसनीयता को ले कर बहुत बहस हुई है क्योंकि अधिकांश प्राचीन भारतीय साहित्य की प्रकषति धार्मिक है। उदाहरण के लिए वैदिक कालीन साहित्य के अर्न्तगत वेद पुराण स्मषति, महाकाव्य उपनिषद् आदि। धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत आते हैं। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने यह दावा किया है कि प्राचीन भारतीयों के पास इतिहास की भावना नहीं थी जिसका कारण निश्चित कालक्रम का अभाव पाया जाना है। वहीं तथ्यों व कल्पनाओं का समावेश भी भ्रमित करता है। यही कारण है कि प्राचीन भारतीय इतिहास पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए कठिन समस्या उत्पन्न हो जाती है।

प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन की विशेषता धर्म दर्शन के रूप में साहित्य की रचना करना रहा है। धर्म, धार्मिक प्रथाओं, कर्म, अर्थ, मोक्ष, पारलोकिक जीवन में विश्वास धार्मिक साहित्य की विशेषता रही है। पाप–पुण्य जैसे कार्यों में अन्तर बताना, आत्मा–परमात्मा और धर्म की अवधारणा पर विस्तष्त विचार अपने रचनाओं में प्रस्तुत किया है। इन प्राचीन धार्मिक साहित्य सामग्री में अध्यात्मिकता का प्रभाव दर्षष्टिगोचर होता है। और यही भारतीय इतिहास दर्शन के अन्तर्गत भी आता है। प्राचीन भारतीय लेखन में आदर्शवाद पर भी बल दिया है। कई विद्वानों ने आदर्शवाद के इस सिद्धान्त को मान्यता प्रदान की थी जिसमें एक आदर्श राजा के राज्य व प्रजा के प्रति कर्तव्यों के बोध का उल्लेख मिलता है जैसा कि वाल्मिकी की ''रामायण'' में राजा राम को मर्यादा पुरुषोत्तम और आदर्शवादी राजा बताया गया है, वहीं कौटिल्य की अर्थशास्त्र में राजा का प्रजा के प्रति कर्तव्यों व सभासदों व नागरिकों के कर्तव्यों का भी उल्लेख मिलता है। इन प्राचीनकालीन साहित्यों में माता–पिता, पिता–पुत्र और गुरु के गुणों का भी उल्लेख किया गया है। धार्मिक साहित्यों में मोक्ष को मानव जीवन का परम लक्ष्य बताया गया है जबकि मानव जीवन के व्यवहारिक पक्ष धर्म, अर्थ, काम को मोक्ष के आगे तुच्छ समझा गया है। यह उत्तर वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था द्वारा भी परिलक्षित होता है जिसमें गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रस्थ आश्रम (50 वर्ष), सन्यास (75 वर्ष) की आयु निर्धारित की गई थी।

प्रायः ऐसा भी कहा जाता है कि आधुनिक युग से पूर्व प्राचीन भारत में इतिहास लेखन का कोई विशेष महत्व नहीं था परन्तु यह विचार कदापि मान्य नहीं हो सकता क्योंकि प्राचीन भारतीयों ने ऐतिहासिक महत्व की अत्यधिक सामग्री की रचना की जो लोक कथाओं, पुरातन कथाओं और परम्पराओं के रूप में उपलब्ध है परन्तु जिसे पूर्णतः इतिहासकार स्वीकार नहीं करते। अतः इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीयों ने इतिहास की रचना तो नहीं की किन्तु इतिहास के प्रति उनकी जागरूकता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से प्राचीन भारतीय इतिहास दूसरों से श्रेष्ठ है जो इतिहास की किताबी व्याख्या में विश्वास नहीं करता। डॉ0 आर0 सी0 मजूमदार की मान्यता है कि शुद्ध ऐतिहासिक और साहित्यिक रूप में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है जिसका तात्पर्य प्रकृति, उत्तेजना, शैली और मूल्य से है। प्राचीन भारतीय इतिहास में हिन्दुओं के पुराणों, बौद्धों के जातकों और भक्ति गीतों में संगम साहित्य में सामाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। इन ग्रन्थों में समाज व सामाजिक स्थिति का समुचित ढंग से वर्णन किया गया है।

प्रो0 सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का भी मत है कि यह कथन नितांत असंगत है कि प्राचीन भारत में श्रेष्ठ ऐतिहासिक साहित्य की रचना नहीं हुई। ऐतिहासिक महत्व के ग्रन्थ किन्हीं कारणों से खो गये हैं अथवा नष्ट हो गये है। परन्तु यह सम्भावना उचित प्रतीत नहीं होती कि सभी ग्रन्थ नष्ट हो गये होंगे परन्तु इस तथ्या को सभी विद्वानों ने स्वीकार किया है कि कुछ ग्रन्थ जिस काल में लिखे गये थे उनका उल्लेख बाद के लेखकों की कृतियों में देखने का मिलता है। प्राचीन भारतीय इहिास के पुर्नगठन में जहां पुरातात्विक स्त्रोतों में साहित्यिक स्त्रोत अधिक उपयोगी हैं क्योंकि वह अतीत वस्तुओं और घटनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान करते हैं। साहित्यिक स्त्रोत लिखित रूप में एकत्रित की गई वह जानकारी है। जो प्राचीन सभ्यता संस्कृति के सार की व्याख्या करती है।

भारतीय इतिहास बोध के अन्तर्गत अनेक ऐसे ऐतिहासिक स्त्रोत आते हैं जिन्हे हम मुख्यतः दो भागों में बांट सकते हैं।

धार्मिक साहित्य

धर्मेत्तर या लौकिक साहित्य।

धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत ब्राम्हण साहित्य आता है। ब्राम्हण साहित्य प्राचीन भारतीय का वर्णन करने में सर्वाधिक मददगार साबित होता है। ब्राम्हण ग्रन्थों में सर्वप्रथम स्थान वेदों का है। वेद चार हैं– ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। ऋग्वेद का रचनाकाल 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. था। माना जाता है ऋग्वेद में दसराज्ञ युद्ध का ऐतिहासिक वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में तत्कालीन समाज की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था तथा संस्थाओं का भी वर्णन मिलता है। वैदिकालीन ऋषियों के जीवन में देवताओं और देव आराधना का महत्वपूर्ण स्थान था। ऋग्वेद का प्रत्येक मंत्र किसी न किसी देवता से सम्बद्ध है। ऋग्वेद की संहिता में देव स्तुति की प्रधानता है। अग्नि इन्द्रमित्र मारुत, ऊषा, सोम, अश्विन आदि देवताओं की सूक्तों में स्तुतियां गायी गई हैं। सबसे अधिक सूक्त इन्द्र देवता की स्तुति में गायी गई है, इसके बाद अग्नि के सूक्तों का स्थान है। अतः इन्द्र व अग्नि वैदिक कार्यों के प्रधान देवता प्रतीत होत हैं। वैदिक संहिताओं में ऋग्वेद सबसे प्राचीन हैं। इसमें 10 मण्डल, 1028 सूक्त हैं। वर्तमान में इसके मन्त्रों की संख्या 10462 है। इसके मन्त्र संख्या को लेकर विद्वानों में मतभेद है। प्रायः सभी इतिहासकार इसको हिन्द–यूरोपीय (भारोपीय) परिवार की पहली रचना मानते हैं। इसमें अनेकों प्रकार लोकोपयोगी सूक्त जैसे रोग निवारक सूक्त, लक्ष्मी सूक्त और नासदीय सूक्त, हिरण्य गर्भ सूक्त और विवाह आदि के सूक्त वर्णित हैं। कहते है कि इस ग्रन्थ के अधिकांश सूक्तों की रचना सप्त–सैंधव प्रदेश (पंजाब) में हुई है।

यर्जुवेद

इस वेद का रचनाकाल 1000 से 600 ई.पू. माना जाता है। इसकी रचना कुरु पंचाल देश में की गई। यर्जुवेद यजुः शब्द से बना है जिसका अर्थ है यज्ञ। इस ग्रन्थ में यज्ञ कर्मकाण्डों, राज्याभिषेक की पर्याप्त जानकारी मिलती है। यदि यज्ञों की बात करें तो वाजपेय यज्ञ, राजसूय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञा आदि के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। यह एक मात्र ऐसा वेद है जिसमें गद्य

व पद्य दोनो शैली में लिखा गया है। ऋग्वेद के बाद यह दूसरा महत्वपूर्ण वेद माना जाता है। इस ग्रन्थ में गायत्री मंत्र व महा मृत्युंजय मंत्र मिलते हैं। इस ग्रन्थ से पता चलता है कि आर्य सप्तसैंधव प्रदेश से आगे बढ चुके थे और यही गंगा जमुना का क्षेत्र आर्य संस्कृति का केन्द्र हो गया था। इसमें ऋग्वेद के 663 मंत्र पाये जाते हैं। यर्जुवेद के दो भाग हैं। कृष्ण यर्जुवेद और शुक्ल यर्जुवेद।

सामवेद

साम का शाब्दिक अर्थ है गान। इसमें मुख्यतः यज्ञ के अवसरों पर गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह है। उसे भारतीय संगीत का मूल कहते हैं। सामवेद में मुख्यतः सूर्य की स्तुति के मंत्र हैं। सामवेद के मन्त्रों को गाने वाला उद्गाता कहलाता था।

अथर्ववेद

अर्थववेद वेदों में अंतिम है। इसकी भाषा ऋग्वेद की भाषा में अधिक स्पष्ट है क्योंकि यह बाद की रचना है और कई स्थाना पर ब्राह्मण ग्रन्थों से मिलती है। इसका रचनाकाल लगभग 1000 ई.पू. माना जाता है। इसमें आर्य और अनार्य धार्मिक विचारों का मिश्रण है। अथर्ववेद में देवताओं की स्तुति कम जादू टोना, चमत्कार, आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान और दर्शन के मंत्र अधिक हैं। इसे ब्रह्म वेद महावेद भी कहा जाता है। इसी वेद में पहली बार राष्ट्रीय भावना का परिपालन मिलता है। अथर्ववेद के एक सूक्त में मानव शरीर की रचना का वर्णन है जिसके आधार पर आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली अपनी उत्पति अथर्ववेद से मानती है। अथर्ववेद को काई अरण्यक नहीं मिलता। अरण्यकों में कुछ ऐतिहासिक तथ्य भी मिलते हैं जैसे तैतिरीय अरण्यक में कुरु पंचाल काशी, विदेह आदि जनपदों का उल्लेख मिलता है। इससे लगता है कि इनका सम्बन्ध कुरु पंचाल अरण्यक से रहा होगा। शांखायन आरण्यक में कुशीनगर, मत्स्य, कुरु–पंचाल, काशी तथा विदेह जनपदों का वर्णन मिलता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ कर्मकाण्डों के विधान व क्रियाओं को भली भांति समझने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना की गई। इन ग्रन्थों में उत्तर वैदिक कालीन समाज और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त होता है। प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण है।। ऋग्वेद का एतरेय, कौशीतकी ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। शतपथ ब्राह्मण यर्जुवेद से सम्बद्ध है। इसी प्रकार का सामवेद को ब्राह्मण ग्रन्थ पंचविश है। अथर्ववे का ब्राह्मण ग्रन्थ गोपथ है।

आरण्यक

आरण्यक शब्द ‘अरण्य’ से बना जिसका शाब्दिक अर्थ ‘वन’ होता है। आरण्यक वह धर्म ग्रन्थ है जिन्हे वन में ऋषियों द्वारा लिखा गया है। आरण्यक ग्रन्थों में अध्यात्म तथा दर्शन का वर्णन है। इसकी विषय वस्तु काफी गूढ है। आरण्यकों में केवल 6 आरण्यक ही उपलब्ध हैं। एतरेय, तैत्तरीय, शांखायन, बृहदारण्यक, मैत्रेय और जैमिनी।

उपनिषद

उपनिषद, ब्रह्मज्ञान के ग्रंथ है। उपनिषद में मानक जीवन के गूढतम प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास किया गया है। यह आत्मा–परमात्मा के गूढ विषयों को पर अद्वैतवाद का निरूपण करता है। यह अन्य वैदिक ग्रन्थों के विपरीत कर्मकाण्ड का खण्डन करता है। जहां ब्रह्मणों और आरण्यको की रचना में पुरोहित वर्ग का वर्चस्व रहा वहीं उपनिषदों के सृजन में क्षत्रिया ऋषियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उपनिषदों की संख्या 108 बताई जातह हैं। किन्तु 11 उपनिषद अधिक महत्वपूर्ण माने गये हैं। ईश, केन, कठोप, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, तैतरीय, ऐतरीय, छंदोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वर अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन और उपयोगी है। ऋग्वेद से समबिन्धत 10 उपनिषद हैं। शुक्ल यर्जुवेद से 19, कृष्ण यर्जुवेद से 32 व सामवेद से 16, अथर्ववेद से 31 उपनिषद है।

सूत्र–साहित्य

वैदिक कर्मकाण्ड से सम्बद्ध सारगर्भित छोटे छोटे वाक्यों को सूत्र कहा जाता है। सम्पूर्ण सूत्र साहीत्य को 4 भागों में बांटा गया है। श्रौत, गृह, धर्म, शुल्वसूत्र। श्रौत सूत्र में वैदिक यज्ञ कर्मकाण्ड का गृह सूत्र में गृहस्थ के दैनिक यज्ञों का, धर्म सूत्र में सामाजिक नियमों का और शुल्वसूत्र में यज्ञ वेदियों के निर्माण का वर्णन है। शुल्वसूत्र भारतीय जमीति का प्राचीनतम ग्रन्थ है।

वेदांग

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष। इन्हें वेद पुरुष का छः अंग बताया गया है। वेदों के स्वर, वर्ण आदि शुद्ध आचरण की शिक्षा वेदांगों में मिलती है। स्वर व्यंजन वर्ण है। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत स्वर के उच्चारण के भेदों को हम वर्णोंचार की शिक्षा भी कह सकते हैं। पहले चार वेदांग वैदिक मंत्रों के शुद्ध उच्चारण और मंत्र का अर्थ समझने में अति आवश्यक है। अन्तिम दो वेदांग कर्मकाण्ड और यज्ञों का शुभ मुहूर्त दिशा, समय ज्ञात करने के लिए भी आवश्यक है। व्याकरण को वेदों का मुख कहा गया है। ज्योतिष को नत्र, निरुक्त को श्रोत्र, कल्प को हाथ, शिक्षा को नासिका और छन्द को दोनो पैर कहा गया है। आजकल केवल यास्काचार्य का निरुक्त ही उपलब्ध होते है। इसका समय 800 ई.पू. के लगभग है। कल्प का वेदांगों में अति विशिष्ट महत्व है क्योंकि इसमें जन्म, उपनयन, विवाह, अन्त्येष्टि और यज्ञ जैसे विषय निहित है। वेदों को अपोरुषेय कहा गया है। यानि ईश्वरकृत। यह ज्ञान विराट पुरुष से श्रुति परम्परा के माध्यम से श्रृष्टिकर्ता ब्रम्हा जी ने प्राप्त किया ऐसा माना जाता है। यह भी मान्यता है कि परमात्मा ने सबसे पहले चार ऋषियो, अग्नि, वायु, आदित्य औ अंगिरा आत्माओं में ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद अथर्ववेद का ज्ञान दिया। इन्हीं महान ऋषियों ने बह्मा को यह ज्ञान दिया। इन्हें श्रुति भी कहते हैं यानि सुना हुआ ज्ञान। आर्य इनको स्मृति भी कहते हैं। यादि वेदों का

ज्ञान मनुष्य अपनी बुद्धि या स्मृति के द्वारा एक पीढी से दूसरी पीढी तक श्रुतियों द्वारा पंहुचाते रहे हैं। इन श्रुतियों की भाषा वैदिक संस्कृत कहलाती है जो लौकिक संस्कृत से कुछ अलग है। हम संस्कृत भाषा के प्राचीनतम रूप को ले कर भी इसका साहित्यिक महत्व समझ सकते हैं।

वेदों को समझना प्राचीनकाल से भारतीय व यूरोपीयनों व विश्व भर के लिए एक वार्ता का विषय रहा है। यूरोप के विद्वानों का वेदों के बारे में हिन्द आर्य जाति के इतिहास के प्रति जिज्ञासा का केन्द्र रहा है। अतः वह इसमें लोगों, जगहों, पहाड़ों, नदियों के नाम ढूंढते रहे हैं। लेकिन यह भारतीय परम्परा और गुरूओं की शिक्षा से मेल नहीं खाता क्योंकि भारतीय वैदिक साहित्य का चिन्तन अध्यात्मिक है। 18वीं सदी के उपरान्त यूरोपियन इतिहासकारों ने वेदों और उपनिषदों में रूचि लेने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि वेदों में अनेक वैज्ञानिक विश्लेषण प्राप्त होते हैं।

वैदिक युग के साहित्य, खगोल शास्त्रीय विज्ञान व गणितीय सिद्धान्तो से भी परिचित कराते हैं। नारद संहिता में ज्योतिष के 18 आचार्यों का उल्लेख है। ब्रह्मा, सूर्य वशिष्ठ, अत्रि, मनु सोम, लोमेश, मरीचि, अंगिरा, व्यास, नारद शौनक भृगु, च्यवन, गर्ग, कश्यप एवं पराश्र। इसके अतिरिक्त प्राचीन भारत के प्रसिद्ध ज्यतिविदों में आर्यभट्ट, लल्ल, वाराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, मुंजाल और भाष्कराचार्य थे।

स्मृतियां

सूत्र साहित्य के बाद स्मृतियां परिचलन में आई। स्मषतियों में मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के विविध किया कलापों का विवरण है। इसे धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। यह वेदों के अपेक्षा कम जटिल है। इसमें कहानी व उद्देश्यों का संकलन है। स्मृतियों में मनुस्मृति सबसे प्राचीन है। इस पर मेघातिथि, गोविन्दराज व कुल्लूक भट्ट ने टिप्पणी लिखी है। जबकि याज्ञवलक्या स्मृति दूसरी महत्वपूर्ण स्मृति है जिस पर विश्वरूप विज्ञानेश्वर अपरार्क ने टिप्पणी लिखी है। ब्रिटिश शासन काल ने बंगाल के गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्ज ने मनुस्मृति का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करवाया था जिसका नाम द जेंटू कोड (The Gentto Code) रखा गया था।

पुराण

प्राचीन भारत के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जीवन को जानने में पुराण अधिक सहायक है। पुराणों की संख्या 18 है।

ब्रह्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवद पुराण, नारद पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, लिंगपुराण, वाराह पुराण, स्कन्द पुराण, वामन पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, गरुड़ पुराण तथा ब्रह्माण्ड पुराण। पुराणों के रचयिता लोम हर्ष व उनके पुत्र उग्रश्राव माने जाते हैं। मार्कण्डेय पुराण सबसे प्राचीन पुराण है। पुराणों से धार्मिक परम्पराओं के साथ ही विभिन्न राजवंशो की वंशावलियों की जानकारी मिलती है जो कि ऐतिहासिक भी है। जैसे वायु पुराण में मौर्य राजवंश की, विष्णु पुराण में गुप्त राजवंश की, मत्स्य पुराण आन्ध्र वंश सात वाहनों की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

पुराणों में वर्णित विषयों की कोई सीमा नहीं है।

महाकाव्य

महाकाव्य के रूप में वाल्मिकी कृत रामायण व वेदव्यास रचित महाभारत महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इन महा काव्यों के कालों की स्थितियां स्पष्ट नहीं है। फिर भी इन महाकाव्यों का महत्व कम नहीं है। यह सम्पूर्ण धार्मिक साहित्य में अपना ऊंचा स्थान रखते हैं। इन महाकाव्यों में तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था के सथ साथ विभिन्न युद्ध कौशलों एवं सम्राज्य के विस्तार राजनीतिक दांव–पेंच आदि के बारे में कथा के माध्यम से विस्तृत विवरण मिलता है। किन्तु दुर्भाग्यवश इसमें तिथिक्रम अनुसार इतिहास का अभाव है। कुछ कल्पित कथाओं के समावेश के कारण ऐतिहासिक तथ्यों के अन्वेशण में कठिनाई उप्तन्न हो जाती है। किन्तु नये वैज्ञानिक अनुसन्धानों से रामायण व महाभारत के पुरातत्विक साक्ष्य मिले हैं। जिनसे इन महाकव्यों की प्रमाणिकता सिद्ध होती है।

दर्शन

भारतीय दर्शन की छः शाखयें वैदिक साहित्य के आवश्यक अंग हैं। यह छः दर्शन हैं। इन छः दर्शनों के नाम इस प्रकार है– न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मिमांसा। इन दर्शनों का रचना काल छठी शताब्दी ई.पू. से लेकर अशोक के समय तक है। न्याय दर्शन गौतम ऋषि ने लिखा है। इसमें पुर्नजन्म के सिद्धान्त की व्याख्या की गई है और मनुष्य को इससे छूटने की प्रेरणा दी गई है। वैशेषिक दर्शन के लेखक कणाद ऋषि हैं। इन्होनें पदार्थों को छः भागों में बांटा है और द्रव्य नौ बताये हैं। पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश, काल, अन्तरिक्ष, आत्मा, मानस। इन्होंने पदार्थ अणुओं से बनते हैं और यह नाश्वान नहीं हैं। सांख्य दर्शन के रचियता कपिल ऋषि थे। इनका आधारभूत सिद्धान्त पुरुष व प्रकृति को पृथक व स्वतन्त्र मानना है। सांख्य दर्शन ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता। योग दर्शन पतंजली ने लिखा था जिसमें मानव को भौतिक और आध्यात्मिक, दोनो पक्षों का विकास करने की बात कही गई है। इसमें यम, नियम, आसन, प्रणायाम, ध्यान, समाधि, हठयोग का भी उल्लेख है। इसमें कहा गया है कि समाधि की अवस्था में पहुंचकर मानव संसार से आवागमन का सम्बन्ध तोड़ देता है और परम तत्व यानि मोक्ष को प्राप्त कर लेता

है। पूर्व मीमांसा दर्शन के लेखक जैमिनी ऋषि थे। यह दर्शन रीति–नीति से सम्बन्धित है। इसमें वेदों की महत्ता को स्वीकार किया गया है। इसमें आत्मा की अनेकता को भी माना गया है। धर्म को उचित जीवन का साधन माना गया है। यह केवल व्यवहारिक धर्म से सम्बन्धित है। इसमें परम सत्य को ढूंढने की चेष्टा नहीं की गई है। उत्तर मीमांसा के रचियता बद्रायण ऋषि थे। उन्होंने चार अध्यायों 555 सूत्र लिखे हैं। इसे ब्रह्म विद्या की चर्चा व लाभ बताये गये हैं। इसमें ब्रह्म की प्रकृति, विश्व व अन्य जीवों के साथ उसके सम्बन्ध बताये गये हैं।

बौद्ध साहित्य

बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत बौद्ध के अनुयायियों ने जिस साहित्य का सृजन किया उसका उद्देश्य धार्मिक होते हुए भी ऐतिहासिक है। भारतीय इतिहास के लिए इसमें कई ऐतिहासिक घटनओं का वर्णन मिलता है। बौद्ध ग्रन्थों में सबसे महत्वपूर्ण त्रिपिटक है। बुद्ध की मष्त्यु के बाद उनके शिष्यें न उनकी शिक्षा का संकलन करके तीन भागोंमें बांट दिया।

विनयपिटक (संघ सम्बन्धी नियम तथा आचार की शिक्षायें)

सुत्त पिटक (धार्मिक सिद्धान्त और धर्मोपदेश संकलित हैं)

अभिधम्म पिटक (दार्शनिक सिद्धान्त)

इन त्रिपिटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बौद्ध संघों के संगठन का पूर्ण विवरण उपस्थित करते हैं साथ ही तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी बोध कराते हैं। बौद्ध ग्रन्थों में भारतीय इतिहास की प्रचुर सामग्री निहित है। इनमें महाजनपद काल के राजाओं, राजवंशों व राज्य क्षेत्रों की भी जानकारी मिलती है व जनता द्वारा अपनाये गये नये धर्मों जैसे जैन और बौद्ध की भी जनकारी मिलती है। बौद्ध साहित्य के अन्तर्गत जातक कथायें, दीपवंश महावंश जिसका रचनाकाल चौथी पांचवी सदी ई. है। इन दोनों ग्रन्थों की रचना पाली है। इसमें श्रीलंका का इहिास वर्णित है विशेषकर मौर्य साम्राज्य के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

मिलिन्दपन्हों की भाषा पाली है

इसका रचनाकाल 165 से 145 ई.पू. है। इसमें यवन राजा मिलिन्द व बौद्ध भिक्षु नागसेन का दार्शनिक वार्तालाप है। इस पुस्तक में तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन की पर्याप्त जानकारी मिलती है। इसमें विदेशी व्यापार का भी सजीव चित्रण किया गया है।

दिव्यावदान की भाषा संस्कृत है। इसमें परवर्ती मौर्य सम्राटों एवं शुंग सम्राट पुष्यमित्र शुंग की सैनिक उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है। जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

आर्य मंजुश्री मूलकल्प की भाषा भी संस्कषति है। इसमें हर्षवर्धन के काल की महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं का विवरण मिलता है। इसमें बौद्ध धर्म के वज्रायन सम्प्रदाय के उदय का भी वर्णन है।

ललित विस्तार की भाषा संस्कृत इसमें भी बुद्ध की लीलाओं का व तत्कालीन भारत की धार्मिक सामाजिक अवस्थाओं का विवरण है।

अश्वघोष कृत बुद्ध चरित्र व सौन्दरानंद काव्य की भाषा संस्कृत है। इसमें बुद्ध चरित्र एक महाकाव्य है जो कि साहित्यिक और ऐतिहासिक दषष्टि से महत्पूर्ण है। इसमें बुद्ध की जीवनी, उनकी शिक्षाओं और सिद्धान्तों का समावेश है।

जातक

बौद्ध ग्रन्थों में जातको में दूसरा स्थान है। इनकी संख्या 549 हैं। जातकों में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएं हैं। इन जातक कथाओं में तत्कालीन भारत की सामाजिक, धार्मिक जानकारी मिलती है।

जैन साहित्य

जैन साहित्य में भी ऐतिहासिक सामग्री पर्याप्त मात्रा में मिलती है। जैन इतिहास के सम्बन्ध में प्रो0 जैकोबी व डॉ0 बनारसी दास ने पर्याप्त अनुसंधान किये हैं। जैनियों ने प्रारम्भ से ही अपने साहित्य के प्रकाशन पर अधिक गम्भीर प्रवषति के हैं व साहित्य प्रकाशन सम्बन्धी कार्यो पर अधिक धन व्यय कर रहे हैं। ब्राह्मण साहित्य तथा बौद्ध साहित्य प्राचीन भारत के इतिहास की व्याख्या करते हैं। उसी प्रकार जैन साहित्य इतिहास वर्णन की पर्याप्त क्षमता रखते हैं। जैन ग्रन्थों तथा बौध ग्रन्थों के विवेचनात्मक अध्ययन से इतिहास की घटनाओं को प्रमाणित करते हैं। जैन ग्रन्थों में जैन आगम सर्वोपरि हैं। जो स्थान वैदिक साहित्य में वेदों का है व बौद्ध साहित्य में त्रिपिटकों का है वही स्थान जैन साहित्य में जैन आगम का है। इसमें साधारणतः 12 अंग, 12 उतांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, नन्दि सूत्र, अनुयोगद्वार और 4 मूल सूत्र संकलित है। जैन आगम में महावीर के उपदेशों और जैन संस्कृति और जैनियों के सामाजिक धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है।

कल्पसूत्र

जैनियों का प्रारम्भिक इतिहास कल्पसूत्र में मिलता है। जिसकी रचना भद्रबाहु ने की थी। इसका रचनाकाल लगभग चौथी शती ई0 है। इस जैन ग्रन्थ में 24 तीर्थंकरों के जीवन चरित्र वर्णित हैं। पार्श्वनाथ से महावीर तक वर्णित हैं।

भद्रबाहु चरित्र

इसमें जैन आचार्य भद्रबाहु के साथ साथ चन्द्रगुप्त मौर्य के सम्बन्धों का भी उल्लेख मिलता है। इस ग्रन्थ में चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवनकाल के अन्तिम वर्षों में मगध में बारह वर्षीय अकाल पड़ा जिस कारण चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने पुत्र के अधिकार में राज्य सौंपकर जैनमुनि भद्रबाहु से दीक्षा ग्रहण की और राजपाट छोड़कर दक्षिण भारत के श्रवणबेलगोला स्थान पर गया और वहां संलेखना विधि द्वारा देह त्याग दिया।

परिशिष्ट पर्वन

इसकी रचना हेमचन्द ने की थी। इस रचना में मौर्य काल की जानकारी मिलती है। इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य के समय की शासन प्रणाली सामाजिक आर्थिक व्यवस्था व साम्राज्य विस्तार आदि का वर्णन मिलता है।

भगवती सूत्र

इसका रचनाकाल 600 से 325 ई.पू. का है। इसमे महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।

धर्मेत्तर साहित्य

भारत का कोई भी ग्रन्थ ऐसा नहीं जिसे विशुद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ कहा जा सके क्यों कि सभी ग्रन्थों पर धर्म व दर्शन का प्रलेप चढा हुआ है। तदापि कुछ ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। इन्हीं धर्मेत्तर साहित्य को लौकिक साहित्य भी कहा गया है। जिसमें भारतीय इतिहास का पर्याप्त विवरण प्राप्त होता है। ऐसी ऐतिहासिक रचनाएं निम्न हैं।

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र

ऐतिहासिक रचनाओं में सर्वप्रथम उल्लेख अर्थशास्त्र का किया जाता है। इसके रचियता चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबारी प्रधानमंत्री राजनीतिक पुरोहित कौटिल्य (चाणक्य) ने चौथी शताब्दी ई.पू. में की थी। इस ग्रन्थ में मौर्यकालीन इतिहास एवं राजनीतिक अवस्थाओं का पर्याप्त विवरण मिलता। इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन व्यवस्था पर भी पर्याप्त विवरण मिलता है। इस ग्रन्थ की तुलना मैकियावेली के प्रिन्स से की जाती है। इसमें मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था, राज्य की उत्पति, उसके संगठन, उसकी सुरक्षा के उपाय, राजा के अधिकार व कर्तव्य, मंत्रियों व अधिकारियों की नियुक्ति के नियम, सामाजिक संस्थाओं, आर्थिक कियकलापों का विस्तृत विवरण मिलता है।

कल्हण के राजतंगिणी

इसकी रचना कश्मीरी लेखक कल्हड़ ने 12वी शताब्दी में की थी। इसमें कश्मीर का क्रमानुसार इतिहास वर्णित है।

सोमेश्वर कृत ''कीर्ति कौमुदी'' तथा रसमाला, मेरुतुंग कृत ''प्रबंध चिंतामणि'', राजशेखर कष्त ''प्रबंध कोष'' में गुजरात के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।

पाणिनी की अष्टाध्यायी का रचनाकाल नवीं शताब्दी में माना जाता है। यह एक व्याकरण ग्रन्थ है। इसमें मौर्यकाल से पहले का इतिहास वर्णित है। इस पुस्तक में महार्षि पाणिनी के काल की सामाजिक आर्थिक दशाओं का वर्णन मिलता है। इस उत्तर भारत के भूगोल की भी जानकारी मिलती है।

विशाख दत्त की मुद्राराक्षस

यह एक राजनीतिक नाटक है। इसकी रचना विशाख दत्त ने लगभग 600 से 700 ई. में की थी। इसमें सिकन्दर के आक्रमण के बाद का राजनीतिक विवरण मिलता है। इसमें पोरस और सिकन्दर की भी जानकारी मिलती है। इसमें चाणक्य व चन्द्रगुप्त के द्वारा नन्द वंश के विनाश का विवरण मिलता है।

पतांजलि का महाभाष्य

पंताजति पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे। उनकी रचना महाभाष्यों में शुंगों के इतिहास की पर्याप्त जानकारी मिलती है।

गार्गी संहिता

ऋषि गर्ग ने गार्गी संहिता को लिखा जो पुराण का एक भाग है। यह एक ज्योतिष ग्रन्थ है। इसकी रचना प्रथम शताब्दी ई. पू. की है। इसमें हिन्द व यवन आक्रमाणें का उल्लेख है। इसके अनुसार यवनों ने साकेत पंचाल मथुरा और कुसुमध्वज पर आक्रमण किया।

बाणभट्ट का हर्ष चरित्र

बाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी कवि था। उसने इसकी रचना 7वीं शताब्दी ई. में की थी। इसमें हर्ष के जीवन चरित्र व सैनिक उपलब्धियों का विवरण मिलता है।

वाक्पति का गौड़वाहो

वाक्पति की संस्कष्त रचना गौड़वाहो ने कन्नौज के राजा यशोवर्मन की दिग्विजयों का विवरण सविस्तार मिलता है। उसने गौड़ राजा का वध किया जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

मालविकाग्निमित्रं

इसक नाटका की रचना महाकवि कालीदास ने की थी। इसका रचनाकाल चौथी पांचवी शताब्दी रहा होगा। इसमें शुंगो और यवनों के युद्ध का उल्लेख है।

विक्रमांक देव चरित्र

इसकी रचना विल्हण ने की। इसमें कल्याणी के चालुक्य राजवंश की जानकारी मिलती है। इसमें चालुक्य नरेश विक्रमादित्य चतुर्थ का चरित्र विवरण है।

रामचरित

संध्याकर नंदिन के रामचरित से पाल वंश की जानकारी मिलती है।

पृथ्वीराज रासो

इसकी रचना चन्दरबरदई ने की। यह पृथ्वीराज चौहान तृतीय का दरकारी कवि व सामन्त था। इसकी रचना में पृथ्वीराज चौहान व मोहम्मद गौरी के संघर्ष का ऐतिहासिक वर्णन मिलता है।

अच्युतराजभ्युदय

इसका रचनाकार राजानाथ था। उसने अपनी इस कृति में विजयनगर के राजा अच्युतदेवराय के जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया है।

निष्कर्षत

धार्मिक साहित्य के इतिहास से यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय संस्कृति के प्रारम्भिक युग में ही ऐतिहासिक साहित्य का सृजन का प्रचलन आरम्भ हो चुका था और वैदिक साहित्य किसी न किसी रूप में ऐतिहासिक कृतियों का अस्तित्व विद्यमान था जैसा कि हम प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारतीय साहित्य में वैदिक साहित्य व लौकिक साहित्य का प्रचुर उल्लेख कर चुके हैं। समय की गति के साथ साथ इतिहास साहित्य के आकार में वृद्धि होती गई भले ही हम इतिहास लेखन की कसौटी पर खरे न उतरें अथवा जिन्होंने हमारे बारे में ऐसा लिखा है कि हमारे पूर्वजों को इतिहास कार्य के शिल्प विधान का ज्ञान न हो किन्तु उन्हे अपने कार्य के प्रयोजन व स्वयं के इतिहास की पूर्ण जानकारी थी। एफ0 ई0 पोजिटर और एच0 सी0 रायचौधरी जैसे इतिहासकारों ने पुराणों में वर्णित राजवंशों की वंशावलियों के आधार पर इतिहास लिखने की कोशिश की है। कल्हण की राजतरंगिनी को पहली वास्तविक ऐतिहासिक माना जाता है। इसमें बारहवीं शताब्दी तक का उत्तर भारत का इतिहास वर्णित है। कई विदेशी यात्रियों ने भी भारत की तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक व्यवस्थाओं का वर्णन अपनी पुस्तकों में किया है जो कि ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूएर्र है। इन लेखकों में मेगस्थनीज की इंडिका, ह्वेनसांग की सी–यू–की तथा फाहयान की फो–क्यू–की, अलबरुनी की तहकीकात–ए–हिन्द भारतीय इतिहास को जानने की महत्वपूर्ण रचनायें है।

सन्दर्भ सूची

1. झा., श्रीमाली. (1998). प्राचीन भारत का इतिहास. हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालयः नई दिल्ली वि0 वि0. पृष्ठ **20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27.**
2. शर्मा, रामशरण. (2017). प्रारंभिक भारत का परिचय. ओरियंट स्लैक स्वॉनः हैदराबाद।
3. श्रीवास्तव, डा. के.सी. (2002). प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. यूनाईटेड बुक डिपोः इलाहाबाद. पृष्ठ **66, 67, 68, 69, 76, 79, 81, 86, 87, 98, 99.**
4. दास, पुरी, चोपड़ा. (2003). भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास. मैकमिलन पब्लिकेशन. पृष्ठ **49, 52, 53, 61.**
5. पाण्डेय, डा. विमलचन्द्र. (1986). प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृति इतिहास. सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाऊसः इलाहाबाद. पृष्ठ **125, 126, 127, 134, 150.**
6. खुराना, डॉ. के.एल., बन्सल, डॉ. आर.के. (2004–05). इतिहास लेखन धारणायें तथा पद्वतियों. लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा. प्रथम संस्करण. पुनः मुद्रित 2019–20.
7. मिश्र, डॉ. शिवशंकर. (2009). भारतीय संस्कृति विमर्श. इस्टर्न बुक लिंक्सः दिल्ली।
8. पाण्डेय, डॉ. गोविन्द चन्द. (2014). इतिहास स्वरूप, सिद्वान्त. राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमीः जयपुर. 10वां संस्करण।
9. श्रीधरन, ई. (2011). इतिहास लेख एक पाठ्य पुस्तक, 500 ई.पू. से 2000 तक. ओरियन्ट ब्लैक स्वॉन प्रा0 लि0ः मुख्य कार्यालय हैदराबाद. प्रथम संस्करण. पुर्नमुद्रित 2019.

10. सिंह, डा. सुश्री शरद. (2008). प्राचीन भारत का सामाजिक आर्थिक इतिहास. प्रथम संस्करण. विश्वविद्यालय प्रकाशनः वाराणसी।
11. प्रकाश, ओम. (2001). प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास. विश्व प्रकाशनः दिल्ली।
12. महाजन, वी.डी. (2004). प्राचीन भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास. एस0 चन्द पब्लिकेशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **181, 87, 85, 86, 88, 89.**
13. कोशांबी, दामोदर धर्मान्द. प्राचीन भारत की संस्कृति व सभ्यता. राजकमल प्रकाशनः नई दिल्ली।
14. नागोरी, एम.एल. (2009). भारतीय संस्कृति. ग्रीनलीफ पब्लिकेशनः वाराणसी।
15. दूबे, डा. जगत नारायण. (2004). भारतीय संस्कृति में ऋषियों का योगदान. दुर्गा पब्लिकेशनः दिल्ली।
16. हुसैन, एस. आबिद. (2011). भारतीय की राष्ट्रीय संस्कृति. नेशनल बुक ट्रस्टः नई दिल्ली।
17. लुनिया, बी.एन. (1996). प्राचीन भारतीय संस्कृति. लक्ष्मी नारायण प्रकाशनः आगरा. प्रथम संस्करण. पुर्न मुद्रित 2013–14.

17

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत आने वाली ऑनलाइन शिक्षा का महत्व

मोहम्मद हबीब खांन
असिस्टेंट प्रोफेसर
नेहरू मेमोरियल शिव नारायण दस (पी०जी०) कॉलेज, बदायूँ
सम्बद्धः महात्मा ज्योतिबा फूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह लड़का हो या लड़की बूढ़ा हो या जवान के जीवन का आधार है। संविधान (छियासीवां संषोधन) अधिनियम, 2002 ने भारत के संविधान में अंत स्थापित अनुच्छेद 21–क, ऐसे ढंग से जैसा कि राज्य कानून द्वारा निर्धारित करता है, मौलिक अधिकार के रूप में छह से चौदह वर्ष के आयु समूह में सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करता है। निशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा (आरटीई) अधिनियम, 2009 में बच्चों का अधिकार, जो अनुच्छेद 21क के तहत परिणामी विधान का प्रतिनिधित्व करता है, का अर्थ है कि औपचारिक स्कूल, जो कतिपय अनिवार्य मानदण्डों और मानकों को पूरा करता है, में संतोषजनक और एकसमान गुणवत्ता वाली पूर्णकालिक प्रारंभिक शिक्षा के लिए प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। शिक्षा के माध्यम से बालक के व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ सम्पूर्ण विकास किया जाता है। शिक्षा को तकनीकी से सम्बन्धित करके प्रभावशाली शिक्षा प्रदान करने का प्रयास निरन्तर गतिशील है। ऑनलाइन शिक्षा तकनीकी गत व्यवस्था प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के साथ उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाता है जिससे बालक में शिक्षार्जन के प्रति रूचि एवं आत्मविश्वास का जागरण हो सके। ज्ञान प्रदान करने एवं ज्ञान प्राप्ति के विभिन्न माध्यम एवं प्रकार हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तकनीकी पर पूर्णतः निर्भर होने के अन्तिम पग पर गतिशील है। तकनीकी प्रगति अपनी उन्नति की चरम बिन्दुओं पर अग्रसर है। विद्यार्थियों में शिक्षा को तकनीकी स्वरूप में प्राप्ति हेतु अधिक तत्परता दृष्टिगत होती है। प्रत्येक बालक आधुनिक समय में तकनीकी से इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि वह तकनीकी से असम्बद्ध शिक्षा के प्रति अरूचिपूर्ण दृष्टिपात करता है। ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव कोविड महामारी के समय अधिक प्रभावी अनुभव हुआ है जो शारीरिक रूप से नियत स्थान पर अनुपस्थित होने पर भी विद्यार्थी को समान शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था को सकारात्मकता प्रदान करती है।

मुख्य शब्द

ऑनलाइन शिक्षा, शिक्षण, तकनीकी।

प्रस्तावना

शिक्षा का अर्थ है सीखने–सिखाने की प्रक्रिया। हमारे समाज में समय के साथ–साथ शिक्षा के स्तर और नियम कानूनों में बदलाव होना बहुत जरुरी होता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के इतिहास को अगर गौर से देखें तो आपको समय–समय पर बड़े बदलाव देखने को मिल जायेंगे। आजाद भारत में सन 1986 की षिक्षा नीति के बाद इस बार 2020 प्रस्तुत की गयी नई शिक्षा नीति में बड़े बदलाव हुए हैं।

भारत की नेशनल एजुकेशन पालिसी 2020, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक नेशनल और सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावडेकर के द्वारा डॉ के० कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 29 जुलाई 2020 को प्रस्तुत की गयी थी। इससे पहले सन 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हुई थी, जिसमें कुछ बदलाव 1992 में हुए थे। नई शिक्षा नीति 2020 लागू होने के साथ–साथ मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम ''शिक्षा मंत्रालय'' कर दिया गया है।

शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र का विकास सरलता से सम्भव होता है। शिक्षा मनुष्य को बौद्धिक

रूप से तैयार करती है। वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण योगदान है जिसके द्वारा कोविड–19 की कठिन परिस्थितियो ं में भी ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा शिक्षा सम्बन्धी कार्यों का सम्पादन सरलता से होता रहा। प्राचीन काल में शिक्षा गुरूओं के माध्यम से वैदिक प्रणाली की शिक्षा प्रक्रिया के आधार पर गुरूकुल में शिष्य को ज्ञान प्रदान की जाती थी। समयानुसार परिवर्तन के साथ समाज और राष्ट्र की मांग और आवश्यकता में परिवर्तन दिखाई देने लगा। शिक्षा समय के अनुरूप विभिन्न स्तरों, प्रकारों एवं आयामो से गतिमान होती रही। इक्कीसवीं सदी की शिक्षा प्रणाली में ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को आधुनिक शिक्षा के नवीन स्वरूप में स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा में अध्यापक और विद्यार्थी दोनों के मध्य अन्तःक्रिया सेलफोन, लैपटॉप से इण्टरनेट के माध्यम से होता है और ज्ञान प्रदान किया जाता है। यह प्रक्रिया सम्पूर्ण विश्व में अपनायी जा रही है। बदलते परिवेश के साथ–साथ तकनीकियों में भी कई बदलाव निरन्तर देखने को मिल रहे हैं। तकनीकी के द्वारा ही शिक्षा की पद्धति एवं प्रणाली में नवीन परिवर्तन देखने को मिलते हैं। तकनीकी के माध्यम से ही आज भिन्न–भिन्न प्रकार के साधन हमारे मध्य उपस्थित हैं जिनके माध्यम से बड़े से बड़े कार्य सरलता से सुलझते दिख रहे हैं। उदाहरण के लिए तकनीकी के द्वारा आज सूचनाओं को ई–मेल के द्वारा आसानी से भेजा जा सकता है जिसमें समय और श्रम दोनों की बचत होती है। साथ ही सूचना सही समय पर उपलब्ध हो रही है ऐसे कई उदाहरण हैं जो हमारे जीवन में तकनीकी परिस्थितियों में सरलता से सुलझ रहीं हैं। एनईपी–2020 के अध्याय 24 में ऑनलाइन और डिजीटल शिक्षाः को भी अंकित किया गया है जिससे यह इंगित है कि नवीन परिस्थिति और वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में विकास के साथ–साथ गुणात्मक रूप से ऐसे साधन एकत्रित करने हैं जो शिक्षा में किसी भी प्रकार की वैश्विक महामारी का प्रभाव देखने को न मिले। साथ ही समस्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने से संबंधित प्लेटफॉर्म को भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए आईसीटी, डिजीटल प्लेटफॉर्म को मजबूत करना होगा।

ऑनलाइन शिक्षा

प्रयोगवाद में शिक्षाविद् में विद्यार्थियों की शिक्षा को करके सीखने पर बल दिया है जो वर्तमान में परिणाम देखने को मिल रहा है। विद्यार्थियों को तकनीकी के माध्यम से शिक्षा के माध्यम से ही स्वयं प्रयोग करके सीखने को प्राप्त हो रहा है। ऑनलाइन शिक्षा के द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में जीवन यापन करने वाला बालक में शहरीकरण एवं नवीनीकरण से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त कर रहा है। शिक्षा का पूर्णतः अस्तित्व में आना और देश के कोने–कोने में बैठे बालकों को प्राप्त होना ऑनलइन से ही सम्भव हो पाया है। वैश्वीकरण के इस युग में राष्ट्र को अन्य राष्ट्र के मध्य सामंजस्य स्थापित करना है कोविड–19 की परिस्थितियों में शिक्षण कार्य को निरन्तर बनाए रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षा तकनीकी का सहारा लेना पड़ा परन्तु देखा जाए शिक्षा में ऑनलाइन व्यवस्था की अत्यधिक आवश्यकता भी है जिसके द्वारा प्रत्येक गॉव, शहर और नगर में शिक्षा का निरन्तर संचार होता रहता है। डिजीटल एवं ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करने के लिए आवश्यक है कि डिजीटल इंडिया अभियान एवं कम्प्यूटर से सम्बन्धित उपकरण का होना जिसके माध्यम से ही शिक्षण कार्य का होना सम्भव हो सकता है तथा यह आवश्यक है कि ऑनलाइन और डिजीटल शिक्षा के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग समान रूप से उपयोग किया जाए। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक को प्रशिक्षण दिया जाए जिससे उनके कौशलों का विकास हो पाए और वो ऑनलाइन डिजीटल कक्षा–कक्ष के द्वारा भी कार्य को अच्छी तरह से सम्पन्न कर पाएगा। पूर्व में अध्यापकों के लिए यह धारणा भी थी कि पारंपरिक कक्षा में एक निपुण शिक्षक, ऑनलाइन कक्षा में भी बेहतर प्रदर्शन करेगा परन्तु वर्तमान में बड़े स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण एवं परीक्षा का आयोजन करना चुनौतीपूर्ण हैं जिसमें विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा के दौरान भिन्न–भिन्न परिस्थितियों से जूझना पड़ता है जैसे नेटवर्क सम्बन्धित समस्या, बिजली का व्यवधान से जूझना और अनैतिक स्थितियों का प्रभाव आदि। साथ ही ऐसे विभिन्न प्रकार के विषय हैं जो प्रयोग पर आधारित हैं। प्रदर्शन पर बल देते हैं। अनुभवात्मक गतिविधियों पर आधारित है उन्हें ऐसे ही नहीं छोड़ा जा सकता क्योंकि सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में सामाजिक, भावात्मक और साइकोमोटर आयामों पर सीमित शिक्षा मात्र बन जाएगी। ऑनलाइन शिक्षा एवं डिजीटल प्रौद्योगिकी के उद्भव के लिए प्रत्येक स्तर पर शिक्षण–अधिगम के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निम्नलिखित सिफारिश दी गयी है–

ऑनलाइन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन

इसके अन्तर्गत ऑनलाइन शिक्षा में आने वाली कमी को दूर करना और उसे शिक्षा के साथ एकीकृत करते हुए लाभों का मूल्यांकन करना और छात्रों को ऑनलाइन से सम्बन्धित ई–कंटेंट आदि जैसे– विषयों की जानकारी देना साथ ही अध्ययन संचालित करने वाली एनईटीएफ, सीआईईईटी, एनआईओएस, आईजीएनओयू, आईआईटी, एनआईटी आदि एजेंसी की जानकारी कराना और इनके द्वारा ही शिक्षा में निरंतर सुधार किया जाएगा की जानकारी देना।

(ख) डिजीटल इन्फ्रास्ट्रक्चर

डिजीटल इन्फ्रास्ट्रक्चर से तात्पर्य है कि ऑनलाइन प्रणाली में उपयोग होने वाले उपकरण को भारत की स्थिति और क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए विविद्यता, जटिलता और डिवाइस को उपयोग करने के लिए शिक्षा मे ंउपयोग होने वाले होने वाले डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण किया जाना चाहिए जिसका प्रयोग भिन्न–भिन्न प्लेटफॉर्मों और पाइंट सॉल्यूशन में किया जा सकता है इससे यह निर्धारित होगा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म में कितनी तेजी से निरन्तरता आ रही है।

(ग) ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण–

डिजीटल मंच को मजबूत करने के साथ–साथ विद्यार्थियों की प्रगति को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को सहायक उपकरण के लिए संरचित, उपयोगकर्त्ता अनुकूल, विकसित सेट प्रदान करने के लिए स्वयं दीक्षा जैसे प्लेटफॉर्म ई–लर्निंग के माध्यम से प्रदान किए गए और वैश्विक महामारी के देखते हुए ऑनलाइन कक्षाओं का आयोजन किया गया और आवश्यकता भी है। दो–तरफा वीडियो और दो–तरफा ऑडियो इंटरफेस जैसे उपकरण की।

(घ) सामग्री निर्माण, डिजीटल रिपॅाजिटरी और प्रसार

देश की शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण प्रसार के लिए आवश्यक है कि ऐसे उपकरण एवं ऐप का निर्माण किया जाए जिसमें छात्रों के मनोरंजन के लिए अधिगम आधारित उपकरणों का संचालन भिन्न–भिन्न भाषाओं में भारतीय कला और संस्कृति का एकीकरण आदि पर भी विशेष ध्यान दिया जाए। साथ ही विद्यार्थियों को ई–सामग्री को एकत्रित करने के लिए विश्वसनीय बैकअप तंत्र बनाया जाएगा जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी आवश्यक सामग्री एकत्र कर सके। शिक्षा में प्रभावशाली और गुणवत्ता के लिए एक डिजीटल रिपोजिटरी विकसित की जाएगी जिसमें कोर्स वर्क, लर्निंग गेम्स और सिमुलेशन, ऑगमेंटेड, रियलटी और वर्चुअल रियलटी का निर्माण आदि किया जाएगा।

(च) डिजीटल अंतर को कम करना

भारत की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा है, जिसकी पहुँच डिजीटल वर्ड में सीमित है। जनसंचार माध्यम में टेलीविजन, रेडियो और सामुदायिक रूप से प्रयोग होने वाले टेलीकास्ट और प्रसारण बड़े पैमाने पर किया जाए जिससे विद्यार्थी शैक्षिक कार्यक्रमों का फायदा उठा पाए। बदलते परिवेश में छात्रों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विभिन्न भाषा में कन्टेन्ट को पूरे सप्ताह 24 घन्टे उपलब्ध कराया जाएगा।

(छ) वर्चुअल लैब्स

गुणवत्तापूर्ण व्यावहारिक और प्रयोग आधारित अनुभव के लिए वर्चुअल लैब्स बनाने के लिए स्वयं, दीक्षा और स्वयंप्रभा जैसे ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया जाएगा साथ ही एसईडीजी छात्रों और अध्यापकों को पूर्ण में लोड सामग्री और उपकरण उपलब्ध कराया जाएगा।

(ज) शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और प्रोत्साहन

ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्मों और उपकरणों के उपयोग द्वारा उच्चतर गुणवत्ता वाली ऑनलाइन सामग्री का सष्जन कर सकेंगे और अध्यापक को बालक केन्द्रित अध्यापन में गहन शिक्षण–प्रशिक्षण दिया जाएगा और अवगत कराया जाएगा कि डिजिटल प्लेटफार्मो के द्वारा शिक्षण को प्रभावशाली बनाया जाएगा साथ ही शिक्षण–विद्यार्थी सम्बन्ध और छात्रों का आपसी सहयोग पर बल दिया जाएगा।

(झ) ऑनलाइन मूल्यांकन और परीक्षाऐं

21वीं सदी में कौशल परक शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करते हुए प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन नवीन तरीकों का अध्ययन कर दिया जाएगा। उपयुक्त निकायों पर आधारित शिक्षा में राष्ट्रीय मूल्यांकन केन्द्र अथवा 'परख', स्कूल बोर्ड, एनटीए और अन्य निकाय मूल्यांकन की रूपरेखा तैयार करेंगे जिसके अन्तर्गत दक्षता, पोटफोलियों, रूब्रिक्स, मानकीकृत मूल्यांकन और मूल्यांकन विश्लेषण के डिजाइन शामिल होंगे।

डिजिटल शैक्षिक कंटेंट सामग्री तथा क्षमता का निर्माण हेतु समर्पित इकाई का सृजन

विद्यालय एवं उच्च स्तर की शिक्षा में ई–शिक्षा की जरूरतों पर दृष्टि डालने की आवश्यकता है। मंत्रालय में डिजिटल बुनियादी ढाँचे, डिजिटल साधन सामग्री और योग्यता एवं कौशलों के निर्माण की व्यवस्था करने के लक्ष्य से एक इकाई को निर्मित किया जाए। वर्तमान में प्रौद्योगिकी तेजी से बढ़ रही है और उच्च गुणवतत्तापूर्ण डिजिटल (ई–लर्निंग) को विकसित एवं वितरित करने के लिए विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता है। साथ ही एनईपी–2020 में कहा गया है कि प्रशासन, शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्यागिकी, डिजिटल शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन, ई–गवर्नेंस आदि के क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ होंगे। ऑनलाइन तकनीकी के माध्यम से ही हमें प्रत्येक राज्य एवं प्रत्येक राष्ट्र के साथ सम्बन्ध बनाने में सरलता हुयी और प्रत्येक व्यक्ति अपनी सहभागिता बना पाए। कोविड की विषम परिस्थितियों में भी शैक्षिक कार्यक्रमों का निरन्तर आयोजन किया जाता रहा है एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का सम्प्रेषण निरन्तर होता रहा। अतः उपरोक्त परिस्थितियों एवं नीतियों के अनुसार भी शिक्षा में तकनीकी पर विशेष जोर दिया गया जिसके कारण शिक्षा का डिजीटलीकरण किया जा सके लेकिन वर्तमान में यह उच्चतम सीमा तक प्रभावी हुयी है और प्रभावशाली रूप से कार्य कर रही है जिसका परिणाम निरन्तर देखने को प्राप्त हो रहा है।

निष्कर्ष

शिक्षा प्रत्येक समाज के जीवन का प्रमुख आधार है जिसके माध्यम से समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं के सर्वांगीण विकास

की ओर उन्मुख होता है। ज्ञान की सीमा अनन्त है। जीवन को सरलता से व्यतीत करने एवं विपरीत परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए मानव को शिक्षित होना नितान्त आवश्यक है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा की उपयोगिता में वृद्धि के साथ–साथ प्रतिस्पर्द्धा में भी वृद्धि होने लगी है। शिक्षा प्राप्ति हेतु अनेक माध्यमों का प्रयोग शिक्षा में किया जाने लगा है। विद्यार्थी के पास किसी भी विषय के सम्बन्ध में मन–मस्तिष्क में उपजी जिज्ञासा को शान्त करने हेतु अनेक साधन उपलब्ध है। इन्हीं साधनों के उपलब्धीकरण से वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षा को मुख्य रूप से प्रभावी माना जा रहा है जिसमें तकनीकी का प्रयोग कर शिक्षा को अनेक प्रकार से प्रभावी बनाकर सुगम्यता पूर्वक, सरलता, किसी भी क्षेत्र से उपस्थिति होकर एवं ईच्छानुसार अधिगम कार्य को सम्पन्न किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी ऑनलाइन शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु अनेक व्यवस्थाओं, प्रक्रियाओं एवं डिजीटलीकरण की सुविधा को मुख्यतः प्रयोगरूपक बनाने पर बल दिया गया है। यह प्रयास हमारी आधुनिक भारतीय शिक्षा प्रद्धति के नवीन आयामों का सृजन करने में अवश्य सार्थक सिद्ध होगी।

सन्दर्भ सूची

1. वेबएक्स शिक्षा मंच, मूल से 27 फरवरी 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 अगस्त 2010.
2. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट टेस्टबुक डॉट कॉम (सुपर कोचिंग डॉट कॉम)/ एजुकेशन बाई डॉ हीना दावर मैडम।
3. लम्सफाउन्डेशन डॉट ओआरजी, मूल से 21 जुलाई 2010 को पुरालेखित, अभिगमन तिथि 7 अगस्त।
4. मीन्स., बीआई., टोयमा., मुर्फे, आरआई., बाकिया, एमआई., जॉन्स, के एल. (2009). इवेल्यूशन ऑफ ऐवीडेन्स–बेस्ड प्रेक्टिसेस इन ऑनलाइन लर्निंगः ए मेटा–एनालिसिस एण्ड रिव्यू ऑफ ऑनलाइन लर्निंग स्टडीज, मूल रूप से 10 अगस्त 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 अगस्त।
5. प्लेनेटबोफा डॉट कॉम, मूल से 20 नवम्बर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 7 अगस्त 2010.
6. टैवंगारियन, डी., लेपोल्ड, एम., नोल्टिंग, के. रोज़र एम. (2004). क्या ई–शिक्षा व्यक्तिगत शिक्षा का समाधान है? जर्नल ऑफ ई–लर्निंग।
7. ओईसीडी. (2005). तृतीयक शिक्षा में ई–शिक्षाः हम कहां खड़े हैं? ओईसीडीः पेरिस।
8. डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यूडॉटदषष्टिआइएएसडॉटकॉम

18

आजादी से अब तक के 75 वर्षो में लोक सभा में महिलाओं की स्थिति का आंकलन

डॉ० अंजू आर्य
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय, हाथरस

विधि शर्मा
छात्रा, एम.ए., राजनीति विज्ञान
पी. सी. बागला डिग्री कालेज, हाथरस

सारांश

प्रस्तुत लेख में उस राष्ट्र की महिलाओं की चिंताजनक राजनीतिक स्थिति का अवलोकन किया जा रहा है। जिस राष्ट्र के नाम में ही 'मां' शब्द को जोड़ा जाता है अर्थात हमारी भारतीय महिलाएं हमारे राष्ट्रपिता गांधीजी के अनुसार स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्तर पर विदेशी शासन से स्वाधीनता प्राप्त करना ही नहीं बल्कि इनमें सांस्कृतिक तथा नैतिक स्वाधीनता का विचार भी निहित है यह राष्ट्र निर्माण में परस्पर सहयोग व मेल मिलाप पर बल देता है तथा शासन के स्तर पर यह सच्चे लोकतंत्र का पर्याय है परंतु क्या हम स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी पूर्ण स्वराज प्राप्त कर पाए हैं? नहीं! आज भी उच्च पदों पर महिला प्रतिनिधित्व कम बना हुआ है वही अगर बात करें भारत के निम्न सदन लोकसभा की तो उसकी वर्तमान कुल सदस्यता 542 में से मात्र 78 महिला सदस्य हैं अर्थात 15% भी पूरा नहीं है यह स्थिति अत्यंत गंभीर एवं अशोभनीय है इस स्थिति के पीछे अनेकों कारण उत्तरदाई हैं परंतु इस गंभीर स्थिति से जल्द से जल्द बाहर आने की आवश्यकता है अन्यथा लैंगिक समानता का उद्देश्य निरर्थक ही रह जाएगा।

मूल शब्द

राष्ट्रपिता, स्वराज, स्वाधीनता, लोकतंत्र, लैंगिक समानता।

उद्देश्य

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का आकलन करने के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. आजादी के समय राजनीति में महिलाओं की स्थिति क्या रही है?
2. लोकसभा में महिलाओं की भागीदारी का सांख्यिकी आकलन करना।
3. महिलाओ की राजनीतिक भागीदारी के प्रतिषत में आने वाली उतार–चढ़ाव के कारण।
4. राजनीति में महिलाओं का शैक्षिक स्तर क्या महत्वता रखता है।
5. भारतीय राजनीति में महिलाओं का अग्रसर होना सभी वर्गों के लिए प्रोत्साहन।

भारतीय राजनीति के संदर्भ में एक प्रश्न यह भी उठता है कि क्यों आज भी राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का अनुपात पुरुष वर्ग की अपेक्षा में न्यूनतम है. क्या कारण है इसके पीछे? यह संविधान में किए गए लैंगिक समानता के प्रावधान के बावजूद वैधानिक समिति और राजनीतिक सहभागिता के क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति काफी कम है आखिर क्यों राजनीति क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों के समान प्रोत्साहन अधिकार सम्मान व गौरव प्राप्त नहीं हो पाता है जो उन्हें अन्य क्षेत्रों में प्राप्त हो पाता है।

हाल ही के समय में विश्व भर में जहां अनेक अनेक राजनीतिक उन्नति हुई है उनमें सबसे महत्वपूर्ण प्रभावशाली विषय है विभिन्न राजनीतिक भूमिकाओं में महिलाओं की सहभागिता और प्रतिनिधित्व।

हम सभी जानते हैं कि हमारी आधी आबादी महिलाओं से बनती है परंतु संख्या की तुलना में हमारे भारतीय राजनीतिक तंत्र में यह प्रतिशत नहीं दिख पाता है अतः इस तथ्य के अनुसार यह कहना गलत नहीं होगा कि इस कारण आधी आबादी व्यवस्थित रूप से राजनीतिक भागीदारी प्रतिनिधित्व और निर्णय लेने से बाहर रह जाती है हर स्तर पर घर से लेकर सरकार के सबसे ऊंचे

स्तर पर महिलाओं को निर्णय लेने के अधिकार से अधिकतर दूर रखा गया है भारतीय चुनाव आयोग द्वारा दी गई रिपोर्ट के अनुसार संसद के कुल सदस्यों में से महिलाओं का प्रतिनिधित्व मात्र 10–5 प्रतिशत ही है. आज स्वतंत्रता के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी है यह प्रतिशत अत्यंत निराशाजनक है। ऐसा नहीं है कि भारतीय राजनीतिक दलों में महिला कार्यकर्ताओं की कमी है भारतीय राजनीतिक में महिलाओं के इस दयनीय प्रतिनिधित्व के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं।

सदियों से राजनीति में महिलाओं की भागीदारी सबसे ज्यादा प्रभावित हुई है भारतीय संसद के लोकसभा के परिप्रेक्ष्य में महिला सांसदों के प्रतिशत को नीचे दी हुई सारणी के अनुसार समझा जा सकता है।

सारणी – 01

क्र० सं०	वर्ष	महिला सांसदों की संख्या	महिला सांसदों का प्रतिशत
1	1951	22	4.50%
2	1957	22	4.45%
3	1962	31	6.28%
4	1967	29	5.58%
5	1971	28	5.41%
6	1977	19	3.51%
7	1980	28	5.29%
8	1984	43	7.95%
9	1989	29	5.48%
10	1991	39	7.30%
11	1996	40	7.37%
12	1998	43	7.92%
13	1999	49	9.02%
14	2004	45	8.29%
15	2009	59	10.87%
16	2014	66	12.15%
17	2019	78	14.6%

78 सीटों के साथ नई लोकसभा में महिलाओं का प्रतिशत 14.6% है। जो भारत की संसद के निम्न सदन में महिलाओं द्वारा प्राप्त की गई सबसे अधिक संख्या है यह परिणाम हालांकि मामूली है यह देखते हुए और भी उल्लेखनीय है कि महिलाओं ने कुल उम्मीदवारों का मुश्किल से 9% हिस्सा बनाया है जो 2014 की तुलना में 1.3% अंकों की मामूली प्रगति है।

आलेख – 01 विभिन्न लोकसभा में महिलाओं का प्रतिशत

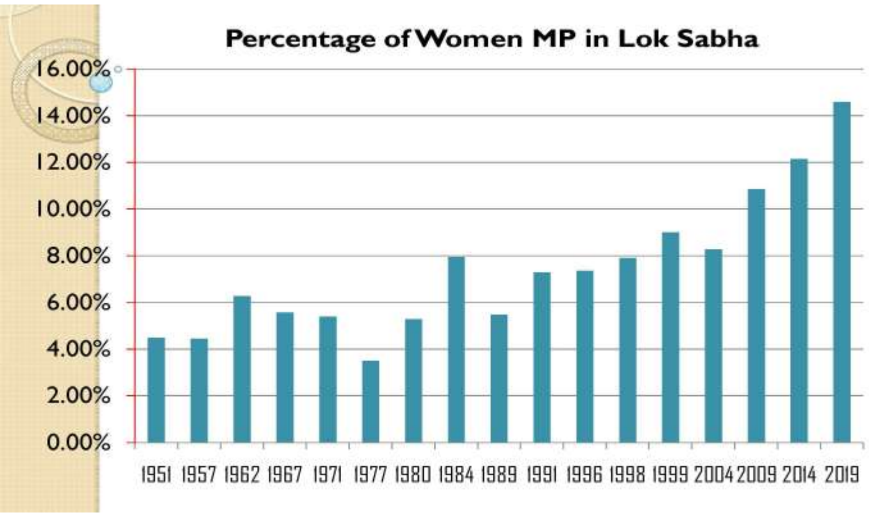

1951 में 4.5% से, महिला सांसद आज लोक सभा में 14.6% है। उल्लेखनीय अपवाद 1977 में 6वीं लोकसभा, 1989 में 9वीं लोकसभा और 2004 में 14वीं लोकसभा के दौरान संख्या में कमी रही है। यद्यपि 1991 से वर्तमान लोकसभा तक एक उल्लेखनीय और स्थिर वृद्धि दिखाते हैं।

परंतु आज भी लोकसभा बनाने वाली महिलाओं का प्रतिशत गर्व करने वाला आंकड़ा नहीं है खासकर तब जब आदर्श संख्या कम से कम 33% होनी चाहिए हमने अभी भी इस दयनीय स्थिति को सुधारने हेतु एक लंबा रास्ता तय करना है।

महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में विभिन्न बाधाएँ

भारतीय राजनीति में महिलाओं के इस दयनीय प्रतिनिधित्व के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं जैसे सदियों से चलती आ रही लिंग संबंधी रूढ़ियाँ राजनीतिक नेटवर्क की कमी वित्तीय तनाव संसाधनों की कमी और पारिवारिक समस्याएं आदि परंतु एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक जो राजनीति में महिलाओं की सहभागिता में बाधक है वह है देश के भीतर महिलाओं में राजनीतिक शिक्षा की कमी। हाल ही में 2020 मैं आई ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट के अनुसार भारत ने शिक्षा प्राप्ति के क्षेत्र में 153 देशों में से 112 स्थान प्राप्त किया है जिस से ज्ञात होता है कि राजनीतिक में महिलाओं की सहभागिता में शिक्षा की कमी एक अत्यंत गंभीर समस्या है. यह समस्या एक दीमक के समान हमारी भारतीय महिलाओं के विकास को खोखला करती आई है जिसका परिणाम हम महिलाओं के दयनीय राजनीतिक प्रतिनिधित्व के रूप में देख रहे हैं महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता शिक्षा से काफी प्रभावित हो रही है शैक्षिक संस्थानों में दी जाने वाली औपचारिक शिक्षा लोगों के नेतृत्व के अवसर और उनमें महत्वपूर्ण नेतृत्व क्षमता पैदा करती है राजनीतिक ज्ञान की कमी के कारण महिलाएं अपनी बुनियादी और राजनीतिक अधिकारों से बेखबर है परंतु हमारे देश की कई कुशल महिलाएं राजनीतिक वर्तमान में भारत की प्रथम महिला आदिवासी राष्ट्रपति जैसे भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भारत की पूर्व विदेश मंत्री स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी साथ ही भूतपूर्व रह चुकी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष एवं भारतीय राज्य की राज्यपाल सरोजिनी नायडू सभी महिलाएं एवं सभी वर्गों के लिए आदर्श है इन सभी की उपलब्धियां एवं इनका कठिन परिश्रम सभी के लिए आदर्श का प्रतीक है।

स्वतंत्रता के बाद से महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता का सांख्यिकी ऑकलन

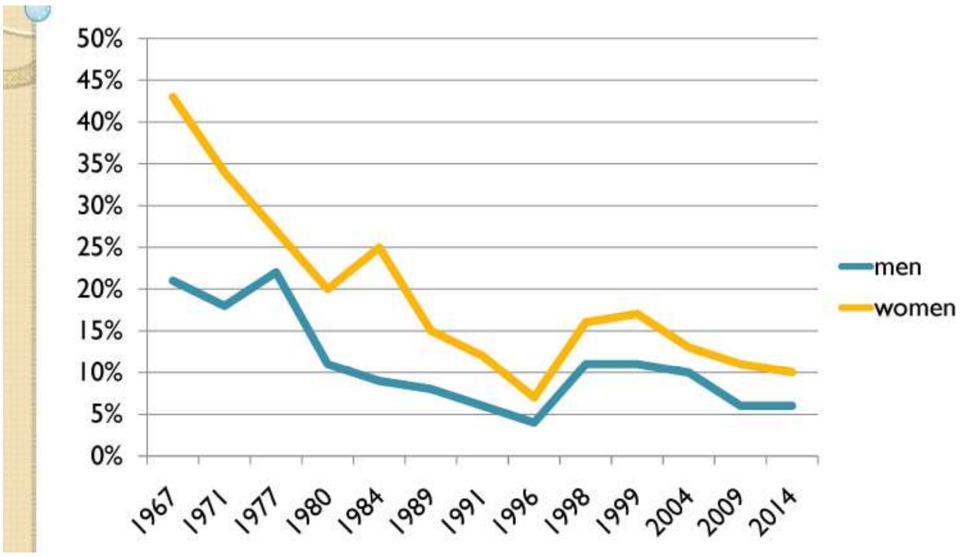

पुरुषों की तुलना में महिलाओं की सफलता दर

पिछले कुछ वर्षों में लगातार हर चुनाव में महिलाओं की सफलता दर पुरुषों की तुलना में अधिक रही है निम्नलिखित आंकड़ों के अनुसार स्थिति को दर्शाया गया है।

1971 पुरुषों के लिए सफलता दर 18% थी जबकि महिलाओं के लिए यह 34% थी जो पुरुषों की तुलना में दोगुनी है। अतः इस ग्राफ के द्वारा हम देख पा रहे हैं कि भले ही दर में वृद्धि के बजाय गिरावट आई हो परंतु महिलाओं की सफलता दर पुरुषों से अधिक ही रही है, इन आंकड़ों से हमको यह भी ज्ञात हो रहा है कि यदि महिलाओं को सही मानने में राजनीतिक क्षेत्र में अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया गया तो महिलाएं अपनी कर्म निष्ठा से भारत को और उज्जवल बनाने में अपना अति शोभनिय सहयोग देगी साथ ही भारतीय राजनीति में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने व केवल नीति निर्माण में महिलाओं और बच्चों की चिंताओं के बेहतर प्रतिनिधित्व की संभावना है बल्कि इससे उच्च आर्थिक विकास की भी संभावना है।

निष्कर्ष

देश स्वतंत्रता के 75 साल का जश्न मना रहा है सरकार की ओर से अमृत महोत्सव और हर घर तिरंगा जैसे कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है लेकिन इन सबके बीच आज भी हमारे आजाद देश में महिलाओं की आजादी सवालों के घेरे में हैं हालांकि इस महिलाओं ने कुछ उपलब्धियां भी हासिल की परंतु वह नाममात्र की दिखती है महिलाओं को अभी तक वर्षों पुरानी 33% आरक्षण की मांग को कानूनी रूप नहीं दिया गया है सन 1990 से लेकर अभी तक यह विधेयक सरकारी पन्नों में कहीं खो गया है। महिलाएं परिवार बनाती हैं परिवार घर बनाता है घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है इसका सीधा साधा अर्थ यही है कि महिला का योगदान हर जगह है महिला की क्षमता को नजरअंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है शिक्षा और महिला सशक्तिकरण

के बिना परिवार समाज और देश का विकास नहीं हो सकता है। भारत तो वह देश है जहां मां लक्ष्मी मां सरस्वती मां दुर्गा जैसी देवियों की आराधना की जाती है तो क्या ऐसे देश में महिलाओं के मनोबल को गिराना या उन्हें प्रोत्साहन ना देना सही है–

A woman with a book and a pen
has the power to man nations
A Women with a mind and a voice
has the power to change words

संदर्भ सूची

1. भारत के चुनाव आयोग की सांख्यिकीय रिपोर्ट से संकलित डेटा।
1. https://hindi.feminisminindia.com/
1. https://www.hindustantimes.com
1. https://www.orfonline.org.hindi/
1. https://www.drishtiias.com/hindi.com
6. (2011). राजनीति में महिलाओ का प्रतिनिधित्व. EPW. 54(18).
7. शर्मा, अशोक. (2015). ''भारतीय राजनीति में महिलाओ की भूमिका''।
8. शर्मा, प्रज्ञा. ''महिला विकास और सशक्तिकरण''।

19

अद्वितीय हठयोगी गोरक्षनाथ

विभा राघव
सहायक आचार्य
लक्ष्मण सिंह महर परिसर पिथौरागढ़

सारांश

श्रीमद् भगवदगीता के 18वें अध्याय के 61वें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेशित करते है कि "ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेर्जुन तिष्ठति।" अर्थात् ईश्वर सभी मानवों के हृदय प्रदेश में स्थित है। प्राचीन आचार्यों ने अपने जीवन काल में ही ईश्वरीय ज्ञान के प्राप्ति के बहुत से मार्ग प्रदर्शित किये है। उसी प्रकार आध्यात्मिक मार्ग प्रशस्थ करने के लिए अनेक योग मर्मज्ञ अवतरित हुए और उनके द्वारा योग की विभिन्न शाखाओं को प्रशस्त किया गया। इन शाखाओं में प्रमुख रूप से राजयोग, मंत्र योग, लययोग, हठयोग की शाखाऐ प्रसिद्ध है। राजयोग की साधना के द्वारा कैवल्य प्राप्ति का मार्ग प्रदर्शित करने हेतु आचार्य पतंजलि द्वार योगसूत्र की रचना की गयी। राजयोग प्रयाशः चित्त वृत्ति के निरोध से समाधि प्राप्त करने का उपदेश देता है तो वहीं हठयोग "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" (कु0 5.33) महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध वाक्य के अनुसार शरीर पोषण का उपदेश देता है।

हठयोग संप्रदायिक समस्त ग्रंथों में आचार्य गोरक्षनाथ का नाम दिखाई देता है। उनकी प्रसिद्धि ना केवल अखंड भारत में अपितु नेपाल, बलूचिस्तान इत्यादि विदेशों में भी सुनी जाती है। हिन्दू , बौद्ध, जैन, यवन इत्यादि विभिन्न धर्मावलम्बी जन उनकी प्रसिद्धि का उद्घोष करते है।

हठयोग परिचय

'हठ' शब्द की व्युत्पत्ति दो बीज मंत्र 'हं' और 'ठ' के योग से हुई है। बीज मंत्र 'हं' पिंगला नाडिका में प्रवाहित होने वाले सूर्य प्रभाव का द्योतक है। यह पिंगला नाडी शारीरिक क्रियाओं से सम्बंधित है, जो प्राण शक्ति का स्रोत है। इस प्रकार बीज मंत्र 'ठ' इड़ा नाडिका में प्रवाहित होने वाले चन्द्र प्रभाव को द्योतित करता है। यह इड़ा नाड़ी मानसिक शक्ति से सम्बंधित है। हकार अर्थात् पिंगला (सूर्य) और ठकार अर्थात् इड़ा (चन्द्र) इन दोनों नाड़ियों के मध्य योग के सन्तुलन को ही हठयोग कहा जाता है।

सिद्ध सिद्धांत संग्रह के अनुसार

"हकारः कीर्तितः सूर्यष्ठकारश्चन्द्र उच्यते।
सूर्याचन्द्रमसोर्योगात हठयोगो निगद्यते ।।"

इड़ा और पिंगला नाड़ियों को क्रमशः चन्द्र स्वर, बांया स्वर, गंगा तथा सूर्य स्वर, दांया स्वर, यमुना से भी जाना जाता है। कुण्डलिनी शक्ति का जागरण इस योग पद्धति में मुख्य है। इन दोनों स्वरों के सन्तुलन से सुषुम्ना स्वर का संचार होता है। सुषुम्ना नाड़ी ही अग्नि स्वर, मध्य स्वर, सरस्वती स्वर से अभिहित है। सुषुम्ना स्वर के करण ब्रह्म नाड़ी में प्राण का संचार होता है। ब्रह्म नाड़ी के आधार में कुण्डलिनी सुप्तावस्था में अवस्थित होती है, और प्राणायाम प्रक्रिया में स्वराघात से जागृत होती जाती है। साधक कई विशिष्ट सिद्धियों से फलीभूत होता अनुभव करता है। हठयोग प्रदीपिका में स्वामी स्वात्माराम कहते है की :–

"उद्घटयेत कपाट तु तथा कुन्चिकया हठात्।
कुण्डलिन्या तथा योगी मोक्षद्वाराम् विभेदयेत।।" (हठ यो0प्र0 3/101)

हठयोग ग्रंथों में योग के अंगों को लेकर मतभेद दिखाई देता है। पतंजलि योगसूत्र में राजयोग के आठ अंगों को बतलाया गया है वहीं हठ संप्रदाय के आचार्य गुरुगोरखनाथ यम, नियम को हटाकर केवल छः योगांग स्वीकार करते है। हठविद्या में इन्हें बाह्य अंग भी कहा जाता है। राजयोग में वर्णित धारणा–ध्यान–समाधि ये तीन अन्तरंग कहे जाते है। हठयोग का महत्त्व प्रतिपादित करते हुए स्वात्माराम अपनी 'हठयोगप्रदीपिका' में कहते है–

"हठं विना राजयोगः राजयोगम् विना हठः न सिद्धयति ....।"

हठयोग मुख्यतया शरीरपोषण, व्याधिनिवरण, आयुवर्धन इत्यादि उपायों को विषद रूप में प्रस्तुत करता है हठयोग के प्रमुख ग्रंथों में गोरक्ष संहिता, शिव संहिता, हठयोग प्रदीपिका, घेरंड संहिता, तथा हठ रत्नावली विशिष्ट ख्याति प्राप्त ग्रन्थ है। इस विद्या को व्यवहारिक रूप प्रदान करने का श्रेय गुरु मत्स्येन्द्र नाथ तथा गुरु गोरख नाथ को जाता है।

गोरक्षनाथ का परिचय

सुप्रसिद्ध योगाचार्य गोरक्षनाथ नाथ संप्रदायिक आचार्य है। परमेश्वर के साक्षात् अवतार के रूप में गोरक्षनाथ बहुत चर्चित है। उनके जन्म विषयक बहुत सारी चिरंजक कथा सम्पूर्ण भारत में सुनाई देती है। उनका नाम अनेक ग्रंथों में दिखाई देता है। उनके बहुत से अभिधान भी प्रचलित है यथा– गोरक्ष, गोरक्षनाथ, गोरकनाथ, गोरक्षपा, इत्यादि। इस सन्दर्भ में उनके नाम की शब्द व्युत्पति के विषय में कुछ बिंदु दृष्टव्य है –

1. "गोरक्षसिद्धांतसंग्रह" ग्रन्थ, श्री कृष्ण कृत राजगुह्य ग्रन्थ के गोरक्षनाथस्तोत्र को इंगित करता हुआ कहता है की –

   "गकारो गुणसंयुक्तो रकारो रूपलक्षणः।
   क्षकारेणाक्षयं ब्रह्म श्रीगोरक्ष नमोसतु ते"।। (पृष्ट सं0 37)

2. गोरक्ष इस पद की व्युत्पत्ति के विषय में एक कथा प्रसिद्ध है। कथानुसार गोरक्षनाथ का जन्म गो पुरीष से हुआ था। गोरक्षनाथ के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने संतान की अभिलाषिणी अनाथ कन्या को मंत्र पूरित भस्म दी, किन्तु उस स्त्री ने वह भस्म गो पुरीष में फेंक दी और गो पुरीष से एक बालक का जन्म हुआ। अनंतर वही बालक गोरक्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ। अतः गोरक्ष में गो पद धेनु का बोध करता है।

3. अनेक विद्वानों ने उनके जन्म स्थान निर्धारण के विषय में साहित्य सम्बंधित प्रमाण संकलन में अत्यंत परिश्रम किया है। मोहन सिंह ने अपनी पुस्तक "Goraknath and Mediaval Hindu Mysticism" (पृष्ट 17 –23) में जन्मोत्पत्ति विषयक डाटा सूची बद्ध किया है। उनके मतानुसार गोरक्षनाथ का जीवन काल 9–10 शताब्दी के मध्य था। मोहन सिंह बाबारतनयोगी महोदय के मत का अनुसरण करते हुए गोरक्ष नाथ को पेशावर प्रदेश का निवासी मानते है।

   एस.के.चटर्जी के मतानुसार इनका जन्मस्थल पंजाब प्रान्त था। कुछ विद्वान् झेलम प्रदेष के तिल्ला प्रान्त को इनका जन्म स्थल स्वीकार करते है।

4. गोरक्षनाथ का नाम संत कबीर और गुरु नानक के साथ लिया जाता है। संत कबीर और गुरु नानक ने गोरक्षनाथ के सिद्धांतों को अपने ग्रंथों में सादर प्रयुक्त किया है।

गोरक्षनाथ की कृतियाँ

गोरक्ष नाथ के ग्रन्थों का परिशीलन करने से स्पष्ट ज्ञात होता है की योग की हठ शाखा को भलीभांति सुव्यवस्थित किया है। गोरक्ष नाथ के संस्कृत भाषा में लिखे प्रायः 28 ग्रन्थों तथा हिंदी भाषा में लगभग 40 ग्रंथों से योग साहित्य समृद्ध है। पारंपरिक मतानुसार ए .के .बनर्जी ने आचार्य गोरक्षनाथकृत ग्रन्थों की सूची प्रस्तुत की है :–

1) गोरक्षनाथ
2) गोरक्षशतकं
3) सिद्धसिद्धांत पद्धतिः
4) योगसिद्धांत पद्धति
5) विवेकमार्तण्ड
6) योग मार्तण्ड
7) योग चिंतामणिः
8) अमनस्कयोगः
9) आत्मबोधः
10) गोरक्षसहस्त्रनाम
11) योगबीजः
12) अमरौघप्रबोधः
13) गोरक्षपिष्टिका
14) गोरक्षगीता

यौगिक शास्त्रों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आचार्य की प्रसिद्धि है यथा रसायनशास्त्र में 'मायागर' ज्योतिषशास्त्र में गोरखमाला, मराठी भाषा में अमरनाथसंवाद इत्यादि ।

अद्वितीय योगी गोरक्षनाथ के विविध कथाएं उनके मंदिर,उनके निर्देशानुसार निर्मित मठ, ग्रन्थ, एतिहासिक शिलालेख आचार्य की अमिट प्रसिद्धि प्रतिपादित करती है। प्रायः सम्पूर्ण उत्तरभारत में, महाराष्ट्र में, दक्षिण भारत के कुछ प्रान्तों में इनके संप्रदाय के अनुयायी है। गोरक्ष नाथ ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ गोरक्षसंहिता में अष्टांग योग से अतिरिक्त अनेक विषय वर्णित किये है यथा :–

1. शट्चक्र
2. दशनाडी
3. दशवायु
4. मुद्रा
5. प्राणवाभ्यास
6. नाड़ीशोधन प्राणायाम
7. जीव
8. कुण्डलिनी
9. हंस मन्त्र (अजपा गायत्री)

1. प्रणवाभ्यास

एकांत स्थल में पद्मासन में बैठ कर शरीर–शिर और कंठ को सामान करके नासाग्रे दृष्टि एकाग्र कर ओंकार का जप करना

चाहिए। अकार– उकार –मकार तीन मात्राओं से संयुक्त ओंकार साक्षाद् परमज्योति है। इसमें ही तीनों काल, तीनों मात्रा और तीनों देव स्थित है। इसमें ही क्रिया, इच्छा, ज्ञान तथा ब्राह्मी, रौद्री, वैष्णवी शक्तियां है। यह ओंकार परमज्योति स्वरूप है।

प्रणवाभ्यास का फल– वाणी से नित्य परमज्योति स्वरूप ओंकार का जप करना चाहिए, शरीर से उसका अभ्यास और मन से नित्य स्मरण करना चाहिए। गोरक्षनाथ गोरक्ष संहिता में स्पष्ट करते है की –

"शुचिर्वाप्य्शुचिर्वापि योजयेत्प्रणवं सदा।
न स लिप्यति पापेन पद्मपत्रमिवम्भसा।।" गो०स० (2/88)

अर्थात् शुद्ध अथवा अशुद्ध ये सारे भाव त्याग कर प्रणव मंत्र का जप करना चाहिए। जैसे पद्मपत्र जल के संपर्क से भी आद्रत्व प्राप्त नहीं करता उसी प्रकार नित्य ओंकार का जाप मनुष्य को अकार्मिक क्रियाओं में लिप्त नहीं होने देता।

2. नाड़ी शुद्धि

नाड़ी यह शब्द शरीर की उस प्रणाली का वाचक है जो की मस्तिष्क के तथा नाभि चक्रादि षड चक्रों की आधार इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाड़ियों के अंतर प्राणिक ऊर्जा के संचरण का निर्माण करती है। गोरक्ष संहिता में आचार्य गोरक्ष नाथ ने स्पष्ट किया है की प्राणायाम के अभ्यास के पूर्व नाड़ी शोधन का अभ्यास करना चाहिए। नाड़ी शुद्धि के प्रकार को इस प्रकार स्पष्ट किया –

"बद्धपद्मासने योगी प्राणम् चन्द्रेण पूरयेत।
धारयित्वा यथाशक्ति भूयः सूर्येण रेचयेत।। "(गो० स० 1/55)

बद्ध पद्मासन में स्थित होकर योगी वाम नासिका से वायु पूरित करे, यथा शक्ति कुम्भक करके तदन्तर दक्षिण नासिका से रेचक करे । यह प्राणायाम चंद्रांग प्राणायाम कहलाता है। यही प्रक्रिया दक्षिण नासिका से पूरक कुम्भक और रेचक करकर की जाती है तो सूर्यांग प्राणायाम कहलाती है। चंद्रांग प्राणायाम में कुम्भक में श्वेतचन्द्रबिम्ब के ध्यान से साधक सुखानुभूति करता है। सूर्यांग प्राणायाम में कुम्भक अवस्था में नाभि मंडल में दैदीप्यमान सूर्यमंडल का ध्यान से योगी सुख का अनुभव करता है।

नाड़ी शोधन का फल :– इस प्रकार सूर्य और चन्द्र विधि से अभ्यास करते हुए तीन मास से पूर्व ही साधक की नाडियां शुद्ध होने लगाती है। सभी नाड़ियों के शुद्धि करण के पश्चात योगी प्राण वायु के अधिक धारणा में समर्थ होने लगता है। जठराग्नि दीप्त होने लगती है। आरोग्य की प्राप्ति होती है और नाद स्पष्ट रूप से सुनाई देता है।

3. मुद्रा

हठयोग संप्रदाय में मुद्रा का मुख्य स्थान है। प्रायः हठयोग संप्रदाय में दश मुद्राएँ प्रसिद्ध है गोरक्ष संहिता में आचार्य ने आठ मुद्राओं का उल्लेख किया है।

1 महामुद्रा – इस मुद्रा में चिबुक (ठुड्डी) को हृदय पर भली प्रकार स्थापित कर, बाएं पैर से कंद (मल द्वार और जननांग के बीच का स्थान) को भलीभांति दबा कर दायें पैर को फैला कर हाथों से कस कर पकड़ें। दोनों फैफड़ों को स्वांस से पूरित करें, कुम्भक के पश्चात् शनैः शनैः रेचक। चंद्रांग से अभ्यास के बाद सूर्यांग से अभ्यास करना चाहिए। जब दोनों की सम संख्या तक अभ्यास हो जाये तभी मुद्रा का विसर्जन करना चाहिये।

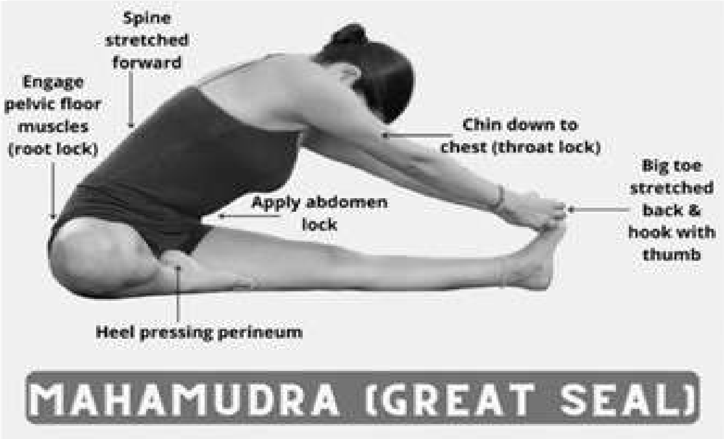
Spine stretched forward
Engage pelvic floor muscles (root lock)
Chin down to chest (throat lock)
Big toe stretched back & hook with thumb
Apply abdomen lock
Heel pressing perineum
MAHAMUDRA (GREAT SEAL)

महामुद्रा का फल :– महामुद्रा के अभ्यास से सभी रस नीरस हो जाते है। भयावह विष भी अमृत के सामान हो जाता है। क्षय, कुष्ट, गुदावर्त, गुल्म, अजीर्ण इत्यादि रोग नष्ट हो जाते है।

2. खेचरी मुद्रा – बद्ध पद्मासन में दृष्टि भौहों के मध्य स्थापित कर जिह्वा को तालु से सताते हुए रंध्र तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है। चित्त और जिह्वा के आकाश में स्थित होने के कारण ही यह खेचरी नाम से अभिहित होती है।

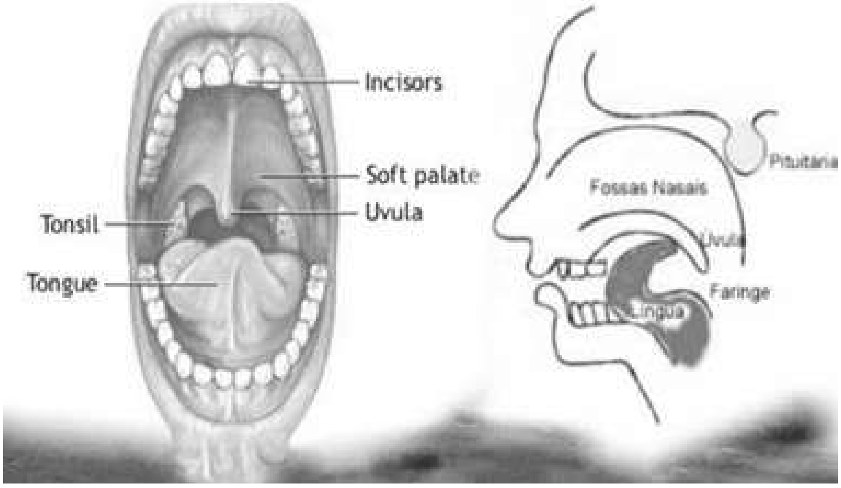
Incisors
Soft palate
Uvula
Tonsil
Tongue
Pituitaria
Fossas Nasais
Uvula
Faringe
Lingua

खेचरी मुद्रा का फल – मुद्रा के अभ्यास से रोगों से मरना असंभव सा हो जाता है। साधक निद्रा, क्षुधा, तृष्णा, मूर्छादि से मुक्त हो जाता है।

3. जालंधर बन्ध – इस बन्ध का स्थान कंठ होता है। कंठ को संकुचित कर वायु निरोध को ही जालंधर बन्ध कहते है। महाकाश से अनवरत अमृत की वर्षा होती है, और वह अमृत जठर में विद्यमान अग्नि में गिरता है। जालंधर बन्ध से उसका अधो पतन अवरुद्ध हो जाता है। तब साधक के द्वारा अमृतास्वदन अनुभव किया जाता है।

4. मूल बन्ध – इस बन्ध में पादमूल से योनी को संपीड्य गुदा को आकुंचित किया जाता है बलात् अपान वायु को ऊर्ध्वाकर्श्य, प्राणों से संयोजन ही मूल बन्ध होता है। इसके सतत अभ्यास से वृद्ध भी यौवनत्व को प्राप्त करता है।

5. विपरीतकरिणी मुद्रा – हमारे शरीर में नाभि मंडल में प्रज्वल सूर्य है और तालू मूल में चन्द्र विद्यमान है अधो मुखी यह चन्द्र अनवरत अमृत की वर्षा करता है। नाभिमंडल में विद्यमान सूर्य के द्वारा यह अमृत ग्रहण किया जाता है। अतः अग्नि के मुख से बचाकर योगियों के द्वारा नित्य ही इसका पान किया जाता है। आधुनिक समय में इसे ही शिरसासन के नाम से जाना जाता है।

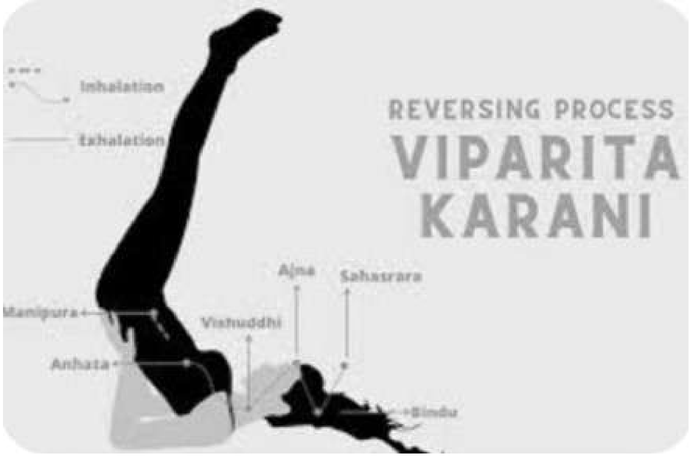
Inhalation
Exhalation
REVERSING PROCESS
VIPARITA
KARANI
Ajna
Sahasrara
Manipura
Vishuddhi
Anhata
Bindu

7. काकी मुद्रा – इस मुद्रा में काक के चंचु के समान मुख बनाकर वायु पान किया जाता है।

प्राण–अपान के विधान से साधक निर्जरत्व को प्राप्त करता है। तालू मूल में रसना के द्वारा जो साधक प्राणवायु का पान करता है वह सभी रोगों से विमुक्त हो जाता है।

8. शक्तिचालानी मुद्रा – हमारे देह में सर्वसिद्धिप्रदायिका कुण्डलिनी मोक्ष द्वार को अवरुद्ध कर सुषुप्तावस्था में रहती है। इस मुद्रा के अभ्यास से यह शक्ति जागृत हो जाती है। पद्मासन में हनु (चिबुक) को हृदय पर स्थापित कर ज्योतिरूप परब्रह्म का ध्यान करना चाहिए। पुनः पुनः अपान को ऊर्ध्वाकर्श्य प्राण से संयुज्य कुम्भक करके धीरे–धीरे छोड़ना चाहिए। इसके निरंतर अभ्यास से पराशक्ति कुण्डलिनी जागृत होती है।

उपसंहार

हठसंप्रदाय के अद्वितीय योगी गोरक्षनाथ ने अन्य यौगिक प्रसिद्ध ग्रन्थों में अविद्यमान कई यौगिक प्रक्रियाओं को साधकों के उपकार करने हेतु गोरक्ष संहिता में वर्णित किया है। हठ योग ग्रंथों में गोरक्ष नाथ विरचित गोरक्ष संहिता अति प्राचीन अद्वितीय

ग्रन्थ है। ग्रन्थ के प्रारंभ में ही आचार्यवर स्पष्ट करते है की योग संसार के ताप को नष्ट कर परमानन्द कारक है। इस ग्रन्थ का चरम लक्ष्य शारीरिक सौष्ठव नहीं अपितु आत्मदर्शन ही है। योग ही मुक्ति का सोपान और काल का भी वंचक है। इसके अभ्यास से मन भोगों से परांगमुखी हो कर परमात्मा में असक्त हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. श्रीमद्भागवत गीता. गीता प्रेसः गोरखपुर. 18/61.
2. कुमार, संभवं. महाकवि कालिदास।
3. सिद्ध सिद्धांत संग्रह।
4. स्वामी स्वात्माराम. हठयोग प्रदीपिका।
5. गोरक्ष सिद्धांत संग्रह।
6. सिंह, प्रो. मोहन. Goraknath and Mediaval Hindu Mysticism.
7. गोरक्ष संहिता।
8. यौगिक मुद्राओं के चित्र अंतरजाल से लिए गए है।

20

आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरण विमर्श

प्रवेश कुमार त्रिपाठी
शोध छात्र, हिन्दी विभाग
मेरठ कालेज, मेरठ

सारांश

मानव के विकास में यदि किसी ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनो रूपों से प्रभाव डाला है तो वह है प्रकृति और प्राकृतिक पर्यावरण। विकास वादियों का विचार है कि मानव की शरीर और चेतनता दोनों पर्यावरणीय सजीव एवं निर्जीव तत्वों के सम्मिलन का परिणाम हैं। जहां तक आत्मवादियों का विचार है वह केवल इतना मात्र स्वीकार करते हैं कि मानवीय भावनाओं और विचारों को परिष्कार का श्रेय प्रकृति एवं प्राकृतिक आवरणों के समुच्चय अर्थात् पर्यावरण को जाता है। औद्योगीकरण और महानगरीकरण के आधुनिक युग मे पर्यावरण की चिंता एवं उसको हितकर तथा स्वस्थ एवं स्वच्छ बनाये रखना अति महत्वपूर्ण है। आज पर्यावरण का विचार ही मानव का विचार है। अर्थात् पर्यावरण के प्रतिफलन से ही मानव की प्रकृति निर्मित होती है। भारतीय साहित्य में पर्यावरण चिंतन कोई नवीन विषय नही रहा है बल्कि पुरातन काल से पर्यावरण को साहित्य में जगह मिलती रही है। भारतीय संस्कृति में विभिन्न प्राकृतिक संशाधनों की देव रूप में उपासना मिलती रही है जो कि भारतीय मानस का पर्यावरण के प्रति सम्मान एवं जागरूकता का प्रतीक है।

मुख्य शब्द

पर्यावरण चिंतन, पर्यावरण विमर्श।

अध्यात्मवादियों के अनुसार यह सम्पूर्ण ब्रहाामाण्ड ईश्वर की रचना है और मनुष्य अपने द्वारा किये गये कर्मों का फल भोगने इस मृत्युलोक में आता है जिसके लिए सारी व्यवस्थायें और सुविधाऐं उसके भाग्य और कर्म के अनुसार पूर्व में निश्चित है किन्तु जैसे–जैसे विज्ञान एवं उसके मानवीय अनुप्रयोगों ने पैर पसारने शुरू किए और सभी धर्मों एवं आध्यात्मिक विचारों की भौतिकवादी व्याख्या होनी आरम्भ हुई तो मनुष्य की ईश्वर रूपी सर्वशक्ति की अवधारणा कमजोर पड़ने लगी। तत्पश्चात् मनुष्य फल प्राप्ति के लिए भाग्य कि अधीन नही रहा सका। बल्कि उसके कर्मो का महत्व अधिक हो गया। तब पृथ्वी, अग्नि, जल, आकाश, वायु आदि प्राकृतिक संसाधन से मानव जाति का परिचय केवल देवो के रूप में न होकर प्राकृतिक संसाधनों के रूप में हुआ जिन्हें स्वयं संरक्षण की आवश्यकता है।

सामान्यतः पर्यावरण मुख्य एवं सार्थक शब्दो (परि+आवरण) से मिलकर बना है जिसका अर्थ है चारो ओर से घिरा हुआ। अर्थात् हमारे आस–पास जो कुछ भी है भौतिक और प्राकृतिक सभी कुछ पर्यावरण का हिस्सा है। मानव की अति महत्वाकांक्षा के परिणाम स्वरूप ही प्रथम/द्वितीय विश्व युद्ध जैसी भीषण विभीषिकाएं विश्व के साथ–साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति को भी भोगनी पड़ी। प्रथम विश्व युद्ध का ही घातक परिणाम हुआ कि पृथ्वी सम्पूर्ण पृथ्वी जहां टुकड़ों में बंट गयी (वीजा प्रणाली का आरम्भ) तथा हिरोशिमा और नागासाकी के साथ पूरे विश्व का परमाणु हथियारों से भयानक परिचय प्राप्त हुआ। प्रथम विश्व युद्ध की विभीषिका का प्रचण्ड रूप द्वितीय विश्व युद्ध मे प्राप्त हुआ। इसके परिणाम मानव जाति एवं प्राकृतिक संसाधनों की जो क्षति हुई वह इतनी भयानक थी कि विश्व कि तमाम बुद्धजीवियों और राजनीतिज्ञों ने इस ओर चिंता जाहिर की और ''संयुक्त राष्ट्र संघ'' का गठन हुआ साथ ही साहित्य में अस्तित्ववाद का स्वरूप सामने आया। जिसमें सबसे अधिक महत्व मानव जीवन और उसके अस्तित्व को प्रदान किया गया है। इस विश्व के परिणाम स्वरूप विश्व कि अनेक देश आर्थिक विकास के लिए एक दूसरे से होड़ लेने लगे। 20वीं शदी से पहले अर्थव्यवस्था का आधार जहां कृषि भी वहीं 20वीं सदी में यह स्थान उद्योगों ने ले लिया। पूर्णरूप से उद्योगों पर आधारित अर्थव्यवस्था कि विकास के परिणाम स्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होना शुरू हुआ और अनेक अनावश्यक और अनिष्टकारी ससामनिक पदार्थों का उत्सर्जन भी जिस कारण प्राकृति की सम्पूर्ण प्राकृतिक व्यस्थायें और संसाधन छिन्न–भिन्न होने लगे। यह प्रभाव इतना धीमा था कि जब तक इसके कुप्रभाव सम्पूर्ण मानव जाति एवं ब्रहमाण्ड पर प्रकट होने आरम्भ नही हो गये

तब तक विश्व में इसके प्रति कोई जागृति का प्रयास नही किया गया। वर्तमान समय मे यह प्रभाव इतना व्यापक स्तर पर हुआ कि अब मानव और सम्पूर्ण जैव मण्डल इन कुप्रभावों को झेलने के लिए विवश है।

वर्तमान में उद्योगों ने न केवल कृषि भूमि पर कब्जा किया है खेती में उपयोग होने वाले रसायनों ने भूमि को जहरीली कर दिया है साथ ही हमारे आस–पास भी सब कुछ जहरीला हो गया है जिस कारण अनेक जीव–जन्तु पेड़–पौधे विलुप्त हो गये हैं और विलुप्त होने की स्थिति में हैं साथ ही अनेक बीमारियों से ग्रसित होकर जीवन जीने को मजबूर हो गये हैं। प्राकृतिक उपादानों का प्राकृतिक रूप भी बिगड़ गया है उद्योगों में रासायनिक विसर्जक औ रासायनिक धुआँ, वनों की कटान, बड़ी–बड़ी इमारतों का निर्माण यातायात के साधनों में तीव्र वृद्धि, उतराधुनिकता के अनावश्यक प्रभाव, अनावश्यक शोर, परमाणु संयंत्र, मशीनीकरण आदि के कारण प्राकृतिक ऋतु चक्र प्रायः पूर्णरूप से अस्त–व्यस्त हो गया है जिसके कारण कहीं अत्यधिक वर्षा बापद जैसी परिस्थती तो कहीं सूखा, कही भू–स्खलन, तो कही भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदायें इसी भयावह स्थिति का परिणाम है। प्रगति की राह पर लगातार अग्रसर रहने वाला विकासशील देश भारत भी पिछले कुछ वर्षों में इन विध्वसंक विभीषिकाओं से दो–चार हो चुका है। तीर्थस्थल केदारनाथ की त्रासदी हो, तमिलनाडु का चक्रवाह, सुनामी, हुद–हुद जैसी प्राकृतिक आपदाओं का समय–समय पर झकझोर कर रख देना इसी प्राकृतिक अस्त व्यस्तता का परिणाम है। वेमौसमी चक्रवाह, तूफान, आँधी, बाढ, सूखा रेगिस्तान का विस्ता, अम्लीय वर्षा, भूकम्प, भूस्खलन ग्लेशियर का पिघलना, भू–क्षरण, मृदा अपरदन, ओजोन परत का क्षरण, ग्लोबल वार्मिंग, जैव विविधता का क्षरण प्रदूषण, प्राणवायु में कार्बन तत्वों की वृद्धि आदि ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्यायें हैं जो किसी राष्ट्र की क्षेत्रीय सीमा में आने वाली नहीं है। इनका प्रभाव व्यापक स्तर पर सम्पूर्ण विश्व एवं प्रत्येक देशों में बड़े स्तर पर है। अर्थात इनका प्रभाव विश्व व्यापक है। साथ ही साथ कुछ देशों में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या भी प्राकृतिक अत्मवस्थाओं का प्रमुख कारण है।

भारतीय साहित्य में प्राकृतिक चिन्तन कोई नवीन वर्ण्य विषय नहीं रहा है बल्कि पुरातन काल से ही पर्यावरण को उचित स्थान मिलता रहा है। भारत में अध्यात्मिक एवं धार्मिक रूप में भी पर्यावरण एवं प्राकृतिक उपादानों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता रहा है। भारतीय धर्म एवं संस्कृति में भी विभिन्न प्राकृतिक संसाधनो को देव/देवी रूप में मान्यता प्रदान कर उपासना करना भारतीयों के मानस का पर्यावरण के सम्मान एवं जागरूकता का प्रतीक है।

मत्स्य पुराण में महर्षि वेदव्यास पर्यावरणीय धटकों के महत्व का वर्णन इस प्रकार करते हैं–

''दशकूप समो वापी, दशवापी समो हृदः।
दश हृद समो पुत्रः दश पुत्र समो द्रुमः।।

प्राकृतिक ऋतु चक्र का महत्व ऋग्वेद में इस प्रकार मिलता है–

''इमास्तते इन्द्र पृश्नमो घर्ष्त दुहत आशिरम।
एनामृतस्य पिप्युषोः। ''वही, पृष्ठ–9''

सामान्य रूप में इस संसार में मनुष्य का शरीर पंचम हाभूत (पांच तत्वों) से मिलकर बना है ऐसी मान्यता प्राचीन काल से हमारे सनातन धर्मों एवं पुराणों में है। अर्थात ऐसा कहा जा सकता है कि मनुष्य योनि में जन्म के आधार भूत मे पांच तत्व गर्भावस्था के दौरान ही मानव जीवन के अनिवार्य आधार के रूप में विद्यमान हो जाते हैं। इसी लिए इन तत्वों के अभाव मे मानव जीवन ही क्या सम्पूर्ण पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है।

इसी आधार पर ऐसा माना जा सकता है कि अगर पृथ्वी सभी जीवों का निवास स्थान है तो अग्नि, जल, वायु, समीर क्षिति आदि पंच महातत्व इस जीवन के आधार हैं।

तुलसीदास रामचरित मानस के किष्किन्धा काण्ड में इसी मत को तर्क पर आधारित करते हुए प्रमाणित करते है कि–

''छिति जल पावक गगन समीर।''
पंचतत्वमिलि बना शरीा।।

व्ही पृष्ठ संख्या–6

हिन्दी साहित्य के लेखन काल की अनवरत प्रवाहित होने वाली साहित्यिक काव्यधारा में 50 कि दशक में लगभग 40–45 के वर्षों को भारत के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के काल के रूप में माना जाता है। लगभग इसी समय 1943 के आस–पास अज्ञेय जी ने हिन्दी काव्य में प्रयोगवाद जैसी एक नई काव्य धारा का आगाज किया जिसमें सर्वथा से ही नवीन विषयों एवं नूतन प्रतिमानों का प्रयोग करके काव्य रचना करने का आगाज किया गया। काव्य साहित्य मे प्रयोगवाद के स्थापित होने के साथ–साथ तत्कालीन यथार्थ के प्रति साहित्य का जागरण भी होता है। यहीं वह उपयुक्त समय है जब कवि रहस्य के धुँऐ और कल्पनाश्रित आकाश को छोड़कर यथार्थ कि आइने में कविता को देखता है। विश्व में कवियों का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की यथार्थ स्थिति की तरफ आठवें दशक में जाता है जबकि प्रयोगवाद के प्रवर्तक अज्ञेय जी पर्यावरण के सम्बन्ध में अपनी अनुभूति एवं चिंतन का अंकुरण उससे कहीं पहले ही अभिव्यक्ति पाने लगता है। अपने पर्यावरण सम्बन्धी इसी चिंता को उन्होने अपनी कविता ''बन्धु है नदियां'' मे इस प्रकार से व्यक्त किया है।

''बन्धु हैं नदियां, प्रकृति भी बन्धु है।
और क्या जाने कदाचित बन्धु मानव भी।।''

प्रकृति द्वार प्रदत उपहार नदियों के विषय में सम्बन्धित कुछ ऐसी ही बातें आलोक धन्वा अपनी कविता 'नदियां' में इस प्रकार से करते हैः–

''इछामती और मेहाना
महानंदा
रावी और झेलम
गंगा गोदावरी
नर्मदा और घाघरा
नामलिते हुए भी तकलीफ होती है।
उनसे उतनी ही मुलाकात होती है
जितनी वे रास्ते में आ जाती है।
(कविता कोश)

उपर्युक्त कवियों में कवि मनुष्य और प्रकृति के बीच जो दूरियां बनी है उसी की तरफ इशारा कर रहा है। जहां पहले नदियाँ हमारे लिए माता के समान पूजनीय थी वहीं आज भौतिकता कि दौड़ में हम उनका शोषण कर रहे हैं। उसे गंदा कर रहे हैं। समकालीन कवि रविन्द्र स्वप्पिल 'प्रजापति' ने अपनी कविता मेरे गांव की नदी पर पुल'' में नदियों की दशा को आवाज के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

'कुछ दिनों बाद मैं शहर गया
नदी सूख गई भी और।
गांव उसके किनारे पर छांव
के लिए नही रूका।
पहाड़ में से एक सड़क गुजर गई
गांव की नदी पर एक पुल आ गया
मैं पहाड़ हूँ और नदी में देखता हूँ अपना चेहरा
नदी सूख गई सार पुल से निकल रहा है।
(परिकथा मई–जून 2010, पृष्ठ–50)

प्रकृति से की जाने वाली छेडछाड़ न केवल नदियों को दूषित कर, उनका दोहन करके उनके अविरल प्रवाह को अवरूद्ध कर रही है बल्कि मानव जीवन के सतत प्रवाह को भी अवरूद्ध कर देती है। भले ही इसका परिणामी दूरगामी होता है। मानव जाति को वास्तविक सुख एवं जीवन का आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है ज बवह प्रकृति से तादाल्य स्मापित कर एक दूसरे सहचर के रूप में जीवन विताऐ। अज्ञेय अपनी कविता ''नन्दादेवी'' में इसी तादात्मय के महत्व की ओर संकेत करते है।

''नन्दा
बीस–टीस–पचास वर्षों में
तुम्हारी वन संम्पतियों को हम युगदी बना कर उस पर
अखबार छाप चुके होगे''
तुम्हारे सन्नाटे को चीड़ रहे होगे'
हमारे धुंध आतेत शक्तिमान टूक
तुम्हारा आकाश हो चुका होगा।
हमारे अति स्वप्न विमानों के
धूम–सूत्रों का गुंजर।
अज्ञेय (नन्दादेवी कविता)

पर्यावरण सुरक्षा की जब बात आती है तो उसमें सबसे बड़ी बिडम्बना यही है कि हम केवल वर्तमान में जी रहे है। धन सम्पति के लिए तो एक दूसरे से होड़ लेकर जमा करते है लेकिन प्राकृतिक संसाधनों के बचाव पर प्रश्न नही किया जाता है। हमारी आने वाली पीढ़ी तभी सुखी रह पाएगी जब भौतिक सुख साधनों के साथ उसे स्वच्छ वायु, जल रहने लायक स्वच्छ जमीन और वातावरण उपलब्ध हो पायेगा। इसी संभावना को उजागर करते हुए कैलाश वाजपेयी की कविता भविष्य 'घट रहा है मे कहते है'

समृद्धि के अकाल में
अस्ति से परास्त तक
विभव ग्रसित आदमी
एक–एक कर फेंककर
सारी सम्प्रदा
क्या पृथ्वी भी फेंक देगा?

वस्तुतः बाजपेयी जी की यह चिन्ता एवं प्रश्न दोनो ही समय के सापेक्ष एवं लाजिम है। वृक्ष पृथ्वी का जीवन आधार है। ऋतु चक्र का संतुलन स्मायी रहना वृक्षो के ही कारण सम्भव है। वृक्षो कि इसी महत्व को अपहर हाशमी की कविता ''वृक्षोकं का वास रहने दें' में बताते है–

वन में वृक्षों का वास रहने दे।
झील झरनों में सांस रहने दें।
वृक्षों पर घोसला है चिड़िया का तोड़ यह निवास रहने दे।
वन विलक्षण विद्या है कुदरत का,
इस अमानत को पास रहने दे।

लेकिन आज हम वनों का महत्व एक अबोध बालक की भांति भूलकर उनका अनैतिक कटान करते जा रहे है। समकालीन कवि राजेश जोशी की कविता ''पेड क्या करता है'' मानव जाति की इसी नादानी ओर संकेत करते है।

आधुनिक हिंदी कविता में पर्यावरण को लेकर प्राचीन काल से वर्तमान तक अनेक कवियों ने अपने विचारों के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की है। इनमें विशेष रूप से आधुनिक कलमकारों आलोक धन्वा समकालीन कवियत्री ज्योतिकिरण की रचना ''पानी'' कुमार अनुपम की कविता ''समुद्री मछुवारों का गीत'' अरूण कमल की कविता नए इलाके'' प्रगतिवादी एवं प्रयोग वादी कवियों में मुकुटधर पाण्डेय की रचना 'प्रकृति प्रेम'' सोहनलाल द्विवेदी की रचना प्रकृति संदेश, ज्ञानेन्द्रपति की कविता 'व्यथा'' जनकवि नचिकेता की रचना ''पर्यावरण प्रदूषण'' एवं ज्ञानेन्द्रपति की कविता बियर में बचे बर्फीले भालू'[8] कवित अज्ञेय की कविता 'नन्दादेवी'' के साथ ही आधुनिक समकालीन कवि डा0 कैलाश वाजपेयी की कविता 'भविष्य घट रहा है।'' आदि में 'पर्यावरण कि प्रति उद्‌गार प्रकट हुआ है।

निष्कर्षः

इस प्रकार उपर्युक्त विचारों एवं अभिव्यक्तियों के आधार पर हम कह सकते है कि आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरण के प्रति मुख्य रूप से एवं प्रभावी रूप से चिन्ता प्रकट की गयी है। आधुनिक हिन्दी काव्य रचनाकारों न केवल किसी रमणी के किशों में खाये नही रहे ना ही किसी धारा के तट पर बैठकर केवल उसका सौन्दर्य निहारते रहे, ना ही तितलियों के पीछे भागते रहे और ना केवल चांद एवं चांदनी के श्रृंगार` मतवाले बने रहे और न केवल बिरही के विरह में जले।

बल्कि सामाजिक सरोकारों से साक्षात्कार करते हुए उनके प्रति अपना उत्तरदायित्व भी निर्वाह करते हैं और नही हिंदी कविता की श्रेष्ठता और विशेषता है।

आधुनिक हिन्दी कविता एवं कवियों की अभिव्यक्ति साहित्य में पर्यावरण के प्रति चिंता को व्यक्त करने में अग्रसर रहा है। अनादिकाल से प्राकृतिक सम्पदा के महत्व मानवीय जीवन की निर्भरता साथ ही औद्योगिक विकास एवं भौतिक प्रगति के कारकण उनके जीवन के साथ–साथ जंगल, जमीन, पानी, प्राकृतिक उपमानों आदि पर पड़ने वाले प्रभावों को प्रमुखता से वर्ण्य विषय के रूप में अपनाकर अपनी पर्यावरण के प्रति चिंता जगजाहिर की है।

संदर्भ सूची

1. देव, डॉ. दया. वेदों में पर्यावरण. पृष्ठ **7.**
2. वहीं. पृष्ठ **9.**
3. वहीं. पृष्ठ **6.**

4. दास, सन्त तुलसी. किष्किन्धाकाण्ड. रामचरित मानस. पृष्ठ **173.**
5. धन्वा, डॉ. आलोक. कविता कोश. नदियॉ 'कविता'।
6. श्रीशंकर. (2010). परिकथा पत्रिका. मई–जून. संस्करण. पृष्ठ **50.**
7. (2010). ज्योतिकिरण परिकथा पत्रिका. मई–जून. संस्करण. पृष्ठ **79.**
8. नचिकेता, प्रज्ञा. (2009–2010). पत्रिका. पर्यावरण विशेषांक. अंक–55. भाग–दो. पृष्ठ **43.**
9. (2011). ''हो संतुलित पर्यावरण अपना कविता''. हिन्दी युग्म पत्रिका. शीर्षक लेख।
10. तिवारी, डॉ. जनार्दन. (1997). भारतीय काव्य शासत्र तमा निबंध. भवदीय प्रकाशन. पृष्ठ **289.**
11. वही. पृष्ठ **291.**
12. वही. पृष्ठ **218.**
13. श्रीवास्तव, राजेन्द्र प्रसाद. (1970). हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास. भवदीय प्रकाशन. प्रथम संस्करण. पृष्ठ **13.**
14. वही. पृष्ठ **23.**
15. वही. पृष्ठ **34.**

21

उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे वर्धा शहर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० नरेन्द्र कुमार पाल
सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र

प्रफुल गोपालराव गजभिये
शोधार्थी, मनोविज्ञान विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र

सारांश

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत वर्धा शहर के उच्च शिक्षा मे अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य एवं स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध उद्देश्यः स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना, परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना, स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत प्रश्नावली विधि का उपयोग करते हुए, स्नातक तथा परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राएं इस शोध में उत्तरदाता के रूप में लिए गए है। शोध में कुल 100 छात्र लिए है जिसमें 50 छात्र स्नातक स्तर के है जिसके अंतर्गत 25 परुष और 25 महिलाएं शामिल है। इसी तरह 50 छात्र परास्नातक स्तर के है जिसके अंतर्गत 25 पुरुष और 25 महिलाएं शामिल है। अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने न्यादर्श चयन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्श का प्रयोग किया है।

मुख्य शब्द

उच्च शिक्षा, चिंता का स्तर।

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने से पूर्व छात्रों में चिंता की शुरुआत होती है और प्रवेश लेने के उपरांत उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जब वे जाते है तो छात्रों को काफी बातों को लेकर चिंता बनी रहती है। छात्र कुछ ऐसे उद्दीपक को अपने मन में बैठा लेते हैं जिनसे सामना होने के पूर्व ही वे चिंतित रहते हैं। शुरुआत में छात्रों के लिए नया परिसर, नये मित्र, नये सहपाठी एवं नया पाठ्यक्रम और नया अध्यापक वर्ग उनके समक्ष होता है। जिससे वे अपरिचित होते है। इन सभी बातों से समायोजन कर पाना शुरवाती दिनों में विद्यार्थियों के लिए कठनाईपूर्ण होता है। काफी चीजों की असुविधा छात्रों को होती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप छात्रों में पढ़ाई की रुचि कम रहती है। विद्यार्थियों का ध्यान पढ़ाई में न होकर अक्सर कही ओर होता है। अध्यापक द्वारा उन्हें सवाल किए जाने पर वे रक्षात्मक युक्ति का उपयोग करते है। दिन प्रतिदिन के अपने प्रदर्शन से छात्र नाखुश रहने लगते है जिससे चिंता बढ़ने लगती है। कारणवश पढ़ाई नहीं हो पाती है जिससे परीक्षा परिणाम पर नकारात्मक प्रभाव दिखाता है। आत्म सम्मान की चिंता के साथ ही भविष्य की चिंता भी छात्रों के मन में पनपने लगती है। जिन विद्यार्थियों में चिंता अधिक होती है उसका का प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर दिखाई देता है। इस शोध में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर की तुलना प्रस्तुत की गई है।

समस्या कथन

"उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे वर्धा शहर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध प्रश्न

(1) स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता का स्तर क्या होगा ?
(2) परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का स्तर क्या होगा ?
(3) स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर क्या होगा ?

शोध के उद्देश्य

(1) स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना ।
(2) परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना ।
(3) स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पना

1. स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है।
3. स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत प्रश्नावली विधि का उपयोग किया है। यह एक प्रतिबंधित प्रश्नावली है जिसके अंतर्गत समस्या कथन पूछे गए है उसके उत्तर बंधित है। उत्तरदाता को जो पर्याय में उत्तर दिया गया है उसी में से एक उत्तर का चयन करना है। प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 पर्याय रखे गए है। और यह प्रश्नावली ऑनलाइन माध्यम से साझा की गई है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत जनसंख्या के तौर पर महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ प्रांत से वर्धा शहर में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे स्नातक एवं परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत शोधकर्ता द्वारा अपने लघुशोध के लिए महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में स्थित वर्धा शहर के उच्च शिक्षा संस्थानों के अंतर्गत कुम्भलकर कॉलेज ऑफ सोशल वर्क, यशवंत कॉलेज, आर्ट–कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज वर्धा और जी.एस कॉलेज ऑफ कॉमर्स वर्धा से न्यादर्श का चयन किया गया है। उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक तथा परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राएं इस शोध में उत्तरदाता के रूप में लिए गए है। शोध में कुल 100 छात्र लिए है जिसमें 50 छात्र स्नातक स्तर के है जिसके अंतर्गत 25 परुश और 25 महिलाएं शामिल है। इसी तरह 50 छात्र परास्नातक स्तर के है जिसके अंतर्गत 25 पुरुष और 25 महिलाएं शामिल है। अनुसंधानकर्ता द्वारा अपने न्यादर्श चयन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्श का प्रयोग किया है।

शोध की सीमाएँ

यह शोध वर्धा शहर में अध्ययनरत उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र एवं छात्राओं तक सीमित है। उच्च शिक्षा के अंतर्गत केवल स्नातक एवं परास्नातक स्तर के छात्र तक ही सीमित है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्व निर्मित चिंता मापनी का उपयोग किया गया है। यह एक 5 बिंदु मापनी है। इस मापनी में कुल 25 समस्या कथन है, जिसमें सभी प्रश्न के लिए 5 उत्तर चयन के लिए दिए गए है। इस मापनी में पूर्णतः असहमत, असहमत, अनिश्चित और सहमत, पूर्णतः सहमत यह 5 बिंदु दिए गए है।

मापनी में ऐसे प्रश्नों का निर्मान किया गया है जिसमें छात्रों में चिंता उत्पन्न होने के कारण दिए है तथा वे किस बिंदु का चयन करते है उसपर उत्तरदाता का चिंता स्तर अंकन किया गया है, तथा उस प्रश्न को लेकर उनकी क्या प्रतिक्रिया है उसका मापन किया गया है। प्राप्त प्राप्तांकों की गणना करके मध्यमान से उनकी श्रेणी निम्न प्रकार से बनाई गई है:

सारणी – 1

उच्च स्तर की चिंता	76.00 – 100 +
मध्यम स्तर की चिंता	50.00 – 75.00
निम्न स्तर की चिंता	25.00 – 49.00

फलांकन प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत प्रदतों का संकलन ऑनलाइन माध्यम से फॉर्म में प्रश्न को स्थित करके किया गया है। जिसमें ऐसे प्रश्न बनाएं गए थे जिसपर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र अपनी चिंता प्रतिक्रिया की तीव्रता 5 बिंदु के चयन से प्रकट करेंगे। इन 5 बिंदु को 1, 2, 3, 4, 5 अंक दिए गए है वह निम्न प्रकार से तालिका में प्रदर्शित किया है।

सारणी – 2

पूर्णतः असहमत	असहमत	अनिश्चित	सहमत	पूर्णतः सहमत
1	2	3	4	5

स्त्रोत – स्वतः सर्वेक्षण

प्रदतों की विश्लेषण प्रक्रिया

प्रतिदर्श छात्रों से प्राप्त आंकड़ो की गणना करके उनका मध्यमान निकालकर चिंता स्तर ज्ञात किया गया है। समूह में तुलना करने के लिए टी– टेस्ट का उपयोग किया गया है। चिंता स्तर मापन 25.00 से 50.00 तक का मध्यमान निम्न श्रेणी में आता है, और 50.00 से 74.00 मध्यम चिंता स्तर एवं 75 से ऊपर प्राप्त आंकड़े उच्च चिंता स्तर के अंतर्गत रखे गए है।

स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर अध्ययन

स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के अध्ययन के अंतर्गत प्रश्नावली से प्राप्त प्राप्तांकों की तुलना निम्नानुसार है । जो परिकल्पना –1 स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है को स्पष्ट करती है ।

सारणी – 3 स्नातक छात्र एवं छात्राओं के चिंता स्तर के प्राप्तांको की तूलना

स्नातक विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T–मूल्य	सार्थक/असार्थक
छात्र	25	80.28	17.90	0.1919	असार्थक
छात्राएँ	25	79.36	15.94		

स्त्रोत – स्वतः सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है की स्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान 80.28 एवं 79.28 प्राप्त हुए है। दोनों के मानक विचलन 17.90 एवं 15.94 के मध्य t–मूल्य 0.1919 है। जो सारणी मूल्य के 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात परिकिल्पना –1 का स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त सारणी के प्राप्तांकों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है की स्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर में कोई अंतर नहीं है।

परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन

पारास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के अध्ययन के अंतर्गत प्रश्नावली से प्राप्त प्राप्तांकों की तुलना निम्नानुसार है। जो परिकल्पना –2 परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है को स्पष्ट करती है।

सारणी – 4 परास्नातक छात्र एवं छात्राओं के चिंता स्तर के प्राप्तांको की तूलना

परास्नातक विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T– मूल्य	सार्थक/असार्थक
छात्र	25	74.24	16.16	– 1.77	असार्थक
छात्राएँ	25	82.36	16.22		

स्त्रोत – स्वतः सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है की परास्नातक स्तर में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के मध्यमान 74.24 एवं 82.36 प्राप्त हुए है। दोनों के मानक विचलन 16.16 एवं 16.22के मध्य t–मूल्य –1.77 है। जो सारणी मूल्य के 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात परिकल्पना –2 का स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त सारणी के प्राप्तांकों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है की परास्नातक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य चिंता स्तर में कोई अंतर नहीं है।

स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर का अध्ययन

उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर के अध्ययन के अंतर्गत प्रश्नावली से प्राप्त प्राप्तांकों की तुलना निम्नानुसार है। जो परिकल्पना –3 स्नातक एवं परास्नातक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर के प्राप्तांकों में सार्थक अंतर नहीं है को स्पष्ट करती है।

सारणी – 5 स्नातक और परास्नातक विद्यार्थियों के चिंता स्तर के प्राप्तांकों की तुलना

उच्च शिक्षा श्रेणी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T– मूल्य	सार्थक/असार्थक
स्नातक	50	79.82	16.95	0.45	असार्थक
परास्नातक	50	78.30	16.69		

स्त्रोत – स्वतः सर्वेक्षण

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है की उच्च शिक्षा में अध्ययनरत स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों के मध्यमान 79.82 एवं 78.3 प्राप्त हुए है। दोनों के मानक विचलन 16.95 एवं 16.69 के मध्य t–मूल्य –0.45 है। जो सारणी मूल्य के 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अर्थात परिकल्पना –3 का स्वीकार किया जाता है। उपरोक्त सारणी के प्राप्तांकों के

विश्लेषण से स्पष्ट होता है की उच्च शिक्षा प्राप्त स्नातक एवं परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य चिंता स्तर में कोई अंतर नहीं है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्राप्तांकों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है की छात्र पढ़ने के लिए जाते है वहाँ का परिसर उनके लिए पूर्णतः नया होता है, छात्रावास में किसी अनजान छात्र के साथ एक रूम में रहना पड़ता है, काफी जरूरत की चीजों में समायोजन करना पड़ता। कभी कभी समायोजन न कर पाने से उनकी पढ़ाई सही से नहीं हो पाती है। जिससे छात्र के लिए चिंता उत्पन्न होती है। नई भाषा का अध्ययन छात्रों में चिंता का कारण बनता है, उच्च शिक्षा संस्थानों में अधिकांश छात्र अंग्रेजी को विदेशी भाषा या दूसरी भाषा के रूप में पढ़ना पढ़ते हैं। अगर छात्र को हिन्दी आती है पर अंग्रेजी नहीं तो यह छात्र के लिए चिंता का विषय बनता है। जब छात्रों को अपने पाठ्यक्रम को समझने में कठिनाई होती है तो काफी समस्याएं आती है, जैसे असाइनमेंट करने और शोध पत्र या रिपोर्ट लिखने के लिए कठिनाई का अनुभव करते है। कुछ छात्र प्रशिक्षकों से मदद मांगने में संकोच कर सकते हैं, इसलिए वे चिंतित हो जाते हैं क्योंकि वे पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं। कुछ कठिन पाठ्यक्रमों में गणित, सांख्यिकी जैसे विषय छात्रों में चिंता उत्पन्न करते है। जब छात्र परीक्षा की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते है और परीक्षा देने के लिए तैयार नही रहते है, तो अक्सर वे चिंता अनुभव करते है। जिसके कारण कुछ छात्र परीक्षा के प्रश्नों को नहीं समझ सकते हैं और परिणामस्वरूप गलत उत्तर लिखते हैं। कभी–कभी परीक्षा के सवालों के जवाब देने के लिए पर्याप्त समयनहीं होता है। सेमिस्टर अनुउत्तीर्ण होने से पुनः परीक्षा देना पड़ेगा, इन सब से छात्रों में चिंता उत्पन्न होती है। छात्रों को पढ़ाई करने के लिए धन की काफी आवश्यकता पड़ती है। छात्रों को भोजन और परिवहन जैसे दैनिक खर्चों के लिए धन की आवश्यकता होती है। कुछ पढ़ाई की सामग्री खरीदने के लिए भी पैसों की कमी उन्हे खलती है। जब छात्रों को लगता है कि उनके पास पर्याप्त पैसा नहीं है तो छात्रों में तनाव और चिंता निर्माण होती है। छात्र अपने घर से काफी दूर रहता है तथा अपना कोई पास न होने से उसे खुद के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहती है और अपने परिवार के स्वास्थ्य की भी छात्र चिंता करता है। छात्र को भविष्य की चिंता काफी लगी रहती है, उन्हे नोकरी मिलेगी या नहीं वे जो पढ़ाई कर रहे है उसी क्षेत्र में आगे जा पाएंगे या नहीं यह चिंता बनी रहती है। उपरोक्त विषयों के लेके स्नातक एवं परास्नातक छात्र एवं छात्राओं में चिंता का स्तर स्पष्ट प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, ए.के. (2018). उच्चतर नैदानिक मनोविज्ञान. मोतीलाल बंसीदासः दिल्ली।
2. विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष के छात्रों में चिंता और तनाव. https%//ir-lib-uwo-ca/cgi/viewcontent-cgi\article¾1015&conteÛt¾brescia_psych_uht से।
3. परीक्षा का तनाव और चिंताः कॉलेज के छात्रों का एक अध्ययन. Ahttps%//www-researchgate-net/publication/271873210_EXAMINATION_STRESS_AND_ANXIETY_A_STUDY_OF_COLLEGE_STUDENTS.
4. उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्र चिंता का अनुभव करते हैं. https%//www-intechopen-com/chapters/71699.
5. सऊदी अरब में कोविड–19 के दौरान विश्वविद्यालय के छात्रों की चिंता का स्तर. https%//www-frontiersin-org/articles/10-3389/fpsyt-2020-579750/full.
6. जैन, जे., कुमारी, ए. (2018). ग्लोबल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज परीक्षा तनाव और चिंताः कॉलेज के छात्रों का एक अध्ययन. 12 मार्च. https%//www-academia-edu/36136778/Global_Journal_of_Multidi scipline_Studies_EXAMINATION_STRESS_AND_ANXIETY_A_STUDY_OF_COLLEGE_ STUDENTS. से।
7. चिंता और परीक्षा के तनाव के संबंध में कॉलेज के छात्रों के एक अध्ययन ने मन की पत्रिकाओं को प्रज्वलित कर दिया. http://ignited-in/a/4758 से।

22

गांधी दर्शन एवं समसामयिक विश्व में उसकी उपादेयता

डॉ० नूर हसन
असिस्टेंट प्रोफेसर. इतिहास विभाग
शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोईवाला, देहारादून

सारांश

महात्मा गांधी के विचार, दर्शन और सन्देश की उपादेयता वर्तमान युग के लिए बहुत सार्थक और महत्व पूर्ण हैं, अर्थात यह वें धनात्मक तत्त्व हैं, जोकि आधुनिक सभ्यता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। स्थायी मान्यताएँ जैसे स्व से पूर्व सेवा, संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिन्ता, बहुत तेजी से समाप्त होती जा रही हैं और उनका स्थान स्वार्थपरता, लालच, अवसरवाद, धोखा, चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सबने द्वन्द्वों और संघर्षों को जन्म दिया है जिस कारण सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण के लिए अनन्त होड़ लगी हुई है। युद्ध के विनाशकारी शस्त्र मानव जाति के अस्तित्व के लिए ही खतरा बने हुए हैं। बड़े पैमाने पर विनाश की नित नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है। कानून की सभी प्रणालियों, करारों, सन्धियों एवं गठबन्धनों को मानवीय मेल–जोल और शान्ति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली है। इस प्रकार के वातावरण में गांधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है गांधीजी के मूल्य एवं सिद्धान्त, आदर्श और उपदेश मानवता को आन्तरिक एवं वाह्य अमर शान्ति की मंजिल तक पहुँचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द

कर्म दर्शन, सत्य, अस्तेय, अहिंसा, सत्याग्रह, सहिष्णुता, अपरिग्रह।

प्रस्तावना

गांधी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है, बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल एवं जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है, जिनको गांधीजी ने उजागर किया था, परंतु यह भारतीय संस्कृति में पूर्व से ही विद्यमान है तथा सार्वभौमिक नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है, गांधी जी द्वारा इन विचारधाराओं को जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन, आदि से प्राप्त किया था। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दि लास्ट' *(Unto* This *Last)* से सर्वोदय के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा। महात्मा गाँधी सर्व समाज हेतु परोपकारिता एवं सहिष्णुता के पक्षधर थे, उनका कहना था कि सीमंतक अर्थात उपेक्षित व गरीब लोगों के लिए सामाजिक कल्याण की रणनीति बननी चाहिए। गांधीजी का मानना था की सुखी संपन्न लोग अपना कर्तव्य समझकर दुखी–दरिद्रों के लिए अपने कल्याण कार्यों से पहचान बनाए, ऐसे लोग समाज के निम्न वर्ग के लिए कुछ करें। ऐसे व्यक्ति जो संस्था या आश्रम लोगों से सहायता पाने का दावा करते हो उनका लक्ष्य भौतिक व सांसारिक होना चाहिए जैसे कोई अस्पताल पाठशाला या खादी या कताई का कार्य करें, हरसंभव सर्वसाधारण की सहायता की जाए। गाँधी दर्शन के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण प्रस्तुत शोध पत्रों में निम्नांकित प्रकार से किया गया है –

1. कर्म दर्शन

कर्म का अर्थ बताते हुए गांधीजी ने कर्म का व्यापक अर्थ बताया है अर्थात शारीरिक, मानसिक और आत्मिक। ऐसे कर्म के बिना यज्ञ नहीं हो सकता। यज्ञ बिना मोक्ष नहीं प्राप्त होता। इस प्रकार जानना और तदनुसार आचरण करना इसका नाम यज्ञों को जानना है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य अपने शरीर बुद्धि और आत्मा को प्रभुप्रीत्यर्थ लोक सेवार्थ काम में ना लाए तो वह चोर ठहरता है और मोक्ष के योग्य नहीं बन सकता। केवल बुद्धि शक्ति को ही काम में लावे और शरीर तथा आत्मा को चुरावे तो वह पूरा याज्ञिक नहीं है। इन शक्तियों को प्राप्त किए बिना उसका परोपकारार्थ उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए आत्मशुद्धि के बिना लोक सेवा

असंभव है।[1] कर्म की अनिवार्यता बतलाते या सिद्ध करते हुए गांधी जी ने भागवत गीता के तर्कों को पेश किया है की कर्म के बिना शरीर यात्रा जीवन गति भी नहीं चल सकती। सिद्ध से सिद्ध महापुरुष तथा परमेश्वर भी कर्म में दिन रात रत रहते हैं।[2] गांधी जी ने निष्काम भाव से सभी कर्मों के करने पर जोर दिया है। कर्म करने का यदि कोई प्रयोजन है तो वह आत्म शुद्धि, लोक संग्रह तथा ईश्वर भक्ति ही है । इन तीनों प्रयोजनों को छोड़कर कर्म का और कोई प्रयोजन नहीं होना चाहिए। कर्मों के फल उनके प्रयोजन नहीं है। कर्मों में श्रेष्ठता और निकृष्टता का क्रम नहीं है। सभी कर्म बराबर है। उनसे कोई ऊंचा या नीचा नहीं हो सकता है। उनसे आत्म शुद्धि लोक संग्रह और ईश्वर भक्ति को छोड़कर अन्य वस्तु या भाव यदि कोई प्राप्त करता है तो वह कर्म मीमांसा को नहीं समझता, वह सच्चा कर्म नहीं करता है।

2. रचनात्मक कार्यक्रम

समाज और राष्ट्र की सेवा करने के लिए गांधी जी ने एक रचनात्मक कार्यक्रम देश के सामने रखा। उनके कर्म मार्ग का आवश्यक अंग समाज सेवा है। व्यक्ति को अपने तक ही सीमित रहने पर सच्चा सुख नहीं मिलता। सत्याग्रही दार्शनिक ज्यों–ज्यों प्रगति करता है त्यों–त्यों उसका अपना अस्तित्व विस्तृत होता जाता है। उसका स्वधर्म बढ़ता जाता है, व्यक्तिक जीवन के निर्वाह हो जाने पर सत्याग्रह दार्शनिक को व्यक्तित्व से समाजत्व को प्राप्त करता है। व्यक्ति को समाज बनना होता है, तब वह अपने में समाज को और समाज में अपने को देख पाता है। कुछ इन्हें दृष्टिकोण से गांधीजी ने सेवा धर्म स्वीकार किया था। उनका कहना है कि मैं जो इस प्रकार समाज सेवा में तन्मय हो गया था उसका कारण आत्मदर्शन की आकांक्षा थी, ईश्वर की पहचान सेवा से ही होगी यह मानकर मैंने सेवा धर्म स्वीकार किया था। भारत की सेवा करने का कारण यह था कि वह मुझे सहज प्राप्त थी उसकी ओर रुचि थी, उसे मुझे ढूंढने नहीं जाना पड़ा था।[3] सेवा करने के लिए गांधीजी ने आश्रमों की स्थापना की थी और वहाँ से सेवकों को उत्पन्न किया था उनके सामने गांधीजी ने एक रचनात्मक कार्यक्रम रखा था जिसमे 19 बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया था, उनकी इच्छा थी कि कांग्रेस तथा समस्त भारतीय जन इन कामों को करें। 19 कार्य थे – कौमी एकता, अस्पृश्यता निवारण, मद्यनिषेध, खादी, अन्य ग्रामोद्योग, गाँवों की सफाई, बुनयादी तालीम, प्रौढ़ शिक्षा, स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलना, आरोग्य के नियमों की शिक्षा, प्रांतीय भाषाओं का विकास, राष्ट्रभाषा का विकास, आर्थिक समानता, किसानों की उन्नति, मजदूरों की भलाई, आदिवासियों का सुधार, कुष्ठ रोगियों की सेवा, विद्यार्थियों का कृतव्य तथा गो सेवा। इन कार्यों से देश में सामाजिक सेवा की चेतना उत्पन्न हुई। गांधीजी ने देश के प्रत्येक कोने को अपने सेवा से पहचाना तथा पूरे देश ने भी गांधीजी को उनकी सेवा से पहचाना। ग्रामोद्योग, खादी और गो सेवा गांधीजी के प्रधान कार्य थे, ग्रामोद्योग को वे इसलिए आवश्यक समझते थे कि इससे हमारे ग्राम परिपूर्ण हो सकते थे। खादी पर जोर देते हुए उन्होने सूत कातना, बुनाई करना आदि पर जोर दिया। चर्खे से सूत कातना उनकी मुख्य शिक्षा थी। गांधीजी सदैव कहते थे कि चरखा उनके दर्शन का प्रतीक है। चर्खे का आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक महत्व है।[4] बुनकर का पेशा करने वाले महान रहस्यवादी – तमिल के तिरुवल्लुकर, हिन्दी के कबीर और अरबी के इमाम गजाली से गांधीजी प्रभावित थे। सच्ची सेवा की भावना उत्पन्न करने हेतु गांधीजी कुष्ठ रोगियों की सेवा शुश्रूषा करने को कहते थे। समाज में कुष्ठ रोगियों को पापी, घृणित तथा त्याज्य माना जाता था।

3. सत्याग्रह या असहयोग आंदोलन

गांधीजी दर्शन की उस व्यापक परिभाषा को मानते थे, जिसके अनुसार वह सभी शास्त्रों और कलाओं का आदि मध्य और आर्वसन है। राजनीति भी उनके दर्शन का अंग है। राजनैतिक स्वतंत्रता ना होने से सामाजिक स्वतंत्रता नहीं मिल सकती, सामाजिक स्वतंत्रता ना होने से पारिवारिक और भौतिक स्वतंत्रता नहीं मिल सकती, अतः जिसे सच्ची व्यक्तिक स्वतन्त्रता प्राप्त करनी है, जिसे अपने सच्चे अस्तित्व को देखना है, उसे राजनीति में भी उतरना पड़ेगा। और यदि राजनीतिक स्थिति ऐसी है कि उसमें सत्याग्रही दार्शनिक को किसी प्रकार का नुकसान नहीं होता तो वह राजनीति से दूर रह सकता है पर यदि राजनीतिक स्थिति स्वस्थ नहीं है, यदि राष्ट्र परतंत्र है अथवा यदि राष्ट्र की सरकार अच्छी नहीं है, तो फिर सत्याग्रही दार्शनिक को राजनीति में भी उतरना पड़ता है। यही कारण था कि गांधीजी राजनीति में उतरे उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन का संचालन किया, यह आंदोलन विदेशी सरकार के साथ लड़ाई थी, पर यह अहिंसा की लड़ाई थी, इसमें लड़ने वाला खुद अपने ऊपर आपत्ति लाता था, जेल जाता था, यातनाएं सहता था, परंतु मन, वाणी और कर्म से अपने शत्रु को चोट नहीं पहुंचाता था, उल्टे वह अपने शत्रु से प्रेम करता था। इस लड़ाई के फल स्वरुप भारत को राजनैतिक स्वतंत्रता मिली और गांधीजी राष्ट्रपिता कहलाए। गांधीजी बार–बार कहते थे कि मैं आध्यात्मिक लक्ष्य हेतु राजनीति के क्षेत्र में उतरा हूं। मेरे राजनीतिक जीवन का लक्ष्य हरि दर्शन है।[5] लोगों ने इसको उनकी कूटनीति समझा परंतु जो व्यक्ति सदैव सत्य का अखंड वर्त लेकर जीवन व्यतीत करता रहा वह राजनीति में प्रवेश करने के लिए कूटनीति का सहारा कदापि स्वीकार नहीं करता।

4. सत्य एवं अहिंसा

सत्य के साथ गांधीजी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदैव विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता ही है। आज मानवता मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधीजी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते

थे। उनका ईश्वर में पूरा विश्वास था जिसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया कि ईश्वर एक अदृश्य शक्ति है जिसका अस्तित्व है। ईश्वर में विश्वास और सत्य का अनुसरण मानवता को सर्वनाश से बचा सकते हैं। ईश्वर और सत्य से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध गांधीजी का अहिंसा में विश्वास है। गांधीजी 'अहिंसा परमो धर्मः' अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है में विश्वास करते थे। वास्तव में अहिंसा गांधी दर्शन का आधार स्तम्भ है। बौद्ध, जैन तथा योग दर्शनों में अहिंसा की परिभाषाएँ मिलती है पर वें इतनी व्यापक नहीं है जितनी गांधीजी द्वारा दी गयी है, उनके अनुसार किसी को मारने के साथ–साथ कुविचार रखना, उतावलापन, मिथ्याभाषण, द्वेष, किसी का बुरा चाहना, जगत के लिए आवश्यक वस्तुओं पर कब्जा करना भी हिंसा की श्रेणी में आता है।[6] अहिंसा का सत्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है। हिंसा असत्य है, क्योंकि यह जीवन की एकता की विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शान्ति दुनिया में तभी स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। गांधीजी अहिंसक योद्धा थे, वे स्वयं दुःख एवं बलिदान झेलकर विरोधी के विरुद्ध संघर्ष करते थे। उनका लक्ष्य विरोधी के हृदय परिवर्तन का होता था। उनके अहिंसक युद्ध में भय और कटुता के लिए कोई स्थान न था, बल्कि वह युद्धरत दलों में सद्‌भावना और मित्रता पैदा करता था। गांधीजी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में ही नहीं, अपितु व्यक्तिगत जीवन में भी अहिंसा का अनुसरण करने के पक्षधर थे। अहिंसा, अहिंसा तब ही है, जबकि इसका पालन मन, वचन और कर्म से किया जाय। जिसने इस सिद्धान्त का थोड़ा बहुत भी पालन अपने निजी जीवन में कर लिया है, उसे पता लगेगा कि यह बन्दूक से निकली गोली से अधिक शक्तिशाली हथियार है। अहिंसा आध्यात्मिकता की पोषक है, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आध्यात्मिकता सच्चे धर्म की पोषक है। वर्तमान में भी व्यक्तिगत जीवन, सार्वजनिक जीवन और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में इस शस्त्र की शक्ति से बड़ी बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।[7] सत्य के संबंध में गांधीजी की शब्दावली अनेकार्थक है वे सत्य के तीन अर्थ बताते है, सत, सत्यता और सच बोलना, जो क्रमशः तत्त्ववैज्ञानिक, ज्ञानमीमांसा और नैतिक अर्थ है। सच्चा विचार करना, सच्ची बात बोलना तथा सच्चा काम करना ये सत्य के त्रिविद्ध रूप है, मुख्य बात कथनी और करनी को एक करना है। गांधीजी का मानना था कि सत्य के पुजारी के लिए मौन का सेवन उचित है। जाने अनजाने भी व्यक्ति अतिशयोक्ति करता है अथवा जो कहने योग्य है उसे छुपता है या भिन्न रूप में कहता है, ऐसे संकटों से बचने के लिए भी अल्पभाषी होना आवश्यक है।[8]

5. अस्तेय एवं अपरिग्रह

अस्तेय का अर्थ है चोरी ना करना। चोरी तीन प्रकार की होती है बाह्य या शारीरिक, मानसिक और वैचारिक या बौद्धिकं बच्चों से छुपाकर खाना, रास्ते में पड़ी हुई वस्तु को लेना, जरूरत न होते हुए भी वस्तु को लेना या जरूरत से ज्यादा लेना भी चोरी की श्रेणी में आता है।[9] शारीरिक चोरी से भी ज्यादा आत्मा को नीचे गिराने वाली चोरी मानसिक है। मन से हमारा किसी चीज को पाने की इच्छा करना या उस पर झूठी नजर डालना चोरी है।[10] गीता के निम्न श्लोक को गांधीजी ठीक समझते थे एवं उसका पालन करते थे।[11]

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः।।[12]

अर्थात यज्ञसे तृप्त हुए देवता आपको इच्छित भोग निष्चय ही देते रहेंगे इस प्रकार प्राप्त हुए भोग देवों को बिना दिये जो स्वयं भोगता है, वह चोर ही है। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अपरिग्रह कहलाता है। अपरिग्रह को कार्यरूप में लाने के लिए गांधीजी द्वारा दो सिद्धांतो का निर्माण किया गया – प्रथम इच्छापूर्वक दैन्यपूर्ण जीवन बिताना और ट्रस्टीशिप का सिद्धांत।[13] अर्थात अपरिग्रही को इच्छापूर्वक दीन बनना चाहिए, उसे सादगी से रहना चाहिए, अपनी इच्छाओं को व अपने उपयोग की सामग्रियों को घटाते रहना चाहिए।[14] ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के अनुसार गांधीजी का कहना था कि धनी लोग अपने धन का जितना उनके लिए आवश्यक हो उतना उपभोग करें और शेष धन को अपने पास रखा हुआ समाज का न्यास समझे। वे उस धन के ट्रस्टी अथवा न्यासी है उसके स्वामी नहीं। उस धन को उन्हे लोकोपकार में, राष्ट्र निर्माण में व सामाजिक कार्यों में व्यय करना चाहिए।[15] गांधीजी जीवन की सादगी का उपदेश देते थे। वे गौतम बुद्ध के साथ एकमत थे कि इच्छाओं को बढ़ाने से दुःख पैदा होता है। हमारा वास्तविक कल्याण इच्छाओं को कम करने में है। इच्छा की समाप्ति से दुःख की समाप्ति होती है और इसलिए निर्वाण प्राप्त होता है। सच्ची संस्कृति और सभ्यता इच्छाओं को कम करने और सादा जीवन जीने में वास करती है, गांधीजी ने रोटी श्रम का विचार प्रतिपादित किया जोकि उनकी सादगी की धारणा पर आधारित है। इस विचार के अनुसार मनुष्य को अपनी रोटी शारीरिक श्रम के द्वारा कमानी चाहिए। यह सिद्धान्त सर्वत्र प्रासंगिक है और सदैव के लिए सार्थक है। क्या ही अच्छा होता कि लोग इसका पालन करते तो बहुत सारे दुःख, अस्वस्थता, निराशा और जीवन के तनाव समाप्त हो जाते। गांधीजी आर्थिक और राजनीतिक दोनों प्रकार के विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। आर्थिक क्षेत्र में गांधीजी केन्द्रीकृत उद्योग के विरुद्ध थे। उन्होंने कुटीर उद्योग धन्धों के सुधार एवं स्थापना पर काफी बल दिया। सामान्यतः गांधीजी भारी उद्योगों के विरोधी थे। अब जबकि भारी उद्योगों से निकलने वाली गैसों ने पर्यावरण की क्षति की समस्या को जन्म दिया है, तब कुटीर और लघु उद्योगों की ओर वापसी ही पर्यावरण प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिए मानवता के लिए एक आशा की किरण प्रदान करती है। इस सम्बन्ध मे गांधीजी का दृष्टिकोण अब भी कितना सार्थक है। गांधीजी की अद्वितीय देन है कि उन्होंने पूँजीवाद और समाजवाद का समन्वय किया। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का यह लक्ष्य है। गांधीजी अमीरों से धन छीनकर गरीबों में बाँटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे अमीरों के फालतू धन को अमीरों द्वारा ही समाज

के भले के लिए ट्रस्ट में रखना चाहते थे। गांधीजी का यह विचार आजकल बहुत सार्थक है, क्योंकि मार्क्स के प्रकार के समाजवाद की स्थापना या पूँजीवाद को नष्ट करना सम्भव नहीं है। ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त द्वारा गांधीजी ने समाजवाद और पूँजीवाद के बीच का एक रास्ता निकाला।

6. सर्व धर्म समभाव एवं सहिष्णुता

गांधीजी का धर्म व नैतिकता में गहरा विश्वास था धर्म से अर्थ आडम्बर एवं धार्मिक पाखण्ड आदि नहीं था। उनका धर्म नैतिकता का पर्यायवाची था। वे सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु होने पर विश्वास करते थे, सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु होने से तात्पर्य था कि सभी धर्मों को सही प्रकार से समझना किसी को बड़ा अथवा छोटा तथा अच्छा एवं बुरा नहीं समझना। प्रत्येक धर्म अच्छा है पर उसके अनुयाई बुरे हो सकते हैं अनुयायियों के जीवन को देखकर किसी धर्म के बारे में अपनी कोई राय नहीं कायम करनी चाहिए प्रत्येक धर्म के मान्य धर्म ग्रंथों का निष्पक्ष अध्ययन करना चाहिए उनमें भी ग्राह्य तथा त्याज्य अंश होते हैं। उनको समझकर केवल ग्राह्य अंश ही लेना चाहिए और त्याज्य अंश की चर्चा छोड़ देनी चाहिए। दूसरे धर्मों के ग्रह अंश को अपने धर्म में लेते हुए संकोच नहीं करना चाहिए।[16]

उन्होंने राजनीति में धर्म का प्रवेश किया एवं इस प्रकार राजनीति का आध्यात्मीकरण किया। गांधीजी उन लोगों से बिल्कुल सहमत नहीं थे जो यह कहते थे कि धर्म का राजनीति से कोई लेना–देना नहीं है। धर्म विहीन राजनीति मृत्यु जाल है जो आत्मा का हनन करती है। वे उन लोगों की इस स्थिति की भर्त्सना करते थे, जो साध्य को साधन का औचित्य ठहराता है। यदि साधन अनैतिक है तो उसकी प्रवृत्ति साध्य को दूषित करने की है। साध्य और साधन में वही सम्बन्ध है जोकि वीज और पेड़ में है। जैसा साधन होगा, वैसा ही साध्य होगा।[17]

गांधीजी सहिष्णुता को कमजोरी नहीं समझते थे। सहिष्णुता का अनुपम उदाहरण गांधीजी के जीवन में घटित एक घटना से मिलता हैं। जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका प्रवास पर थे तो एक बार रेल से उतरने पर उन्होने तांगा किया, तांगे में कुछ लोग बैठे थे उस समय गोरे लोग काले लोगों के साथ न ही खाते पीते थे और न ही साथ बैठते थे। गांधीजी को इस भेद भाव का शिकार होना पड़ा और तांगे में जगह न मिलने पर उसमे रखे बॉक्स पर बैठ गए। यह बात अंग्रेजों को नागवार गुजरी उनमे से एक अंग्रेज ने महतमा गाँधी को पीटना शुरू कर दिया। गांधीजी काफी देर तक मार खाते रहे कुछ देर बाद दूसरे अंग्रेजों ने गांधीजी को बचाया। गांधी जी ने अंग्रेजों का कोई प्रतिरोध नहीं किया एवं उन्हे क्षमा कर दिया।[18]

गांधीजी द्वारा मनुष्य से संबन्धित समस्त पहलुओं पर विचार प्रस्तुत करते हुए उन को पहले अपने जीवन में उतारा था। अन्य विभिन्न क्षेत्रों में गांधी जी द्वारा प्रकाश डाला गया था। गांधीजी के राश्ट्रवाद और अन्तर्राष्ट्रीयवाद पर विचार आज बहुत प्रबल और सार्थक हैं। आज की दुनिया में अन्तर्राष्ट्रवाद की कीमत पर हम राष्ट्रवादी नहीं बन सकते। नाजियों और फासीवादियों का राष्ट्रवाद आज असंगत ही नहीं, भयानक परिणामों से भरा हुआ है। आज उदार राष्ट्रवाद को अपनाने की आवश्यकता है। हमें राष्ट्रवादी इसलिए होना चाहिए कि हम अंतराष्ट्रवादी बन सके। गांधीजी भारत की स्वतन्त्रता इसलिए चाहते थे कि वह समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए संसाधनों का विकास कर सकें।[19] गांधीजी का विश्वास था कि मानवता की मुक्ति का रास्ता अध्यात्म से होकर गुजरता है। घोर भौतिकवाद हानिकारक है जो न केवल अनेक तनावों को जन्म देता है, अपितु आत्मा का हनन भी करता है। धन संग्रह की ओर पागलों की सी भागदौड़ और जीवन के प्रति उपभोक्तावादी दृष्टिकोण ने हमारे जीवन की शान्ति पर कुठाराघात किया है। भौतिकवाद और अध्यात्मवाद इन दोनों के मध्य सुखद एवं विवेकपूर्ण सन्तुलन निकालना ही एकमात्र हल है। आधुनिक युग में वह ही हमारी बहुत सी बुराइयों के लिए प्रभावी समाधान है।

गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचार भी आज बहुत प्रासंगिक हैं। यह सही है कि कई विचारों का सम्पूर्ण रूप से क्रियान्वयन नहीं किया जा सकता, किन्तु शिक्षा के सम्बन्ध में बनने वाली नीतियों और कार्यक्रमों में उन विचारों की आत्मा को लागू किया जा सकता है। 'अध्ययनशील रहते हुए जीविका कमाओ' जोकि उनकी बुनियाद शिक्षा का केन्द्रीय सिद्धान्त है, आज भी हमारी शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कोर्सो का लागू किया जाना गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का विस्तृण ही है और शिक्षा की यह योजना बहुत ही सार्थक और लाभकारी सिद्ध हुई है।[20] इस प्रकार हम देखते हैं कि गांधीवाद आज भी बहुत सार्थक है। हमें यह तथ्य स्वीकार करना है कि गांधीवाद का प्रचार एवं अभ्यास ही हमारी सभ्यता को उन बुराइयों एवं ऋणात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त कर सकता है, जोकि मानव जाति को इस्पात की एड़ियों से कुचलने की सम्भावना रखते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान परिपेक्ष मे गांधीवादी दर्शन एवं मूल्यों की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है क्योंकि मानव जाति इस समय अनेक चुनौतियों यथा– आतंकवाद, उग्रराष्ट्रवाद, बाजारवाद एवं पूंजीवाद, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद, महिलाओं, बच्चों एवं अल्पसंख्यकों के विरुद्ध हिंसा आदि से जूझ रही है। अतः संसार को प्रत्येक प्राणी हेतु भयमुक्त बनाने एवं समान अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु वर्तमान परिप्रेक्ष में गांधी दर्शन अति उपयोगी हो जाता है।

सन्दर्भ सूची

1. महात्मा गाँधी. (1951). गीता माता. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 156.
2. भागवत गीता 5/11.
3. महात्मा गाँधी. (1951). आत्मकथा. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 199.
4. महात्मा गाँधी. (1951). गीता माता. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 37.
5. आश्रम भजनावली. नवजीवन पब्लिशिंग हाउसः अहमदाबाद. पृष्ट 10.
6. महात्मा गाँधी. (1951). धर्मनीति. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 23.
7. विश्वभारती. Quarterly Gandhi Memorial Peace. शांतिनिकेतन पृष्ट 35.
8. महात्मा गाँधी. (1951). आत्मकथा. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 79.
9. महात्मा गाँधी. (1951). धर्मनीति. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 137—138.
10. वही. पृष्ट 139.
11. देसाई, महादेव. (1953). द गीता एकोर्डिंग टु गांधी. नवजीवन पब्लिशिंग हाउसः अहमदाबाद. पृष्ट 176—178.
12. भगवद्गीता 03/12.
13. महात्मा गाँधी. (1951). धर्मनीति. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 144.
14. विश्वभारती. Quarterly Gandhi Memorial Peace. शांतिनिकेतन. पृष्ट 11.
15. भावे, विनोबा. (1951). सर्वोदय—विचार. सस्ता साहित्य मण्डलः नई दिल्ली. पृष्ट 27.
16. विश्वभारती. Quarterly Gandhi Memorial Peace शांतिनिकेतन. पृष्ट 158.
17. दत्त, डॉ. धीरेंद्र मोहन. द फिलोसोफी ऑफ महात्मा गांधी. पृष्ट 124.
18. कुमारप्पा, भारतन. (1951). गांधीजी ऑटोबायोग्राफी. एब्रिज्ड नवजीवन पब्लिशिंग हाउसः अहमदाबाद. पृष्ट 171.
19. पट्टाभि, सितारमैया. (1953). गांधी एंड गांधीज्म. कितबिस्तानः इलाहाबाद. पृष्ट 215.
20. पटेल, एम.एस. (1953). द एजुकेशनल फिलोसोफी ऑफ महात्मा गांधी. नवजीवन पब्लिशिंग हाउसः अहमदाबाद. पृष्ट 185—186.

23

प्राचीन शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा

प्रो० मुनीश कुमार शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
श्री अरविन्द महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्विद्यालय

डॉ० अमनदीप नाहर
एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
श्री अरविन्द महाविद्यालय (सांध्य), दिल्ली विश्विद्यालय

सारांश

आधुनिक शिक्षा ने ज्ञान विज्ञान की अनन्त संभावनाओं को जन्म दिया है इसमें कोई कोई शक सन्देश नहीं, और ना ही इस पर सवाल उठाए जा सकते हैं कि उसने मानव जीवन को अपार संसाधनों, सुविधाओं से सरल और द्रुतगामी बनाया है. दुनिया के बीच की दूरी को संचार और व्यापार क्रांति ने पाट दिया है. दुनिया का कोई भी चेहरा और आवाज आधुनिक शिक्षा से जन्में चमत्कारिक गजेट के माध्यम से कभी भी, कहीं भी हम देख–सुन सकते हैं, तो दूसरी ओर इसी आधुनिक शिक्षा ने हर चीज को, हर संबंध को 'फायदे का सौदा है कि नहीं' की धुरी पर स्थापित कर दिया है। आधुनिक शिक्षा ने जहाँ तकनीक, प्राद्यौगिकी मेडिकल साइंस में चमत्कारिक प्रयोग किए जरुर मगर वे एकपक्षीय सिद्ध हुए. उसने आज एक ऐसी संवेदनहीन, आत्मजीवी, अविवेकी, जीवन मूल्यों की जगह मोल–भाव को जीवन का आधार मानने वाली पीढ़ी खड़ी कर दी है जो अपनी सुविधा और सम्पन्नता के लिए अंधी होकर इस धरती और मानवता का विनाश करने पर तुली है, उसने इस संस्कृति का महिमामंडन अपने अपने विद्वानों, वैज्ञानिकों, अन्वेशकों के माध्यम से सुना जरुर हुआ था किन्तु उसकी सार्वभौमिक चिंतन दृष्टि की प्रासंगिकता और जरुरत का एहसास आज हो रहा है। हमारा यह विषय 'प्राचीन शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा' दुनिया को अपनी शिक्षा पद्धति पर पुनर्विचार करने के लिए निवेदन करने की प्रभात फेरी है।

मुख्य शब्द

आधुनिक शिक्षा प्राचीन शिक्षा मानवता भौतिकता पर्यावरण।

उद्देश्य

इस शोध लेख को लिखने के पीछे जो केन्द्रीय विचार काम कर रहा था वह किसी आदर्शवाद से प्रेरित भावनाजन्य नहीं है उसमें समाज की वास्तविकता है जो आए दिन अखबारों की सुर्खियों में रहती हैं। भौतिक विकास जरुरी है। जरूरतों पर टिकी अर्थव्यवस्था और बाजार से प्रभावित पीढ़ी के इस दौर में भौतिक विकास को रोकना कठिन है। लेकिन विकास की इस अंधी दौड़ ने व्यक्ति और परिवार दोनों के संबंधों को छिन्न भिन्न कर दिया है। दूसरी ओर जो वायुमंडल और पर्यावरण जीवन का प्राण है उसका आधार बिखरने लगा है। ऐसे में विकास और जीवन के आकाश के बीच एक सामंजस्य की आवश्यकता है। उसी मध्यमार्ग की ओर ध्यानाकर्षित करना इस लेख का मूल उद्देश्य है।

14 नवम्बर को 2022 तक पृथ्वी ग्रह की आबादी अंतर्राष्ट्रीय मानक आंकड़ों के मुताबिक 800 करोड़ हो चुकी है। कोविड जैसी महामारी जिसने पूरी दुनिया को एक साथ मथकर रख दिया। मानवजनित एक बीमारी ने मानवता को मौत के मुंह में धकेल दिया। दूसरी तरफ मानव सभ्यता ने अपने वर्चस्व और अहमन्यता के लिए आज युद्ध को इतना विकराल और भयावह बना दिया है कि वह कुछ ही पलों में इस धरती का कई बार विनाश करने की क्षमता रखता है। उसके बनाए हथियार परम अणु से भी सूक्ष्म हो चुके हैं। अब वे विशैले अदृश्य जीवाणुओं की मदद से मानव सभ्यता का समूल नाश कर सकते हैं। कोविड महामारी उसका एक छोटा सा नमूना भर था। इसमें दो राय नहीं है कि आधुनिक शिक्षा ने मनुष्य की मानसिक क्षमताओं को आश्चर्यजनक रूप से विकसित किया है। उसका परिणाम हम सबके सामने हैं।

एक ओर इस आधुनिक शिक्षा मानव जीवन को बचाने वाली नई–नई संजीवनियों का अविश्कार कर रही है। सभी असाध्य रोगों के इलाज के लिए दवाइयों हैं। संसाधन हैं दूसरी और इन्हीं प्रयोगशालाओं से मौत का तांडव करने वाले जैविक हथियारों को ईजाद किया जा रहा है। विज्ञान ने असमान की ऊँचाइयों को छूने वाले हवाई जहाज बनाए तो उन्हीं से हँसते खेलते शहरों को विकलांग कर देने वाले बम भी बनाए। 21 वीं सदी के तीसरे दशक में भी आधुनिक शिक्षित दुनिया युक्रेन और रूस का युद्ध देख

रही है। इस ग्रह पर ग्रहण लाने की जिम्मेदारी आधुनिक समाज को लेनी ही पड़ेगी। प्राचीन शिक्षा और जीवन पद्धति के समय इस धरती की मिट्टी का उपजाऊ क्षमता नष्ट नहीं हुई थी, उसके जंगल जीवन का संचार करते थे, हवा जहर नहीं हुई थी, बिना एयर प्यूरीफायर के मंद मंद बहती हवा फेफड़ों को स्याह नही करती थी, वह प्राण वायु थी, हवा, पानी, मिट्टी भी प्रदूषित हो सकते हैं, इस बात की कल्पना प्राचीन मनुश्य तो छोड़े अभी पचास साल पहले तक जमुना गंगा की निर्मल धार को आज भी जीवित लोगों ने देखा है जिया है. जलवायु में नाटकीय बदलाव आज की ही बात है शरद कही जाने वाले मौसम में जब मीठी मीठी ठण्ड, मधुर बयार बहने लगती थी उस समय अब स्याह कला धुआं पसरा रहता है, देश की राजधानी दिल्ली में शरद का आगमन अब नए फूलों के खिलने से नहीं होता। प्रदूषण से उपजे आपातकाल से होता है। कभी यह गाना जीवन संघर्ष की एक विशेष मनोदशा के लिए सुना था मगर अब वह साक्षात् काला काल बनकर हमारे चारो तरफ फैल गया है 'सीने में जलन आँखों में तूफ़ान सा क्यूँ है, इस शहर में हर शख्स परेशां सा क्यूँ है, इतना फर्क है कि यह जलन सीने और आँखों दोनों में होती है।

इस नए शहर की सूरत उपभोक्तावाद की देन है। नील गगन के चेहरे पर मानों किसी ने कालिख पोत दी हो। हर जगह धुआं धुआं मानो पूरी धरती पर आग लग गई हो। धरती का तापमान दिन व दिन बढ़ता जा रहा है, गलेशियर पिघल रहे हैं, पर्यावरणविद सालों से चेतवानी दे रहे हैं कि इस धरती को बचा लो नहीं तो इस पर से जीवन का नामोनिशान मिट जायेगा। जानी मानी पर्यावरणविद डॉक्टर सीमा जावेद एक रिपोर्ट में लिखती हैं कि "धरती के बीते 2000 वर्षों के इतिहास की तुलना में अब बीते कुछ सालों में पृथ्वी का तापमान बेहद तेजी से बढ़ रहा है। पिछले कई दशकों से लगातार वैज्ञानिक बता रहे हैं कि जीवाश्म ईंधन के जलने से ग्लोबल वार्मिंग की आग तेजी से धधक रही है। तमाम वैज्ञानिक प्रमाणों के बावजूद जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल दुनिया से खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। जीवाश्म ईंधन खत्म होना तो दूर इसको कम करने के भी आसार साफ नहीं नजर आ रहे हैं।''[1]

संयुक्त राष्ट्र संस्था आईपीसीसी की ताजा रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि धरती को बचाने के लिए अब सिफ आठ साल ही बचे हैं. आई पी सी सी सरकारी समिति की 2022 को जारी रिपोर्ट में चेताया गया है कि "अगले आठ सालों में यानी 2030 तक दुनिया अगर अपने उत्सर्जन में कटौती को आधा यानी 50 प्रतिशत कम नहीं करती है तो साल 2050 तक उसे नेट जीरो यानी अपने उत्सर्जन स्तर को शून्य पर लाना होगा। अगर ऐसा नहीं किया तो उसे तबाह होने से कोई नहीं रोक सकता है। आईपीसीसी की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि साल 2019 में 1990 के मुकाबले 54 प्रतिशत अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन हुआ लेकिन उत्सर्जन के बढ़ने की दर पिछले एक दशक में घटी है।"[2]

मगर उपभोग और भोग को पोषित करने वाली शिक्षा ने मनुष्य को संवेदनहीन और वस्तुओं का, लिप्साओं का, कामनाओं का गुलाम बना दिया है अब वह सम्मान के बिना जी सकता है मगर सामान के बिना नहीं रह सकता। वह दुविधाओं और साधनों की अँधेरी कोठरी में चक्कर लगाता ब्रह्मराक्षस हो चुका है। भोगवाद की नींव पर खड़ी आधुनिक शिक्षा का मूल ध्येय ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना है। ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने की होड़ ही आधुनिक शिक्षा का मूल मन्त्र है। अमीर बनिए, पैसा कमाइए, जिन्दगी में सफल होने का अर्थ ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना है। प्रेम, करुणा, दया, परोपकार, सदा जीवन उंच विचार होना आज मूर्खता के पर्याय बन चुके हैं। जब हम अपने आस पास देखते हैं कि वहां आपका सम्मान आपके मानवीय गुणों, आपके साहस, सरलता का ना होकर आपके पास कितनी गाड़ियाँ हैं कितने मकान हैं, कितने किस्म की विदेशी शराब आपके घर के बार में सुशोभित होती हैं पर टिका है तो वह जो सरल और मानवीय सम्वेदनाओं से भरा आदमी है वह भी इस अंधी दौड़ में शामिल हो जाता है। फिर वह जरुरत के हिसाब से सामान नही खरीदता इस अंधी दौड़ में जीतने के लिए इस झूठी शान में डूबे समाज का हिस्सा बनने के लिए जीवन मूल्यों को त्याग कर वस्तुओं के मूल्यों वाली दुनिया में शामिल हो जाता है। उसका परिणाम बड़ी बड़ी कम्पनियों का उत्पादन और कार्बन उत्सर्जन और ग्लोबल वार्मिंग।

आज आए दिन पर्यावरण की चिंता में समिट हो रही हैं। रिपोर्ट अखबारों में आती हैं और अगले दिन रद्दी की टोकरी में फेंक दी जाती हैं। ग्लोबल वॉर्मिंग की एक रिपोर्ट के अनुसार "आपको बता दें कि इस वक्त औसत वैश्विक तापमान 1880 मुकाबले 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है जमीन के साथ समुद्र की सतह भी लगातार गर्म हो रही है। आर्कटिक का ध्रुवीय क्षेत्र पर सबसे ज्यादा असर दिख रहा है। वहां बढ़ती गर्मी से ग्लेशियर पिघल रहे हैं। समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा हैं। दुनिया के कई तटीय इलाकों में पानी भर रहे हैं। कई देशों में बर्फबारी के मौसम छोटे होने लगे हैं। जहां पानी की कमी थी वहां सूखा का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। पहाड़ों के पास के इलाकों में बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं। अमेरिका से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक जंगलों में आग की तादाद बढ़ गई है।"[3]

वैज्ञानिकों के मुताबिक वैश्विक तापमान अगर आगे भी ऐसे ही बढ़ता रहा तो इस सदी के अंत तक सेंट्रल अमेरिका के साथ अफ्रीका के दक्षिणी इलाके और भूमध्यसागर के चारों तरफ के इलाके सूखे की चपेट में आ जाएंगे। अमेरिका के टेक्सास से लेकर बांग्लादेश तक निचले इलाके और द्वीप समूहों वाले देश समंदर में डूब जाएंगे। मध्य–पूर्व और दक्षिणी एशिया के इलाकों में गर्म हवाओं की वजह से घर से निकलना नामुमकिन हो जाएगा। दुनिया के कई इलाकों में बर्फबारी खत्म हो जाएगी।

मुझे रास रंग में डूबी इस दुनिया का हाल देखकर जयशंकर प्रसाद की कामायनी याद आती है। जिसमें प्रसाद की इस भोगवादी दुनिया की दुर्दशा क्या होगी यह 1930 में ही भांप गए थे। भारतीय संस्कृति के उपासक जयशंकर प्रसाद इस भोगवाद

के परिणाम को मनु और श्रृद्धा की कथा के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। कामायनी वस्तुतः शतपथ ब्राह्मण में देवों की भोगवादी स्वछंद निर्बाध आत्मसंतुष्टि की ही कथा है उनकी विलासी प्रवृति से ही जल प्लावन हुआ और उन देवताओं में से मनु और श्रृद्धा का बचना कामायनी के दर्शन चिंतन का केन्द्रीय भाव है। मनु संवेदनशील मानवीय मन और जीवन के उदात्त मूल्यों के प्रति आस्था विश्वास से ही यह धरती और उस पर जीवन बच सकता है।

"चिंता करता हूँ मैं जितनी, उस अतीत की, उस सुख की, उतनी ही अनंत में बनतीं ध्जाती रेखाएँ दुःख की। आह सर्ग के अग्रदूत! तुम असफल हुए, विलीन हुएय भक्षक या रक्षक, जो समझो, केवल अपने मीन हुए। अरी आँधियो! ओ बिजली की दिवा–रात्रि तेरा नत्तर्न, उसी वासना की उपासना, वह तेरा प्रत्यावत्तर्न। मणि–दीपों के अंधकारमय अरे निराशा पूर्ण भविष्य! देव–दंभ के महा मेघ में सब कुछ ही बन गया हविष्य। अरे अमरता के चमकीले पुतलो! तेरे ये जय नादय काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि बन कर मानो दीन विशाद। प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित हम सब थे भूले मद मेंय भोले थे, हाँ तिरते केवल, सब विलासिता के नद में। वे सब डूबेय डूबा उनका विभव, बन गया पारावारय उमड़ रहा था देव–सुखों पर दुःख–जलधि का नाद अपार। वह उन्मत्त विलास हुआ क्या? स्वप्न रहा या छलना थी! गया, सभी कुछ गया, मधुर तम ... सुर बालाओं का शृंगारय उषा ज्योत्स्ना–सा यौवन–स्मित, मधुप–सदृश निश्चिंत विहार। भरी वासना–सरिता का वह कैसा था मदमत्त प्रवाह,... आज तिरोहित हुआ कहाँ वह, मधु से पूर्ण अनंत वसंत? कुसुमित कुंजों में वे पुलकित प्रेमालिंगन हुए विलीनय मौन हुई हैं मूर्छित तानें।"[4]

समुद्रों की अतल गहराइयों से लेकर अन्तरिक्ष में बुद्धिमत्ता और कौशल का परचम लहराने वाली आधुनिक शिक्षा की उत्कृष्टता पर किसी को संदेह नही हो सकता। नित नई ऊँचाइयों को पंख लगाने वाले नवाचारों पर यह मानव सभ्यता निश्चित ही गौरव की अनुभूति करेगी। नित नए चमत्कारिक उपकरणों का अन्वेशण किया जा रहा है। कोई भी क्षेत्र आज उससे अछूता नहीं है। विज्ञान की विविध विधाएं विकसित हो रही हैं। जिन्होंने आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं छोड़ा है जहाँ उसने नित नई मशीन का अविश्कार ना किया हो। ऑपरेशन करने वाले सूक्ष्म रोबोट से लेकर बर्तन धोने की मशीन आज बाजार में है। लेकिन इन वस्तुओं के निर्माण के लिए मिटटी पानी और हवा में जहर घोल दिया। पर्यावरणविद अनिल जोशी इस फैलते जहर पर लगातार चेताने का प्रयास करते हैं। भारत के पर्यावरण पर उन्होंने बहुत काम किया है। कहते हैं कि "देश का विकास आवश्यक है, तभी देशवासियों को सुविधाएं मिल सकती हैं, लेकिन ऐसा विकास जो आपको सुविधाएं देकर सांसें रोक दे, यह एक बड़ा मुद्दा है"। अनिल जोशी ने कहा कि "धरती और आसमान प्रदूषित हो चुके हैं। समुद्र में लाखों टन कचरा एकत्रित हो गया है। इसका सीधा असर जीवों पर पड़ रहा है। समुद्र की कार्बन सोंखने की क्षमता पर भी प्रभाव पड़ रहा है। स्पेस में तीन हजार सैटेलाइट बिना उपयोग के घूम रहे हैं। वहां करीब 35 हजार छोटे–छोटे सैटेलाइट हैं, जो आने वाले समय के लिए खतरा है। बात धरती की करें तो यहां कंक्रीट के जंगल तैयार हो रहे हैं, जिसका सीधा प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ रहा है। हम विकास की अंधी दौड़ में विनाश की तरफ बढ़ रहे हैं। पर्यावरणविद ने कहा कि देश का विकास आवश्यक है, तभी देशवासियों को सुविधाएं मिल सकती हैं, लेकिन ऐसा विकास जो आपको सुविधाएं देकर सांसें रोक दे, यह एक बड़ा मुद्दा है। विकास तभी अच्छा है जब देश का पर्यावरण स्वच्छ हो। विकसित देश प्रकृति के संसाधनों का दोहन कर रहे हैं, हमें प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोकने पर बल देना चाहिए तभी हम बेहतर विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं"।[5]

उन्होंने कहा कि दुनिया भर में वायु प्रदूषण बहुत तेजी से पैर पसार रहा है। भारत के दिल्ली सहित तीस से अधिक शहर इसकी चपेट में हैं। यह बड़ी बीमारियों का कारण बन गया है। जितना हम प्रकृति से ले रहे हैं, उसका 50 फीसदी भी उसे वापस नहीं कर पा रहे हैं। प्रकृति का रौद्र रूप हमें बार–बार देखने को मिलता है। इसके कारण देशभर में विभिन्न प्रकार की महामारी फैल रही हैं। जिस तरह से प्रकृति इंसानों की देखभाल करती है, हमारा भी फर्ज बनता है कि वो प्रकृति का ध्यान रखें। डॉ. अनिल ने कहा कि जब पानी प्रदूषित हुआ तो हमने पानी को ठीक करने पर काम नहीं किया बल्कि उसके प्यूरी फायर के बिकने–बिकाने पर काम किया। यह भी एक प्रकार का आर्थिक प्रदूषण है। हमारी नदियां संकट में हैं। चंबल और बेतवा को छोड़ दिया जाए तो देश की बाकी नदियां नर्मदा, गोदावरी, गंगा और यमुना संकट से गुजर रहीं हैं।

आधुनिक शिक्षा ने विज्ञान और ज्ञान के उत्कर्ष को छुआ। जिसके परिणाम स्वरूप संसाधनों और धन ही जीवन जीने का केन्द्रीय भाव बन गया। समाज में मान सम्मान के मानदंड बदल गए। जीवन मूल्यों और नैतिकताओं की परिभाषा नए अर्थप्रधान अर्थ ग्रहण करने लगी। माँ कहा करती थी 'भैया आज तो आदर तेरे चादर की और मेहमानी तेरे गहने की हो चली है, कोई किसी की भलमनसाहत को नहीं देखता' बचपन में कहते सुना था माँ को आज समझ आती है यथार्थ दृष्टि। दरअसल आधुनिक शिक्षा का केंद्र पश्चिम था। जाहिल अशिक्षित क्रूर मुगल आक्रान्ताओं और लालची, भोगवादी संस्कृति के वाहक अंग्रेजों का कालखंड भारतीय प्राचीन शिक्षा संस्कृति जोकि शिक्षा का ही अंग थी, उसके तिरोहित होने का काल था। जिस देश में किसी भी शुभ कार्य करने से पूर्व ज्ञान की देवी सरस्वती और बुद्धि के देवता का पूजन होता होता हो, जहाँ गुरु को ब्रह्मा विष्णु महेश अर्थात इस सृष्टि में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया हो, संवाद, शास्त्रार्थ जिसे आज की आधुनिक भाषा में डिस्कोर्स कहा जाता है वह सदियों से होता रहा हो, ऋषि शौनक जिनका नाम हमारे देशवासियों ने इंगलैंड के प्रधानमंत्री का नाम सुनने के बाद जाना हो की ऋषि सुनक ऋषि शौनक के पिता थे जिन्होंने भारत में पहला गुरुकुल स्थापित किया और प्राचीन भारत के पहले कुलपति थे। विश्विद्यालयों में कुलपति की परम्परा उन्हीं से प्रारम्भ हुई।

आज पूरी दुनिया में नई शिक्षा नीतियों की बात होने लगी है। नए पाठ्यक्रम, नई कार्ययोजनाएं विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा नीति निर्धारक संस्थाओं में शिक्षा के आधुनिक स्वरूप के दुष्परिणामों से एक गहरा असंतोश वर्तमान शिक्षा के स्वरूप और प्रणाली से उभर रहा है। इसी गहरे असंतोष और दिन पर दिन गरम होती धरती, पिघलते ग्लेशियरों, जंगलों की कटाई से जलवायु में विध्वंसक परिवर्तन वातावरण में साक्षात् और जल्दी जल्दी हमारे सामने विनाशलीला कर रहे हैं. समद्रतल बढ़ने लगा है, गर्मियां बढ़ने लगी हैं, मौसम की ताल बिगड़ चुकी है कुल मिलकर दुनिया की पारिस्थितिकी गड़बड़ा चुकी है. धरती पर जीवन के लिए संकट आ खड़ा हुआ है। जीवन पर आए इस संकट ने उद्योगपतियों, नीतिनिर्धारकों, शिक्षाविदों और समस्त आम जीवन को इस सुविधा और विकास के बीच अस्तित्व के संकट ने उन्हें चिंता में दिया है। इसी चिंता के चिंतन से प्राचीन शिक्षा और संस्कृति कि ओर हम आज उन्मुख हुए हैं. प्राचीन शिक्षा की जब हम बात करते हैं तो भारत ही नहीं वैश्विक मंच पर भी उसका अर्थ भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था से ही है।

भारत विश्व में एक मात्र देश हैं जहाँ लगभग 10 हजार वर्श पूर्व भाषा की खोज हो चुकी थी। इंग्लॅण्ड के प्रसिद्ध प्राच्य भाषा शास्त्री और तिब्बती ऐतिहासिक ग्रंथों पर शोध करने वाले डब्ल्यू थॉमस के अनुसार है– "भारत में शिक्षा का कोई नई बात नहीं है। संसार का कोई भी देश ऐसा नहीं है, जहाँ पर ज्ञान के प्रेम की परम्परा भारत से अधिक प्राचीन एवं शक्तिशाली हो।"[6] भारतीय शिक्षा के पीछे हजारों वर्षों की शैक्षिक तथा सांस्कृतिक परम्परा का आधार रहा है–धर्म और धार्मिक मान्यताएँ।

वेद उसी धर्म और धार्मिक मान्यताओं के आदिशास्त्र हैं। संस्कृत जैसी वैज्ञानिक भाषा और प्रकृति सापेक्ष विद्या को भारत ने अपनी संस्कृति का आधार बनाया। जहाँ वेद शिक्षा और ज्ञान की अनुमानवादी प्रस्तुति थे तो वहीं उपनिषद उसके वैज्ञानिक चिंतन मनन और विश्लेषण की निष्पत्ति थे। जहाँ विमर्श वाद विवाद, संवाद और तात्विक विवेचन के पश्चात् किसी निष्कर्ष को सूत्र गढ़े गएकृसम्पूर्ण ब्रहामंड को जानने की तीव्र उत्कंठा से भारत में सीखने सिखाने की परंपरा ने जन्म लिया। अखिल ब्रह्माण्ड के विविध आयामों का जिज्ञासु ब्राह्मण कहलाया। उसने जीवन में पदार्थ से अधिक सत्य को महत्व दिया। सुख से परे एक नए सुख का अन्वेषण किया जिसे उसने आनंद कहा। वस्तुतः सुख और आनंद का भेद ही आधुनिक और प्राचीन शिक्षा का मूल अंतर है। प्राचीन भारत में शिक्षा जानकारी का पर्याय नहीं था उसे ज्ञान कहा गया। ज्ञान की उपादेयता लोक कल्याण के बिना अर्थहीन थी। इस देश का वैज्ञानिक संन्यस्त हुए बिना गवेषणा कर ही नहीं सकता। भारत के गुरुकुल और उनकी व्यवस्था उसी अवधारणा के उदहारण हैं।

भारत में प्राचीन शिक्षा का अर्थ था मुक्ति था अर्थात शिक्षा केवल उदरपूर्ति या अपनी वासनाओं लिप्साओं स्वार्थों को पूरा करने का माध्यम नहीं था वह जीवन की चारों भूखों को जीकर उनसे मुक्त होने का साध्य था। विष्णुपुराण में शिक्षा के उद्देश्य को परिभाषित किया गया है :

तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम्।।[7]

वह ही विद्या है जो नितांत मुक्ति दिलाए। भारत के समस्त जीवन दर्शन में ब्रह्म जीव जगत और फिर माया की बात कही गयी है। यह माया इस संसार के भोगो के प्रति आकर्षण ही है। यह आकर्षण जीव को कामांध बना देता है। प्राचीन शिक्षा ने मानवमन का विश्लेषण कर यह पाया कि उसमें नैसर्गिक रूप से तीन भाव होते हैं। राजसी, तामसिक और सात्विक, मनुष्य की चेतना जिस ओर प्रवाहित होती है उसमे उन्हीं गुणों का उद्‌भव और विकास होना शुरू हो जाता है। हमारा व्यक्तित्व भी इन्हीं गुणों के आधार पर रूप लेता है।

शतपथ ब्राह्मण में भोगवाद की परिणति को कई शताब्दी पूर्व ही उल्लखित कर दिया था। देवता भोग विलास में मदमत्त रहने लगे वे भोग के नशे में मानवीय सम्वेदनाओं से रिक्त हो चले थे जिसका परिणाम ही जल–प्लावन था। जयशंकर प्रसाद ने अपनी कामायनी में जल–प्लावन की कथा को अपनी कामायनी का आधार बनाया है।

भारत में शिक्षा का क्या उद्देश्य था यह हम विदेशी विद्वानों के मुंह से ही सुन लेते हैं क्योकि 600–700 सालों की गुलामी से उपजी हीन भावना ने अपनी कही बातों से हमारा विश्वास ही उठादिया। फ्राँस्वा मारी आरूऐ (François & Marie Arouet), एक फ्रान्सीसी ज्ञानोदय लेखक, इतिहासकार और दार्शनिक थे। अपने उपनाम वॉल्तैर से जाने जाते हैं, के शब्दो में "ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व, नागरिक तथा सामजिक कर्तव्यों का पालन, सामाजिक कुशलता की उन्नत्ति और राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार प्राचीन भारत में शिक्षा के मुख्य उद्देश्य एवं आदर्श थे। उस काल में शिक्षा को ज्ञान के पर्याय के रूप में लिया जाता था। इससे स्पष्ट है की इस काल में शिक्षा का प्रमुझ उद्देश्य ज्ञान का विकास था। समाज एवं राष्ट्र के प्रति के कर्तव्य पालन और राष्ट्रीय संस्कृति के संरक्षण एवं विकास पर भी इस काल में विशेष बल दिया जाता था। मोक्ष की प्राप्ति तो इस काल में मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य माना जाता था और उसकी प्राप्ति के लिए शिक्षा द्वारा इसका अध्यात्मिक विकास किया जाता था"।[8]

भारत की शिक्षा परम्परा वैदिक कल से प्रारम्भ होकर 7 वीं शताब्दी तक उत्तरोतर नवाचारी बनी रही जिसमें जिसमें जीवन

को चलाने के लिए भौतिक शिक्षा से लेकर आध्यात्मिक शिक्षा तक का ज्ञान दिया जाता था यह ज्ञान दो वर्गों में विभाजित था अपरा और परा जिसके अंतर्गत कर्मकाण्ड, ज्योतिर्विज्ञान, आयुर्विज्ञान, सैनिक शिक्षा, कृषि, पशुपालन, कला–कौशल, राजनीतिशास्त्र, भूगर्भशास्त्र के साथ–साथ उच्च शिक्षा में इतिहास, पुराण, नक्षत्र विद्या, न्यायशास्त्र, अर्थशास्त्र, देव विद्या, ब्रह्म विद्या आदि थे। प्राचीन भारत में तक्षशिला, केकय, मिथिला, प्रयाग, काशी, कांची, आदि प्रमुख शिक्षा केंद्र थे। शिक्षा निःशुल्क थी उसके लिए गुरुकल में ही आत्मनिर्भर बनाया जाता था। इसके लिए भिक्षाटन जैसी सामाजिक व्यवस्था थी वह वस्तुतः समाज और गुरुकुलों के बीच के सामंजस्य को दर्शाता है। कणाद बौधयान, चरक, कौमार, भृत्य, जीवक, सुश्रुत आर्यभट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, वाग्भट, नागार्जुन, भास्कराचार्य आदि विख्यात वैज्ञानिक थे जिन्हें ऋषि ही कहा जाता था।

आज भारत में आया NEP - 20 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 20) जैसी शिक्षा नीतियों उसी प्राचीन शिक्षा को पुनः स्थापित करने का ही प्रयास है। जहाँ शिक्षा समाज में भोगवादी आत्मजीवी तामसिक वृति वाले समाज को नहीं जन्म नहीं देती जिसने अपने स्वार्थ और स्वाद के लिए इस ग्रह को ही संकट में ला खड़ा किया है। जहाँ शिक्षा भौतिक विकास के साथ–साथ नैतिक और सांस्कृतिक आचरण को भी अनिवार्य मानती है। जिसमे सभी के भले में अपना भला देखने की संवदेना का भी विकास होता है। आज यदि हमें पर्यावरण को, आकाश पानी और धरती को विषाक्त होने से बचाना है तो प्राचीन शिक्षा की पद्दति अपना हमारी अनिवार्य आवश्यकता होनी चाहिए ।

सन्दर्भ सूची

1. सीमा जावेद की पर्यावरण पर एक रिपोर्ट।
2. आई पी सी सी सरकारी समिति की 2022 की रिपोर्ट।
3. ग्लोबल वॉर्मिंग की एक रिपोर्ट।
4. कामायनी (जयशंकर प्रसाद) चिंता सर्ग।
5. पर्यावरणविद अनिल जोशी की रिपोर्ट।
6. इंग्लॅण्ड के प्रसिद्ध प्राच्य भाशा शास्त्री और तिब्बती ऐतिहासिक ग्रंथों पर शोध करने वाले डब्ल्यू थॉमस की एक रिपोर्ट।
7. विष्णुपुराण का श्लोक।
8. फ्रॉस्वा मारी आरूऐ के विचार।

24

शिक्षा में संचार तकनीकी का अवदान

डॉ० आशुतोश विक्रम

सहायक आचार्य, इतिहास विभाग

राजकीय महाविद्यालय चुड़ियाला, भगवानपुर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

सारांश

हमारा समाज स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने की पहल यानी 'लोकल के लिए वोकल' के महत्व को समझ सके तो यह केवल आर्थिक ही नहीं, वरन अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का समाधान करने में सहायक हो सकेगा। देश में वैश्वीकरण की जिस चमक–दमक से आकर्शित होकर विदेशी ब्रांड के प्रति ललक तथा संग्रहण की प्रवषत्ति लोगों में बढ़ी है, वह अब केवल शहरों तक सीमित नहीं रही। इस प्रवृत्ति के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन आवश्यक है। इसके लिए हमें मुख्य रूप से अध्यापकों और स्कूलों पर निर्भर होना होगा। आज कोई भी बड़ा और स्थाई परिवर्तन शिक्षा व्यवस्था में मूलभूत बदलाव के बिना संभव नहीं। इसके लिए गहन दूरदृष्टि और हर क्षेत्र के लोगों की मानसिकता की समझ भी आवश्यक होगी ।

मुख्य शब्द

लोकल के लिए वोकल, कौशल और रोजगार, आत्मनिर्भर, तकनीक।

प्रस्तावना

रोजगार देना प्राथमिकता है, मगर केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। आत्मनिर्भर भारत के लिए ऐसी शिक्षा हर बच्चे को देनी होगी, जो उसे परिवार, गांव और समाज से जोड़ सके। उसे वे आधुनिक कौशल भी देने होंगे, जो वैज्ञानिक खोजों के परिणामस्वरूप हर जगह उपलब्ध हैं और जिनका सकारात्मक उपयोग हर क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन ला सकता है। जो राज्य इस समय परंपरागत कौशल और रोजगार के अवसर बढ़ाने पर विचार कर रहे हैं, उन्हें इस प्राथमिकता को गतिशील बनाए रखना होगा। सकारात्मक उपलब्धियों के उदाहरण लोगों के सामने उनका मनोबल बढ़ाने के लिए प्रस्तुत करने होंगे। जो दिशा–निर्देश राज्य सरकारें रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के संबंध में दे रही हैं, उनमें मजदूरों को स्कूलों में काम देने की बात भी कही गई है। इसका व्यय पंचायतों को उपलब्ध कोश से आना है। उत्तर प्रदेश सरकार ने कुछ समय पहले कायाकल्प कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूलों में संसाधन सुधार की पहल की थी। यदि यह सफल हो पाती तो एक अद्भुत उदाहरण बन सकती थी। ऐसा हो नहीं पाया, क्योंकि यहां भी पंचायतों के कोश पर ही भार आना था। अपेक्षा के प्रतिकूल पंचायतों की प्राथमिकता सूची में सरकारी स्कूल बहुत नीचे आते हैं। पंचायती राज एक्ट के बाद पंचायतों में राजनीति पूरी तरह प्रविष्ट हो चुकी है। उन्हें नए सिरे से प्रेरित करना होगा, मगर अन्य वैकल्पिक व्यवस्था पर भी विचार करना होगा।

कोरोना संकट के चलते जो लोग गांव में लौटकर आए हैं या वहीं रह रहे हैं और बेरोजगार होने के कारण निराशा में दिन काट रहे हैं, उनकी मनरूस्थिति समझे बिना इस मानव शक्ति का देश हित में उपयोग हो पाना कठिन है। इससे पार पाना कितना आवश्यक है, इसके हर पक्ष को गांधी जी ने समझा था। उनका कहना था, 'हर हिंदुस्तानी इसे अपना धर्म समझे कि जब–जब और जहां–जहां मिले, वहां वह हमेशा गांवों की बनी चीजें ही बरते'। अगर ऐसी चीज की मांग पैदा हो जाए तो इसमें जरा भी शक नहीं कि हमारी ज्यादातर जरूरतें गांवों से पूरी हो सकती हैं। जब हम गांवों के लिए सहानुभूति से सोचने लगेंगे और वहां की बनी चीजें हमें पसंद आने लगेंगी तो पश्चिम की नकल के रूप में यंत्रों से बनी चीजें हमें नहीं जंचेंगी और हम ऐसी राष्ट्रीय अभिरुचि का विकास करेंगे, जो गरीबी, भुखमरी और बेकारी से मुक्त नए हिंदुस्तान के आदर्श के साथ मेल खाती होंगी। क्या ये बातें आज की आवश्यकता को प्रदर्शित नहीं करतीं? गांधी जी की यह दूरदृष्टि भारतीयता की गहन अनुभवजन्य समझ और विश्लेषण का परिणाम थी। इसीलिए उनके विचार व्यवहार रूप में गांव–गांव तक पहुंचे।

आज की चुनौती स्वदेश प्रेम के साथ विज्ञान और तकनीक के ज्ञान का समझदारी पूर्ण उपयोग करने के लिए लोगों को

तैयार करने की है। पश्चिम की नकल में हमने भारत में शहरीकरण को लक्ष्य बना लिया। इससे गांव खाली होते गए और शहरों में नारकीय जीवन जीने को विवश करने वाली झुग्गियां बढ़ती रहीं। नेता अनधिकृत कॉलोनियों को वैध कराते रहे। इससे विकास यात्रा अस्त–व्यस्त हो गई और असमानता बढ़ती गई। कोरोना संकट ने विकास की इस अवधारणा की कलई खोलकर रख दी है। यह चेत जाने का समय है। यही समय है गांवों के सरकारी स्कूलों के कायाकल्प का। एक स्वच्छ–सक्रिय, अनुशासित स्कूल लोगों के आकर्षण का केंद्र बन सकता है। वह परामर्श और स्थानीय उत्पादन कौशल सीखने का केंद्र भी बन सकता है। करीब चार दशक पहले मध्य प्रदेश शासन ने एक कर्मठ गांधीवादी अध्यापक प्रेमनाथ रूसिया की पहल पर गांवों के स्कूलों को सुतली देकर टाट–पट्टी बनाने का कार्य शुरू कराया था। इसके लिए लूम केवल सौ रुपये की लकड़ी से स्थानीय कारीगर तैयार कर देते थे। सुतली राज्य खादी बोर्ड देता था। इससे करोड़ों का टर्नओवर संभव हुआ और गांवों में स्कूलों के प्रति आत्मीयता निर्मित हुई। मैं जिस प्रकार के स्कूलों की संकल्पना प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं, उसके मुख्य उद्देश्य स्कूलों की साख लौटाना, उनकी स्वीकार्यता बढ़ाना और माता–पिता के मन में यह भावना पैदा करना है कि उन्हें अपने बच्चों को महंगे निजी स्कूलों में पढ़ाना आवश्यक नहीं है। चीन और जापान इसके अग्रणी उदाहरण हैं कि उनकी विकास प्रक्रिया की सफलता का मूल कारण प्रारंभिक शिक्षा में असमानता का प्रवेश पूरी तरह निशिद्ध कर देना रहा। भारत ने संविधान में तो वायदा किया कि समानता के अवसर सभी को उपलब्ध होंगे, मगर व्यवहार में सरकारी स्कूल अपनी साख खोते गए। इससे निजी स्कूलों ने नया सुरक्षित क्षेत्र खोज लिया और लोगों के सामने उनके दरवाजों पर दस्तक देने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा।

यह कैसी विडंबना है कि सरकारी स्कूलों में अधिकांश वे बच्चे पढ़ते हैं, जिनके पास निजी स्कूलों में जाने की सामर्थ्य नहीं है। निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के माता–पिता यह जानते हैं कि उनका अनावश्यक दोहन हो रहा है, मगर वे विरोध नहीं कर सकते। कुछ निजी स्कूलों ने इस संकट के समय भी ई–लर्निंग की अलग से फीस मांगनी शुरू कर दी है। इस पर रोक केवल सरकारी स्कूलों की साख में सुधार से ही संभव है। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा को संचार एवं तकनीकी से आबद्ध करके के ही निजी विद्यालयों के प्रति आकर्षण कम किया जा सकता है। जिसके लिए हम सभी के समग्र प्रयास से ही सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास अर्जित कर सकते है।

शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी आधुनिक युग तकनीकी के विकास एवं क्रान्ति का युग है। प्रतिदिन नई–नई तकनीकियों तथा माध्यमों का विकास किया जा रहा है। माध्यमों के विकास ने विश्व की भौतिक दूरी को कम कर दिया है अथवा विश्व को बहुत छोटा कर दिया है। इसमें वृहद् तकनीकी प्रवृत्तियों का विशेष योगदान है। लघु तकनीकी प्रवृत्तियों का उपयोग कक्षा शिक्षण में प्रक्षेपित तथा अप्रेक्षित माध्यमों के रूप में किया जाता है। कक्षा शिक्षण में शिक्षण तकनीकी, अनुदेशन तकनीकी, सूचना तकनीकी, संचार तकनीकी, व्यवहार तकनीकी आदि का उपयोग किया जाता है। शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी ने मानवीय ज्ञान में वृद्धि की है, जिसके प्रमुख पक्ष–

(1) ज्ञान को संचित करना
(2) ज्ञान का प्रसार करना
(3) ज्ञान का विकास करना

प्रथम पक्ष ज्ञान को संचित करना है। छापने की मशीनों से पूर्व अधिकांश ज्ञान कंठस्थ ही किया जाता था और यह ज्ञान गुरु शिष्यों को प्रदान करते थे, परन्तु सूचना एवं संचार तकनीकी के प्रयोग से ज्ञान को पुस्तक के रूप में पुस्तकालयों में संचित किया जाने लगा। मानवीय ज्ञान का द्वितीय पक्ष ज्ञान का प्रसार करना है। शिक्षक अपने शिष्यों को संचित किये गये ज्ञान को प्रदान करता है। एक शिक्षक सीमित छात्रों को अपने ज्ञान से लाभान्वित करा सकता है, परन्तकी प्रक्रिया को जन्म देकर शिक्षा के क्षेत्रा को एक प्रमाणिक व सर्वसुलभ आयाम प्रदान किया है। तकनीकी के विकास से शिक्षा के क्षेत्रा में हम जिस क्रान्ति की कल्पना करते थे। आज कम्प्यूटर आधारित तकनीकी ने इस कल्पना को साकार करके शैक्षिक क्षेत्रा में नये युग का सूत्रापात किया है। प्रस्तुत पुस्तक 'शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी' को ग्यारह अध्यायों में प्रस्तुत किया गया है–

1. सूचना तकनीकी
2. संचार (सम्प्रेषण) तकनीकी
3. शिक्षा में दृश्य–श्रृव्य सामग्री
4. शिक्षा रेडियो
5. शिक्षा दूरदर्शन
6. शिक्षा कम्प्यूटर
7. सैटेलाइट आधारित शिक्षण संचार व्यवस्था
8. शिक्षा तकनीकी (प्रौद्योगिकी)

9. अभिक्रमित अनुदेशन
10, एजूसेट
11. दूरवर्ती शिक्षा

माइक, रेडियो, दूरदर्शन के प्रयोग से वह असंख्य छात्रों को अपना ज्ञान प्रदान कर सकता है। शिक्षा तकनीकी के परिणामस्वरूप शिक्षा प्रक्रिया बदल चुकी है। अब तक छात्रा विद्यालयों में तथा अध्यापकों के यहाँ जाया करते थे परन्तु अब अध्यापक छात्रों के यहाँ पहुँच रहा है। उदाहरणस्वरूप अध्यापक रेडियो अथवा टेलीविजन पर अभिभाषण करता है तो देश तथा संसार का प्रत्येक छात्रा अपने रेडियो पर उसका भाषण सुन सकता है और उसका पूरा लाभ उठा सकता है। पत्राचार–पाठ्यक्रम, मुक्त विश्वविद्यालय इसी की देन हैं। मानवीय ज्ञान का तृतीय पक्ष ज्ञान में वृद्धि करना है। शोध कार्यों के द्वारा ज्ञान में वृद्धि की जाती है। आधुनिक युग में वैज्ञानिक शोध कार्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। शोध कार्य में प्रदत्तों का संकलन करना तथा विश्लेषण करना प्रमुख कार्य है। इसके लिए कम्प्यूटर, इलेक्ट्रानिक कैल्कुलेटर तथा बिजली की मशीनों का प्रयोग किया जाता है। शोध कार्य को कम्प्यूटर के प्रयोग ने अधिक सुगम बना दिया है। शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी माध्यमों की सहायता से कक्षा में तथा कक्षा से बाहर भी शिक्षण, अनुदेशन तथा अधिगम की व्यवस्था की जाती है। यह कहा जाता है कि तकनीकी छात्रों के घर पहुँच रही है। विभिन्न माध्यमों की सहायता से शिक्षक छात्रों के घरों में पहुँच रहा है। आज शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक सूचना एवं संचार माध्यमों को प्रयोग किया जाता हैय जैसे–रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, वेबसाइट, टेलीकान्फ्रेंसिंग, वीडियोकान्फ्रेंसिंग आदि। शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समय–समय पर शिक्षाशास्त्रियों के द्वारा अभिनव प्रयास किये गये हैं। शिक्षा के जन सामान्य में प्रसार के लिए विज्ञान व तकनीकी ने नये आयामों को जन्म दिया है। रेडियो व दूरदर्शन जैसे उपकरणों के शैक्षिक प्रयोगों ने शैक्षिक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। आधुनिक कम्प्यूटर आधारित तकनीकी ने न केवल शैक्षिक प्रसार के स्वरुप को परिमार्जित किया है, बल्कि तकनीकी के समावेशन भी किया।

निष्कर्ष

इन सूचना, संचार एवं तकनीकी के प्रयोग से नए रोजगार का सृजन होगा साथ ही उत्पादन नीति मे आंशिक परिवर्तन एवं सहयोग को स्कूल सुधार को सम्मिलित करना आवश्यक है। इन सब के लिए संसाधनों एवं धन की आवश्यकता होगी। यहाँ यह तथ्य स्वीकार करना होगा कि अधिकांश केन्द्र एवं राज्य स्कूलों में सुधार के लिए आवश्यक धन आवंटन नहीं कर पाएंगे। केंद्र सरकार समर्थित एक बड़ी योजना की आवश्यकता होगी। इसमें किया गया निवेश अन्य क्षेत्र में किए गए निवेश से अधिक लाभांश एवं रोजगार प्रदान करेगा। इस सुधार को युद्धस्तर पर लागू करने से ही आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना सफल होगी।

सन्दर्भ सूची

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति. (2020). यूजीसी।
2. व्यावसायिक विकास कार्यक्रम. इग्नू।
3. संरचना, अभिगम, समता और भारतीय ज्ञान परम्परा. इग्नू।
4. प्रोद्योगिकी, अंतर्राष्ट्रीयकरण, अनुसंधान और विनियम. इग्नू।
5. डिजिटल शिक्षा प्रोद्योगिकी शिक्षण. इग्नू।

25

पर्वतीय क्षेत्रों में कुटीर एवं हस्तशिल्प उद्योगः सुअवसर एवं चुनौतियॉ

ऋतु सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
राजकीय महाविद्यालय नन्दासैंण, चमोली

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड राज्य जो कि 22 वें वर्ष में प्रवेशित एक युवा राज्य है। जिस प्रकार प्रत्येक युवा की अपनी विशेष विशेषताएॅ होती है उसी प्रकार उत्तराखण्ड की भी अपनी विशेष विशेषताएॅ है। जैसे यहॉ के बद्री–केदार, यमुनोत्री–गंगोत्री, पतित पावनी गंगा के उद्‌गम स्थल से लेकर हरिद्वार तक के प्रवाहित पथ पर विभिन्न नदियों के संगम स्थल, हिमाच्छादित गगनचुम्बी पर्वत शिखर किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। किसी भी राज्य के चहुमुखी विकास की रीढ़ की हड्‌डी आर्थिक विकास है। उत्तराखण्ड राज्य के कुटीर उद्योग व विशेष ख्यातिप्राप्त हस्तशिल्प निर्मित वस्तुएं यहॉ की विशेषता की गाथा सुनाते है। जिस प्रकार प्रकृति अपने सौन्दर्य को दोनों हाथों से राज्य में लुटाया है वही यहॉ के निवासियों को कार्य कुशलता व विभिन्न हस्त कौशल से भी पूर्ण रूप से सम्पन्न किया है। यहॉ का हस्तशिल्प सदियों से आकर्षण का केन्द्र उत्तराखण्ड का हस्तशिल्प उद्योग व कुटीर उद्योग में भी कई विविधताएॅ है। चाहे वह स्थानीय निवासियों के द्वारा अपने खेतों में कीवी व मशरूम उत्पादन व महिलाओं द्वारा रिंगाल के उपयोग से बनी टोकरियॉ, जड़ी–बूटी संवर्द्धन, खाद्य प्रसंस्करण, काष्ठ कला व दन व चटाई का बुनना, पश्मीना व यहॉ की विख्यात अंगोरा ऊन।

सुअवसर

मशरूम उत्पादन

चूकि पहाड़ों में समतल भूमि उपलब्ध नहीं है। अतः जिन किसानों के पास भूमि है या न के बराबर है उनके लिए मशरूम की खेती से बेहतर कोई विकल्प नहीं है। मशरूम की खेती उत्तराखण्ड के किसानों के लिए फायदे का सौदा साबित हो रहा है। उत्तराखण्ड का नैनीताल जिला अब मशरूम उत्पादन की राजधानी बनता जा रहा है। कोरोना काल के बाद से कुमाऊं मण्डल में 431 मीट्रिक टन मशरूम उत्पादन की बढत के साथ जिले में मशरूम उत्पादन 4310 मीट्रिक तक हुआ। जिले के भीमताल ब्लॉक में इस बार 2415 मीट्रिक टन मशरूम उत्पादन हुआ है। कोरोना सम्बन्धी पाबंदियां हटने के बाद इसमें फिर उछाल आया। मशरूम की कई प्रजातियां उत्तराखण्ड में पायी जाती जिनमें बटन, सफेद, इधिया, ढींगरी, पुआल व अन्य शामिल हैं। इनमें से उत्तराखण्ड में बटन और ढींगरी का उत्पादन ज्यादा होता है।

चूंकि मशरूम कम जगह, कम समय और कम लागत में तैयार होने वाली फसल है। अतः किसानों की पसंद बनता जा रहा है। पंत मशरूम श्रीनगर सहित अन्य शहरों में बड़ी डिमांड बढ़ती जा रही है। पोषक तत्वों से युक्त ढिंगरी मशरूम यहॉ हाथों हाथ दुकानों से उठा जा रहा है। इसकी उन्हें बेहतर आर्थिकी मिल रही है। माननीय प्रधानमंत्री मोदी ने टिहरी गढवाल के चंबा निवासी सुशांत उनियाल के साथ वीडियो कान्फ्रेंसिंग के जरिए बात चीत की व उनके द्वारा किये गये मशरूम उत्पादन के कार्य को खूब सराहा। उन्होंने मोदी जी से कहा कि उत्तराखण्ड की जलवायु ऐसी है कि उसमें 9 महीनें मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है। मशरूम की खेती का सफल उदाहरण सुश्री हिरेशा वर्मा जिन्होंने एक आईती पेशेवर से प्रसिद्ध मशरूम उत्पादन तक का सफर तय करते हुए देहरादून के चारबा गॉव में बतौर सफल उद्यमी "हानाग्रोकेयर देहरादून" नामक कम्पनी की मालिक हैं।

कीवी

पिछले कुछ दशकों में व महामारियों के दौर में कीवी विश्वभर में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ है। उत्तराखण्ड के किसानों का भी कीवी की बागवानी में काफी रूझान दिखा है। इसकी खेती मध्यम पर्वतीय क्षेत्र 1200 से 2000 मीटर तक की ऊंचाई जहॉ ग्रीष्मकालीन तापमान 35 डिग्री से ज्यादा ना रहता है। तेज हवाएं ना चलती हों तथा पाला ना पड़ता हो कीवी के उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इसकी खेती उत्तराखण्ड के वातावरण के हिसाब से अनुकूल है। उत्तराखण्ड में वर्ष 1984–85 में भारत इटली फल विकास

परियोजना के तहत राजकीय उद्यान मगरा टिहरी गढ़वाल में इटली के वैज्ञानिकों की देख रेख में इटली आयातित कीवी की विभिन्न प्रजातियों के 100 पौधों का रोपण किया गया, जिनसे कीवी का अच्छा उत्पादन आज भी हो रहा है।

वर्ष 1991–92 में तत्कालीन उद्यान निदेशक डॉ डी. आर. राठौर द्वारा राष्ट्रीय पादप आनुवांशिक संस्थान फागली शिमला, हिमांचल प्रदेश से कीवी की विभिन्न प्रजातियों को मंगाकर प्रयोग के लिए राज्य के विभिन्न उद्यान शोध केन्द्रों चौबटिया (रानीखेत), कोठियालसैंण (चमोली), चकरौता (देहरादून), पिथौरागढ़, झुण्डा (उत्तराकाशी) आदि स्थानों में लगाये गये जिनसे उत्साहवर्धक कीवी की उपज प्राप्त हुई। राज्य में कीवी बागवानी बोर्ड व उद्यान विभाग की सहायता से कीवी की खेती विकसित की है, और वर्तमान में भी प्रगति के पथ पर है। कीवी फलों की बाजार में भारी मांग है। कीवी का बाजार मूल्य सालाना 4.1 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। वर्ष 2019 में वैश्विक स्तर पर कीवी का व्यापार 6.9 बिलियन डॉलर था। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कीवी की बागवानी का भविष्य में बहुत अधिक सम्भावनाएं हैं।

जड़ी–बूटी उद्योग

सन् 1949 से ही उत्तराखण्ड में औषधीय पादपों पर आधारित लघु उद्योगों की स्थापना के लिए प्रयास आरम्भ किये गये थे। विगत चार दशकों में विश्व स्तर पर पादप उत्पाद आधारित प्राकृतिक अवयवों को वृहद रूप से दोहन किये जाने के फलस्वरूप प्राकृतिक आवासों से औषधीय पादपों की उपलब्धता कम होती जा रही है। दूसरी ओर औषधीय पादपों की मांग, रोग निदान एवं सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में लगातार बढ़ती जा रही है। अतः इन प्रजातियों के प्राकृतिक संरक्षण, शोध एवं विकास तथा कृषिकरण के उद्देश्य से तत्कालीन उत्तर प्रदेश के पर्वतीय विकास विभाग द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों में वर्ष 1989 में जनपद चमोली स्थित मण्डल में जड़ी–बूटी शोध एवं विकास संस्थान के निदेशालय की स्थापना की स्वीकृति हेतु शासनादेश जारी किया गया। वर्ष 2000 में उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना के उपरान्त राज्य में पर्यटन व तीर्थाटन, जल संसाधनों के सतत् उपयोग एवं औषधीय वनस्पतियों के समग्र विकास से इस पर्वतीय प्रदेश की आर्थिकी को औषधीय पादन की उत्पादकता आधारित बनाने के प्रयास किये गये। इसी क्रम में वर्ष 2002 में उत्तराखण्ड को हर्बल प्रदेश घोषित किया गया और जड़ी–बूटी शोध एवं विकास संस्थान, मण्डल–गोपेश्वर, चमोली को राज्य स्तरीय शीर्ष क्रियान्वयन संस्था के रूप में नामित किया गया। भेषज विकास इकाई, भेषज संघ, वन विकास निगम, कुमाऊॅ एवं गढ़वाल मण्डल विकास निगम, स्वयं सेवी संस्थाएं, कृषक समूह, शोध एवं विकास संस्थान तथा वन विभाग इस क्षेत्र के विकास में सहयोगी संस्थाओं की भूमिका में कार्यरत हैं। जड़ी–बूटी शोध एवं विकास संस्थान द्वारा औषधीय पादपों के कृषिकरण के लिए कृषकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि इनकी प्रजातियॉ पूरी तरह से खत्म ना हो सके तथा आगे आने वाले भविष्य के लिए बने रहें। औषधीय वनस्पतियों के कृषिकरण से दुर्लभ तथा संकटग्रस्त प्रजातियों के संरक्षण, जैवविविधता तथा आय के साधन में भी सुधार होगा'' (Research and Development Institute (HRDI))। औषधीय वनस्पतियों कुटकी और कूठ का कृषिकरण मुख्य रूप से ग्राम घेस विकासखण्ड थराली में बड़े पैमाने पर हो रहा है। यह *high Altitude Plant Physiology Research Centre (HAPPHRC), Garhwal University Shrinagar Garhwal* के प्रयासों से हो रहा है। Sati us 2012 में एक शोध पत्र Enhancing and Diversifying Livelihood Options in the Himalaya में बताया, 2007–2008 लगभग 25 परिवारों को 87,000 रूपये का लाभ हुआ है'।

खाद्य एवं फल प्रसंस्करण

चूंकि खाद्य एवं फल प्रसंस्करण उद्योग उत्तराखण्ड के सर्वव्यापी कुटीर उद्योगों में से एक है। यहॉ की जलवायु व भूमि की बनावट के अनुसार यहॉ उगने वाले फलों व सब्जियों को प्रसंस्करण की सहायता से देश के अन्य कोनों में पहुॅचाया जा सकता है। वर्तमान में बाजार में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थो की बढ़ती मांग को देखकर उत्तराखण्ड में खाद्य संरक्षण ईकाइयां स्थापित कर राज्य के शिक्षित बेरोजगारों को स्वरोजगार से जोड़कर आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जाए। उत्तराखण्ड में बड़े पैमाने पर फलों व दालों का उत्पादन होता है। जिनको प्रसंस्कृत कर आसानी से बाजार में पहुॅचाया जा सकता है। उत्तराखण्ड में खाद्य प्रसंस्करण को लेकर नई नई सम्भावनाएं जागी है। अब तक उत्तराखण्ड में अकेला स्वामी रामदेव का पतंजलि फूडपार्क ही है। परन्तु अब उत्तराखण्ड सरकार ने राज्य में खाद्य प्रसंस्करण को लेकर नई पहल की। राज्य के कृषि और बागवानी विभाग ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को कोर सेक्टर में शामिल किया। इससे पहाड़ के दूरदराज इलाकों में सेब, माल्टा, पहाड़ी नीबू, गलगल समेत कई फसलों का उचित मूल्य पर्वतीय किसानों को मिलेगा व बाजार की समस्या भी आड़े नहीं आयेगी।

उत्तराखण्ड राज्य के फूड प्रोसेसिंग सेक्टर में निवेश की काफी सम्भावनाएं हैं। सरकार इस सेक्टर में निवेश के लिए कृषि व उद्यान विभाग की ओर से प्रस्ताव बना कर कम्पनियों से निवेश के लिए संपर्क कर रही है। प्रदेश में फूड प्रोसेसिंग उद्योग लगने से जिससे किसान को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है कृषि उत्पादों का वेल्यु एडिशन होने से किसानों को अच्छे दाम मिलेंगे। व कम्पनी सीधे किसानों से उत्पाद खरीदेगी। राज्य की विकट भौगोलिक परिस्थिति के कारण के बाद बागवानी उत्पाद बर्बाद हो जाते हैं। सरकार द्वारा उधमसिंह नगर में 150 करोड़ का फूड प्रोसेसिंग स्थापित करने के लिए कृषि विभाग व मुंबई की सिद्धि कम्पनी के साथ एम ओ यू हो चुका है। गुजरात की बालाजी बेकर्स कम्पनी उत्तराखण्ड में 500 करोड़ का निवेश कर फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री

लगाने को तैयार है। केन्द्र सरकार ने खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उन्नयन योजना शुरू की है। इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र ने 2025 तक राज्य को 175 ईकाइयां स्थापित करने का लक्ष्य रखा है।

काष्ठ कला

समूचा उत्तराखण्ड लकड़ी की प्रधानता होने के कारण अपनी अनूठी काष्ठ कला के लिए आज भी प्रसिद्ध है। गॉवों में पुराने मकानों के दरवाजों, खिड़कियों पर आज भी प्राचीन काष्ठ कला ने अपनी छाप छोड़ी है। हाथों से लकड़ी पर उकेरी नक्काशी हर घर की शान होती है। लकड़ी से पाली, ठेकी, कुमैया भदेल, नाली समेत अन्य प्रकार के बर्तनों को इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु यह नक्काशी अब स्मृति में भी अवशेष चिन्हों के रूप में रह गयी है। पहाड़ में हुनरमन्दों को कोई कमी नहीं है। यहॉ एक से बढ़कर एक बेजोड़ हस्तशिल्प है। इसका ज्वलन्त उदाहरण धर्मलाल है जिन्हें हस्तशिल्प कला के लिए देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी से नवाजा गया है। 2016 में उत्तराखण्ड का शिल्प रत्न पुरूस्कार या 2017 में भारत सरकार के इंटीग्रेटेड डेवेलपमेन्ट एण्ड प्रोफेशन योजना के तहत चयनित होने पर इग्लैंण्ड के बर्मिघम में आटोमन इंटरनेशनल फेयर में वस्तुओं की प्रदर्शिनी लगायी जिसे विदेशियों द्वारा खूब सराहा गया व लकड़ी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहाड़ की काष्ठ कला का लोहा मनवाया। परन्तु मौजूदा दौर में लकड़ियों पर होने वाली पहाड की परम्परागत नक्काशी धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। पहाड़ों में भी सीमेंट और कंकरीट के बने घर अपना स्थान बढ़ाते जा रहे हैं। लकड़ी की अनुपलब्धता व काष्ठ कलाकारों की उपेक्षा के चलते यह कला हाशिए पर जा रही है। अल्मोड़ा में नक्काशीदार प्राचीन भवन इस काष्ठ कला का उत्कृट उदाहरण है जिन्हें दूर–दूर से देखने सैलानी आते हैं। देवभूमि में बसे लोगों के घरों की खूबसूरत काष्ठ कला हर किसी को मोहित करती है। देवी देवताओं से लेकर तरह–तरह की डिजाइन की नक्काशी पहाड़ के हर घर की पहचान के रूप में थी। इसे स्टेटस सिंबल के रूप में भी देखा जाता था। यह रोजगार का बड़ा साधन बढ़ सकता है। व इससे पहाड़ों पर से होने वाले पलायन रूक सकता है। परम्परागत खोली, रम्माण के मुखौटे, घरो मे लकड़ी के जंगले लकड़ी के भगवान के मंदिर व मूर्तियां बनाकर कलाकार स्थानीय बाजारों में बेचते हैं। चूंकि उत्तराखण्ड पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है अतः लकड़ी की क्रियात्मक वस्तुएं बनाकर विक्रय करना काफी लाभकारी है। वनोपजों पर प्रतिबंध के फलस्वरूप काष्ठकला का पुरातन स्वरूप बदल चुका है। प्लास्टिक व आयरन इंजीनियरिंग के विकल्प मिल जाने से काष्ठकला का काफी हद तक कम हुई है। पुरानी नक्काशीदार चौखटों की जगह सीधे सपाट विंडो डोर फ्रेम लगे हैं।

रेशा व कालीन शिल्प

उत्तराखण्ड राज्य के अनेक क्षेत्रों में भांग के पौधे से प्राप्त रेशों से कुथले, कम्बल, दरी, रस्सियां बनाई जाती है। पिथौरागढ के धारचूला व मुनस्यारी के कुछ क्षेत्रों में कालीन उद्योग काफी प्रसिद्ध है। उत्तराखण्ड की अर्थव्यवस्था इससे बहुत हद तक सुदृढ़ बनी है। पिथौरागढ़ के दुर्गम गिरी श्रृंगों में निवास करने वाली भोटिया जनजाति का ऊनी शिल्प विश्व प्रसिद्ध है। प्रायः तीन तरह की शैलियों से कालीन की बुनाई की जाती है, पहली धारचूला पेटेंट, दूसरा मुनस्यारी पेटेंट तथा तीसरा भदोही पेटेंट सबसे ज्यादा महंगी व मजबूती वाली बुनाई मुनस्यारी पेटेंट में होती है। ये बुनकर ज्यादातर पहाड़ी जनजातियों की ग्रामीण महिलाएं जो आश्चर्यजनक रूप से आदिम उपकरणों और तकनीकों की मदद से हाथ से चुने हुए सुंदर उत्पादों का उत्पादन करती है। उत्तराखण्ड के पारम्परिक बुनकरों द्वारा इस्तेमाल किए गये रूपांकनों में पड़ोसी राज्य तिब्बत नेपाल व चीन के दिलचस्प प्रभाव दिखाई देते हैं। उसके बावजूद भी यहॉ के पारम्परिक वस्त्र अपने स्वयं के अद्वितीय जातीय चरित्र को दर्शाते है। यहॉ के बुनकरों द्वारा तैयार किए गये उत्पादों को पर्यटक काफी पसन्द भी करते हैं। बाजार की मांग के अनुसार इन्हें उच्च गुणवत्तापूर्ण बनाया जाएगा। हाल में ही पॉच हस्तशिल्प उत्पादों को जी–7 टैग मिलने से इस मुहिम में तेजी आएगी।

रिंगाल शिल्प

रिंगाल व बांस दोनों एक ही प्रजाति के पौधे है। पर्वतीय अचंलों में सूपा, डालियों, कंडी, टोकरी, पिटारा, मोस्ता, चटाई आदि हस्तशिल्पों उत्पादों का आज भी बोलबाला है। उच्च किस्म का रिंगाल ऊंचाई वाली जगहों पर पाया जाता है। रूड़िया जाति के लोग इस कार्य को कुटीर उद्योग की भॉति करते है। ग्रामीण क्षेत्रों में इस की मॉग ज्यादा है क्योंकि यहॉ पर खेती का कार्य होता है। डलिया छापरी का प्रयोग आज भी किया जाता है। प्राचीन समय से मोस्टा का निर्माण मुनस्यारी क्षेत्रों में ज्यादा किया जाता है। आज इससे विभिन्न प्रकार की सजावट की चीजें, टेबल, कुर्सी, सोफा, छोटी बड़ी टोकरियां आदि बनाई जाती है जो बाजार में विक्रय हेतु उपलब्ध होती है। रिंगाल से बनी वस्तुओं की मॉग भारतवर्ष ही नहीं बल्कि विदेशों में भी होने लगी है।

ऊनी वस्त्र उद्योग

उत्तराखण्ड राज्य में ऊनी व्यवसाय में अपार सम्भावनाएं हैं। राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों में किसी जमाने में लोगों की आजीविका का मुख्य साधन खेतीबाडी के साथ भेड़पालन था। इनसे निकलने वाली ऊन स्थानीय हस्तशिल्प में उपयोग होने के साथ ही देश ही देश के बड़े शहरों में भी भेजी जाती रही है। अतः स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार द्वारा उत्तराखण्ड में भेड़ पालन व्यवसाय के महत्व को दृष्टिगत को नजर रखते हुए सन् 1950 में राजकीय भेड़ प्रजनन व ऊन अनुसंधान केन्द्र पीपलकोटी चमोली की स्थापना की गयी। इसकी ऊन से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन करना उत्तराखण्ड के समस्त जिलों में यहॉ के लोगों का पारम्परिक

व्यवसाय रहा है। यह कुटीर उद्योग के रूप में सभी जनपदों में संचालित है। मुख्यतः भोटिया हिमालयी बुनकर समुदाय है जो उत्तराखण्ड के बुनाई उद्योग पर हावी है। इनके अलावा क्षेत्र में रोमपा और कोल जैसे अन्य बुनकर समुदाय भी है। उद्योग नियमित वस्तुओं जैसे मोजे, टोपी, स्कार्फ, स्वेटर, मफलर आदि से लेकर शाल या कालीन जैसी विशिष्ट वस्तुओं तक के वस्त्र उत्पादों की एक बड़ी विविधता बनाता है। उत्तराखण्ड की हिमालयी जलवायु और स्थानीय भेड़ पालन प्रयासों से क्षेत्र में ऊनी उद्योग के प्राकृतिक विकास में काफी हद तक योगदान दिया है। कौसानी के शॉल भी तैयार किए जाते है। शाल सुपरफाइव अंगोरा खरगोश ऊन से बने होते है। यहॉ के शाल व स्टाल दुनिया भर के पर्यटकों और शिल्प लोगों की पहली पसन्द है।

चुनौतियां

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि किसी भी राज्य, प्रदेश या देश को आर्थिक स्थिति उस स्थान को रीढ़ की हड्डी होती है उसी प्रकार यह भी सत्य है कि आर्थिक स्थिति को सबल बनाने में उद्योगों का बड़ा हाथ है चाहे वह वष्हद उद्योग हो या लघु उद्योग।

उद्योग न केवल आर्थिक सबलता प्रदान करते है साथ साथ रोजगार के साधन भी उपलब्ध कराते हैं। लघु कुटीर उद्योग स्वरोजगार के लिए एक वरदान है किन्तु उद्योगों को सफलता तथा उनसे प्राप्त होने वाले लाभ कई कारकों पर निर्भर करता है। जैसे उस स्थान को जलवायु, भूमि, जल व कच्चे माल की उपलब्धता, श्रमिक इत्यादि। उत्तराखण्ड जैसे राज्य में जहॉ की अधिकतर भूमि पर्वतीय है किसी भी उद्योग के लिए चुनौतियॉ पहाड़ के रूप में खडी है। कुछ तराई स्थानों को छोडकर सभी स्थान पर्वतीय है जो न कृषि हेतु सुलभ है न ही किसी विशेष उद्योग हेतु।

उत्तराखण्ड में इतनी विषमताओं के होते हुए भी यहॉ कई उद्योगों को स्थापित किया गया है। जैसे ऊन उद्योग, रेशम उद्योग, काष्ठ कला, इत्यादि। उत्तराखण्ड का उत्तरकाशी जिला ऊन उत्पादन में पहले स्थान पर होने के बावजूद भी यह उतना लाभकारी सिद्ध नहीं हो पा रहा। भोटिया जनजाति के लोगों के परिवार की आय का मुख्य जरिया भेडों की ऊन से स्वेटर, शॉल, टोपी, कंबल कालीन तथा गर्म कपड़े बनाना है। बाजार में इनकी मांग के घटने से इस व्यवसाय में नई युवा पीढी का रूझान कम होता हा रहा है जिसका कारण यह है कि आधुनिक उपकरण व तकनीक की उपलब्धता न होने के कारण ऊन से कपड़ा बनने तक के सभी कार्यो को हाथों से करना पडता है जो समय व परिश्रम दोनों का ही ह्यस करता है।

लम्बे समय तक कम काम कर पाने के कारण इसकी लागत अधिक हो जाती है जबकि बाजार में उपलब्ध मशीनों द्वारा निर्मित कपड़े कम दामों में मिल जाते है। सरकार द्वारा ऊन प्रसंस्करण के लिए कार्डिग व स्पिनिंग प्लांट उपलब्ध न कराने के कारण ऊनी वस्त्रों का यह व्यवसाय अब समाप्ति की कगार पर है। जागरण प्रतिनिधि समाचार द्वारा प्रकाशित एक लेख के अनुसार वर्ष 2000 में वीरपुर में उद्योग विभाग को ओर से कार्डिग प्लांट लगाया गया था जो घटिया दर्जे का होने के कारण साल भर बाद आज तक भी इसे सही नहीं किया गया है।

गेहॅू, धान तथा सब्जियों की पारंम्परिक खेती की गैर लाभकारी प्रथा के कारण युवा के पहाड़ों से पलायन होने के रास्ता और साफ हो गया है। ग्रामीण युवाओं को मूल स्थान पर रहकर बेहतर आय अर्जित करने के लक्ष्य से मशरूम की खेती आरम्भ करना एक सफल प्रयास है। किन्तु चुनौतियॉ इस व्यवसाय में भी अपने पॉव पसार लिये है। बीजों की उपलब्धता नजदीक न होने के कारण कई स्थानों पर मशरूम कृषकों को 50 किलोमीटर का रास्ता तय करना पड़ता है। आस पास कोई लीज खरीद केन्द्र न होने के कारण खेती की लागत व परिश्रम स्वतः ही बढ़ जाती है। लाखों रूपये की योजनायें सरकार द्वारा चलायी गयी पर उनका लाभ किसानों को मिल नहीं पा रहा इसलिए जमीनी स्तर पर कार्य करना बहुत आवश्यक है।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड की आजीविका व यहॉ के मूल निवासियों की रोजी रोटी चलाने में इन कुटीर उद्योगों व हस्तशिल्प उद्योगों का बहुमूल्य योगदान है। यहॉ की भौगोलिक दशाए जैसे समतल भूमि का ना होना, अत्यधिक दुरूह बना देता। अतः पहाड़ के युवा आजीविका की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने लगे है। और घोस्ट विलेज जैसे शीर्षक यहॉ के गॉवों को मिलने लगे है। परन्तु यहॉ के कुटीर उद्योग व हस्तशिल्प को थोड़ा सा सहारा देकर फिर पटरी पर लाया जा सकता है जिससे ग्रामीणों की आर्थिकी सुधर जाएगी व यहॉ निर्मित सामानों को उचित दर व बाजार मिलने के कारण यहॉ का प्रत्येक युवा अपने स्वयं की प्रतिभा निखारने पर ध्यान देगा। यह उक्ति की पहाड़ की जवानी ओर पहाड़ का पानी पहाड के काम नहीं आता पूरी तरह अर्थहीन हो जाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राज्य बागवानी मिशन 9 अगस्त 2021 काफल ट्री।
2. (2022). अमर उजाला–15 मई।
3. MOFPI- live Hindustan.com
4. Herbal Research and Development Institute (HRDI). (2005). Aushdhiya evam sagandh paudhon ke satat

vikas hetu mahatvapurna shashandesh (Important Government orders for sustainable development of medicinal and aromatic plants; in Hindi). Jadi Buti Shodh evam Vikas Sansthan (Herbal Research and Development Institute; HRDI), Gopeshwar (Chamoli), India.

5. Sati, V.P. (2012). Enhancing and Diversifying Livelihood Options in the Himalaya. Lambert Academic Publications: Germany.
6. Wiersum, K.F. (2006). Diversity and change in homegarden cultivation in Indonesia. In: Kumar B.M. and Nair P.K.R. (eds). Tropical homegardens: A time-tested example of sustainable Workman.
7. (2020). Jagran- 17 September.
8. (2016). Studyfry.com- 3 Nov.
9. (2021). Bharat. 8 Nov.
10. (2021). www.jetir.org. (ISSN 23495162). July.
11. हिन्दी विवेक. org. आत्मनिर्भर उत्तराखण्ड।
12. टम्टा, सुरेशचन्द्र. (2007). वर्तमान अतीत मध्य हिमालय का शिल्प, शिल्पकार एवं नष्पुरातत्व अल्मोड़ा. पृष्ठ 142.
13. Taxtile Value Chain. 21-22 March.

26

रूस–यूक्रेन युद्ध के वैश्विक प्रभाव

डॉ० सरिता तिवारी
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मालदेवता रायपुर, देहरादून

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में रूस और यूक्रेन के मध्य चल रहे युद्ध के कारण वैश्विक स्तर पर पड़ रहे प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। चाहे वह प्रभाव आर्थिक हों या सामाजिक ,राजनीतिक हों या सामरिक। शोध पत्र का उद्देश्य इन प्रभावों के माध्यम से युद्धरत पक्षों के हितों और टकराव का निष्पक्षता से विश्लेषण करना है सर्वप्रथम दोनों देशों के बीच संघर्ष के कारणों को बताया गया है। कभी एक ही सांझी विरासत का हिस्सा रहे दो देश संघर्षरत है।इसके बाद युद्ध की विभीषिका को बताया गया है और इसके कारण वैश्विक स्तर पर प्रभाव डालने वाले कारकों को जांचा परखा गया है। अन्त में इसके समाधान पर चर्चा की गई है।

मुख्य शब्द

जी–20, सी0आई0एस0, नाटो, क्वाड।

परिचय

कभी एक ही संघ का और संयुक्त विरासत का भाग रहे रूस–यूक्रेन आज युद्धरत है। 1917 की साम्यवादी क्रान्ति के बाद सोवियत संघ का भाग बने यूक्रेन को अलग राष्ट्र के रूप में पहचान 1991 में सोवियत संघ के विखण्डन के बाद मिली। सोवियत संघ से पृथक होने के बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 15 देश अस्तित्व में आए– आर्मीनिया, अजरबेजान, बेलारूस, इस्तोनिया, जॉर्जिया, कजाकिस्तान, कीर्गिस्तान, लातविया ,लिथुआनिया, मालदोवा, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन और उज्बेकिस्तान। सोवियत विखण्डन की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए पुष्पेश पन्त कहते है कि” केन्द्रिय नियोजन वाली अर्थव्यवस्था में विकास ने सोवियत संघ के विभिन्न हिस्सों को विकास का लाभ बहुत ही असंतुलित ढंग से पहुंचाया था। केन्द्र सरकार के सामरिक विश्लेषण के अनुसार देश के विभिन्न हिस्सों को (राष्ट्रों व उपराष्ट्रों) साम्यवाद की रक्षा के लिए और राष्ट्र हित में या अन्तर्राष्ट्रीय भाई–चारे के बहाने –कुर्बानी देने के लिए मजबूर होना पड़ता था। ऐसा नहीं था कि असंतोष या आक्रोश पैदा ही नहीं होते थे। सिर्फ दमनकारी नीतियों के कारण इनकी मुखर अभिव्यक्ति कठिन थी। स्टालिन युग की समाप्ति के बाद ख्रुशचैव ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया कि सोवियत संघ के घटक राज्यों को अब राजनैतिक दृष्टि से स्वायत्त तथा आत्मनिर्भर होने का मौका मिलेगा।”[1] कुल मिलाकर सोवियत गणराज्यों पर ध्यान नहीं दिया गया। सोवियत संघ के विखण्डन के बाद प्रथम दशक में रूस अपनी अन्दरूनी समस्याओं से ग्रस्त था। उससे पृथक हुए तीन देश एस्टोनिया,लातविया और लिथुआनिया ने यूरोपीय संघ और नाटो की सदस्यता प्राप्त कर ली। शेष 12 देशों ने प्रारम्भ ने अपना पृथक रूप से द कॉमनवेल्थ ऑफ इंडिपेण्डेण्ट स्टेट्स (सी0आई0एस0) का गठन किया और उसके बाद वे द कलेक्टिव सिक्योरिटी ट्रीटी ऑरगेनाइजेशन में सम्मिलत हो गए। इस संगठन का रूस भी सदस्य था। सोवियत संघ के आघात से कुछ उबरने के बाद रूस की साम्राज्यवादी आकांक्षाएं पुनः सामने आने लगी। इसके कारण रूस का यूक्रेन ,चेचन्या, जार्जिया, मालदोवा और काकेशिया के साथ टकराव बढ़ा। उसे ताजिकिस्तान के गृह युद्ध में भी उलझना पड़ा। चेचन्या को छोड़कर शेष सभी लड़ाईयों में रूस को जीत मिली और उसका मनोबल बढ़ता चला गया। इसका परिणाम ये हुआ कि सोवियत संघ से पृथक हुए अधिकांश देशों ने उसके वर्चस्व को स्वीकार कर लिया और आश्रय ग्रहण कर लिया। यूक्रेन भी रूस के निशाने पर रहा है। यूक्रेन लगभग 49 करोड की आबादी वाला देश है। विखण्डन के बाद 1997 में रूस और यूक्रेन के मध्य संधि हुई। इसके माध्यम से यूक्रेन की सीमा पर सहमति बनी और ये भी वादा किया गया कि परस्पर एक–दूसरे की सम्प्रभुता का सम्मान करगें किन्तु इसके बाद भी यूक्रेन के अलग–अलग क्षेत्रों में कुछ ऐसी कमियां रह गई जिससे मतभेद बने रहे। यूक्रेन जब सोवियत संघ का भाग था तब सार्वजनिक क्षेत्र में रूसी भाषा का ही बोलबाला था इसके बाद भी सांस्कृतिक स्वायत्तता में यूक्रेन पीछे नहीं था। 20 वीं सदी के उतरार्ध में यूक्रेन के शिक्षित लोगों

के मध्य अपनी सभ्यता,संस्कृति और पहचान को लेकर सशक्त राष्ट्रवादी आन्दोलन चला। सोवियत संघ से पृथक होने के पश्चात् यूक्रेन में कई राजनीतिक घटनाएं हुई जैसे 2004 के यूक्रेनी राष्ट्रपति चूनाव में पुतिन की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बहुत बड़ा झटका लगा। पश्चिम समर्थक विपक्षी नेता विक्टर युश्चेन्को के विरूद्ध रूसी समर्थक विक्टर यानुकोविच चुनाव के रण में थे। चुनाव में घोटाले के दोषारोपण के मध्य रूस विरोधी विक्टर युश्चेन्को चुनाव जीत गए। इससे यूक्रेन में रूस के प्रभाव का लगभग अन्त हो गया और इसके बाद यूक्रेन ने सार्वजनिक रूप से नाटो में सम्मिलित होने की इच्छा व्यक्त कर दी। 2014 में यूक्रेन की रूस समर्थित यानुकोविच सरकार जनआन्दोलन के दबाव में गिर गई,रूसी सरकार ने इसका दोषी पश्चिमी देशों को माना तथा प्रतिक्रिया में यूक्रेन के रूसी जनसंख्या बहुल क्षेत्र क्रीमिया प्रायद्वीप को अपने नियन्त्रण में ले लिया। जनमत संग्रह में क्रीमिया और सेवस्तोपोल ने औपचारिक रूप से क्रीमिया गणराज्य की स्वतंत्रता की घोषणा की। आज ये रूस का घटक है। वर्ष 2019 के चुनावों में ब्लादिमीर जेलेन्स्की यूक्रेन के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए जिन्हे पश्चिम समर्थक माना जाता है।

युद्ध के कारण

1. यूक्रेन के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के बीच वैचारिक, धार्मिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक भेद है। यूक्रेन के पूर्वी भाग में रूसी भाषा–भाषी लोग रहते है । ये आर्थोडॉक्स क्रिश्यनिटी को मानते है। इनके ऊपर रूस का गहरा प्रभाव है। रूस के साथ ये प्रगाढ़ता का अनुभव करते है। जबकि पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग कैथोलिक है और यूक्रेनी भाषा को बोलते है। इनके ऊपर पश्चिमी देशों का बड़ा प्रभाव है। रूस आरोप लगाता रहा है कि यूक्रेन ,पूर्वी हिस्से में रहने वाले रूसी लोगों का उत्पीड़न और दमन करता रहा है।
2. रूस के राष्ट्रपति पुतिन की महत्वाकांक्षा भी इस युद्ध के लिए उत्तरदाई है। रूस स्वंय को कभी महाशक्ति रहे देश का उत्तराधिकारी मानता है और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पुनः अपने को एक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयासरत हैं ताकि पश्चिमी देश उसकी उपेक्षा ना कर सके। 2004 में पुतिन ने सोवियत संघ के विघटन को एक बड़े स्तर की त्रासदी कहा था। इस प्रकार रूस की पुनः प्रतिष्ठत होने की महत्वाकांक्षा और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्स्की की रूस की छत्र–छाया से मुक्त होने की इच्छा तनाव का कारण है।
3. नाटो (उत्तरी अटलाण्टिक संधि संगठन) जिसकी स्थापना शीतयुद्ध काल में अमेरिकी गुट द्वारा की गई थी। रूस आरम्भ से ही इसे संदेह की दृष्टि से देखता है। "वर्तमान विवाद की समस्या यूक्रेन के नाटो का सदस्य बनने एवं इससे रूस की सुरक्षा एवं सामरिक हित पर संभावित विपरीत प्रभाव को लेकर है। रूस को भय है कि यूक्रेन के नाटो का सदस्य बनने के बाद नाटो के सैन्य ठिकाने रूस की सीमा के निकट स्थापित हो जाएंगे।"[2] इन्हीं कारणों से 24 फरवरी 2022 को रूस ने यूक्रेन के ऊपर आक्रमण किया जिसके विषय में कई विशेषज्ञों का अनुमान था कि कुछ ही समय के अन्दर ये युद्ध समाप्त हो जायेगा , किन्तु ऐसा नहीं हुआ लगभग 1 वर्ष से अधिक का समय हो चुका है और दोनों पक्ष युद्धरत है। पुतिन का उद्देश्य यूक्रेन को पराजित कर जेलेन्स्की को हटाकर एक कठपुतली सरकार को सत्ता में बिठाना था जो रूस के अनुसार चल सके किन्तु ऐसा नहीं हुआ ,अमेरिका के नेतृत्व में नाटो व पश्चिमी गुटों द्वारा यूक्रेन को शस्त्रों से और धन से सहायता पहुंचाना इस युद्ध को लम्बा खींच गया। यद्यपि रूस की धमकी के कारण यूरोप का कोई देश प्रत्यक्ष रूप से यूक्रेन के साथ युद्ध में सम्मिलित नहीं है फिर भी यूक्रेन को मिली सहायता ने न केवल उसके मनोबल को उच्च किया बल्कि युद्ध के क्षेत्र में डटे रहने का साहस भी प्रदान किया।

कोविड महामारी के दौर से विश्व अभी निकल भी नहीं पाया था कि रूस–यूक्रेन युद्ध की त्रासदी में फंस गया। इसके व्यापक स्तर पर वैश्विक प्रभाव दिखाई देने आरम्भ हो गए है।

वैश्विक प्रभाव

1. आर्थिक प्रभाव

इस युद्ध के कारण यूरोपीय देशों में रूस से जो प्राकृतिक गैस की आपूर्ति होती थी ,उसके बन्द होने के कारण कई कम्पनियां बन्द होने की ओर है जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों के बेरोजगार होने का भय पैदा हो गया है। वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसके कुप्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होने लगे है। बढ़ती मुद्रास्फीति और ऊर्जा लागत में वृद्धि होने से यूरोप मन्दी की ओर जा रहा है।

चूंकि रूस और यूक्रेन प्रमुख वस्तु उत्पादक देश है अतः आपूर्ति बाधित होने से वैश्विक मूल्यों में वृद्धि हुई है। जैसे– तेल व प्राकृतिक गैस के दामों में।

"विश्व बैंक ने कहा है कि खाद्य कीमतों में वृद्धि से अतिरिक्त 40 लाख लोग 1 90 डॉलर प्रतिदिन गरीबी रेखा से नीचे जा सकते है। इससे उप–सहारा ,अफ्रीका से काकेशस और मध्य एशिया तक कुछ क्षेत्रों में अशांति का अधिक खतरा पैदा हो सकता है। जबकि अफ्रीका और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में खाद्य असुरक्षा की ओर बढ़ने की सम्भावना है।"[3] अफ्रीका के अनेक देशों में दीर्घकाल से चल रहे सूखे,आन्तरिक हिंसा व अन्य कारणों से खाद्य संकट पूर्व से ही विद्यमान था। इनमें से अनेक देश यूक्रेन और

रूस पर कुछ मुख्य खाद्य वस्तुओं जैसे– गेंहू , मक्का, खाद्य तेल आदि के लिए बहुत हद तक निर्भर थे। इसके अलावा इन देशों से उन्हें रासायनिक खाद भी प्राप्त होती थी। जिस पर उनकी खाद्य उत्पादन क्षमता निर्भर थी। ज्ञातव्य है कि विदेशी परियोजनाओं व विशेषज्ञों ने अफ्रीका पर अधिक कीटनाशकों, मंहगे बीजों और रासायनिक खाद के प्रयोग के लिए दबाव बनाया है जिसके कारण यहां की भूमि जो जैविक खाद पर निर्भर थी, अब रासायनिक खाद पर अधिक आश्रित हो गई है।

इस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए यूक्रेन युद्ध एक बड़ा खतरा है। “अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने चेतावनी दी है कि यूक्रेन के विरूद्ध युद्ध से विश्व के अधिकांश देशों की आर्थिक सम्भावनाएं कमजोर पड़ रही है और मंहगाई की उच्च्व दर वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए स्पष्ट रूप से खतरा है। आईएमएफ की प्रबन्ध निदेशक क्रिस्टलीना जॉर्जिवा ने कहा कि यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के कारण 186 देशों की आर्थिक स्थिति में गिरावट आई है। युद्ध ने ऊर्जा और अनाज के वैश्विक व्यापार को बाधित किया है।”[4] रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण भारत के गुजरात के हीरा उद्योग पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है। युद्ध के कारण लगभग 15 लाख श्रमिकों की आजीविका पर गंभीर संकट है। विशेष रूप से सौराष्ट्र क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत इकाइयां इस घटनाक्रम से सबसे अधिक प्रभावित हुई है। गुजरात में पॉलिश और प्रसंस्करण के लिए आने वाले हीरों में 60 प्रतिशत रूस से आते है। रूस से छोटे आकार के कच्चे हीरों की आपूर्ति में कमी के कारण गुजरात के व्यापारी अफ्रीकी देशों और अन्य स्थानों से कच्चा माल खरीदने को विवश है,जिससे उनका लाभ प्रभावित हो रहा है।

इस प्रकार विश्वभर की सरकारें,व्यवसायी और आम जनमानस युद्ध के आर्थिक प्रभावों का अनुभव कर रहे है। युद्धग्रस्त यूक्रेन से भारत सहित विश्वभर के छात्र भी प्रभावित हुए जो वहां मेडीकल की शिक्षा के लिए गए थे किन्तु युद्ध भड़कने के बाद उन्हें अपने देश वापस लौटना पड़ा।

“नवम्बर 2022 में इण्डोनेशिया के बाली शहर में आयोजित जी–20 के शिखर सम्मेलन में रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण भू–राजनीतिक तनाव ,तेल ,प्राकृतिक गैस और अनाज के व्यापार के बाधित होने पर मंथन किया गया।”[5] इसी प्रकार की चिंता शंघाई सहयोग संगठन के सितम्बर 2022 में हुई बैठक में भी व्यक्त की गई थी।

2. पर्यावरण

रूस और यूक्रेन के मध्य चल रहे युद्ध से उपजे संकट ने ग्लोबल वार्मिंग के खतरे को और बढ़ा दिया है। प्राकृतिक गैस की आपूर्ति बाधित होने के कारण विश्व का जीवाश्म ईधन की ओर झुकाव बढ़ने लगा है। यदि रूस ठण्ड के दिनों में यूरोप को गैस की आपूर्ति को रोक देता है तो ऐसी स्थिति में कोयले का प्रयोग कार्बन उत्सर्जन अधिक करेगा। “द लैन्सेट काउंटडाउन ऑन हेल्थ एण्ड क्लाइमेट चेन्ज की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार जीवाश्म ईधन पर बढ़ रही निर्भरता जलवायु परिवर्तन को बढ़ा रही है। रिपोर्ट में 96 देशों की सरकारों की ऊर्जा नीति के विश्लेषण में पाया गया कि इनमें से 69 देशों की सरकारों ने 2019 में जीवाश्म ईधन पर 400 अरब डॉलर से भी अधिक सब्सिडी दी है। ये सब्सिडी 31 देशों में राष्ट्रीय स्वास्थ्य खर्च के 10 प्रतिशत और 5 देशों में 100 प्रतिशत से भी अधिक है।”[6]

3. शरणार्थी समस्या

यूक्रेन युद्ध के कारण हजारों यूक्रेन और रूस के नागरिकों की मौत हो गई और दोनों देशों में लाखों लोगों का जीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। हजारों सैनिकों को अपनी जान देनी पड़ी है। अरबों डॉलर की सम्पत्ति नष्ट हो गई है। यूक्रेन का मारियुपोल नगर नक्शे से लगभग मिट ही चुका है। यद्यपि नुकसान रूस का भी हुआ है। उसके भी हजारों सैनिक युद्ध भूमि की भेंट चढ़ चुके है। वहां कई बार युद्ध विरोधी प्रदर्शन भी हुए जिनमें लगभग 16 हजार लोगों को बन्दी बनाया गया। लाखों यूक्रेनी लोग आज विस्थापन का दंश झेलने के लिए विवश है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यह सबसे बड़ा शरणार्थी संकट है। रूस के आक्रमण से स्वंय को बचाने के लिए लाखों लोग घर छोड़ चुके है । यदि हालात सामान्य नहीं हुए तो यह संख्या बढ़ सकती है। 38 लाख लोग मार्च माह तक देश छोड़ चुके थे। यूक्रेन के नागरिक चेक गणराज्य, हंगरी, स्लोवाकिया, पोलैण्ड, जैसे पड़ोसी देशों में शरण मांगने को विवश है। सबसे अधिक यूक्रेनी शरणार्थी पोलैण्ड में है।

इसे निम्न चार्ट के माध्यम से देखा जा सकता है–

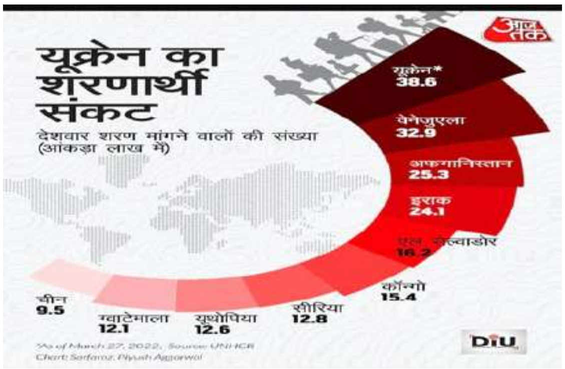

चित्र स्रोत–27 March UNHCR

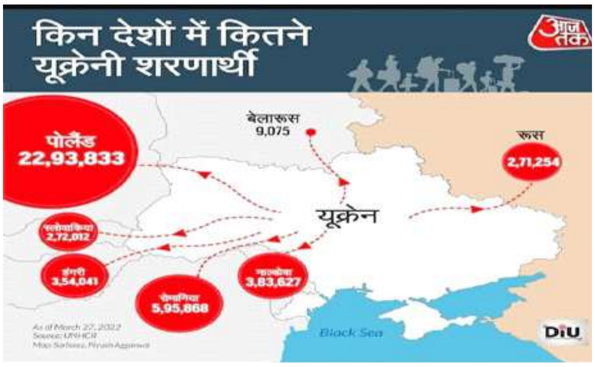

चित्र स्रोत–27 March,UNHC

यूक्रेनी शरणार्थियों के लिए पोलैण्ड की सरकार ने उदारता दिखाई है। पोलिश नागरिक और रेड क्रॉस सोसाइटी जैसी संस्थाएं बड़ी लगन के साथ राहत सामग्रियों के वितरण में लगी हुई है। लोगों को गर्म पानी,कंबल ,गर्म कपड़े और भोजन को उपलब्ध कराया जा रहा है।

रोमानिया सरकार का दष्टिकोण सहायता देने में बहुत उत्साही नहीं रहा है। शरणार्थियों को ठहराने के लिए चेक गणराज्य ने भी अपने द्वार खोल दिए है। यक्रेनी नागरिकों को टीकाकरण का प्रमाण पत्र दिखाने ,नकारात्मक कोविड–19 परीक्षण ,चेक क्षेत्र के भीतर आरटी–पीसीआर परीक्षण, जैसी अनिवार्यताओं से छूट दी गई है।

हंगरी ने यद्यपि यूक्रेन को किसी भी प्रकार की सैन्य सहायता देना स्वीकार नहीं किया है परन्तु वह यूक्रेन के शरणार्थियों की हर सम्भव सहायता के लिए तैयार है। हंगरी के अधिकारियों ने अपने कठोर आव्रजन नियमों को लचीला करते हुए यूक्रेनी शरणार्थियों को टीकाकरण प्रमाण पत्र या वीजा जैसे प्रमाण–पत्रों के बिना भी प्रवेश की अनुमति दी है। स्लोवाक अधिकारियों ने भी यूक्रेनी शरणार्थियों का स्वागत किया है और उन सभी स्लोवाक घरों और संस्थानों को प्रतिमाह 200 यूरो की सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा की है। इसके अतिरिक्त स्लोवाकिया के वित मंत्रालय ने बाल शरणार्थियों को प्रति माह 100 यूरो देने की भी घोषणा की है। मालदोवा ने लगभग 88000 यूक्रेनी शरणार्थियों को अपने यहां जगह दी है। इसके साथ ही वह पोलैण्ड और हंगरी के बाद तीसरे स्थान पर पहुंच गया है,जिसने इतनी अधिक संख्या में यूक्रेनी शरणार्थियों को अपनाया है।मालदोवा श्रम बाजार में गंभीर गिरावट जैसी समस्या से ग्रस्त है। इसलिए वहां के अधिकारियों ने यूक्रेनी शरणार्थियों को स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई है ताकि उनके माध्यम से वे अपने श्रम बल का विस्तार कर सके। मालदोवा ने अपने स्कूलों को यूक्रेनी शिक्षकों के लिए खोल दिया है और रेस्तरां कर्मचारियों के रूप में रोजगार देने का प्रयास किया है। यद्यपि मालदोवा बड़ी संख्या में यूक्रेनी शरणार्थियों को अपने यहां शरण देने के लिए तैयार है किन्तु यूक्रेनी लोग मालदोवा में बसने में संकोच कर रहे है क्योंकि उन्हे भय है कि रूस उन पर आक्रमण ना कर दे। बेलारूस यद्यपि रूस के पक्ष में है फिर भी उसने यूक्रेनी शरणार्थियों को अपने यहां आश्रय दिया है।

इस युद्ध में सबसे अधिक प्रभावित महिलाएं व बच्चे है क्योंकि यूक्रेनी पुरूषों को युद्ध लड़ने के लिए यूक्रेन में ही रूकना पड़ा।

चित्र स्रोत– theglobeandmail.com

4. मानवाधिकार हनन

“संयुक्त राष्ट्र की बाल एजेन्सी यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार यूक्रेन पर रूस के आक्रमण और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए आर्थिक संकट ने पूर्वी यूरोप और मध्य एशिया में 40 लाख बच्चों को निर्धनता में धकेल दिया है। इसी प्रकार यूएन द्वारा गठित जांच समिति की एक रिपोर्ट में का गया था कि यूक्रेन में रूसी सैनिकों ने आम नागरिकों पर भीषण अत्याचार किए। रूसी सैनिकों ने जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बमबारी की, साथ ही फांसी, यातना और भीषण यौन हिंसा जैसे कष्त्यों को किया। 27 स्थानों पर टीम गई और 150 से अधिक पीड़ितों व गवाहों से पूछताछ की। रूसी सैनिकों ने 4 साल से 82 साल की महिलाओं के साथ यौन हिंसा की। रिश्तेदारों के आगे अत्याचार किए।”[7] रूस ने युद्ध के समय ना केवल विद्युत संयत्रों को निशाना बनाया बल्कि आवासीय भवनों को भी नष्ट कर दिया। लाखों घरों में रूसी हवाई हमलों के कारण बिजली और पानी की आपूर्ति बाधित हो गई और लोगों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।

यूक्रेन में आधे से अधिक बच्चे प्राण बचाने के लिए घर छोड़ चुके है। हजारों बच्चे मारे जा चुके है। संयुक्त राष्ट्र के घोषणा पत्र के अनुसार युद्ध में नागरिक जीवन से जुडी आवश्यक संस्थाओं (स्कूल , अस्पताल) पर आक्रमण नहीं किया जा सकता ये सीधे तौर पर मानवाधिकारों से जुड़ा हुआ है। परन्तु युद्ध में रूस ने इन्ही संस्थाओं पर निशाना साधा। लाखों बच्चों की शिक्षा पर इसका प्रभाव पड़ा है और कई स्कूल बन्द कर दिए गए है। युद्ध की परिस्थिति में उनके अनाथ होने ,उनकी हत्या कर दिए जाने और उनको मानसिक आघात देने जैसी चिंताएं तो रहती ही है साथ ही उनके यौन शोषण और युद्धरत संगठनो द्वारा उनकी बलपूर्वक भर्ती जैसी

घटनाएं भी देखने में आती है। समाजशास्त्री आशंकित है कि कहीं यूरोप में सामाजिक संतुलन ना बिगड़ जाए। धुर दक्षिणपंथी इसका लाभ उठा सकते है। अमेरिका की प्रथम महिला जिल बाइडन का कहना है कि "एक माँ के रूप में मैं उस पीड़ा और चिंता की कल्पना सहज ही कर सकती हू जो यूक्रेन की महिलाओं को रूस के अकारण हमले से हर दिन महसूस होती होगी।"

5. सैन्य बजट में वृद्धि

रूस–यूक्रेन युद्ध का एक प्रभाव यह पड़ा है कि विभिन्न देश अपने सैन्य बजट में वृद्धि कर रहे है। कारण वर्ष 1965 के बाद प्रथम बार किसी युद्ध में परमाणु युद्ध की धमकी की गूंज सुनाई दी। जब रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण के अगले ही दिन पुतिन द्वारा इसके प्रयोग की धमकी दे दी गई। न केवल परमाणु बम का वरन् थर्मल और कैमिकल शस्त्रों के प्रयोग का भी उल्लेख हो रहा है। "यूरोपीय देशों द्वारा सेना पर व्यय किया जाने वाला धन 3 प्रतिशत से बढ़कर 6 प्रतिशत तक हो गया है और ऐसा प्रतीत होता है कि ये आगे बढ़ता ही जायेगा। शीघ्र ही इस घटनाक्रम के चलते बढ़ने वाले उपनिवेशवाद के खतरे के दृष्टिगत एशियाई देश भी अपने प्रतिरक्षा व्यय में वृद्धि करने के लिए विवश हो जाएगें।"[8] इसका दुष्प्रभाव ये है कि विभिन्न देश अपनी प्रतिरक्षा सामग्री के क्रय के लिए अन्य खर्चों में अधिक कटौती के लिए बाध्य हो जाएगें। इसका प्रभाव निर्धनता उन्मूलन,पर्यावरण कार्यक्रम और गंभीर बीमारियों के बचाव जैसे जनकल्याणकारी कार्यक्रमों पर सर्वाधिक पड़ेगा। भय, भूख, निर्धनता और पर्यावरण की उपेक्षा अराजकता को बढ़ावा देगी। इस प्रकार सैन्यीकरण की प्रवृति बढ़ रही है।

रूस–यूक्रेन युद्ध ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सार्थकता पर भी एक बार पुनः प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ कुछ प्रस्तावों को रूस के विरूद्ध पारित करने के अतिरिक्त ओर कुछ नही कर सका है। "फरवरी 2022 में रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के उस प्रस्ताव पर वीटो कर दिया जिसमें मांग की गई थी कि मॉस्को यूक्रेन में अपनी कार्यवाही शीघ्र बन्द करे और सैनिकों को वापस बुलाए।"[9] तमाम अन्तर्राष्ट्रीय मंचों से जैसे–जी–7, जी–20, क्वाड, शंघाई सहयोग संगठन से विश्व शांति की अपील होती रही पर रूस –यूक्रेन युद्ध में कोई भी पक्ष पीछे हटने को तैयार नहीं है। पश्चिमी देशों ने तमाम आर्थिक प्रतिबन्ध रूस पर आरोपित कर दिए। पर ये प्रतिबन्ध युद्ध को रोक पाने में अक्षम है।

निष्कर्ष

विडम्बना ये है कि इस युद्ध में यूक्रेन को रूस के आगे घुटने ना टेकने पड़े इसके प्रयास मे तो कई देश दिखाई दे रहे है,किन्तु बम धमाकों के मध्य युद्ध की आग को समाप्त करने का प्रयास कोई नही कर रहा है।वर्तमान में विश्व के देश शांति प्रयासों में कोई रूचि नहीं दिखा रहे है। सबसे उचित यही है कि कभी एक ही संघ का अटूट भाग रहे दोनों देश स्वयं ही इसकी पहल करें। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का इस संघर्ष पर यह कथन उल्लेखनीय है कि इस युद्ध में कोई पक्ष नहीं जीतेगा।

सन्दर्भ सूची

1. पन्त पुष्पेश, 21 वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध,प्रकाशन–टाटा मैक्ग्राहिल नई दिल्ली, वर्ष 2008 पृष्ठ संख्या–34
2. सिविल सर्विसेज कॉनिकल,फरवरी 2022,पृष्ठ संख्या–75–76
3. (2022). https://www.dhyeyaias.in 12 Dec.
4. हिन्दुस्तान 15 अप्रैल 2022 पृष्ठ संख्या–11
5. हिन्दुस्तान 14 नवम्बर 2022 पृष्ठ संख्या–10
6. हिन्दुस्तान 27 अक्टूबर 2022 पृष्ठ संख्या–14
7. हिन्दुस्तान 18 अक्टूबर 2022 पृष्ठ संख्या–17
8. (2022). M.punjabkesari.in 13 Dec.
7. (2022). https://www.claws.in 15 Dec.

27

बौद्ध धर्म में तारा देवी का ऐतिहासिक अध्ययन : सारनाथ के विषेश परिप्रेक्ष्य में

डॉ० अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय मरगूबपुर, रुड़की, हरिद्वार

सारांष

सनातन धर्म में भगवान् शंकर को 'शिवत्त्व' शक्ति के बिना नहीं प्राप्त होता है, उसी प्रकार बुद्ध को 'बुद्धत्त्व' प्राप्त करने में शक्ति का अभिन्न योगदान है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण सारनाथ स्थित चीनी बौद्ध मंदिर में देखा जा सकता है। मंदिर की दीवार पर एक कथा चित्रित व लिखित है–छः वर्ष के कठोर तप से सिद्धार्थ को लाभ नहीं हुआ। शरीर निर्बल हो गया, जीवन के नाम पर बस श्वाँस चल रही है। वहीं पर तीन वीणाधारिणी स्त्रियों अर्थात् शक्तियों ने राग पर वीणा सुनाया कि वीणा के तारों को ढ़ीला छोड़नें अथवा बहुत कसने पर मृदुल झंकार नहीं होती है। वीणा के माध्यम से उनको ज्ञान मिला, वह ज्ञान शक्ति के माध्यम से मिला। इस प्रकार उन्होंने शक्ति से प्रेरणा लेते हुए कठोर तप को त्याग दिया और मुक्तिपूर्ण संयमित होकर आहार लेते हुए ज्ञान की खोज का मध्यम मार्ग अपना लिया।

सारनाथ में सर्वप्रथम भगवान बुद्ध ने मानव कल्याण विश्व शान्ति का उपदेश दिये। यहीं से भगवान् बुद्ध के उपदेश रुपी ज्ञान की शक्ति ने विश्व के विभिन्न देशों यथा–श्रीलंका, जापान, तिब्बत, थाईलैण्ड, नेपाल, कम्बोडिया, जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया आदि के अतिरिक्त अन्य देशों के मानव–कल्याण हेतु शक्ति प्रदान किया। सारनाथ में मुख्यतः चीन, श्रीलंका, जापान, कम्बोडिया, तिब्बत, थाई आदि देषों के बौद्ध मंदिर देखे जा सकते हैं। सारनाथ में स्थित ये सभी देश बुद्ध के ज्ञान रुपी शक्ति के माध्यम से समस्त प्रजा के कल्याणार्थ शक्ति प्रदान कर रहे हैं जिसके द्वारा विश्व में सुख–शान्ति–सद्भाव की कामना करते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र हमारे सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार पर आधारित है। सारनाथ से प्राप्त तारा की कई प्रतिमाएं, यहां विभिन्न देषों के बौद्ध मंदिरों में स्थापित तारा की प्रतिमाएं, दीवारों पर चित्रित तारा के विभिन्न रुप, थंका पर बनी तारा आदि विभिन्न रुपों में अंकन मिलता है। रंगों के आधार पर तारा का अंकन मिलता है। इन सब में तारा का महत्त्व प्रजा में सुख–शान्ति–समृद्धि की भावना को उजागर करता है। यहां स्थित विभिन्न देशों के बौद्ध मंदिर अपनी प्रजा के कल्याण हेतु शांति का संदेश अपने देशवासियों में पहुंचाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में बौद्ध धर्म में तारा देवी का ऐतिहासिक अध्ययन : सारनाथ के विषेश परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

मुख्य शब्द

सारनाथ, बुद्ध, तारा, शक्ति, दुर्गा, वज्रयान।

प्रस्तावना

शक्ति की प्रेरणा से भगवान् बुद्ध को 'बुद्धत्त्व' प्राप्त हुआ और वह प्रेरणाशक्ति है–तारा। तरनतारिनी तारा बौद्ध धर्म की प्रमुख देवी है। 'तारा' शब्द की व्युत्पत्ति 'संस्कृत' के 'तारा' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है–''पार करना''[1] अर्थात् संसार को भगवान् रुपी कष्ट से पार करती है। तारा के उत्पत्ति के विषय में कई धारणाएं प्रचलित है जिनमें एक जनस्रुति के अनुसार बोधिसत्त्व अवलोकितेष्वर संसार के कष्ट को देखकर रोने से आँसू की एक बूंद जमीन पर गिरा और वहां झील बना, जिसमें पद्म उत्पन्न हुए, जिसकी पंखुड़ियों से तारा का जन्म हुआ और दूसरी धारणा के अनुसार अमिताभ की आखों के नीले किरणों के चमकने से तारा का जन्म हुआ।[2] तिब्बत में एक धारणा प्रचलित है कि कोई भी चरित्रवान स्त्री तारा हो सकती है।[3]

जिस प्रकार ब्राह्मण धर्म में पार्वती या अम्बा या काली या दुर्गा आदि सभी एक ही शक्ति के उत्पत्ति से हुई है उसी प्रकार

सभी बौद्ध देवियों की उत्पत्ति मूलतः तारा को ही माना जाता है। बौद्ध देवी तारा को ब्राह्मण धर्म की प्रमुख देवी दुर्गा के समान माना गया है।[4] हीरानन्द शास्त्री के अनुसार तारा की उत्पत्ति बौद्ध धर्म से हुई है और नेपाल के मार्ग से उसका भारत में प्रवेश हुआ।[5] तारा की पूजन परम्परा पाँचवीं शती में शुरु हुई और सातवीं शती में उसे विशेष महत्त्व मिल गया। बौद्ध देवता मण्डल में तारा की अवधारणा के विषय में एक राय नहीं मिलती है परन्तु चीनी यात्री ह्वेनसांग के वृत्तान्त में उत्तर भारत में सातवीं शती ई0 में तारा मूर्ति पूजन का वर्णन मिलता है।[6] सारनाथ में 5वीं से 12वीं शती ई0 के बीच तारा की कई प्रतिमाएं प्राप्त हुई है, जिससे स्पष्ट है कि उस काल में तारा की लोकप्रियता बढ़ गयी होगी। मालर महोदय ने महावैरोचन सूत्र में तारा को अवलोकितेश्वर से उत्पन्न बताया गया है।[7] आर्यमंजुश्रीमूलकल्प मे ंतारा को विघ्न और भय–नाशिनी और वरदायिनी–करुणा के रुप में मूर्तिमान करके वर्णित किया गया है।[8]

बौद्ध देवी तारा के स्वरुपों के बारे में विद्वानों में भिन्नता है। कुछ विद्वान विभिन्न स्रोतों के आधार पर तारा के 27 और 49 स्वरुपों का वर्णन प्रस्तुत करते हैं।[9] पुष्पेन्द्र महोदय ने आर्यतारा भट्टरिका नाम स्तोत्रशतकस्तोत्र में तारा के 108 नामों का उल्लेख करते हैं।[10] नारायणपृच्छा और धारिणी संग्रह में महामायाविजय वाहिनी नामक सहस्रमुखी और सहस्रबाहु देवी को युद्ध की देवी के रुप में उल्लेखित किया गया है।[11] महाविजयवाहिनी का रुप बौद्ध देवी तारा का प्रमुख रुप ंहै, जो युद्ध में लड़ती है, संघर्ष करती है और विजय को प्राप्त करती है। इनकी समानता ब्राह्मण धर्म की देवी दुर्गा और चण्डी से दिखती है।[12]

तारा वज्रयान सम्प्रदाय की प्रमुख देवी के रुप में प्रसिद्ध है। इनके अनेक स्वरुप व भेद मिलते हैं यथा – ध्यानी बुद्धों के शक्ति के रुप में, दिषा देवी के रुप में, रक्षा देवी के रुप में तथा अन्य षक्ति के रुप में प्राप्त होती है। पुष्पेन्द्र कुमार ने तारा को बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर से उत्पन्न बताते हैं जो मानव समुदाय की रक्षा करती है। जब वह जागती है तो अनेक प्रकार के भयंकर कठिनाइयों से बचाती है। कुमार जी ने रंगों के आधार पर तारा के स्वरुप बताया है–हरित तारा, श्वेत तारा, पीत तारा, नील तारा, रक्त तारा।[13] विनयतोश भट्टाचार्य ने रंगों के आधार पर तारा के विभिन्न स्वरुपों का वर्णन किया गया है।[14]

सारनाथ संग्रहालय में लगभग 30 तारा की प्रतिमाएं–वज्रतारा, भश्कुटी तारा, एकजटा, नीलतारा आदि रखी गयी है।[15] जिनका समय 5वीं सती से 12वीं सती ई0 तक की है जो सारनाथ से प्राप्त है। इससे स्पष्ट है कि सारनाथ में तारा की प्रतिमा लोगों की धार्मिक भावना को ध्यान में रखकर बनाया गया होगा और पूजा करते रहे होंगे। 12वीं सती में सारनाथ की कला में निर्मित मूर्तियाँ अपने ओज, मुखाभिव्यक्ति, देह–सौष्ठवा, संतुलित अलंकरण, शास्त्रीय मूर्ति स्वरुप के निर्वाह तथा कलात्मकता के लिए दृश्टव्य है। बौद्ध प्रतिमा स्वरुप की दृष्टि से शड़ाक्षरी, लोकेश्वर, महाविद्या, लोकनाथ, नीलकण्ठ, उच्छूम, जम्भल के उदाहरण काशी की अनुपम देन के रुप में माने जाते हैं।[16] वज्रयान पंथ ने तारा को स्वीकार किया ंऔर उसे लोकप्रिय बनाया। वज्रयान पंथ क्षीण होने के बाद तारा की लोकप्रियता कायम रहीं। जोशी महोदय के अनुसार बौद्ध देवियों में तारा का स्थान उच्चकोटि का है जो ध्यानी बुद्धों से उद्भूत है। तारापंच वर्णों की है जो एक–एक बोधिसत्त्व से इनका सम्बन्ध है।[17] तारा की प्रतिमाएं अर्द्धपर्यांकसन में दुहरे कमल पर बैठी हुई दिखायी गयी है। क्रमषः आगे सारनाथ से प्राप्त बौद्ध देवता–देवियों पर तांत्रिक प्रभाव दिखायी देता है।[18]

उद्देश्य

सारनाथ के विषेश परिप्रेक्ष्य में तारा देवी का ऐतिहासिकता एवं महत्ता को स्थापित करना।

सारनाथ से अनेक बौद्ध देवी तारा की अनेक प्रतिमाएं प्राप्त हुई है जो संग्रहालय में प्रदर्शित है–

1. **तारा,** ACC No. 6683

तारा के बायें हाथ में Pome granate (अनार) तथा दाहिना हाथ, दोनों पैर टूटा है। अनार का फल सष्जन या नवनिर्माण का प्रतीक है। उसके रक्तवर्ण और उसके विपुल बीज होने के कारण उसे जीवन और सष्जन का प्रतीक माना गया है।

2. **तारा,** ACC. No. 452

देवी तारा के प्रदर्शित सिर के पिछले हिस्से पर गोलाकार ऊँचा जूड़ा बालों के गोल छल्लों द्वारा उसके मस्तक से बंधा हुआ है। बालों के गोल छल्ले मनको वाली माला द्वारा विभाजित है। तारा के एक कान में कुण्डल, देवी के शीर्ष होंठ व नाक क्षतिग्रस्त है। काल 8वीं से 9वीं शती ई0 है।

3. **तारा,** ACC. No. 432

देवी के बालों को पीछे की ओर काढ़कर ऊँचा जूड़ा बनाया गया है। माथे पर मनकों की माला बंधी है, मूर्ति को गोल कर्ण–कुण्डल व दो लड़ी युक्त गले के हार से सजाया गया है। दायां हाथ क्षतिग्रस्त है व बायें हाथ में देवी ने नीलोत्पल धारण किये है। मूर्ति का काल 11वीं–12वीं षती ई0 है।

4. **तारा,** ACC. No. 430

वरद मुदा में तारा की मूर्ति का दाहिना घूटना व पेट का कुछ किस्सा क्षतिग्रस्त है। बायें हाथ में कमल है। किरीट पर ध्यानी बुद्ध अमिताभ सुशोभित है। देवी ने कानों में कुण्डल, वाजूबन्द व हार धारण किया है। मूर्ति का काल 11वीं–12वीं शतीं ई0 है।

5. तारा, ACC. No. 478

देवी संभवतः तारा दाहिने हाथ में कटार व बायें हाथ में कटार व बायें में कपाल लिए स्थानक मुद्रा में है। मस्तक पर कीरीट है, जिसे मध्य में पुष्पों से सजाया गया है तथा माथे पर मनकों की दो मालाएं है। देवी ने बहुत से आभूषण धारण कर रखे है, जिनमें कानों के कुण्डल, गले का हार, वाजूबन्द, कंकड़ व करधनी प्रमुख है। घुटनों के नीचे तक देवी ने लहरियादार धोती भी धारण कर रखी है। एक परिचारिका को नीचे बैठा हुआ प्रदर्षित किया गया है। मूर्ति काल 11वीं–12वीं शती ई0 है।

6. भष्कुटी तारा

ओर्टल महोदय[19] को खड़ी व बैठी मुद्रा मे सारनाथ से तारा की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। खड़ी मुद्रा में भृकुटी तारा के वाम हस्त में त्रिदण्ड, कमण्डल तथा दाहिना हाथ वरद मुद्रा में है।[20] गले में हार व बाह में चूड़ियाँ प्रदर्शित है। मूर्ति के पार्श्वभाग में बौद्धगाथा अंकित है, जो 8वीं–9वीं ई0 की लिपि में है।

7. चर्तुमुखी वज्रतारा

सारनाथ के संग्रहालय में एक अश्टभुजा[21] चतुर्मुखी वज्रतारा की मूर्ति है। इनका बाया हाथ खण्डित है किन्तु दाहिने हाथ का कुछ अंश विद्यमान है। मूर्ति की तीन आँखें मस्तक की जटा में दो अक्षोभ्य, अमिताभ एवं एक वैरोचन की मूर्ति लक्षणानुसार है। पीछे के मस्तक पर अमोघसिद्धि की मूर्ति अभय मुद्रा में बैठी है। इस मूर्ति के गले में अनेक आभूशण साधनानुसार प्रदर्शित है।[22]

8. वज्रतारा

उशा सिनहा महोदय[23] ने सारनाथ से एक सुन्दर वज्रतारा की प्रतिमा का वर्णन किया है जो 11वीं शती ई0 की है, उसके मुकुट में ध्यानी बुद्ध रत्नसंभव प्रतीत होते है। पूरे हाथ टूटा हुआ है। टूटे हुए हाथों में आभूषण दिखाई देता है। इस समय यह नेशनल संग्रहालय दिल्ली में है। दूसरी वज्रतारा चर्तुवक्त्र और अष्टवाहू वाली प्रतिमा सारनाथ संग्रहालय में है। सामने वाले मुँह ध्यानीबुद्ध अमिताभ व वैरोचन की है। भूमिस्पर्षमुद्रा में दो अक्षोभय है जिसके पीछे सिर अमोघसिद्धि को प्रदर्शित करती है। दूसरे दोनों मुँह किसी भी ध्यानी बुद्ध को प्रदर्शित नहीं करती है। भृकुटी तारा[24] का वर्णन किये है जो संग्रहालय में प्रदर्शित है।

9. सिंहानद तारा

मल्लर घोष महोदय[25] ने साधनमाला के लक्षणानुसार तारा के प्रतिरुप सिंहानद तारा, जो अवलोकितेश्वर से उत्पन्न है का वर्णन किये है। सारनाथ से खुदायी से मिली है जो 9वीं शताब्दी का ठहराते हैं। यह प्रतिमा शांत–सौम्य मुद्रा में है, अधखुली आँखें है, देवी विश्वपद्म पर ललितासन में बैठी है, उनका बांया पैर शेर को स्पर्श कर रहा है जो दहाड़ते हुए मुँह के समान दिखाया गया है। दाहिना हाथ वरद मुद्रा में है, बाया हाथ में उत्पल है। उनके सिर के मुकुट में ध्यानमुद्रा में अमिताभ है। यह प्रतिमा दो कारणों से ज्यादा प्रसिद्ध है–

(1) यह मूर्ति से साधना के अस्तित्व या सत्ता की भाव प्रकट करती है।

(2) सिंह के साथ तारा को दिखाना यह दुर्लभ प्रतिमा है। जो ब्राह्मण देवी दुर्गा की तरफ संकेत करती है।

इसके अतिरिक्त सारनाथ में विभिन्न देशों के बौद्ध मंदिर में तारा को किस रुप में मान्यता मिली है और उनका समाज के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा है, इसका उल्लेख किया गया है–

सन् 1999 में निर्मित वज्रविद्या मंदिर या कंग्यूर मंदिर का नाम वज्रविद्या मूलगुरु के नाम पर पड़ा जो 16 करमापाओं को मिलाकर वज्रविद्या मूलगुरु कहा जाता है। मूलतः भगवान् बुद्ध की प्रतिमा है। मंदिर के सामने से दाहिने तरफ तारा का मंदिर हैं, मुख्य तारा देवी के सामने बुद्ध पद्मासन मुद्रा में हैं। देवी का दाहिना हाथ ध्यानस्थ मुद्रा में है, दूसरा हाथ अभय मुद्रा में है। तारा देवी का दाहिना पैर पद्म पर है। इनके साथ 21 तारा को प्रदर्शित किया गया है। वहीं पर थंका(थंगा) पर बने चित्र में बीच में बुद्ध और उनके चारों तरफ 21 तारा देवियों को दिखाया गया है। ऐसा लोगों का विश्वास है कि ये 21 देवियां भगवान बुद्ध के सहायता के लिए उत्पन्न हुई होगीं। इस संस्थान में नेपाल, तिब्बत, भूटान, सिक्किम, हिमांचल प्रदेश, जापान, श्रीलंका, थाईलैण्ड, यू0एस0ए0. आदि देश के विद्यार्थी पढ़ते हैं। वे इस तारा देवी के माध्यम से लोगों में विश्वास पैदा करते हैं कि तारा देवी ही संरक्षक, पालन व पोषण करती है। थंका पर भी तारा देवी का चित्र बना है जिसके माध्यम से ये लोग अपने देष में धार्मिक भावना को बढ़ावा देते हैं। देवी के सामने दीपक जलता रहता है जिससे स्पष्ट होता है कि ये देवी अपने प्रजा की सब प्रकार के बाधाओं से रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। लोगों (विद्यार्थियों) के साक्षात्कार से पता चला है कि भगवान् बुद्ध का रुप तारा में परिवर्तन हुआ है। सभी 21 प्रकार की तारा प्राणियों की मदद के लिए उत्पन्न हुई हैं। मुख्यतः दो प्रकार की तारा का रुप माना जाता है–

(1) **ग्रीन तारा**–ग्रीन तारा का पूजा सभी प्रकार के कश्ट, बाधा बीमारी आदि को नष्ट करने के लिए किया जाता है।

(2) **श्वेत तारा**–शुक्लवर्ण की तारा की पूजा–अर्चना लम्बी उम्र के लिए किया जाता है। मृत्यु के भय से तारा की पूजा करने से रक्षा होती है।

इसी प्रकार सारनाथ में चीनी बौद्ध मंदिर का निर्माण फुकियन (चीन) के श्री मुत ली चुनसेंग ने बुद्धाब्द 2433 (ई0स0 1939) में हुआ। इसके तीन स्त्री रुपी शक्तियां सिद्धार्थ को ज्ञान के मार्ग को वीणा के माध्यम से बता रही है का वर्णन उपर्युक्त में दिया जा चुका है। इसी प्रकार श्रीलंका बौद्ध मंदिर की नींव 1891 में सीलोन के श्री देवमित्त धर्मपाल के द्वारा हुई। थाईलैण्ड बौद्ध मंदिर निर्माणाधीन है, बर्मी बौद्ध मंदिर 1910 में बना, जापानी बौद्ध मंदिर 1992 में, कोरिया मंदिर 1995 में बना। इन मंदिरों में तारा प्रतिमा की पूजा–अर्चना होती होगी।

सारनाथ में तिब्बती बौद्ध मंदिर सबसे पुराना मंदिर है। भान्दे जी के द्वारा साक्षात्कार द्वारा पता चला है कि भगवान् बुद्ध की पूजा–अर्चना सबसे ज्यादा होती है उसके बाद अगर किसी की पूजा होती है तो वह पाल्देन थामो (काली) तथा डोल्मा (Dolma-तारा) की होती है। यहां के मंदिरों में चित्रित तारा के अनेक रुपों को दर्शाया गया है। तिब्बती लोग तारा को डोल्मा कहते हैं जिसका अर्थ (Savioursess) मुक्तिदाता है अर्थात् सब प्रकार के कष्ट, बाधा, समस्या से मुक्ति दिलाती है। मंगोलियन लोग Daracka कहते हैं जिसका अर्थ 'तारा माता' होता है। उन्हें सभी 'बुद्ध और बोधिसत्त्वों की माता' कहते हैं। श्रीलंका (सीलोन) में महायानी लोगों द्वारा तारा और कुण्डा निर्मित हुई है।

सारनाथ के बौद्ध मंदिरों मे थंका दिखायी देता है जिसमें देवी का अंकन मिलता है। दाहिना हाथ वरद मुद्रा में तथा बांया हाथ में पद्म पकड़ी है। उसी प्रकार की 20 देवियां मुख्य देवी तारा को चारों तरफ से घेरे हुई है। सारनाथ से प्राप्त थंका तारा के सामान्य लोक व्यवहार से जुड़े होने का प्रमाण है। प्रचलित प्रतीकों से तारा का सामान्य जनजीवन में जो स्थान था, उसका निर्देश होता है, उदाहरण के लिए विभिन्न रंगों की थंका की योजना।

निश्कर्श

किसी भी धार्मिक पंथ में मानव के कल्याण का अभिप्राय निहित होता है। बौद्ध धर्म इसमें अत्यन्त दक्ष है। समक्ष जीवों की कुशलता को बौद्ध धर्म में, खासकर महायान पंथ में प्राथमिकता दी गयी है। बौद्ध धर्म का यह रुप वैश्विक स्तर पर महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसमें किसी भी तरह की संकीर्णता से ऊपर उठने की क्षमता है। बौद्ध धर्म में तारा देवी इस संदर्भ में प्रासंगिक हैं। वह एक अभयदायिनी शक्ति है। एक ऐसी शक्ति रुप में सम्पूर्ण समाज, विष्व में सुख–शांति सप्रभाव का परम लक्ष्य है। सारनाथ में अनेक देशों के बौद्ध मंदिर स्थापित हैं जिनमें तारा देवी का चित्रांकन किया गया है, साथ ही सारनाथ संग्रहालय में तारा की अनेक प्रतिमाएं प्रदर्शित हैं। इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन के आधार पर तारा देवी की एतिहासिकता और महत्ता स्थापित हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. Kumar, Puspendra. (1992). Tara the Supreme Goddess. Bharatiya Vidya Prakashan: Delhi. Pg. **Preface, XI.**
2. Kumar, Puspendra. (1992). Tara the Supreme Goddess. Pg. **XI.**
3. तिवारी, मारुती नन्दन. (1979–80). ''बौद्ध देवकुल स्वरुप एवं प्रतिमालक्षण''. प्रज्ञा (बी0एच0यू0 जर्नल). अंक 24–26. पृष्ठ **107.**
4. कुमार, पुष्पेन्द्र. (1992). तारा दी सुप्रीम गडिसेस. दिल्ली. पृष्ठ 2. मिश्रा, टी.एन. (2000). Buddhist Tanra & Buddhist art. New Delhi. Pg. **X.**
5. शास्त्री, हीरानन्द. (1925). दि ओरिजिन एण्ड कल्ट ऑव तारा. मेमामर्स ऑन दि आर्किमोलाजिक सर्वे ऑफ इण्डिया. अंक 20. कलकत्ता. पृष्ठ **23.**
6. तंत्र आर्ट एन एलबम. ले0एस0के0 सरस्वती. पृष्ठ **34.**
7. घोष, मालर. (1980). डेवलपमेन्ट ऑव बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी इन इस्टर्न इण्डिया. ए स्टडी ऑव तारा, प्रज्ञा ऑव फाइव तथागत एण्ड भृकुटीः नई दिल्ली. पृष्ठ **11.**
8. वही. पृष्ठ **11–12.**
9. वही. पृष्ठ **36–38.**
10. कुमार, पुष्पेन्द्र. पू.नि. पृष्ठ **4.**
11. भट्टाचार्य, ले0 दीपलचन्द्र. स्टडीज इन बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी. स्ट0 बु0 आ0. पृष्ठ **12–14.**
12. Krishna Murthy, K. (1996). Studies in Budhism. New Delhi. Pg. **12-13.**
13. कुमार, पुष्पेन्द्र. वही. पृष्ठ **31–36.**
14. भट्टाचार्य, बी. (सम्पा0). (1958). दि इण्डियन बुद्धिस्ट आइकनोग्राफी. कलकत्ता. पृष्ठ **306–309.**
15. कुमार, पुष्पेन्द्र. पू.नि. पृष्ठ **112.**

16. राय, कौशल कुमार. (सम्पा.). (1984). उत्तर प्रदेष काषी. अंक. उत्तर प्रदेष. पृष्ठ **11.**
17. जोषी, नीलकण्ठ. (1977). प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान. पटना. पृष्ठ **201–202.**
18. भट्टाचार्य, वृन्दावन. (1921). सारनाथ का इतिहास. बनारस. पृष्ठ **104.**
19. (1904–1905). आ.स.रि. पृष्ठ **95.**
20. वही. संख्या 139.
21. पाण्डेय, ओमप्रकाष. (1986). सारनाथ की कला. शोधग्रन्थ. का0हि0वि0वि0ः वाराणसी. पृष्ठ **170.**
22. वही. पृष्ठ **171.**
23. फूशे, ए. (1917). दि विगिनिंग्स ऑफ बुद्धिस्ट. आर्ट एण्ड अदर एसेसः पेरिस. पृष्ठ **70.**
24. जोशी, निलकण्ठ. (1977). प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान. पटना. पृष्ठ **207.**
25. (1904–1905). आ.स.रि. पृष्ठ **85.**
25. Sinha, Usha- (1995). Buddhist Iconography in Uttar Pradesh. Varanasi. Pg. **51.**
24. वहीं. पृष्ठ **52.**
25. Ghosh, Mallar. (1980). Development of Buddhist Iconography in Eastern India. A study of Tara, Prajnas of FiveTathagatas and Brikuti. New Delhi. Pg. **53.**

28

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ० नीरज नौटियाल
स. प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय महाविद्यालय,
बिथ्यानी (यमकेश्वर) पौडी गढ़वाल उत्तराखण्ड

सांराश

राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति 'चमकना' अर्थ देने वाली राज् धतु से हुई है। जिसमें औणदिक 'ष्ट्रन्' प्रत्यय है, जिसका अर्थ है

''राजते दिप्यते प्रकाश्यते शोभते इति राष्ट्रम्''

संस्कृत शब्द का अर्थ है शुऽ परिमार्जित परिष्कृत् संस्कृत भाषा में ही भारतीय ऋषियों ने चिन्तन मनन निदिध्यासन् करके इस भाषा को देव भाषा से अलंकृत किया है जैसा कि आचार्य दण्डी ने कहा है–

संस्कृतं नाम दैवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः।
भाषासु मध्ुरा मुख्या दिव्या गीर्वाण भारती।।

संस्कृत भाषा का साहित्य एवं चिन्तन परम्परा विपुल समद्ध एवं राष्ट्र व्यापी है, साहित्य शब्द का अर्थ ही व्यापकता, शब्द और अर्थ का परस्पर सम्बन्ध 'सहितोर्भाव साहित्यम्' यह जो सम्बन्ध है वह शाश्वत है, शब्द और अर्थ विचार चेतना भावना की परस्पर अनुकूलता के साथ–साथ सह भाव ही साहित्य है। साहित्य शब्द के दो अर्थ अभिव्यक्त है एक साथ होना, दूसरा अर्थ हित के साथ होना, अर्थात् साहित्य वही है जिसमें मानवीय चेतना राष्ट्र चेतना के भाव संचारित हो, व्यापक अर्थ में साहित्य संस्कृत वार्ङ्मय का पर्याय है।

राष्ट्रीय चेतना की भावना

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का विषय प्रतिपादित और राष्ट्रीय भावना आदिकाल से वैदिक ग्रन्थों में यत्रा तत्रा मिलती है, जितनी प्राचीन संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य का ज्ञान वैभव है, उतना ही महानतम साहित्य में राष्ट्रीय चेतना है। संस्कृत वार्ङ्मय का सम्पूर्ण साहित्य राष्ट्रीय चेतना का ही स्वरूप है। एवं प्रत्येक काव्य विधओं के द्वारा प्रत्येक जनमानस की अन्तर्निहित चेतना को प्रकट करते हुए राष्ट्रीय चिन्तन चेतना एवं अन्वेषणात्मकता को जागृत कर राष्ट्र को समृद्ध सचेतना एवं पल्लवित पुष्पित करना ही संस्कृत साहित्य की विपुलता को दर्शाता है।

ट्टग्वेद में राष्ट्रीय चेतना

ट्टग्वेद सम्पूर्ण संसार का प्रथम ग्रन्थ एवं ज्ञान परम्परा का आदि ड्डोत है और सम्पूर्ण संसार की निहित ज्ञान राशी ऋग्वेद से ही प्रारम्भ होती है ट्टग्वेद के इन्द्र सूक्त में वर्णित मन्त्रा के द्वारा राष्ट्रीय चेतना की अवधरणा स्पष्ट प्रतीत होती है

सप्तार्धगर्या भुवनस्य रेतो विष्णुस्तिष्ठन्ति प्रदिषा विर्ध्मणि।
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभूव परि भवन्ति विश्वतः।।[1]

ऋग्वेद काल से ही राष्ट्रीय चेतना के लिए ऋषियों ने अनेकों स्थलों पर राष्ट्र को गौरवशाली एवं राष्ट्र रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं– ''उप सर्प मातरं भूमिम्''[2]

तत्कालीन समाज मे राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र भावना प्रत्येक प्राणिमात्रा का ध्येय था तभी तो ऋषि मुनियों ने वेदों के निगूढ़तम ज्ञान को जनसामान्य के लिए प्रकाशित किया एवं राष्ट्रोन्नति को अग्रसर किया प्राचीन सामाजिक परम्परा राष्ट्रीय चेतना को ही प्रतिपादित करती है– राष्ट्रं गुपितं जात्रियस्य।[3]

ऋग्वेद में सम्पूर्ण ज्ञानराशी को प्रकाशित करने का तात्पर्यभगवत प्रेरणा से यही थी कि इस दिव्य चेतन स्वरूपात्मक ज्ञानपुज को राष्ट्रहित में प्रकाशित किया जाय– राजा राष्ट्रानाम्।[4]

यजुर्वेद में राष्ट्रीय चेतना

वेद एक शब्द ब्रह्म राशी है और सम्पूर्ण राष्ट्र के जो समाजोपयोगि हैं उनकी कामना पूर्ती और राष्ट्र के लिये यज्ञात्मक रूप से प्रार्थना राष्ट्र कल्याण एवं राष्ट्र जागरण का कार्य यजुर्वेद के द्वारा अनेक स्थलों पर प्राप्त होते हैं।

नमो मात्रो पृथिव्यै नमो मात्रो पृथिव्या।[5]

पृथ्वी माता की रक्षा के लिए अहर्निश सजग रहते हुए राष्ट्र रक्षा राष्ट्र चेतना की प्रार्थना अमुक मन्त्रा में की गई है।

यजुर्वेद के दशम अध्याय में वृषोऽसि राष्ट्रदा राष्ट्रंममुष्मैदेहि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि।[6] वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता।[7]

हम सब पुरोहित अर्थात् पुरः हितं नयति सबके हितो को आगे बढाने वाले सबके हितो की रक्षा करने वाले राष्ट्र के पुरोहित राष्ट्र सेवक राष्ट्र के लिए अहर्निश जन जागरण का कार्य करें। इस प्रकार की प्रार्थनाओं के द्वारा अनेक स्थानों पर यजुर्वेद में राष्ट्रीय चेतना दृष्टिगोचर होती है। एवं वर्तमान परिदृश्य में भी भारतवर्ष में अनेकों यज्ञस्थल यज्ञादिकर्म इसी राष्ट्र उन्नति एवं राष्ट्र चेतना के भाव को प्रकाशित करते हैं।

सामवेद में राष्ट्रीय चेतना

संस्कृत साहित्य की सम्पूर्ण संगीत कलादि शास्त्रों के माध्यम से जिस प्रकार से राष्ट्रीय चेतना को जागृति करने का कार्य आज संगीत शास्त्रों के द्वारा किया जा रहा है, उस सामविध का अविर्भाव भी सामवेद के मंन्त्रों से प्रार्दुभुत है। सामवेद के सामगान इत्यादि स्वरों से समय समय पर अपने स्वरों से सभी प्राणियों को एकीभूत कर सचेतन करने के लिए मन्त्रों द्वारा प्रार्थना कि जाती है, वर्तमान काल तक भी दृष्टिगोचर था कि संगीत के माध्यम से वर्षा का होना, दीपकों का जलना, पक्षियों का पास आ जाना इत्यादि रागों के द्वारा रागों का मन्त्राों का सचेतन होना ही परिभाषित होता है।

''कविमग्निमुपस्तुहि सत्यर्ध्माणम ध्वरे।'' देवीममीवचातनम[8]

अथर्ववेद में राष्ट्रीय चेतना

अथर्ववेद का प्राकट्य ही रक्षाविधन राष्ट्ररक्षा सुरक्षा आदि कृत्यों से राष्ट्रीय भावनात्मक मंत्रा सूक्त अथर्ववेद में अनेक सूक्तों से ओतप्रोत दिखते हैं। ''सा नो भूमिर्षि सृजतां माता पुत्राय मे पयः''[9] में उल्लिखित मन्त्रा के भाव राष्ट्र के लिए माँ शब्द एवं राष्ट्र के नागरिक के लिए पुत्रा शब्द से अभिप्रेरित किया गया है राष्ट्रीय चेतना सदभावना एवं राष्ट्र कल्याणार्थ के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र को मातृवत् भाव से देखने एवं संरक्षित करने से ही राष्ट्रीयता की चेतना को जागृत करने की कल्पना की जा सकती है।

सहृदयं सामनस्यमाविद्वेशं कृणोभि वः
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातिमवाहन्या।[10]

राष्ट्रीय चेतना को चेतनात्मक स्वरूप में ही सम्पूर्ण राष्ट्र को अथर्ववेद में प्रतिपादित किया गया है माता भूमिः पुत्राोऽहं पृथिव्यां सम्पूर्ण वेद में अनेकों सूक्तों के द्वारा राष्ट्र की प्रत्येक नदी पर्वत औषधि मृतकाओं पफलपुष्पों को भी अथर्वणात्मक दृष्टि से सचेतन माना गया है इसलिए राष्ट्र की प्रत्येक वस्तु को बहुमूल्य मानते हुए चेतनात्मक माना है।

उपस्थास्ते अनमोवा अयक्ष्मा अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः
दीर्घ न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृत स्याम।।[11]

पुराणों में राष्ट्रीय भावना

पुराण साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अवधरणा विस्तशतया उदृत है। वस्तुतः संस्कृत साहित्य में पुराण शब्द साहित्य चेतना का ही स्वरूप है यथा ''एकोऽहं बहुश्यामः'' आ प्रथमं परमशक्ति परमात्मा स्वरूप चेतना ही भगवान नारायण के द्वारा क्रमशः चराचर जगत को जागृत करती है। चेतना का शाब्दिक अर्थ जागरण करना प्रकाशित करना है जो कि स्वयं परमात्मा का स्वरूप है। श्रीभगवत् पुराण के महात्म्य में प्रथम पद्य है–

सच्चिदानन्द रूपाय विश्वोत्पत्यादि हेतवे।
तामत्राय विनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।[12]

सत् चित् आनन्द चिति संज्ञाने धतु से चित शब्द सिद्ध होता है। जिसका अर्थ सम्यक् ज्ञान प्रकाश अर्थात् ज्ञान विज्ञान का जागरण करना अपनी एवं राष्ट्र की चेतनात्मक शक्ति ही चित्त स्वरूप है। विष्णु पुराण में राष्ट्रीय भावना एवं चेतनात्मक भारत के लिए वर्णन है–

उत्तरे यत्समुद्रस्य हिमाद्रेष्चैव दक्षिणम्'
वर्षं तद्भारतम् नाम भारतीयस्य सन्तति।।[13]

प्राचीन समय से ही ऋषि मुनियों ने उत्तर से लेकर दक्षिण तक सम्पूर्ण भारत को एक राष्ट्र एवं सम्पूर्ण पृथ्वी को राष्ट्र की संज्ञा से ग्रहण किया है।

कदा वयं हि लप्स्यामो जन्म भारत भूतले।
कदा पुण्येन महता प्राप्स्यामः परमं पदम्।।[14]

इस प्रकार भारतवर्ष की महत्ता एवं राष्ट्रीयता के प्रतीकात्मक वर्णन के द्वारा राष्ट्रीयता की भावना को प्रकाशित किया गया है। भारत राष्ट्र में जन्म प्राप्त करने के लिए अनेक पुण्यकर्मो को सम्पादित किये जाने की प्रार्थना की गई है जिससे कि भारतभूमि पर जन्म प्राप्त कर राष्ट्रहित में जीवन की सार्थकता सिद्ध हो सके।

महाभारत भीष्मपर्व में भारतवर्ष के वर्णन करते हुए महर्षि वेदव्यास जी ने देवताओं के राजा इन्द्र एवं मनु का वर्णन करते हुए देवता लोग भी भारत भूमि में जन्म प्राप्त करने के लिए उत्साहित रहते हैं।

अन्येणं च महाराजक्षत्रियाणां बलीयसाम्।
सर्वेशामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारताम्।।
अत्रापि भारत श्रेष्ठं जम्बुद्वीपे महामुने।
यतोहि कर्म भूरणे ह्यतोऽन्य भोग भूमयः।।[15]
भारतं प्रथमं वर्ष ततः किम्पुरूष स्मृतम्।
हरिवर्षं तथैवन्यन्मेरो संस्थिणतो द्विजः।।[16]

भारतवर्ष में प्रत्येक जीवमात्रा के लिए स्वतन्त्रा रूप से जीवन जीने के लिए प्रेरणा है, प्रत्येक प्राणी स्वतन्त्रा जीवन ही सपफलता है। पराधीन जन्म एवं पराधीन वृति करने वाले राष्ट्रोन्नति एवं राष्ट्र चेतना का कार्य सम्पादित नही कर सकते पराधीन जीवन जीते हुए भी मरण के समान है।

पुराणों में देवता भी भारत भूमि की प्रशंसा करते हुए स्वर्ग की तुलना में भारत का श्रेष्ठत्व प्रतिपादित करते है।

गायन्ति देवा किल गीतकानि, ध्न्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते, भवन्तिभूयः पुरूषाः सुरत्वात्।।[17]

पुराणों में अवतारों का वर्णन एवं क्रम भी राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। राष्ट्रीय चेतना वृहद व्यापक अर्थ को प्रदर्शित करती है इसकी विशालता एवं राष्ट्रीयता को अनेक अर्थों में प्रतिपादित किया जाता है। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक अनेक प्रकार से राष्ट्र चेतना को देखा जा सकता है। राष्ट्रीय ध्रोहर को संजोये रखना राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण का भाव भी राष्ट्रीय चेतना का प्रतिक है।

अपि स्वर्णमयी लंका न में लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

राष्ट्रभूमि के प्रति त्याग सत्य अहिंसा प्रेम आदर्श को प्रकट करना एवं समाज को इनके प्रति जागरूक करना प्रत्येक जनमानस के चेतना को प्रकट करना है। भारतीय संस्कृति के दिनचर्या एवं दैनिक व्यवहार जीवन जीने की प्राचीन पद्धति ही ऐसी थी कि प्रत्येक मानव की चेतना का विकास हो उसके लिए दैनिक संन्ध्योपासन गायत्री जप होमादि क्रियायें निश्चित हों अपनी चेतना एवं राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का कार्य करती हैं। प्रातः कालीन उदित सूर्य से लेकर दिन पर्यन्त की समस्त क्रियाये, मास ऋतु अयन वर्ष काल इत्यादि सभी चक्र अपने चेतनता को ही प्रदर्शित करते हैं।

उपनिषदों में राष्ट्रीय चेतना

उपनिषदों में ऋषियों ने मानवमात्रा के कल्याणार्थ अपनी विशिष्ट दृष्टि एवं अनुभूतियों को बहुत ही सरल एवं सहज अभिव्यक्ति का कौशल प्रदर्शित करते हुए उसकी दिव्य दृष्टि तथा संस्कृत साहित्य के वैविधता के फलस्वरूप विविध्ता पूर्ण तथ्यों को प्रकट किया ऋषि चेतना के मार्गदर्शन से वर्तमान में उनके भाव संकेतों को ज्ञान विज्ञान के द्वारा सरलता से जनमानस के हृदय पटल पर राष्ट्रचेतना को पुनर्जागृत करते हैं।

सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाम है।।[18]

उपनिषदों में राष्ट्रचेतना के लिए साथ–साथ बढ़ने और साथ–साथ राष्ट्रोन्नति के लिए प्रार्थना करते हुए एक परमेश्वर को ही चेतनात्मक स्वरूप मानते हुए प्रार्थना करते हैं।

ईशावस्यमिदं सर्वं यत्किंच् जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुंजीयां मा गृधः कस्य स्विऽनम्।।[19]

ईशावास्योपनिषद में मनुष्य को सचेतन होकर कर्म करने की प्रेरणा एवं निस्वार्थ कर्म करते हुए राष्ट्रीय चेतना के लिए प्रार्थना करते हैं।

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्व भूतेशु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।[20]

व्यक्ति जब सभी प्राणियों में जड चेतनात्मक सृष्टि को इस आत्मतत्व में ही स्थित अनुभव करता है, तथा सभी के अन्दर इस चेतनात्मक स्वरूप को देखता है, तब वह किसी भी प्रकार से भ्रमित न होकर क्रियाशील रहता है। कठोपनिषद में ऋषि प्रार्थना करते हैं एवं मानव की चेतना जागृत करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं कि–

उतिष्ठत् जाग्रत् प्राप्य वारान्निबोध्त्।
क्षुरस्य धरा निशिता दुरत्यया दुर्गं पयस्तत्कवयो वदन्ति।।[21]

ब्राह्मणग्रन्थों में राष्ट्रीय चेतना

वेदादि शास्त्रों मे अनवरत गतिमान राष्ट्रीय चेतना के भाव एवं विचारों की प्रवाहमान धरा ब्राह्मण ग्रन्थों में भी प्रवाहित होती है। एतरेय ब्राह्मण में राष्ट्रीय चेतना विषयक वर्णन है– राष्ट्राणि वै विशः[22]

राष्ट्र चेतना का विचार शक्ति ही राष्ट्रीय चेतना में प्रवर्तित करते हुए राष्ट्र को संवार्षित और सुरक्षित रखते है। राष्ट्र रक्षण ही सर्वदा मानव सुरक्षा प्रदान करता है। क्षत्रां ही राष्ट्रम्[23]

यथा एक छत्रा के समीप में रहकर सबको ताप इत्यादि से मुक्ति प्राप्त होती है, इसी प्रकार एक राष्ट्र के प्रति एकत्रित होने का भाव वेदों में है। वेदों के सभी सूक्तों में ऋषि–मुनियों ने हजारो वर्षों तक तपस्वाध्याय निरत रहकर राष्ट्रोत्थान राष्ट्रकल्याण मानवमात्रा की चेतना को प्रस्पुफटित करने के लिए अनेक उपायों को बताया है। राष्ट्रं मुष्टिः[24]

राष्ट्र का स्वरूप भी मानव की भाँती होता है, यथा एक सर्वावयवय से सम्पन्न व्यक्ति ही सम्पूर्ण मानव कहलाता है, ठीक उसी प्रकार सार्वभौम विकसित राष्ट्र ही सर्वोन्नत राष्ट्र है। सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः[25]

भगवान सूर्य राष्ट्रीय चेतना का प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्येक मानवमात्रा प्राणिमात्रा को सूर्यदेव अहर्निश जाग्रत रहने समयब(सचेतन होकर राष्ट्र के प्रति नियमब) होकर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते है। श्री वैः राष्ट्रम्।[26]

राष्ट्र की समस्त मातृ शक्तियाँ राष्ट्र की चेतनात्मक रूप है, संस्कृत साहित्य में तो नारी मात्रा को प्रत्येक नारी को माँ का स्वरूप शक्ति स्वरूपा मानकर राष्ट्रोन्नति का मुख्य कारण माना जाता है। निरूक्तकार भी राष्ट्रीय चेतना के विषय में उल्लिखित करते हैं कि–

"तत्रा संस्थान एकत्व सम्भोग एकत्वं च उपेक्षितव्यम्, तत्रा, एतत् नट राष्ट्रमिव।[27]

मनुस्मृति में स्मृतिकार

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाध्यिं च वेदशास्त्रा विदर्हति।।[28]

स्मृतिकारों ने भी राष्ट्रीय चेतना को यत्रा तत्रा वर्णित किया है। राष्ट्रीय चेतना हेतु राजा से लेकर अन्तिम मनुष्य तक का राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों को व्यवस्थित कर अपने–अपने कर्मों कार्यों में निरत रहते हुए राष्ट्र की चेतना को राष्ट्र के विकास को एवं मानव मात्रा के हितों को सुरक्षित संबर्ध्ति किया है।

श्रीरामचरितमानस में राष्ट्रीय चेतना के विचार यत्रा–तत्रा समुपलब्ध हैं। भगवान राम स्वयं कहते हैं कि अगर तुम्हें कही भी राज्य में अनैतिकता प्रतीत होती है तो निर्भयता पूर्वक मुझसे कहो इस राम राज्य में प्रभुता राजा के पास न होकर प्रजा के पास प्रभुता है जहाँ प्रजा के एक व्यक्ति की असहमति से राम सीता को वनवास के लिए भेज देते हैं। क्योंकि वह लोकतंत्रा में विश्वास करते हैं तुलसीदास जी ने लोकचेतना और राष्ट्रीय चेतना को एकत्रित करने के लिए रामचरित मानस की रचना कर अद्वितीय कार्य किया है।

गीता में स्वस्थ एवं चैतन्य समाज के निर्माण के लिए प्रयत्नशील एवं संघर्ष को समाप्त कर स्वस्थ चैतन्य स्वरूप स्थापित करना है। एतदर्श ही मानव की चेतना शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति से सृजनात्मकता प्रदान करती है। मानव मात्रा को चेतना के स्तर पर जागृत करके उनके छन्दों का निधन करना ही गीता का मुख्य ध्येय है।

अशोच्यान्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादाश्च भा से।
गता सून गता सूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता।।[29]

मोह से बऽ अर्जुन की चेतना को जागृत कर उन्मुक्त करने के लिए भगवान उसे नित्य अनित्य के भाव से अवगत कराते हैं।

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य के अवलोकन के पश्चात एवं सम्पूर्ण वेदादि शास्त्राों के अनुसरण में राष्ट्रीय चेतना के तत्व विद्यमान हैं। तथा उन्ही तत्वों को पाश्चात्य संस्कृत के वाहक भी सनातन चेतना का अनुसंधन करते हुए राष्ट्र प्रगति के लिए प्रयोगात्मक रूप प्रदान करते है। वर्तमान समय के भी सभी पर्व, त्यौहार, नदी, पर्वत, अनेकानेक तीर्थस्थल, पतितपावन गंगादि नदियाँ अनवरत रूप से राष्ट्रीय चेतना का ही पथ प्रदर्शित करती हैं। वर्ष भर चलने वाले ब्रत तपादि कार्यों के द्वारा मानव अपनी अन्तर्निहित चेतना को जागृत करते हुए राष्ट्र चेतना को जागृत करने का कार्य करते है। ऋषि मुनियों ने भी सम्पूर्ण विश्व को राष्ट्र नाम से सम्बोध्ति किया है। ''यत्रा विश्वं भवत्मेक नीदम्'' की भावना से आप्लावित राष्ट्र ही राष्ट्रीय चेतना को जागृत करता है। प्रस्तुत सोध्सार में राष्ट्रीय चेतना विषयक विचार संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का क्षेत्रा बहुत व्यापक एवं विशालतम है। वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना ऋग्वेद से प्रारम्भ होकर अद्यावधि संस्कृत साहित्य में भी निरन्तर गतिमान है, राष्ट्रीय चेतना की भावना ऋशि मुनियों से लेकर वर्तमान तक के महापुरूषों संस्कृत साहित्यकारों के द्वारा अपनी लेखनी एवं वाक् बैखरी से जनसामान्य को सचेतनता प्रदान करती है।

संदर्भ सूची

1. ट्ट. 1/164/36.
2. ट्ट. 10/18/10.
3. ट्ट. 10/109/03.
4. ट्ट. 7/34/1.
5. यजु. 1/12.
6. यजु. 10/2/3.
7. यजु. 2/22.
8. साम.1/1/32.
9. अथर्व.12/1/10.
10. अथर्व.3/30/1.
11. अथर्व. 12/1/62.
12. भा. म. 1 श्लो.
13. विष्णु. पु. 2/3/1.
14. विष्णु. पु. 2/4/2.
15. विष्णुपु. 2/3/22.
16. वि.पु.2/3/13.
17. वि.पु.2/3/34.
18. कठो. म. 1.
19. ईशा. म. 2.
20. ईशा. म. 6.
21. कठोप. 14 मन्त्रा तश्तीय वल्ली.
22. ऐतरेयब्राह्मण 8/26.
23. एतरेय. ब्रा. 7/22.
24. शतपथ ब्राह्मण–13/2/9/7.
25. श.ब्रा. 11/4/3/14.
26. श. ब्रा. 6/7/3/7.
27. निरूक्त 7/5/8/9.
28. मनु. 12/100.
29. गीता 2–11.

29

उच्च शिक्षा संस्थानों में नवाचार और उद्यमिता – अवसर और चुनौतियाँ

डॉ० संजय कुमार
असिस्टैंट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय, नरेन्द्र नगर (टिहरी गढ़वाल)

प्रो० चतर सिंह नेगी
प०ल०म० श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय
ऋषिकेश परिसर, ऋषिकेश

सारांश

नवाचार और उद्यमिता आज के परिपेक्ष मे इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे नए विचार और काम करने के तरीके खोजने में मदद करते हैं। यह सुनिश्चित करना कही अधिक महत्वपूर्ण है कि नये विचारो मे टिकाऊपन हों और यह परिणामों पर आधारित हों। इससे लोगों को सीखने और रचनात्मक बनने में मदद मिल सकती है, जिससे बेहतर आर्थिक और सामाजिक विकास का रास्ता सुलभ हो जाएगा। शिक्षा महत्वपूर्ण है, और साथ ही यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि हर किसी तक इसकी पहुँच हो सके ताकि आर्थिक और सामाजिक विकास के मॉडल को सही प्रकार से लागू किया जा सकें। ज्ञान ऐसा सद्गुण है जो जीवन पर्यन्त व्यक्ति के साथ रहता है और सुशिक्षित जनशक्ति तैयार करता है जो देश के विकास को बढ़ाने, और नैतिकता का आधार तैयार करने मे सहायक होता है। हमें अपने पढ़ाने और सीखने के तरीके को वर्तमान समय के अनुरूप करने की आवश्यकता है ताकि यह दुनिया के काम करने के तरीके के अनुरूप हो। इसमें ई–लर्निंग जैसी तकनीक का उपयोग भी शामिल है। सरकार शिक्षा में सुधार और अधिक रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करने के लिए काम कर रही है। आज हमारे सीखने का तरीका बदल रहा है, और हम ऑनलाइन शिक्षण जैसे नए तरीकों का उपयोग कर रहे हैं। जिससे हमें बेहतर भविष्य के लिए तैयारी करने में मदद मिल सकेगी। तकनीक के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली में नवोन्मेश की राह बन रही है। हालाँकि, इनकी पहले से काफी जरूरत थी। यदि वर्तमान परिदृश्य पर ध्यान दिया जाए तो नए तरीकों से ज्ञान प्रदान किया जाए तो आने वाली पीढियो को एक बेहतर भविष्य मिल मिल सकता है। साथ ही इससे हमारे छात्र छात्राओं के सीखने के तरीके में भी बदलाव देखने को मिलगे। मसलन रटने और ढर्रागत परंपरा के बजाय उन्हें कुछ नया सीखने का मौका मिल सकता है। ज्ञान को नवोन्मेश और उद्यम से जोड़ने पर भविष्य मे ओर बेहतर परिणाम मिलने की संभावना प्रबल हो जाएगी।

मुख्य शब्द

शिक्षा, विद्यार्थी रचनातात्मकता, नवोन्मेश एवं उद्यमवृत्ति, विकास, यूनिवर्सिटीज, विद्यालय।

प्रस्तावना

नवोन्मेश यानि नए तरीके से सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान के वर्तमान स्वरूप में परिवर्तन लाना है। साथ ही इससे भारत में रोजगार की अधिक संभावनाएं और बेहतर भविष्य की बुनियाद तैयार करने में भी मदद मिलेगी। सीखने के निश्चित तरीके विश्व विद्यालय ब्लैकबोर्ड से बातचीत' मॉडल और आधुनिक डिजिटल सिस्टम तक की बात पहुँच चुकी है। तकनीक के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणाली में नवोन्मेश की राह बन रही है। हालाँकि, इनकी पहले से काफी जरूरत थी। यदि वर्तमान परिदृश्य पर ध्यान दिया जाए तो नए तरीकों से ज्ञान प्रदान किया जाए तो आने वाली पीढियो को एक बेहतर भविष्य मिल मिल सकता है। साथ ही इससे हमारे छात्र छात्राओं के सीखने के तरीके में भी बदलाव देखने को मिलगे। मसलन रटने और ढर्रागत परंपरा के बजाय उन्हें कुछ नया सीखने का मौका मिल सकता है। ज्ञान को नवोन्मेश और उद्यम से जोड़ने पर भविष्य मे ओर बेहतर परिणाम मिलने की संभावना प्रबल हो जाएगी। प्राचीन काल में भारत ज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरु था। भारत में ज्ञान के क्षेत्र में प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान नालंदा और तक्षशिला थे। आज भारत विश्व की सर्वाधिक आबादी वाला देश है और जहां सर्वाधिक विशाल युवा आबादी है। यदि इस युवा वादी का मस्तिष्क नवाचारी गतिविधियों में लगेगा तब ज्ञान के क्षेत्र में उनका बेहतर स्माल कर विभिन्न क्षेत्रों में उद्यमवृत्ति का विकास होगा। भारत में राइट टू एजुकेशन आदि योजनाएं एवं कार्यक्रम ज्ञान की प्राथमिकता को दर्शाते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारत सरकार देश में शोध एवं विकास और उद्यम भर्ती की संस्कृति का विकास कर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान को ऊंचाइयों

पर पहुंचाना चाहती है। नई शिक्षा नीति का निर्माण करने वाले डॉ. कस्तूरीरंगन ने अपनी रिपोर्ट में विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक चर्चा के बाद संस्तुति की है। सभी तक पहुँच, सभी के लिए शिक्षा ग्रहण करने के समान अवसर, अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जवाबदेही शैक्षिक प्रशासन और बढ़ती आबादी के लिए शिक्षा उपलब्ध कराने पर होने वाला व्यय आदि चुनौतियां का सामना इसके क्रियान्वयन के समय करना पड़ेगा। प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के क्षेत्र तक सभी में सुधार करने का प्रस्ताव किया गया है। शिक्षार्थियों में प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही प्राथमिक शिक्षा पर बल दिया जाएगा और मौजूदा शिक्षा प्रणाली में मूल्यांकन विधि को तर्कसंगत बनाया जाएगा। शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक नियंत्रण हेतु नियामक ढांचे का पुनर्गठन होगा। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर शिक्षा आयोग के गठन की संस्तुति की गई है। सार्वजनिक व्यय और निवेश में वृद्धि कर व्यवसायिक तथा व्यस्त शिक्षा पर फोकस दिया जाएगा जिसमें तकनीक इस्तेमाल में वृद्धि की जाएगी।

भारत वित्तीय वर्ष 2024–25 में 5 लाख करोड़ डॉलर (5 ट्रिलियन) वाली अर्थव्यवस्था बनने का प्रयास कर रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जरूरी होगा कि रोजगार के क्षेत्र में नवाचारी मस्तिष्क वाले 21 वीं शताब्दी के कौशल से युक्त युवा आगे आए जो उत्पादन की गुणवत्ता, श्रेष्ठता और उन्नयन के साथ–साथ उत्पादन में नवीनता लाएं। नई शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकन की दर को वर्श 2035 तक 50% करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसमें परंपरागत शिक्षा व्यवस्था के अतिरिक्त डिजिटल एवं मुक्त शिक्षा की आवश्यकता होगी। विश्व में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन की दर वर्तमान में 36.7% है जबकि भारत में मात्र 26.3% है। 15 वर्षों में इस नामांकन दर को दोगुना करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। भारत के यंग इंडिया का सपना साकार तभी होगा जब उसे उच्च मानव संसाधन युक्त विकास के अवसर पहले से अधिक और अनिवार्य रूप से मिलेंगे। वैश्विक परिदृश्य के अनुसार रोजगार देने की क्षमता और आवश्यकता तथा प्रासंगिकता और गुणवत्ता वैश्विक मानकों की मांग के अनुरूप हो।

उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य भारतीय उच्च शक्षा संस्थानों में विकसित होती नवोन्मेश और उद्यमिता की संस्कृति का वर्णनात्मक अध्ययन करना है और साथ ही इसमें आने वाली चुनौतियों के बेहतर समाधान हेतु सुझाव प्रदान करना है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध मे सर्वेक्षण एवं अवलोकन विधि प्रयोग की गयी है।

शोध के उपकरण

शोध में दिवतीयक तथ्य विभिन्न पत्रिकाओं, न्यूज पेपर के साथ सरकारी वैबसाइट से संकलित किए गए हैं।

उद्यमी सोच विकसित करना

देश के कुछ उच्च शिक्षा संस्थानों, ने उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए व्यवस्थित कार्यक्रमों की आवश्यकता को पहचाना और 1983 में मास्टर ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप (एंटरप्रेन्योरशिप में एमएससी) की शुरुआत की। हालाँकि, यह अपने समय से बहुत आगे था और इसका वांछित प्रभाव नहीं पड़ा। हाल के वर्षों में, नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति की व्यापक स्वीकृति को देखते हुए, कुछ संस्थानों ने प्रथम–स्तरीय उद्यमिता ऐच्छिक रूप मे पेश किए हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को नवाचार और उद्यमिता की दिशा में व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ने में मदद करना है।

इस उद्देश्य से, उत्पादों को बाजार की जरूरतों के अनुरूप और संभावित ग्राहकों के बारे में उनकी धारणाओं का परीक्षण और सत्यापन करने के लिए समय–समय पर विभिन्न तकनीक प्रयोग मे लायी जाती है। इस कोर्स के प्रति छात्रों के बढते आकर्षण के कारण इस कोर्स के लिए छात्रों के बीच मांग बहुत अधिक बढ़ती चली गयी। उपलब्ध सीटों से अधिक आवेदन प्राप्त होने लगे, जो उद्यमिता तथा नवाचार के शैक्षिक पाठ्यक्रमों की बढ़ती मांग को दर्शाता है। इन संस्थानों के विश्वस्तरीय केंद्रों में प्रौद्योगिकी विकास अनुसंधान पर सालाना हजारों रुपये खर्च किये जाते हैं। इसलिए, प्रौद्योगिकी को प्रयोगशाला से निकालकर बाजार में लाने के लिए ऐसी प्रणालियों को विकसित करने की आवश्यकता है।

अंतः विषयी साइबर भौतिक प्रणालियों पर राष्ट्रीय मिशन (इंटरडिसिप्लिनरी साइबर फिजिकल सिस्टम्स – एनएम – आईसीपीएस) के माध्यम से देश भर में 25 प्रौद्योगिकीय संस्थान नवाचार केंद्र राष्ट्रीय पहल को सशक्त बनाने के लिए नई और उभरती प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा दे रहे हैं। एनएम–आईसीपीएस, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, ऊर्जा, पर्यावरण, कृषि, रणनीति सह सुरक्षा में तकनीकी समाधानों को बढ़ावा देता है, उद्योग 4.0 को शीर्ष अकादमिक में स्थापित 25 प्रौद्योगिकी नवाचार हब (टीआईएच) के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है, और राष्ट्रीय अनुसंधान एवं विकास संस्थानों को मंजूरी दी गई थी। दिसंबर 2018 में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कुल 3660 करोड़ रुपये की लागत से सभी केंद्र जन–केंद्रित समस्याओं के समाधान विकसित करने पर काम कर रहे हैं।

देश मे नवाचार हब के रूप मे उभरे निम्नलिखित मुख्य केंद्र शामिल हैं:

- आईआईटी खड़गपुर में एआई 4 आईसीपीएस आई–हब फाउंडेशन (टीआईएच) आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के क्षेत्र में काम कर रहा है।

- आईआईटी बॉम्बे में आईओटी और आईओई के लिए टीआईएच फाउंडेशन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और इंटरनेट ऑफ एवरीथिंग के लिए प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- IIIT-H आईआईआईटी हैदराबाद में डेटा आई–हब फाउंडेशन, डेटा बैंक और डेटा सर्विसेज, डेटा एनालिसिस के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईएससी बैंगलोर में रोबोटिक्स और ऑटोनॉमस सिस्टम इनोवेशन फाउंडेशन के लिए आई–हब, रोबोटिक्स और ऑटोनॉमस सिस्टम के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आई हब एनटीआईएचएसी फाउंडेशन आईआईटी कानपुर में, भौतिक बुनियादी ढांचे के लिए साइबर सुरक्षा और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी जोधपुर में आईएचयूबी दृश्टि फाउंडेशन, कंप्यूटर विजन, संवर्धित और आभासी वास्तविकता के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी रूड़की में डिवाइसेज मैटेरियल्स और टेक्नोलॉजी फाउंडेशन के लिए दिव्य संपर्क आईएचयूबी रूड़की। डिवाइस टेक्नोलॉजी और मटेरियल के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी पटना में विश्लेसन आई–हब फाउंडेशन, स्पीच, वीडियो और टेक्स्ट एनालिटिक्स के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी मद्रास में आईआईटी मद्रास प्रवर्तक टेक्नोलॉजीज फाउंडेशन, नेटवर्किंग, एक्चुएटर और नियंत्रण के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी हैदराबाद में ऑटोनॉमस नेविगेशन फाउंडेशन (तिहान) पर एनएमआईसीपीएस टेक्नोलॉजी इनोवेशन हब, ऑटोनॉमस नेविगेशन और डेटा एक्विजिशन सिस्टम (यूएवी, रोवेटसी) के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी बीएचयू में आई–डीएपीटी–हब फाउंडेशन, डेटा एनालिटिक्स और पूर्वानुमानित प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में काम कर रहा है।

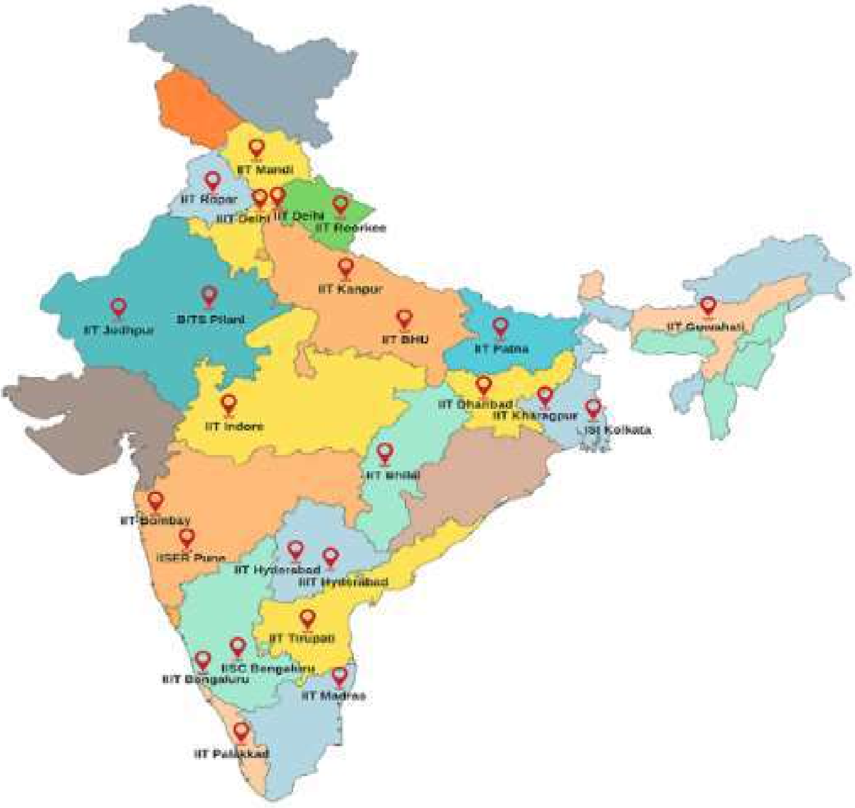
IIT Mandi
IIT Ropar
IIIT Delhi
IIT Delhi
IIT Roorkee
IIT Kanpur
IIT Jodhpur
BITS Pilani
IIT BHU
IIT Patna
IIT Guwahati
IIT Dhanbad
IIT Kharagpur
ISI Kolkata
IIT Indore
IIT Bhilai
IIT Bombay
IISER Pune
IIT Hyderabad
IIIT Hyderabad
IIT Tirupati
IISC Bengaluru
IIIT Bengaluru
IIT Madras
IIT Palakkad

Map courtesy: Survey of India, GOI

- आईआईटी गुवाहाटी में आईआईटी गुवाहाटी टेक्नोलॉजी इनोवेशन एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन, पानी के नीचे की खोज के लिए प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी मंडी आई–हब और आईआईटी मंडी में एचसीआई फाउंडेशन, मानव–कंप्यूटर इंटरेक्शन के क्षेत्र में काम कर रहा है।

- आई–हब फाउंडेशन फॉर कोबोटिक्स (IHFC) आईआईटी दिल्ली में, कोबोटिक्स के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। आईआईटी रोपड़ में आईआईटी रोपड़ टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन फाउंडेशन, कृषि और जल के लिए प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।
- आईआईटी (आईएसएम) धनबाद में अन्वेषण और खनन फाउंडेशन में प्रौद्योगिकी नवाचार, खनन के लिए प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में काम कर रहे हैं।
- आईआईटी पलक्कड़ टेक्नोलॉजी आई–हब फाउंडेशन, इंटेलिजेंट कोलैबोरेटिव सिस्टम के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईआईटी बैंगलोर में आईआईआईटीबी कॉमेट फाउंडेशन, उन्नत संचार प्रणाली के क्षेत्र में काम कर रहा है, बिट्स पिलानी में बिट्स बायोसीवाईटीआईएच फाउंडेशन, में काम कर रहा है।
- बायो–सीपीएसआईडीईएएस का क्षेत्र– आईएसआई कोलकाता में इंस्टीट्यूट ऑफ डेटा इंजीनियरिंग, एनालिटिक्स एंड साइंस फाउंडेशन, डेटा साइंस, बिग डेटा एनालिटिक्स और डेटा क्यूरेशन आदि के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी इंदौर में आईआईटीआई दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन, सिस्टम सिमुलेशन, मॉडलिंग और विजुअलाइजेशन के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईआईटी दिल्ली में आईएचयूबी अनुभूति–आईआईआईटीडी फाउंडेशन, संज्ञानात्मक कंप्यूटिंग और सामाजिक सेंसरिंग के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईएसईआर पुणे में आई–हब क्वांटम टेक्नोलॉजी फाउंडेशन, क्वांटम टेक्नोलॉजीज के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी तिरूपति नवविष्कर आई–हब आईआईटी तिरूपति में फाउंडेशन, पोजिशनिंग और प्रिसिजन टेक्नोलॉजीज के क्षेत्र में काम कर रहा है।
- आईआईटी भिलाई में आईआईटी भिलाई इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी फाउंडेशन, वित्तीय क्षेत्र (फिनटेक) के लिए टेक्नोलॉजीज के क्षेत्र में काम कर रहा है।

(TIDE – उद्यमियों का प्रौद्योगिकी उद्भवन और विकास)
योजना के तहत इन्क्यूबेशन केंद्रों की सूची

क्र० सं०	इन्क्यूबेशन सेंटर का नाम	वेबसाइट
1	इनोवेशन इनक्यूबेशन के लिए केंद्र और उद्यमिता (सीआईआईई), आईआईएम अहमदाबाद	https://ciie.co/
2	सीआईई IIIT हैदराबाद (अंतर्राष्ट्रीय संस्थान) सूचना प्रौद्योगिकी – हैदराबाद फाउंडेशन)	https://cie.iiit.ac.in/
3	नवाचार और प्रौद्योगिकी फाउंडेशन स्थानांतरण (FITT), आईआईटी दिल्ली	https://fitt-iitd.in/
4	आईआईएम कलकत्ता इनोवेशन पार्क, कोलकाता	https://www.iimcal.ac.in/faculty/centers-ofexcellence/centre-for-entrepreneurshipinnovation/iim-calcutta-innovation-park
5	स्टार्ट अप इनक्यूबेशन एंड इनोवेशन सेंटर (SIIC), IIT कानपुर	https://siicincubator.com/
6	नवाचार और उद्यमिता के लिए सोसायटी (साइन), आईआईटी बॉम्बे	https://sineiitb.org/
	ग्रुप 2	
7	एआईसी – पिनेकल एंटरप्रेन्योरशिप फोरम, पुणे	https://www.aic-pinnacle.org/
8	अटल इन्क्यूबेशन सेंटर /36INC सोसाइटी, रायपुर	https://36inc.in/
9	अटल इन्क्यूबेशन सेंटर – ALEAP वी–हब, हैदराबाद (महिला उद्यमियों का संघ) भारत	https://www.aleap.org/inc.html
10	सी–कैंप, सेंटर फॉर सेल्युलर में बायो इनक्यूबेटर और आणविक प्लेटफार्म, बेंगलुरु	http://www.ccamp.res.in/
11	नवाचार और उद्यमिता केंद्र IIITS, श्री सिटी, चित्तूर	http://www.iiits.ac.in/innovation-tbi/e-cell-iiit-sricity/

12	चितकारा इनोवेशन इनक्यूबेटर फाउंडेशन (सीआईआईएफ), चितकारा यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़	https://www.chitkara.edu.in/chitkara-innovationincupator/
13	दिल्ली इनोवेशन एंड इनक्यूबेशन सेंटर, आईआईआईटी दिल्ली	https://iiitdic.in/
14	फोर्ज एक्सेलेरेटर (कोयंबटूर इनोवेशन बिजनेस इनक्यूबेटर), कोयंबटूर	http://forgeforward.in/index.html
15	गुजरात विश्वविद्यालय स्टार्टअप और उद्यमिता परिषद (जीयूएसईसी)	https://gusec.edu.in/
16	IITB इनोवेशन सेंटर (अंतर्राष्ट्रीय संस्थान)। सूचना प्रौद्योगिकी बैंगलोर – नवप्रवर्तन केंद्र	https://www.iiitb.ac.in/innovation-center
17	आईआईटीएम इन्क्यूबेशन सेल (आईआईटी मद्रास इन्क्यूबेशन केंद्र)	http://www.incupation.iitm.ac.in/home
18	उद्यमिता के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र और टेक्नोलॉजी (आईक्रिएट), अहमदाबाद	https://icreate.org.in/
19	जेईसीआरसी इन्क्यूबेशन सेंटर, जेईसीआरसी विश्वविद्यालय, जयपुर	https://m.jecrcuniversity.edu.in/jecrc-incubationcentre-and-juentrepreneurship-cell
20	केआईआईटी टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, केआईआईटी विश्वविद्यालय, भुबनेश्वर	https://www.kiitincupator.in/
21	केएलई सेंटर फॉर टेक्नोलॉजी इनोवेशन और उद्यमिता, केएलई टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय, धारवाड़	http://kletech.ac.in/
22	मेकर विलेज–कोच्चि, IIITM–केरल	https://makervillage.in/
23	एनएसआरसीईएल, आईआईएम बेंगलुरु	https://www.nsrcel.org/
24	पिलानी इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट सोसाइटी, बिट्स पिलानी	http://www.piedsociety.org/
25	पीएसजी विज्ञान और प्रौद्योगिकी उद्यमी पार्क (पीएसजी–स्टेप), पीएसजी कॉलेज ऑफटेक्नोलॉजी, कोयंबटूर	http://www.psgstep.org/index.php?page_id=1
26	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उद्यमिता पार्क, थापर इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (टीआईईटी), पटियाला	http://www.thapar.edu/academics/centers/sciencetechnology-entrepreneurs-park-step
27	नवाचार और विकास सोसायटी, आईआईएससी, बेंगलुरु	https://sid.iisc.ac.in/
28	एसआर इनोवेशन एक्सचेंज, वारंगल से संबद्ध जेएनटीयू, हैदराबाद	https://www.srix.in/
29	टाइड बिजनेस इनक्यूबेटर, आईआईटी रूड़की	http://tides.iitr.ac.in/
30	वेल्लोर प्रौद्योगिकी संस्थान – प्रौद्योगिकी बिजनेस इनक्यूबेटर (VITTBI)	https://vit.ac.in/vit-tbi-entrepreneurshipdevelopment-programme-edp
ग्रुप 3		
31	एबीईएस इंजीनियरिंग कॉलेज, गाजियाबाद	https://www.abes.ac.in/
32	एमिटी इनोवेशन इनक्यूबेटर, गुरुग्राम	https://www.amity.edu/aii/
33	आंध्र प्रदेश – ग्रामीण ऊष्मायन केंद्र, विशाखापत्तनम	https://196.1.113.171/index.html
34	आंध्र प्रदेश इनोवेशन सोसाइटी, चित्तूर	http://www.apinnovationsociety.com/
35	अटल इन्क्यूबेशन सेंटर, वनस्थली विद्यापीठ, टोंक	https://www.aicbanastali.org/
36	सेंटर फॉर इनोवेशन इनक्यूबेशन एंड उद्यमिता (सीआईआईई), केएल विश्वविद्यालय, गुंटूर	https://www.kluniversity.in/edcnew/default.aspx
37	दयानंद सागर उद्यमिता अनुसंधान एवं बिजनेस इनक्यूबेटर (DERBI) फाउंडेशन, बेंगलुरु	https://derbifoundation.com/
38	डाउन टाउन वेंचर लैब्स, असम डाउन टाउन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम	https://adtu.in/Entrepreneurship/About.html

39	एंटरप्राइजिंग जोन, पटना	http://www.enterprisingzone.com/
40	प्रौद्योगिकी एवं व्यवसाय फाउंडेशन इन्क्यूबेशन (एफटीबीआई), एनआईटी राउरकेला	https://www.ftbi-nitrkl.org/
41	आई–टीआईसी फाउंडेशन, आईआईटी हैदराबाद	https://i-tic.iith.ac.in/
42	आईआईटी मंडी कैटलिस्ट, आईआईटी मंडी	http://www.iitmandicatalyst.in/
43	आईआईएम उदयपुर इन्क्यूबेशन सेंटर, उदयपुर	https://iimuic.org/
44	आईआईएम विशाखापत्तनम इन्क्यूबेशन सेंटर, विशाखापत्तनम	https://iimvic.iimv.ac.in/
45	कृष्णा पथ इन्क्यूबेशन सोसायटी, गाजियाबाद	http://www.tbi-kiet.in/
46	न्यूजेन आईईडीसी बिजनेस इनोवेशन और इन्क्यूबेशन सेंटर, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर	http://newgen.uok.edu.in/Main/Default.aspx
47	OASYS प्रौद्योगिकी संस्थान,अन्ना विश्वविद्यालय, तिरुचिरापल्ली	https://www.oasys.edu.in/
48	संदीप टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर (टीबीआई), संदीप विश्वविद्यालय, नासिक	https://www.sitrc.sandipfoundation.org/tbi/
49	प्रौद्योगिकी नवाचार और ऊष्मायन केंद्र, अटल बिहारी वाजपेई IIITM–ग्वालियर	https://www.tiiciiiitm.com/
50	वेल टेक टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर, वेल टेक इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस और प्रौद्योगिकी, तिरुवल्लुर	https://www.veltechtbi.com/

नवोन्मेश एवं उद्यमवृत्ति एक उत्प्रेरक के रूप में

भारत सरकार अब टीम वर्क की भावना पैदा करने और कक्षा से परे काम करने के अवसर प्रदान करने के लिए सभी उच्च शिक्षा संस्थानों में नवाचार और उद्यमिता केंद्र स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह छात्रों को परिणामों के लिए साझा जिम्मेदारी लेने और पीढ़ियों तक चलने वाले उत्पाद बनाने का अवसर देता है। जो छात्र अपनी व्यक्तिगत योग्यता के आधार पर इन संस्थानों में आते हैं, वे नवाचार और उत्पादों के निर्माण में संलग्न होकर वास्तविक दुनिया के लिए तैयार होते हैं। जैसे–जैसे समाज की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं मे परिवर्तन होता है उसी के अनुसार नए विचार आकार लेते हैं, और फिर आविष्कार के रूप मे नए उत्पाद विकसित होते हैं। भारतीय उच्च शिक्षा संस्थान भी देश की जरूरतों को पूरा करने वाले महत्वपूर्ण अनुसंधान और विकास केंद्र बन रहे हैं। आज, स्नातक कार्यक्रमों में दाखिला लेने की तुलना में अधिक छात्र अपनी स्नातक की डिग्री पूरी करने के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखते हैं। इसके अलावा, इन संस्थानों में राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न क्षेत्रों में कई क्षमता निर्माण केंद्र स्थापित किए गए हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में स्थापित रॉबर्ट बॉश डेटा साइंस एंड ऑफिशियल इंटेलिजेंस सेंटर (आरबीसी–डीएसएआई) जैसी सुविधाओं के साथ, डीप लर्निंग और नेटवर्क एनालिटिक्स के साथ–साथ मैन्युफैक्चरिंग एनालिटिक्स, फाइनेंशियल एनालिटिक्स और स्मार्ट सिटी को सिस्टम बायोलॉजी और हेल्थकेयर पर लागू किया गया है। इस विषयों मे आवेदन को बढ़ावा देना, राष्ट्रीय गहन अनुसंधान और विकास केंद्र (एनसीसी आरडी) मूल रूप से क्षेत्र में गहन उन्नत अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए एक अंतः विषय संकाय के रूप मे स्थापित किया गया था। इस बीच, माइक्रो गैस टर्बाइन, एग्जॉस्ट गैस सेंसर और इलेक्ट्रिक विमान जैसे बड़े पैमाने पर स्टार्ट–अप भी स्थापित किए गए हैं। साथ ही देश भर में राष्ट्रीय महत्व के समान संस्थानो ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्टता के 24 से अधिक केंद्रों को स्थापित किया हैं, जो नए विचारों की प्रेरणा के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करते हैं। उन्नत ज्ञान के ये संस्थान ऐसे समाधानों से भरे हुए हैं, जो छात्र/छात्राओं मे नवाचार एवं उद्यमिता के प्रति आकर्षण को बढ़ता है।

विद्यार्थियों में नवोन्मेश और उद्यमवृत्ति को उत्प्रेरित करना

बच्चों के रूप में, और यहाँ तक कि वयस्कों के रूप में, हम सभी को अपने हाथों से चीजें बनाना, खेलना, और तोड़ना बहुत पसंद था। किन्तु धीरे धीरे इस तरह कि सभी गतिविधियां जीवन से खत्म होती चली जाती है, विशेषकर हाई स्कूल में परीक्षाओं के तनाव से इस शौक पर अंकुश सा लग जाता है। लेकिन अब यह व्यापक रूप से समझ में आ गया है कि शैक्षणिक संस्थानों को एक ऐसे माहौल की आवश्यकता होती है जहां छात्र अपने हाथों से और अपनी रुचि के अनुसार कुछ नया कर सकें। नीति आयोग के तत्वावधान में, अटल इनोवेशन मिशन स्कूलों के भीतर अटल बुनाई लैब्स की स्थापना को प्रोत्साहित करता है ताकि ऐसी प्रथाओं को विकसित किया जा सके जो छात्रों को अपना खुद का नवाचार करने के लिए जगह दें। चुपचाप व्याख्यान सुनने के बजाय, छात्र अब विश्वविद्यालय की कक्षा के बाद की गतिविधियों के लिए स्थापित नवाचार केंद्रों में व्यावहारिक प्रयोग के माध्यम से सीख रहे हैं। सीएफआई का उद्देश्य छात्रों को ग्रेड या परीक्षा के दबाव के बिना अपने जुनून को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करना है। केंद्र की स्थापना एक छात्र–संचालित शिल्प प्रयोगशाला और एक ऐसी जगह बनाने की दृष्टि से की गई थी जहां छात्र काम करने के

लिए स्वतंत्र हों और अपने जुनून और विचारों को जीवन में लाने की कोशिश करें। ''अपना विचार सोचें और उसे साकार करें।'' अपने संकल्प के अनुरूप, केंद्र नवोन्मेशी उत्पाद विकसित करना जारी रखे हुए है जो अक्सर मीडिया का ध्यान आकर्षित करते हैं और विकसित वस्तु वार्षिक प्रदर्शनियों में प्रदर्शित कि जाती हैं। यह अवधारणा डिजाइन से लेकर वास्तविक उत्पाद उत्पादन तक, विकास के सभी चरणों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्रों में विचारों और परियोजनाओं को विकसित होने का अवसर प्रदान करता है। हाल ही में, सीएफआई की 'अविष्कार' टीम स्पेसएक्स–प्रायोजित हाइपरलूप प्रतियोगिता में शीर्ष 25 में जगह बनाकर प्रतिस्पर्धा करने वाली एकमात्र एशियाई टीम बन गई। आर्थिक–सामाजिक इंजीनियरिंग सोच को संबोधित करने पर भी अहम फोकस है जो हमें लागत कम रखते हुए सर्वोत्तम और सबसे कुशल उत्पादों का निर्माण करने मे मदद देता है। इसी तरह, देश में कई छात्रों की फॉर्मूला रेसिंग कार टीमें (जैसे आईआईटीएम रफ्तार) हैं जो नियमित रूप से दुनिया भर में प्रतिस्पर्धा करती हैं और जीतती भी हैं। ये छात्र सेल्फ–ड्राइविंग कारों, सार्वजनिक सेवा ड्रोन, रोबोटिक्स, कंप्यूटर विजन, डेटा एनालिटिक्स और जेनेटिक्स जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में अपने कौशल और क्षमता को लागू करके लगातार अपनी क्षमताओं को आगे बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा, हमारे देश की सामाजिक आवश्यकताओं की पहचान करके, सीएफआई जैसे केंद्र उन छात्रों के रुचि क्लबों को भी बढ़ावा देते हैं जो अपनी परिस्थितियों के अनुरूप प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। वहां परीक्षण किए गए विशयों में आपदा, स्मार्ट कृषि, पुनर्वास और वंचितों के लिए ज्ञान शामिल हैं। छात्र विभिन्न क्षेत्रों में कई विशयों का अध्ययन करते हैं, लेकिन यह विश्वविद्यालय उन्हें अपनी कल्पनाओं को उड़ान देने और जो कुछ भी वे चाहते हैं उसे हासिल करने का साहस और आत्मविश्वास देते है।

चुनौतियाँ

नवप्रवर्तन की संपूर्ण अवधारणा को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. परिकल्पना 2. परेखा निर्माण 3. परेखा निर्धारण 4. उसका समर्थन।

इनमें से, रूपरेखा संवर्द्धन और समर्थन पूरी अवधारणा को धरातल पर उतारने में सबसे अधिक सहायक हैं। यह उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए विशेष रूप से सच है जहां उद्यमिता को समर्थन देने की आवश्यकता को बहुत पहले ही पहचान लिया गया था। आईआईटी बॉम्बे इंस्टीट्यूट फॉर इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप शैक्षणिक माहौल में प्रौद्योगिकी स्टार्ट–अप और सामाजिक रूप से लाभकारी परियोजनाओं का समर्थन करने वाले भारत के पहले केंद्रों में से एक है। इसी तरह, आईआईटी दिल्ली के इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी ट्रांसफर फाउंडेशन ने 1992 से उन्हें उद्यमिता विकसित करने में मदद की है। और हाल ही में पीएचडी अध्ययन के माध्यम से स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए एक पहल शुरू की है। आईआईटी मद्रास ने भारत का पहला लोकल यूनिवर्सिटी स्तर का अनुसंधान पार्क स्थापित किया है जो स्टार्ट–अप और उधमियों को जोड़ता है। हमारे विश्वविद्यालय की चुनौती लगातार प्रतिभाशाली छात्रों को तैयार करना है जो महत्वाकांक्षी प्रौद्योगिकी उद्यमी और नवप्रवर्तक बनें। मुझे आशा है कि आप आज और कल के सामाजिक मुद्दों को नए विचारों के साथ हल करते रहेंगे।

भारत के युवाओं के लिए अवसर एवं वर्तमान युवाओं का परिदृश्य

भारतीय छात्र शिक्षा ग्रहण करने हेतु विदेश जाते हैं किंतु यह भी सत्य है कि उससे 15 गुना विद्यार्थी विदेश से भारत में शिक्षा ग्रहण करने हेतु आते हैं। भारत विश्व में सर्वाधिक आबादी वाला देश है जहां सर्वाधिक युवा निवास करते हैं। भारत में युवाओं की औसत आयु 29 वर्ष है। नई शिक्षा नीति में भारत में विदेशी विश्वविद्यालय को अपने परिसर भारत में स्थापित करने की अनुमति दी गई है। भारत में 1,000 से अधिक विश्वविद्यालय कार्यरत हैं जिसमें क्षेत्र की भागीदारी लगभग 40% है। देश में 30,000 से अधिक उच्च शिक्षा में शैक्षणिक संस्था ने स्थापित है जिसमें निजी क्षेत्र की भागीदारी लगभग 78% है। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत 2/3 शिक्षार्थी निजी क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण करते हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की हिस्सेदारी निजी क्षेत्र की तुलना में लगभग आधी है। 54% शिक्षार्थी भारत के 5 बड़े राज्यों से आते हैं जिसमें उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र तमिलनाडु पश्चिम बंगाल और कर्नाटक हैं। उच्च शिक्षा में शिक्षा ग्रहण करने की लागत जिसमें छात्रावास का शुल्क भी है शिक्षार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने से वंचित कर देता है। बढ़ती हुई आबादी सामाजिक अंतराल को और बढ़ा रहा है जिसके कारण आर्थिक विशमता में भी वृद्धि हो रही है। शहरी और ग्रामीण शैक्षणिक संस्थानों में ज्ञान की खाई में वृद्धि हो रही है। शहरों में बढ़ता जनसंख्या घनत्व शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक नई समस्या उत्पन्न कर रहा है। शिक्षार्थियों की तुलना में शिक्षकों के पद उस अनुपात में नहीं बढ़े हैं। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने केवल 2% स्नातकों को रोजगार की योग्य माना है। शैक्षणिक गुणवत्ता में कमी के कारण स्नातकों के पास रोजगार के अवसर उपलब्ध है। वैश्विक सूचकांक में विश्व की टॉप 100 यूनिवर्सिटी में भारत का कोई भी विश्वविद्यालय स्थान पाने में सफल नहीं हो पाया है। 21वीं शताब्दी में उसी देश का डंका विश्व में बजेगा जो कुशल कार्यबल का नेतृत्व करेगा। नवाचार और उद्यमी अभिवृत्ति भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने का एक अवसर प्रदान कर रहा है आवश्यकता देश में कौशल विकास का माहौल तैयार करने की है। स्नातकों को रोजगार के कम मौके मिलना, शिक्षण की खराब गुणवत्ता, कमजोर प्रशासन, अपर्याप्त धन आवंटन और जटिल नियामकीय शर्तो का भारतीय उच्च ज्ञानक्षेत्र पर असर पडता रहता है।

अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या आम तौर पर उच्च शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और ताकत का एक विश्वसनीय संकेतक है। 2018/19 में केवल 14427 विदेशी छात्रों ने भारत मे तकनीकी शिक्षा हेतु प्रवेश के लिए आवेदन किया, जो 950 सीटो से अधिक

था। जो कि विश्वविद्यालयों मे उपलब्ध सीटों से कही अधिक था। चीन 4 मिलियन से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों, जर्मनी में 3 मिलियन से अधिक और सिंगापुर में 75000 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की मेजबानी करता है। विश्व स्तर पर, भारत 1 प्रतिशत से भी कम अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को समाहित करता है। भारतीय विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय रैंकिंग निकायों द्वारा प्रकाशित दुनिया के शीर्ष 100 विश्वविद्यालयों की सूची में भी नहीं हैं। साथ ही, विदेश में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या यहां आने वाले अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या से 15 गुना है। भारत के पास न केवल घरेलू जरूरतों को पूरा करने के लिए युवा कार्यबल है, बल्कि कुशल कार्यबल के लिए वैश्विक केंद्र बनने का अवसर भी है।यह अवसर एक चुनौती भी है. भारतीय युवाओं को ज्ञान और कौशल की आवश्यकता है और भारतीय प्रणाली को इसके लिए पूरी तरह सुसज्जित होना चाहिए।

भविष्य की राह

भारत के गहन तकनीक–आधारित नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र को तेजी से विकसित होते देखना उत्साहजनक भी है और भविष्य की हमारी उधमी सोच को साकार रूप मिलते भी दिख रहा है। भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों का रुझान देश और समाज की बेहतरी के लिए तेजी से प्रयोग और तकनीकी विकास की ओर बढ़ रहा है। वर्तमान परिस्थितियों मे कंपनियों के लिए अब केवल सर्वोत्तम कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना और तैयार करना ही पर्याप्त नहीं है। बल्कि इन शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे कई उत्कृष्ट नियोक्ता तैयार करें जो भारत की अगली पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करें। हमारे व्यवसाय को उद्यमशीलता की भावना विरासत में मिली है, जिससे हम अपने व्यवसाय को समाज की जरूरतों के अनुसार परिवर्तित करते हुए, सीमित–संसाधन का उचित प्रबंधन और विस्तार करना के साथ ही नवाचार और उद्यमिता के बल पर रोजगार के नए अवसरों की खोज के लिए कार्य करना जिससे हम अपना लक्ष्य प्राप्त करने मे सफल हो सकें।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही भारत को विश्व गुरु बनाने पर बल देती रही हैं। यह संस्कृति उन्नत ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, कला, और साहित्य के क्षेत्र में विशेषता प्रदान करती है। भारतीय शिक्षा छात्रों को जीवन के सभी क्षेत्रों में सशक्त और सदैव अग्रणी बनाने की क्षमता प्रदान करती हैं। साथ ही भारतीय शिक्षा प्रणाली ने विभिन्न कालों में भारतीय वैज्ञानिक विचार धारा, अविष्कार, तकनीक कुशलता और साहित्यिक उत्कृष्टता के विविध आयाम स्थापित किए। जिसका लक्ष्य भारतीय लोगों का जीवन समृद्ध और खुशहाल बनाना था। मध्य काल में भारत की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में बदलाव आया जिसके कारण जीवन की उन्नति में ठहराव आ गया। वर्तमान समय मे घरेलू और वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए बदलाव आ रहे हैं ताकि अगली पीढ़ी को ऐसा नेतृत्व प्रदान कर सके जो उन्हें अनेक प्रकार के रोजगार के अवसर प्रदान कर सके। शैक्षणिक संस्थानों में नवाचारी प्रवृत्ति एवं उद्यमवृत्ति की संस्कृति को विकसित कर स्वरोजगार एवं रोजगार के अवसर उत्पन्न किए जा सकते हैं। नवोन्मेश एवं उद्यमवृत्ति को एक साथ लेकर कार्य करने की क्षमता में विकास किया जाना आवश्यक है। शिक्षार्थियों में सामूहिक जिम्मेदारी विकसित करने और नवाचारी चिंतन तैयार करने की आवश्यकता है और यह तभी संभव है जब हम क्लास रूम की संस्कृति से बाहर निकल जाए। हम भविष्य के लिए ऐसा नेतृत्व तैयार करने मे सफल होगे जो नवाचार एवं उधमिता की सोच के साथ आगे बढ़कर देश मे रोजगार के असीम अवसर पैदा करने मे सक्षम होगे।

संदर्भ सूची

1. https://www.afr.com/policy/health-and-education/australia-s-education-approach-to-india-not-sustainable-20190428-p5liOc (acdessed on 8 January, 2020). http:/aishe.nie.in/aishe/view Document. action? documentId= 262 (assessed on 8 January, 2020).
2. https://www.orfonline. org/expert-speak/increasing- enrolment-in-higher-education-a-aquantitative and qualitative challenge 55883/ (accessed on 8 January, 2020).
3. https://theconversation.com/how-australia-can-help-reform- higher-education-in-india-88479 (accessed on 8 January, 2020).
4. https://ministers. education.gov.au/tehan/growing-engagement- between -australia-and-india (accessed on 8 January,2020).
5. Yojna Various issue. A monthly journal .
6. Kurukshetra. A monthly journal. published by the Ministry of Rural Development. Government of India.
7. The Hindu –Daily News Paper.